"एक बार किसी अजनबी ने मेरे पास आकर मुझे एक छोटी सी चिट्ठी पकड़ाई। उसमें लिखा था, "आपने मेरे दुखी जीवन में खुशियों का उजाला भर दिया है।" यह मेरे लिए काफी है। अगर मैं किसी एक भी बच्चे के जीवन में रंगों का उजाला कर सकती हूँ तो मैं बहुत खुश हूँ, इससे मुझे कुछ और नहीं चाहिए।"

आस्ट्रिड लिंडग्रेन









एकलव्य के लिए अरविन्द कुमार पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित

मूल्य: 170 रुपये

ISBN-10: 81-8452-008-5
ISBN-13: 978-81-8452-008-8



आस्ट्रिड लिंडग्रेन

पिप्पी, एमिल, मार्दी और कार्लसन के मज़ेदार कारनामे



अनुवाद : अरुंधती देवस्थले

एकलव्य संस्करण

आस्ट्रिड लिंडग्रेन

पिप्पी, एमिल, मार्दी और कार्लसन
के मज़ेदार कारनामे

चित्र

आवरण : इनग्रिड नीमन

पिप्पी : लुईस ग्लांज़मन

एमिल : बियोन बर्ग

मार्दी, कार्लसन : इलोन विकलैंड

अनुवाद : अरुंधती देवस्थले



एकलव्य के लिए

अरविन्द कुमार पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित

Published in Swedish as
Pippi Langstrump i Soederhavet – 1948
Emil i Loenneberga – 1963
Madicken – 1960
Lillebror och Karlsson paa taket – 1955

Originally published by
Raben & Sjoegren Bokfoerlag AB
Stockholm, Sweden

www.astridlindgren.net

All foreign rights shall be handled by Saltkrakan AB
Box 100 22, SE-181 10 Lidingo, Sweden
nils.nyman@saltkrakan.se

एकलव्य के लिए पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट,
के सहयोग से विकसित
तथा अरविन्द कुमार पब्लिशर्स, गुड़गांव द्वारा प्रकाशित
नवम्बर 2007 / 3000 प्रतियाँ
सम्पर्कः एकलव्य
ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी, शंकर नगर
शिवाजी नगर, भोपाल-462 016
www.eklavya.in

मुद्रक : विमल ऑफसैट, दिल्ली

ISBN-10 81-8452-008-5
ISBN-13 978-81-8452-008-8

मूल्य : 170 रुपये

अनुक्रम

भूमिका

आस्ट्रिड लिंडग्रेन से मुझे बचपन से प्यार रहा है। और अब बड़ी होने पर पीछे मुड़कर देखती हूँ तो यह सोचकर कि मेरा बचपन उन्होंने किस कदर हँसी-मज़ाक से, खुशियों से भर दिया था, कृतज्ञता से मन भर उठता है। बड़ी होने के साथ कई चीज़ें बदलीं, पर एक बात नहीं बदली। बच्चों के साहित्य में 20 साल काम करने के बाद, दुनियाभर के लेखकों को पढ़ने के बाद, मुझे अब भी यही लगता है कि आस्ट्रिड लिंडग्रेन बच्चों की सर्वश्रेष्ठ लेखिका हैं।

कुछेक साल मैं एक बहुराष्ट्रीय बाल साहित्य की संस्था में काम करती रही। किताबें सुंदर थीं लेकिन मँहगी। जब हमारे देश के छोटे शहरों और गाँवों में रहनेवाले बच्चों के बारे में सोचा तो लगा ज़िंदगी के हालात से उनका संघर्ष तो बहुत जल्दी शुरू हो जाता है। क्या किया जाए कि उनकी ज़िंदगी में कुछ हँसी-खुशी के पल आएँ, कि वे खुली हवा में भरपूर साँस लेकर खिलखिला सकें, कि वे अपनी नन्ही-सी ज़िंदगी के तनावों को एक तरफ रखकर मुक्त मन से कुछ देर खुशियों की दुनिया में सैर कर लें, तो अचानक आस्ट्रिड लिंडग्रेन की याद आई। लगा क्यों न इनकी कहानियाँ बच्चों को सुनाई जाएँ – खासकर पिप्पी और एमिल की – कि बच्चे हँसी-खुशी की दुनिया में थोड़ी देर के लिए खो जाएँ?

ऐसी ही कुछ आधी-अधूरी कल्पना मन के किसी कोने में सँजोए मैं स्वीडन गई, आस्ट्रिड लिंडग्रेन की कृतियों की तलाश में। ज़्यादा ढूँढना नहीं पड़ा, आस्ट्रिड लिंडग्रेन और पिप्पी तो स्वीडन की भूमि का, उसकी संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं – उन्हें आप हर जगह मुस्कान

बिखरते देखते हैं, चाहे वह उनकी किताबें हों, विमरबी में बना आस्ट्रिड लिंडग्रेन का संसार हो, युनिबाक्कन जैसी जगहें हों या लोगों के मन — ऐसा एक भी शख़्स नहीं मिला जो उनके बारे में प्यार से, आदर से अछूता हो। कहने भर की देर होती थी, कई उत्साह से भरे हाथ मदद के लिए आगे आते थे। तभी मेरी मुलाकात आस्ट्रिड लिंडग्रेन के दामाद और बेटी, कार्ल ओलोफ और कारिन नीमन से हुई। उन्होंने इस गैरव्यवसायी प्रस्ताव को जिस संवेदना से समझा और जिस तत्परता से मेरी मदद की, उसके लिए धन्यवाद करना नामुमकिन है। अगर उनसे यह सहयोग और बढ़ावा न मिलता तो आस्ट्रिड लिंडग्रेन का साहित्य भारत के कमज़ोर वर्गों के बच्चों तक पहुँचाने की मेरी यह तमन्ना केवल तमन्ना ही रह जाती।

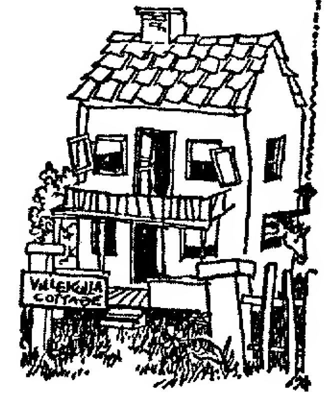
दुनिया भर के बच्चों को रिझानेवाली आस्ट्रिड लिंडग्रेन अब हमारे देश के बच्चों की दुनिया में हँसी-खुशी का पिटारा लेकर दाखिल हो रही हैं, आईए इनका स्वागत करें।

अरुंधती देवस्थले
14 नवम्बर 2007



पिप्पी दक्षिण समुद्र में

1
विल्लाकुला का विला



यह कहानी है एक छोटे से, प्यारे से गाँव की। बिल्कुल चित्र-सा लगता था, बटिया पत्थर के रास्ते, छोटे-छोटे घर और उन्हें घेरनेवाले बगीचे। जो भी यहाँ आकर देखे, उसे यही लगता कि यह तो बड़ी अच्छी, आरामदेह जगह होगी रहनेवालों के लिए। जहाँ तक पर्यटकों के लिए आकर्षण की बात है, वे कुछ खास नहीं थे – या कहिए कि थे ही नहीं! गाँव की कलाकारी का एक संग्रहालय था, एक कब्र का टीला था और बस, और तो कुछ नहीं था। नहीं, नहीं, ठहरिए, एक चीज़ और थी ज़रूर!

इस छोटे-से गाँव के लोगों ने आनेवाले यात्रियों के लिए साफ-सुथरे बोर्ड लगा रखे थे इन जगहों तक ले जाने के लिए। एक जगह गाँव की कलाकारी के संग्रहालय का बोर्ड था जिसके नीचे एक तीर बना था। दूसरे पर कब्र का टीला लिख रखा था।

एक तीसरा बोर्ड भी था, जिसपर टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा था:

विला विल्लाकुला की ओर

लगता है, यह बोर्ड हाल ही में लगाया गया था। आजकल गाँव में विला विल्लाकुला देखने के लिए आनेवाले मुसाफिरों की संख्या बढ़ गई

थी। इस जगह को देखने के लिए संग्रहालय या कब्र के टीले से भी ज़्यादा लोग आते थे।

बसंत ऋतु का ऐसा ही एक दिन था – एक आदमी अपनी कार लेकर गाँव के अंदर चला आया। वह काफी बड़े शहर में रहता था, इसलिए वह अपने आप को ऐसी छोटी जगह में रहनेवाले गाँववालों से बेहतर और महत्वपूर्ण समझता था। उसके जूते इस कदर रगड़कर पॉलिश किए गए थे कि वे चमक रहे थे, और उँगली में उसने सोने की मोटी अँगूठी पहन रखी थी।

सड़क से गुज़रते हुए उसने कई बार हॉर्न बजाया कि वहाँ से जाने वाले हर किसी का ध्यान उसकी तरफ जाए।

जब उसने सड़क पर लगे बोर्ड देखे तो उसकी हँसी निकल गई।

गाँव की कलाकारी का संग्रहालय – वाह जी वाह! उसने अपने आप से कहा। इससे मुझे क्या लेना-देना? कब्र का टीला – उसने दूसरा बोर्ड देखा। यह तो और भी बढ़िया है! कैसी बेवकूफी है! वह सोच ही रहा था कि तीसरा बोर्ड उसकी नज़र के सामने पड़ा – **विला विल्लाकुला की ओर**। भला यह भी कोई नाम हुआ।

उसने क्षणभर के लिए सोचा। जिस तरह वह संग्रहालय और कब्र का टीला कोई आकर्षण नहीं हो सकते, वैसे ही यह विला भी देखने कौन आएगा? उसने सोचा यह बोर्ड लगाने की कुछ और वजह भी हो सकती है। उसने वजह का अनुमान लगाया। ज़रूर वह विला बिकाऊ होगा! इसीलिए तो खरीदारों को रास्ता दिखाने के लिए वह बोर्ड लगा दिया होगा। काफी समय से वह सोच रहा था कि किसी शांत, छोटे-से गाँव में एक घर खरीद ले जो शहर के भीड़-भड़क्के से दूर हो। वह हमेशा तो उसमें जाकर नहीं रह पाएगा, लेकिन आराम करने के लिए, जब भी संभव हो, वहाँ रह सकता है। इस छोटे-से गाँव में उसके जैसे रोबीले आदमी की काफी पूछ होगी। उसने सोचा कि जाकर विला विल्लाकुला एक बार देख तो लूँ।

बोर्ड पर दिखाई गई दिशा में वह जाता रहा। विला विल्लाकुला की

तलाश में वह गाँव की सीमा तक पहुँच गया। वहाँ एक बगीचे के टूटे-फूटे फाटक के सामने लाल रंग के क्रेयॉन से लिखा थाः

विल्लाकुला

फाटक से गुज़रकर वह अंदर गया तो देखा एक बगीचा अस्त-व्यस्त स्थिति में पड़ा है। पेड़ों पर शैवाल लटक रहे हैं, घास बहुत बढ़ गई है और फूलों को जैसे छूट दे रखी है कि जैसे मर्जी है, खिलते जाओ। बगीचे के अंत में एक घर था – घर भी क्या था! लगता था एक मिनट में टूट-फूटकर ज़मीन पर बिखर जाएगा। वह आदमी उसे कुछ देर तक घूरता रहा और अचानक उसके मुँह से कराहने जैसी आवाज़ निकली। बरामदे में एक घोड़ा खड़ा था! उस शहरी आदमी को बरामदे में खड़े घोड़े देखने की आदत नहीं थी। इसीलिए उसके मुँह से वह आवाज़ निकली थी।

बरामदे की सीढ़ियों पर तीन बच्चे धूप सेंक रहे थे। बीच में बैठी लड़की के मुँह पर छोटे लाल दाग थे और उसकी दो लाल चोटियाँ सीधी कानों पर से बाहर निकली हुई थीं। दूसरी प्यारी-सी लड़की के बाल सुनहरे और घुँघराले थे और उसने नीले चारखानों की पोशाक पहन रखी थी। दूसरी तरफ बैठे हुए लड़के ने बाल ठीक से बना रखे थे। लाल बालों वाली उस लड़की के कंधे पर एक बंदर बैठा हुआ था।

उस आदमी को यह सब देखकर ताज्जुब हुआ। लगा मैं शायद गलत जगह आया हूँ। बिकाऊ घर ज़रूर कोई और होगा। ऐसी पुरानी, लड़खड़ाती कुटिया खरीदेगा कौन?

"सुनो बच्चों," उसने उनसे कहा। "क्या इसी फटीचर कुटिया को विला विल्लाकुला कहते हैं?"

वह जो बीच में बैठी लाल बालों वाली लड़की थी, वह उठकर अपने दोस्तों के साथ फाटक तक आ गई। वह आगे थी और उसके दोनों दोस्त पीछे-पीछे।

"क्या तुम बोल नहीं सकती?" वह आदमी पूछ बैठा, इससे पहले कि वह उस तक पहुँच पाती। "क्या इसी दड़बे को विला विल्लाकुला कहते हैं?"



"मुझे ज़रा सोचने दीजिए!" उस लाल बालों वाली लड़की ने पेशानी पर बल डालते हुए कहा। "यह संग्रहालय तो है नहीं, और न कब्र का टीला है," उसने चिल्लाकर कहा, "तो फिर यह विला विल्लाकुला ही होगा।"

"यह कोई तरीका हुआ जवाब देने का?" कहता वह आदमी गाड़ी से बाहर निकला। उसने सोचा एक बार घर को अच्छे से देख तो लूँ। "इसे गिराकर यहाँ नया घर भी तो बन सकता है," उसने खुद से कहा।

लेकिन उस लाल बाल वाली ने वह सुन लिया और कहा, "चलो, अभी से काम शुरू करते हैं!" वह भागकर अंदर गई और बाहर के बरामदे से लकड़ी के फट्टे उतारकर लाने लगी।

उस आदमी ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। उसे वैसे ही बच्चों में कोई दिलचस्पी नहीं थी और अब तो दिमाग में कुछ और उमड़-घुमड़ रहा था। सुनहरी धूप में जंगल की तरह फैला बगीचा काफी सुंदर व आकर्षक लग रहा था। अगर इस जगह नया घर बनाया जाए, घास तरीके से काटी जाए, बगीचे में रास्ते ठीक से बनाए जाएँ और फूल अच्छी तरह उगाए जाएँ तो उसके जैसा प्रतिष्ठित व्यक्ति भी यहाँ रह सकता है। उसने मन बना लिया कि वह विला विल्लाकुला खरीद लेगा।

उसने इर्द-गिर्द नज़र घुमाकर देखा कि किस किस तरह से इस घर को सुधारा जा सकता है। पुराने शैवाल से ढके पेड़ गिराने पड़ेंगे। उसने उस लंबे ओक वृक्ष को हिकारत से देखा जिसका तना बहुत चौड़ा था और शाखाएँ विला विल्लाकुला पर फैली हुई थीं।

"इसे तो मैं गिरा ही दूँगा।" उसने फैसला कर डाला।

यह सुनकर नीले ड्रेस वाली उस प्यारी-सी छोटी बच्ची ने डरी हुई आवाज़ में पिप्पी से पूछा, "तुमने सुना ये क्या कह रहे हैं?"

लाल बालों वाली लड़की पर कोई असर नहीं दिखाई दिया। वह बगीचे से गुज़रते रास्ते पर इस पार और उस पार कूदती रही।

"मैं इस बूढ़े खूसट पेड़ को गिरा दूँगा," वह आदमी फिर से बुदबुदाया।

नीले कपड़ों वाली लड़की ने बाँह फैलाकर उसे मनाने की कोशिश की। "नहीं, नहीं, ऐसा मत कीजिए," उसने कहा। "इस पेड़ पर चढ़ने

में बहुत मज़ा आता है। इसमें एक खोल भी है, हमारे खेलने के लिए।''

''बेकार की बात है!'' उस आदमी ने जवाब दिया। ''मैं पेड़ों पर नहीं चढ़ता, तुम्हें पता होना चाहिए।''

सुंदर बालों वाला लड़का आगे आया। वह परेशान नज़र आ रहा था। उसने कहा, ''लेकिन इस पर सोडा लगता है और चॉकलेट भी – गुरुवार को।''

''देखो बच्चों, तुम लोग लगता है काफी देर से धूप में बैठे हो। अब तुम्हारे सिर चकरा रहे हैं। लेकिन इससे मुझे क्या! मैं तो यह घर खरीद रहा हूँ। तुम्हें पता है इस जगह का मालिक कहाँ रहता है?'' उस बड़े आदमी ने पूछा।

नीले कपड़ों वाली लड़की रोने लगी। सुंदर बालों वाला वह लड़का उस लाल बालों वाली लड़की के पास जाकर बोला, ''पिप्पी, क्या तुमने सुना नहीं जो इस आदमी ने कहा है? तुम कुछ करती क्यों नहीं?'' वह लड़की अब भी इस तरफ से उस तरफ कूदने में मस्त थी।

''मैं कुछ करती क्यों नहीं?'' उसने उस लड़के का सवाल दोहराया। ''मैं यहाँ जी-जान से इस पार और उस पार कूद रही हूँ और तुम कहते हो मैं कुछ करती क्यों नहीं? ज़रा कूदकर देखो मेरी तरह, तो पता चले!''

फिर वह उस बड़े आदमी के पास जाकर बोली, ''मेरा नाम है पिप्पी लंबे मोज़े और ये हैं मेरे दोस्त टॉमी और अन्निका। अब कहिए हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं? घर को गिरा दें, पेड़ को काट डालें? कुछ और भी बदलना है यहाँ का? कहिए तो सही!''

''तुम्हारे नामों से मुझे क्या मतलब?'' उस बड़े आदमी ने कहा ''मैं बस इतना जानना चाहता हूँ कि इस जगह का मालिक कहाँ है? मुझे यह घर खरीदना है।''

उसका जवाब सुनते-सुनते वह लाल बालों वाली लड़की, पिप्पी लंबे मोज़े, फिर कूदने चली गई। ''मालिक तो इस वक्त बहुत व्यस्त है।'' उसने कहा, और खेलती रही जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। ''सचमुच बहुत व्यस्त है!'' उसने उस बड़े आदमी के इर्द-गिर्द कूदते-फाँदते कहा, ''आप बैठ जाइए और थोड़ी देर इंतज़ार कर लीजिए, वह आ जाएगी।''

''आ जाएगी?'' वह बड़ा आदमी सुनकर खुश नज़र आया। ''तो इस फटेहाल घर की मालिक एक औरत है? बहुत अच्छी बात है। औरतों को धंधा करना नहीं आता। और इसीलिए शायद घर मुझे सस्ते में मिल सकता है।''

''उम्मीद तो यही रखनी चाहिए,'' पिप्पी लंबे मोज़े ने कहा।

कहीं और बैठने की जगह न देखकर वह बड़ा आदमी भी बरामदे की सीढ़ियों पर बैठ गया। बरामदे की रेलिंग पर एक बंदर जैसे चिंता में आगे-पीछे लपक रहा था। टॉमी और अन्निका उसे दूर से, डरे-डरे से देख रहे थे।

''क्या तुम यहाँ रहते हो?'' बड़े आदमी ने पूछा।

''नहीं,'' टॉमी ने कहा, ''हम साथ वाले बंगले में रहते हैं।''

''लेकिन हर रोज़ हम यहाँ खेलने आते हैं,'' अन्निका ने सकुचाते हुए कहा।

''वह सब तो अब बंद हो जाएगा,'' बड़े आदमी ने कहा। ''मैं नहीं चाहता कि मेरे बगीचे में छोटे बच्चे ऊधम मचाएँ। बच्चे बहुत खराब होते हैं।''

''मुझे भी ऐसा ही लगता है!'' पिप्पी ने कहा और अपना कूदना क्षणभर के लिए रोककर बोली, ''सारे बच्चों को गोली से उड़ा देना चाहिए!

''लेकिन यह तो हो नहीं सकता क्योंकि बच्चे बड़े न हों तो कोई अच्छे चाचा दुनिया में नहीं होंगे। इसीलिए उनका होना ज़रूरी है!''

उस बड़े आदमी ने पिप्पी के लाल बाल देखे और सोचा यहाँ बैठे इंतज़ार करते-करते कुछ शरारत की जाए। ''पता है, तुम्हें देखते हुए मुझे जलती हुई माचिस की तीली याद आती है। बताओ क्यों?''

''पता नहीं,'' पिप्पी ने कहा। ''लेकिन बात सोचने वाली है।''

उस बड़े आदमी ने पिप्पी की एक लाल चुटिया ज़ोर से खींचते हुए कहा, ''क्योंकि तुम्हारा माथा गर्म है, और उसका भी। हा – हा!''

''कानों को पककर गिरने से पहले काफी कुछ सुनना पड़ता है,'' पिप्पी ने कहा। ''पता नहीं मुझे यह ख्याल पहले क्यों नहीं आया?''

उस बड़े आदमी ने घूरकर देखा, और बोला, ''मुझे सचमुच लगता है कि तुम्हारे जैसी बदसूरत लड़की मैंने कभी नहीं देखी।''

"जो भी हो!" पिप्पी ने कहा, "सुंदर तो आप भी नहीं हैं।"

वह आदमी यह सुनने की उम्मीद नहीं रखता था, पर उसने कुछ नहीं कहा। कुछ देर तक, पिप्पी अपनी गर्दन एक तरफ झुकाकर उसे देखती रही और फिर कहा, "लेकिन हम दोनों में एक समानता है।"

"हम दोनों के बीच कोई समानता हो ही नहीं सकती।" उस बड़े आदमी ने फौरन कह दिया।

"है!" पिप्पी ने कहा, "दोनों बहुत बकवास करते हैं – मुझे छोड़कर।"

इस बात पर टॉमी और अन्निका की दबी-दबी हँसी सुनाई दी।

"तो तुम मेरा अपमान कर रही हो!" उस आदमी ने चीखते हुए कहा। "मैं तुम्हारा कचूमर निकाल दूँगा।"

उसने अपना मोटा हाथ बढ़ाकर पिप्पी को पकड़ना चाहा पर वह जल्दी से कूदकर वहाँ से निकल गई और तुरंत ओक वृक्ष की आड़ में जा बैठी। वह आदमी उसे देखता रह गया।

"कब निकालोगे मेरा कचूमर?" पिप्पी ने एक शाखा पर आसन जमाते हुए पूछा।

"मैं यहीं खड़ा रहकर तुम्हारा इंतज़ार करूँगा!" उस बड़े आदमी ने कहा।

"बहुत अच्छी बात है!" पिप्पी बोली, "क्योंकि नवंबर के बीच तक नीचे आने का मेरा कोई इरादा नहीं है।"

टॉमी और अन्निका ने हँसकर तालियाँ बजाईं। इससे उस बड़े आदमी का गुस्सा बहुत बढ़ गया। जब उसने देखा कि पिप्पी तो उसके हाथ नहीं आएगी तो उसने अन्निका की गर्दन पकड़ ली और कहा, "इसे अब मैं कहीं गायब कर देता हूँ। लगता है, सही करने की ज़रूरत इसे भी है।"

अन्निका को अब तक किसी ने मारा नहीं था इसलिए डर से उसकी चीख निकल गई। पिप्पी धड़ाम से पेड़ से कूदकर नीचे आई और लपककर उस बड़े आदमी की बगल में खड़ी हो गई।

"नहीं," उसने कहा, "अभी मारपीट न हो तो अच्छा होगा।" उसने उस बड़े आदमी की मोटी कमर पकड़ ली और उसे पोटली की तरह कई बार हवा में उछाला, फिर अपने हाथ पसारकर उसे पकड़ लिया। फिर उसे कार तक ले गई और पिछली सीट पर पटक दिया।

"घर तो हम बाद में गिराएँगे।" उसने कहा, "बात यह है कि हफ्ते में एक दिन मैं घर गिराने का काम करती हूँ। लेकिन शुक्रवार को कभी नहीं क्योंकि वह मेरा सफाई का दिन होता है। इसलिए आम तौर पर मैं शुक्रवार को घर अच्छी तरह साफ कर लेती हूँ और शनिवार को गिरा देती हूँ। हर काम का अपना वक्त होता है।"

बड़ी मुश्किल से वह बड़ा आदमी जैसे तैसे ड्राइवर की सीट तक पहुँच पाया और तेज़ी से वहाँ से निकल गया। वह डरा हुआ था और उसे गुस्सा भी आ रहा था कि विला विल्लाकुला के मालिक तक पहुँच नहीं सका। उसे लग रहा था कि वह जल्दी से विला खरीद ले और उन तीनों बदमाश बच्चों को वहाँ से भगा दे।

रास्ते में उसे गाँव के दो पुलिस वाले मिले। उसने गाड़ी रोककर उनसे पूछा, "मुझे विला विल्लाकुला की मालकिन से मिलना है। कहाँ मिलेगी?"

"ज़रूर, चलिए, मैं आपको ले चलता हूँ।" पुलिस वालों ने गाड़ी में बैठते हुए कहा, "सीधे विला विल्लाकुला चलते हैं।"

"लेकिन वह तो वहाँ नहीं है," उस बड़े आदमी ने कहा।

"ज़रूर होगी! मुझे पूरा यकीन है।" पुलिस वाले ने कहा।

उस बड़े आदमी को लगा, चलो पुलिस साथ है तो मुझे कुछ नहीं होगा। और फिर वे विला विल्लाकुला चले गए। वह आदमी मालकिन से बात करने को आतुर था।

"वह है मालकिन इस बंगले की!" एक पुलिस वाले ने घर की तरफ इशारा करके कहा।

उस बड़े आदमी ने उस दिशा में देखा तो सिर पीट लिया और मुँह से आह निकली। बरामदे की सीढ़ियों पर वही लाल बालों वाली अहमक लड़की खड़ी थी – पिप्पी लंबे मोज़े। उसने अपनी बाँहें फैलाए एक

घोड़े को ऊपर उठा रखा था। उसके बाएँ कंधे पर एक बंदर बैठा हुआ था।

"टॉमी, अन्निका," पिप्पी ने ज़ोर से आवाज़ दी। "चलो, अगला कोई खारीशदार आ पहुँचने से पहले थोड़ी सैर कर लें।"

"खारीशदार नहीं, खरीदार," अन्निका ने कहा।

"क्या यह है विला विल्लाकुला की मालकिन?" उस बड़े आदमी ने बुझी आवाज़ में पूछा। "पर यह तो एक छोटी लड़की है!"

"जी हाँ।" पुलिस वाले ने कहा। "छोटी तो है, लेकिन यह दुनिया की सबसे ताकतवर लड़की है। अकेली रहती है इस घर में!"

तभी तीनों बच्चों को पीठ पर बिठाए, टपटप करता एक घोड़ा फाटक की तरफ आता दिखाई दिया।

पिप्पी ने उस बड़े आदमी को देखकर कहा, "कुछ देर पहले, आपके साथ पहेलियाँ बुझाने में बड़ा मज़ा आया था। अब मुझे एक और पहेली याद आ रही है। क्या आप बता सकते हैं कि मेरे घोड़े और बंदर में क्या फर्क है?"

उस बड़े आदमी को पहेलियाँ बुझाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन अब उसके मन में पिप्पी के लिए इज़्ज़त बढ़ने लगी थी। उसे पलटकर जवाब देने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

"आपके घोड़े और आपके बंदर में फर्क क्या है, यह तो मैं नहीं जानता।"

"हाँ, बताना मुश्किल तो है," पिप्पी ने कहा। "चलिए, मैं आपको एक हिंट देती हूँ। इन्हें अगर आप पेड़ के नीचे खड़े देखते हैं तो इनमें से एक पेड़ पर चढ़ने लगेगा, तो फिर वह तो घोड़ा नहीं हो सकता।"

उस बड़े आदमी ने नीचे तक गाड़ी का पेडल दबाया और जितनी तेज़ हो सके, वहाँ से भाग गया। उसके बाद फिर कभी वह वहाँ नहीं आया।

2 पिप्पी चिल्लाई



एक दिन दोपहर में, पिप्पी अपने घर के बगीचे में, टॉमी और अन्निका के इंतज़ार में टहल रही थी। लेकिन न टॉमी आता दिखाई दिया, न अन्निका। इसलिए पिप्पी ही उनकी खोज में निकल पड़ी। उसने देखा कि वे दोनों अपने बगीचे में खेल रहे थे। उनकी माँ भी साथ थीं और उनके घर आई हुई मेहमान, एक प्यारी-सी बुज़ुर्ग औरत भी। वे दोनों पेड़ के नीचे बैठी कॉफी पी रही थीं। टॉमी और अन्निका भी फलों का रस पी रहे थे लेकिन जब उन्होंने पिप्पी को आते देखा तो वे भागकर उसके पास चले आए।

"हमारे यहाँ लारा मौसी आई हुई हैं। इसीलिए हम तुम्हारे पास आज नहीं आए।"

"बहुत अच्छी लगती हैं ना!" पिप्पी ने फाटक से अंदर झाँककर कहा, "मुझे उनसे बात करनी है। मुझे बुज़ुर्ग औरतें बहुत प्यारी लगती हैं।"

अन्निका सोच में पड़ गई।

"वह...वह...क्या है कि तुम्हारा उनके साथ ज़्यादा बात करना ठीक न होगा," उसने कह डाला। उसे याद था कि पिछली बार उनके घर जब माँ की सहेलियाँ कॉफी पार्टी के लिए आई थीं तो पिप्पी की बकबक से वे कितनी तंग हुई थीं। अन्निका को पिप्पी से बहुत प्यार था, वह नहीं चाहती थी कि कोई पिप्पी को गलत समझे।

पिप्पी को बुरा लगा। "क्यों नहीं कर सकती मैं उनसे बात?" उसने पूछा। "जब लोग मिलने आते हैं तो उनसे दोस्ती और प्यार से पेश आना चाहिए। अगर मैं वहाँ आकर उनसे कुछ भी न कहूँ तो उन्हें लगेगा कि मैं उन्हें नहीं चाहती।"

"लेकिन क्या तुम्हें पता है कि बुजुर्ग औरतों से कैसे बात करते हैं?"

"प्यार देकर उनका हौसला बढ़ाना होता है!" पिप्पी ने ज़ोर से कहा, "और अब मैं वही करने जा रही हूँ।" और वह अंदर आकर सीधी पेड़ के नीचे गई जहाँ अन्निका की माँ और लारा मौसी बैठी कॉफी पी रही थीं। पहले पिप्पी ने अन्निका की माँ को नमस्ते की, फिर लारा मौसी की तरफ देखकर मुस्कुराते हुए तालियाँ बजाने लगी।

"देखो तो सही लारा मौसी को!" उसने कहा, "और भी सुंदर लगने लगी हैं।" फिर उसने अन्निका की माँ की तरफ मुड़कर कहा, "क्या मुझे भी थोड़ा फलों का रस मिल सकता है कि बातें करते-करते, बीच में मेरा गला न सूख जाए?"

अन्निका की माँ ने फलों का रस गिलास में डाला और उसे पकड़ाते हुए कहा, "बच्चे खेलते अच्छे लगते हैं, बोलते नहीं।"

"ठीक है!" पिप्पी ने खुश होकर कहा, "मैं तो यहीं चुपचाप बैठ जाती हूँ कि आप मुझे देख सकें! देखूँ तो एक मूरत की तरह बैठकर कैसा लगता है!" पिप्पी घास पर बैठ गई और सीधा आगे देखने लगी, चेहरे पर नकली मुस्कान ओढ़े, जैसे कोई उसकी फोटो ले रहा हो।

अन्निका की माँ ने उसे अनदेखा कर दिया और लारा मौसी से बातें करती रहीं। कुछ देर बाद उन्होंने लारा मौसी से पूछा, "अब आप ठीक-ठाक तो हैं ना, मौसी?"

"नहीं!" लारा मौसी ने कहा, "कुछ भी ठीक नहीं है। मुझे हर चीज़ से डर लगता है और चिंता होती है।"

पिप्पी कूदकर खड़ी हुई और कहा, "बिल्कुल मेरी दादी की तरह!" और फिर वह शुरू हो गई, "वह भी हर छोटी-मोटी चीज़ को लेकर या तो बहुत खुश होती हैं, या फिक्र करने लगती हैं। जैसे अगर वे सड़क पर चल रही हों और कहीं से कोई ईंट आकर उनके सिर पर गिर जाए तो बस वहीं चिल्लाना शुरू कर देती हैं और ऐसा हंगामा खड़ा कर देती हैं कि लोग सोचते हैं कि ज़रूर कुछ भयानक घटना हुई है!

"एक बार वे किसी समारोह में मेरे पापा के साथ नाच रही थीं। मेरे पापा तो बड़े ताकतवाले हैं और चुस्त भी। उन्होंने नाचते-नाचते उन्हें ऐसा घुमा दिया कि वे उस बड़े से कमरे को पार कर दूसरी तरफ बजाने वाले वादकों के बीच जा गिरीं। वहाँ उन्होंने ऐसा शोर मचाया कि पूछो मत! झल्लाकर पापा ने उन्हें उठाया और खिड़की से आधा बाहर कर दिया। पापा ने सोचा वे शांत हो जाएँगी और इस तरह छटपटाना बंद कर देंगी। पर नहीं! वे और भी परेशान होकर चिल्लाने लगीं, 'अभी इसी वक्त छोड़ दो मुझे!' पापा ने वही किया जो वे चाहती थीं। लेकिन उससे भी वे खुश नहीं हुईं! पापा ने कहा, पूरी ज़िंदगी भर उन्होंने किसी बूढ़ी औरत को इतनी छोटी-सी बात पर इतना हो-हल्ला करते नहीं देखा। मतलब यही है कि लोगों को चिंता करने की आदत पड़ जाए तो परेशानी खड़ी हो सकती है!" पिप्पी ने सहानुभूति जताते हुए कहा और फिर सिर झुकाकर फलों का रस पीने लगी।

टॉमी और अन्निका बड़ी बेचैनी से अपनी कुर्सियों पर छटपटा रहे थे। लारा मौसी ने अनिश्चितता में सिर हिलाया तो अन्निका की माँ ने उनसे कहा, "लारा मौसी, फिक्र की कोई बात नहीं है, बहुत जल्दी सब ठीक हो जाएगा और आप को अच्छा लगने लगेगा।"

"हाँ, बिल्कुल!" पिप्पी ने उन्हें आश्वस्त करने के लहज़े में कहा, "मेरी दादी भी ठीक हो गई थीं। बहुत जल्दी।"

लारा मौसी जानना चाहती थीं कि वे कैसे ठीक हुईं।

"नींद की गोलियों से।" पिप्पी ने कहा, "बस, उन्हीं से ठीक हो गईं। क्या बताऊँ आपको! वे एकदम शांत हो गईं, गाय की तरह। इतनी सही हुईं कि कई दिन बैठी रहती थीं, चुपचाप एक जगह! सिर पर एक के बाद एक ईंटों का अंबार भी गिरे तो भी फर्क नहीं पड़ता था, उल्टा उसमें भी लगता है, उन्हें मज़ा आता था। अगर यह मेरी

दादी के साथ हुआ तो औरों के भी साथ हो सकता है। तो यकीन मानिए, आप बहुत जल्दी ठीक हो जाएँगी, लारा मौसी!"

टॉमी ने लारा मौसी के पास जाकर, उनके कानों में फुसफुसाया, "पिप्पी की बातों का यकीन न करना, लारा मौसी। यह कहानियाँ बनाती रहती है। इसकी कोई दादी नहीं है।"

लारा मौसी ने सिर हिलाया, जैसे सब समझ गई हो। लेकिन पिप्पी के कान हमेशा खड़े रहते थे। टॉमी की बात उसने सुन ली थी।

"टॉमी ठीक कह रहा है," उसने कहा। "मेरी दादी हैं ही नहीं। अब यह समझ में नहीं आता कि न होने पर भी वे इतनी फिक्रमंद क्यों रहती हैं?"

लारा मौसी दंग होकर पिप्पी को देखती रहीं, और फिर से अन्निका की माँ के साथ बातों में लग गईं। पिप्पी नीचे बैठकर, वही नकली मुस्कान चेहरे पर ओढ़े, उन्हें सुनने लगी।

कुछ मिनटों बाद लारा मौसी बोलीं, "पता है क्या, कल बड़ी अजीब बात हुई..."

"लेकिन परसों जो मैंने देखा उसके जितनी अजीब कोई बात हो ही नहीं सकती," पिप्पी ने उन्हें फिर आश्वस्त करने के अंदाज़ में कहा। "मैं ट्रेन से जा रही थी और हमारी गाड़ी बहुत तेज़ दौड़ रही थी। तब खुली खिड़की से एक गाय उड़ती हुई अंदर आ गई। उसका सूटकेस उसकी पूँछ से बँधा हुआ था। वह मेरी सामने वाली सीट पर बैठ गई और टाइम टेबल देखने लगी कि हम फालकोपी कब पहुँचेंगे। मैं अपना सैंडविच खा रही थी। मेरे पास ढेर सारे सैंडविच थे, कुछ चिकन के, कुछ मछली के। मुझे लगा, उसे भी भूख लगी होगी तो मैंने उससे पूछा, 'लोगी?' उसने बड़ी मछलीवाला ले लिया और उसे एकदम पूरा खा गई।" कहकर पिप्पी चुप हो गई।

"वाकई, बहुत अजीब बात है," लारा मौसी ने कहा।

"उसके जैसी गाय आपको ढूँढके भी कहीं नहीं मिल सकती।" पिप्पी ने कहा, "सोचिए तो, इतने सारे चिकन सैंडविच थे पर उसने मछलीवाला ही चुना!"

अन्निका की माँ ने लारा मौसी से पूछा, "क्या आप और कॉफी लेंगी?" फिर उन्होंने अपने और उनके कप में थोड़ी कॉफी डाली और बच्चों के गिलासों में फलों का रस। "आप क्या बता रही थीं परसोंवाली अजीब बात को लेकर?"

"अरे, हाँ," लारा मौसी ने कहा और उनके चेहरे पर चिंता के बादल छा गए।

"अजीब बातों के बारे में, मैं कुछ और बताती हूँ," पिप्पी ने जल्दी से बात शुरू की। "आगातोन और थिओ की कहानी सुनने में आपको बड़ा मज़ा आएगा। एक बार जब मेरे पापा का जहाज़ सिंगापुर पहुँचा तो उन्हें हट्टे-कट्टे लोगों की ज़रूरत थी। इसलिए उन्होंने आगातोन को नौकरी पर रख लिया। वह सात फुट लंबा था और पतला इतना कि चलते समय उसके बदन से हड्डियों की खट-खट आवाज़ आती थी। उसके कमर तक लंबे काले बाल थे और मुँह में एक ही दाँत था। एक ही दाँत। एक ही सही, लेकिन दाँत था बहुत लंबा, उसकी ठुड्डी तक आता था।

"मेरे पापा को लगा कि आगातोन ज़रूरत से ज़्यादा भयानक है और इसीलिए वह उसे नौकरी पर नहीं रखना चाहते थे। पर उन्हें खयाल आया कि हमें तंग करने वाले खूँखार जंगली घोड़ों को डराकर भगा देने में वह काम आएगा। फिर जब हम हांग-कांग पहुँचे तो एक और आदमी की ज़रूरत थी, वहाँ थिओ मिल गया। वे दोनों एकदम जुड़वाँ भाइयों जैसे थे।"

"कितनी अजीब-सी बात है!" लारा मौसी कहने से नहीं रह पाईं।

"अजीब?" पिप्पी ने कहा, "इसमें अजीब-सा क्या है?"

"यही कि वे दोनों बिल्कुल एक-से लगते थे। क्या यह अजीब नहीं है?" लारा मौसी बोलीं।

"नहीं," पिप्पी ने कहा। "यह इसलिए कि वे दोनों वाकई जुड़वाँ भाई थे। दोनों! जनम से ही!" उसने हैरानी से लारा मौसी को देखते हुए पूछा, "इसमें अजीब क्या है, लारा मौसी? जब जुड़वाँ भाई एक-से लगते हैं तो उसमें चिंता की तो कोई बात नहीं है ना? अब वे भी क्या करते? अब कौन चाहेगा कि वह दिखने में आगातोन या थिओ जैसा हो!"

"तो फिर तुमने यह क्यों कहा कि यह अजीब-सी बात है?" लारा मौसी ने झुंझलाकर पूछा।

अन्निका की माँ ने लारा मौसी का ध्यान किसी और बात की तरफ लगाने की कोशिश की। "आप हमें कुछ बता रही थीं, परसों की अजीब बात के बारे में?"

लारा मौसी जाने के लिए खड़ी हुईं। "अगली बार बताऊँगी।" उन्होंने कहा, "शायद वह इतनी अजीब है भी नहीं।"

उन्होंने टॉमी और अन्निका से विदा ली और पिप्पी का लाल सिर थपथपाया। "टा टा! मेरी नन्ही दोस्त! तुम ठीक कह रही थी।" लारा मौसी ने कहा, "मुझे पहले से बहुत अच्छा लग रहा है। अब मुझे किसी चीज़ की फिक्र नहीं हो रही!"

"सच? मुझे बहुत खुशी है कि आपकी फिक्र भाग गई।" पिप्पी ने प्यार से लारा मौसी से लिपटते हुए कहा। "पता है लारा मौसी, मेरे पापा को बहुत अच्छा लगा था थिओ को हांग-कांग में पाकर! उन्होंने कहा था कि अब वे दोगुना जंगली घोड़ों पर आसानी से हमला कर सकते हैं!"

3
पिप्पी को मिला स्पिंक



एक दिन सुबह हर रोज़ की तरह, टॉमी और अन्निका रस्सी कूदने पिप्पी के रसोई घर में दाखिल हुए। उन्होंने चिल्लाकर "गुड मॉर्निंग, पिप्पी" कहा पर कोई जवाब नहीं मिला। पिप्पी अपने बंदर श्रीमान् नीलसन को गोदी में लिए खाने की मेज़ पर बैठी हुई थी। उसके चेहरे पर खुशी की मुस्कान थी।

"गुड मॉर्निंग!" टॉमी और अन्निका ने फिर से कहा।

"जरा सोचो तो!" पिप्पी ने उनकी तरफ सपनीली आँखों से देखते हुए कहा, "इसे मैंने ढूँढ निकाला – सिर्फ मैंने, किसी और ने नहीं!"

"क्या ढूँढ निकाला है तुमने?" टॉमी और अन्निका ने पूछा। उन दोनों को इस बात से कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि पिप्पी ने किसी नई चीज़ की खोज की है। वह हमेशा ऐसा ही कुछ न कुछ करती रहती थी और वे जानना चाहते थे कि अब उसकी नई खोज क्या है।

"बताओ तो सही पिप्पी, तुमने किस चीज़ को ढूँढ निकाला है?"

"एक नया शब्द," पिप्पी ने कहा और फिर टॉमी और अन्निका को ऐसे देखा जैसे आज उनसे पहली बार मिली हो। "एक नया, कोरा, तरोताज़ा शब्द!"

"कैसा शब्द?" टॉमी ने पूछा।

"एक ज़बरदस्त शब्द!" पिप्पी ने कहा। "ऐसा बढ़िया शब्द जो पहले शायद कभी न सुना हो!"

"बोलो तो सही!" अन्निका ने कहा।

"स्पिंक," पिप्पी ने जीत की खुशी जताते कहा।

"स्पिंक," टॉमी ने दोहराया और पूछा, "वह क्या होता है?"

"मुझे क्या मालूम?" पिप्पी ने कहा "मैं सिर्फ इतना ही जानती हूँ कि इसका मतलब झाड़ू नहीं है।"

टॉमी और अन्निका सोच में पड़ गए। आखिर अन्निका ने कहा, "अगर तुम्हें यही नहीं मालूम कि इसका मतलब क्या होता है, तो फिर यह किस काम का?"

"वही तो मैं सोच रही हूँ।" पिप्पी ने कहा।

"किस शब्द का क्या मतलब होगा, यह पहले कौन तय करता था?" टॉमी ने अंदाज़ा लगाने की कोशिश की।

"शायद कोई पंडितों का मंडल होगा तय करने वाला," पिप्पी ने कहा।

"लोग होते बहुत अजीब हैं, देखो ना, कैसे-कैसे शब्द बना डाले हैं उन्होंने – टब, स्टॉप, थर्मस। पता नहीं ये शब्द आए कहाँ से, किसी को कुछ नहीं पता। लेकिन स्पिंक जैसा अद्भुत शब्द ढूँढने की किसी को न सूझी। कितनी नसीबोंवाली हूँ मैं कि यह मुझ ही को सूझा। अब देखना, मैं इसका मतलब भी ढूँढकर ही रहूँगी।"

पिप्पी खयालों में कहीं खो गई।

"स्पिंक! झंडे के खंभे के सबसे ऊपर जो होता है, क्या उसे कहते होंगे स्पिंक?"

"छोड़ो! ऐसा कुछ भी नहीं होता," अन्निका बोली।

"ठीक कहती हो! मैं नहीं जानती... हो सकता है कि जब तुम कीचड़ में चलने की कोशिश करो तो गीली मिट्टी पाँव की उँगलियों में फँसने से 'स्पिंक' जैसी कोई आवाज़ आए? देखें तो सुनने में कैसा लगता है!"

अन्निका जब कीचड़ से गुज़र रही थी तो 'स्पिंक' की बहुत सुंदर आवाज़ पैरों से निकल रही थी। फिर गर्दन से ना करते हुए पिप्पी ने कहा, "बात नहीं बन रही। कीचड़ से निकलते हुए पच-पच की आवाज़ आ रही थी। यह ज़्यादा सही लगता है!"

पिप्पी ने सिर खुजाया। "यह तो मुश्किल होता जा रहा है। लेकिन जो भी हो मैं ढूँढ निकालूँगी ज़रूर। हो सकता है किसी दुकान पर मिल जाए? चलो, चलकर पूछते हैं।"

टॉमी और अन्निका ने सोचा, चलो देखें तो सही, क्या होता है? पिप्पी अपना पर्स ढूँढने गई। उसमें कुछ सोने के सिक्के थे। "स्पिंक," उसने कहा, "इस शब्द को कहते हुए ही लगता है कि यह कीमती चीज़ होगी। खरीदने के लिए सोने के सिक्के साथ रखना ठीक होगा।" हमेशा की तरह, बंदर श्रीमान् नीलसन पिप्पी के कंधे पर जा बैठे थे।

पिप्पी ने घोड़े को बरामदे से उठाकर ज़मीन पर रख दिया। "बाज़ार चलो जल्दी।" उसने टॉमी और अन्निका से कहा। "हमें तेज़ी से पहुँचना चाहिए, कहीं दुकानों में 'स्पिंक' खत्म न हो जाए। हो सकता है हमारे गाँव के मुखिया जी सारा 'स्पिंक' खरीद लें।"

जब पिप्पी का घोड़ा उन तीनों को पीठ पर लेकर बाज़ार की ओर जाने लगा तो बटिया पत्थर पर टप टप की आवाज़ होने लगी। उसे सुनकर सारे बच्चे बाहर आ गए। पिप्पी सबको अच्छी लगती थी।

"कहाँ जा रही हो, पिप्पी?" वे चिल्लाने लगे।

"स्पिंक खरीदने!" पिप्पी ने घोड़े को रोककर जवाब दिया।

बच्चों को कुछ समझ नहीं आया।

"क्या यह कोई अच्छी चीज़ होती है?" किसी बच्चे ने पूछा।

"बिल्कुल!" पिप्पी ने होठों पर ज़ुबान फेरते हुए कहा। "बहुत मज़ेदार होता है। मतलब, सुनकर तो ऐसा ही लगता है!"

टॉफियों की दुकान पर उसने घोड़ा रोका और कूदकर सड़क पर आ गई। टॉमी और अन्निका को भी नीचे उतार लिया।

"मुझे एक 'स्पिंक' का पैकेट चाहिए।" पिप्पी ने दुकान की मालकिन से कहा। "अच्छा हो और कुरकुरा भी।"

"स्पिंक?" उस सुंदर दुकानदार ने पूछा। वह कुछ सोच रही थी। "हमारे पास नहीं है।" उसने कहा।

"होना तो चाहिए," पिप्पी ने कहा। "सारी दुकानों में मिलता है।"

"हाँ, लगता है, हमारे यहाँ खत्म हो गया है," उस औरत ने कहा। उसने 'स्पिंक' के बारे में पहली बार सुना था लेकिन वह दिखाना चाहती थी कि सभी अच्छी दुकानों में जो भी होता है, वह उनके पास भी होता है।

"ओह, तो यह कल तक आपके पास था!" पिप्पी खुशी से चिल्लाई। "ज़रा बताएँ तो कैसा लगता है? मैंने ज़िंदगी में 'स्पिंक' कभी नहीं देखा। क्या उस पर लाल धारियाँ होती हैं?"

वह सुंदर औरत झेंप गई और उसने कहा, "नहीं, मैं नहीं जानती, वह क्या चीज़ है! बस इतना पता है कि हमारी दुकान में नहीं है।"

निराश होकर दरवाज़े की तरफ जाते पिप्पी ने कहा, "मतलब यही कि मुझे ढूँढते रहना होगा। 'स्पिंक' लिए बिना मैं घर नहीं लौट सकती।"

आगे निकलकर देखा तो लोहे के सामान की एक दुकान मिली। दुकानदार ने बड़े प्यार से बच्चों का स्वागत किया।

"मुझे 'स्पिंक' खरीदना है," पिप्पी ने कहा। "बहुत अच्छा और मज़बूत जो शेरों को मारने के काम आ जाए।"

वह दुकानदार लोमड़ी की तरह चालाक नज़र आ रहा था। "चलो देखें।" कुछ देर तक तो वह असमंजस में कान के पीछे खुजलाता रहा। फिर उसने एक खुरचने वाला औज़ार दिखाकर पिप्पी से पूछा, "यह ठीक रहेगा?"

पिप्पी ने बिगड़कर उसकी तरफ देखा। "इसे समझदार लोग खुरचनेवाला औज़ार कहते हैं। मैं 'स्पिंक' माँग रही हूँ। बच्चा समझ के मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो।"

यह सुनकर वह दुकानदार हँस दिया। उसने माना कि उसके पास 'स्पिंक' नाम की कोई चीज़ नहीं है। उसने कहा, "आगे चौराहे पर एक दुकान है, वहाँ तरह-तरह की नई चीज़ें बिकती हैं।"

"तरह-तरह की चीज़ें," पिप्पी ने बाहर निकलने पर टॉमी और अन्निका से कहा, "मैं जानती हूँ, उस दुकान में 'स्पिंक' नहीं मिलेगा।" फिर अचानक उल्लास से कहने लगी, "शायद यह कोई बीमारी हो। चलो जाकर डॉक्टर से पूछते हैं।"



अन्निका को डॉक्टर का दवाखाना मालूम था, वहीं पर माँ उन्हें बीमार होने पर दिखाने ले जाती थीं।

पिप्पी ने घंटी बजाई तो नर्स ने दरवाज़ा खोला। "मुझे डॉक्टर से मिलना है।" पिप्पी ने जल्दी जताते हुऐ कहा, "यह बहुत गंभीर केस है। बड़ी खतरनाक बीमारी।"

"इस तरफ से आओ," नर्स बोली।

अंदर गए तो देखा डॉक्टर अपने टेबल के पीछे बैठे हुए थे। पिप्पी सीधी उनके पास गई। आँखें बंद कीं और जीभ बाहर लटकाकर खड़ी हो गई।

"क्या हुआ है तुम्हें?" डॉक्टर ने पूछा।

पिप्पी ने अपनी नीली आँखें खोलीं और जीभ अंदर कर ली। "लगता है, मुझे 'स्पिंक' हुआ है," उसने कहा। "मुझे हर वक्त खुजली होती है। सोती हूँ तो आँखें बंद हो जाती हैं। कभी-कभी हिचकी आती है। इस रविवार मैंने बूट पॉलिश और दूध को मिलाकर बनाया एक पकवान खाया, तबसे मेरी तबीयत खराब है। भूख काफी लगती है पर जब मैं अपनी साँस की नली से खाना खा लेती हूँ तो कुछ भी नहीं होता। इसका मतलब यह है कि 'स्पिंक' ही मेरी बीमारी है। क्या यह छूत से लग जाती है?"

डॉक्टर ने पिप्पी का स्वस्थ गुलाबी चेहरा देखकर कहा, "तुम तो अच्छी-खासी, चुस्त-दुरुस्त नज़र आ रही हो। तुम्हें स्पिंक नहीं हुआ है।"

पिप्पी ने एकदम उनका हाथ पकड़कर कहा, "लेकिन इस नाम की बीमारी होती है, है ना?"

"नहीं, ऐसी कोई बीमारी नहीं है," डॉक्टर ने कहा। "अगर है भी तो तुम्हें उससे कोई खतरा नहीं है।"

पिप्पी उदास हो गई। उसने उठकर डॉक्टर को बाय कहा। अन्निका और टॉमी ने भी ऐसा ही किया और वे अपने घोड़े के पास गए जो दवाखाने के फाटक के पास खड़ा था।

डॉक्टर के दवाखाने के पास ही एक तीन मंज़िला मकान था। ऊपर के कमरे की एक खिड़की खुली थी। पिप्पी ने उसकी तरफ इशारा करके कहा, "हो सकता है 'स्पिंक' यहाँ छिपा हो। मैं ऊपर जाकर देख ही लेती हूँ।" पानी के पाइप को पकड़कर पिप्पी ऊपर तक जा पहुँची और फिर हवा में कूदकर खिड़की की चौखट से लटक गई। खिड़की को हाथ से पकड़े, उसने सिर आगे बढ़ाया और अंदर झाँककर देखने लगी।

अंदर दो औरतें बैठी बात कर रही थीं। अचानक खिड़की से झाँकता लाल सिर देखकर उन्हें आश्चर्य का ज़ोरदार झटका लगा। पिप्पी ने पूछा, " 'स्पिंक' आया है यहाँ?"

दोनों औरतें डर के मारे चीखती हुई बोलीं, "यह क्या कह रही हो तुम, बच्ची? क्या कोई भागकर कहीं गया है?"

"यही तो मैं जानना चाहती हूँ," पिप्पी ने कहा।

"कहीं पलंग के नीचे न छुप गया हो!" एक औरत चिल्लाई। "क्या वह काटता भी है?"

"ज़रूर काटता होगा," पिप्पी बोली, "उसके बड़े-बड़े फन होते हैं।"

दोनों औरतें एक दूसरे से चिपक गईं। पिप्पी ने इर्द-गिर्द देखकर उस जगह के बारे में जानने की कोशिश की और कहा, "यहाँ तो 'स्पिंक' का कोई नामोनिशान नज़र नहीं आता। माफ कीजिए, मैंने आपको यों ही तकलीफ दी। सोचा, जब यहाँ से गुज़र ही रही हूँ तो आप लोगों से पूछती जाऊँ।"

पिप्पी जैसे ऊपर आई थी, वैसे ही लौट गई। निराश होकर टॉमी और अन्निका से कहा, "इस शहर में तो 'स्पिंक' कहीं मिला नहीं। चलो घर चलते हैं।"

वे सब घर लौटे और बरामदे के सामने घोड़े से उतरते हुए टॉमी का पैर एक कीड़े पर पड़ने ही वाला था कि पिप्पी ने कहा, "सँभाल के! देखना कि पैर कीड़े पर न पड़े।"

तीनों नीचे झुककर कीड़े को देखने लगे। छोटा-सा था, हरे चमकते पंख धातु की तरह दिपदिप करते।

"कितना सुंदर कीड़ा है!" अन्निका ने कहा। "पता नहीं इसका नाम क्या है?"

"यह गुबरैला नहीं है," टॉमी ने कहा।

"यह जुगनू भी नहीं है," अन्निका ने कहा। "ततैया भी नहीं है। कैसे पता चले कि इसका नाम क्या है?"

अचानक पिप्पी के चेहरे पर खुशी छा गई। "मैं जानती हूँ, यह कौन है! यह है 'स्पिंक'!"

"पक्का पता है?" टॉमी ने पूछा।

"स्पिंक को देखकर मैं न पहचान पाऊँ, क्या यह हो सकता है?" पिप्पी ने कहा, "तुमने कभी देखा है स्पिंक जैसा कुछ ज़िंदगी में?"

पिप्पी ने उस कीड़े को उठाकर एक सुरक्षित जगह पर रख दिया, ऐसे कि उस पर किसी के पैर न पड़ें। "मेरे नन्हे स्पिंक," उसने प्यार से कहा। "मुझे पता था मैं तुम्हें ढूँढ ही लूँगी। कितनी मज़े की बात है न? बगल में छोरा और गाँव में ढिंढोरा! यह किसने सोचा था कि 'स्पिंक' यहीं मिलेगा, विला विल्लाकुला में!"

4 पिप्पी के सवाल-जवाब



गर्मी की छुट्टियाँ देखते ही देखते खत्म हो गईं और टॉमी और अन्निका का स्कूल खुल गया। पिप्पी का मानना था कि उसे बिना स्कूल गए ही काफी शिक्षा मिल चुकी है, इसलिए स्कूल के अंदर कदम रखने की उसे कोई ज़रूरत नहीं है। इस बात का उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ ऐलान भी किया था। पर एक दिन उसे बहुत उकताहट हुई जब पता चला कि 'टाइफॉइड' कैसे लिखा जाता है।

"लेकिन मुझे तो टाइफॉइड कभी हुआ ही नहीं है, तो मुझे उसे कैसे लिखना है, यह न भी पता चले तो कोई बात नहीं," पिप्पी ने कहा, "और कभी मुझे 'टाइफॉइड' हो भी जाता है तो मुझे काफी चीज़ों के बारे में सोचना होगा, मैं उसे कैसे लिखूँ यह मायने नहीं रखेगा।"

"शायद 'टाइफॉइड' तुम्हें कभी न हो!" टॉमी ने कहा।

वह ठीक कह रहा था। पिप्पी अपने पापा के साथ न जाने कहाँ-कहाँ घूम आई थी। अब चूँकि वे दक्षिण समुद्री द्वीप के राजा बन गए थे, पिप्पी विला विल्लाकुला आ गई थी। इतनी जगह घूमकर, कई किस्म का खाना और हज़ारों किस्म का पानी पीकर भी उसे कभी कुछ हुआ नहीं था।

कभी-कभी पिप्पी अपना घोड़ा लेकर टॉमी और अन्निका को लेने उनके स्कूल पहुँच जाती थी। इससे वे दोनों खुश हो जाते थे। उन्हें घोड़े पर बैठकर घर लौटना बहुत अच्छा लगता था। आखिर घोड़े पर सवारी हर बच्चे को थोड़े ही नसीब होती थी?

"पिप्पी, प्लीज़ आज दोपहर आकर हमें ले जाना," टॉमी ने एक दिन कहा। उस दिन उन्हें खाने के बाद फिर से स्कूल लौटना था।

"हाँ! ज़रूर आना!" अन्निका ने कहा, "क्योंकि आज मिस फूलबहार उन बच्चों को कुछ इनाम देनेवाली हैं जो अच्छे हैं और मेहनती भी।"

मिस फूलबहार एक अमीर, बूढ़ी औरत थीं जो उनके स्कूल आया करती थीं। वह अपने पैसे अच्छी तरह सँभाल के रखती थीं और सालभर में 2-3 बार स्कूल जाकर अच्छे बच्चों को तोहफे देती थीं। लेकिन सभी को नहीं। सिर्फ उन बच्चों को जो अच्छे थे और पढ़ाई में मेहनत करते थे। इनाम बाँटने से पहले मिस फूलबहार उनका लंबा-चौड़ा इम्तिहान लेती थीं। इसीलिए तो गाँव के सारे बच्चे उनसे डरते थे। हर रोज़ घर आकर जब वे सोचने लगते कि पहले होमवर्क करें या कुछ और मज़ेदार चीज़, तो उनके माँ या पिताजी कहते, "याद है न, मिस फूलबहार क्या कहती हैं?"

जब भी मिस फूलबहार स्कूल आनेवाली होतीं, उस दिन स्कूल से चाँदी का सिक्का, टॉफियाँ या गुलाबी हाफ पैंट जैसे किसी भी इनाम के बगैर घर लौटना बच्चों को बहुत बड़ा अपमान लगता था। हाँ, जी हाँ, गुलाबी हाफ पैंट! मिस फूलबहार गरीब बच्चों को बनियान भी दिया करती थीं। लेकिन सिर्फ गरीब होने से बात नहीं बनती थी। एक मील में कितने इंच होते हैं जैसे सवालों के जवाब मालूम होना भी ज़रूरी था। तभी तो सब बच्चों को मिस फूलबहार से डर लगता था।

बच्चों को उनके सूप से भी डर लगता था। आप विश्वास नहीं करेंगे लेकिन मिस फूलबहार सब बच्चों के नाप और वज़न लेती थीं। यह जानने के लिए कि उनमें दुबला, फटीचर कौन है जिसे देखकर लगता हो कि उसे घर पर ढंग का खाना नहीं मिलता। जो बच्चे गरीब और दुबले थे, उन्हें खाने के समय मिस फूलबहार के घर जाकर बड़ा डोंगा भर सूप पीना पड़ता था। बच्चे पी भी लेते सूप अगर उसमें ढेर सारे जौ न डले होते, जिनसे सूप सुड़कने में चिपचिपा लगता था।

इस बार भी मिस फूलबहार के आने का दिन आ गया। पढ़ाई थोड़ी देर पहले रोक दी गई और बच्चों को स्कूल के आँगन में इकट्ठा कर

लिया गया। आँगन के बीचों-बीच मिस फूलबहार एक बड़ी-सी टेबल पर बैठी हुई थीं, अपने दो सहायकों के साथ। वे दोनों हर चीज़ लिख लेते थे, जैसे बच्चा गरीब है या अमीर, उसे कपड़ों की ज़रूरत है या नहीं, वह पढ़ाई में कैसा है? क्या उसके भाई-बहन हैं जिन्हें भी कपड़ों की ज़रूरत है, उसका बर्ताव कैसा है...वगैरह...वगैरह। मिस फूलबहार के सवालों का तो जैसे कोई अंत ही नहीं था। चाँदी के सिक्कों वाला एक बक्सा उनके सामने टेबल पर रखा हुआ था। टॉफियों के काफी सारे पैकेट थे, साथ में ही कपड़ों की ढेरी लगा रखी थी – गरम बनियानें, हाफ पैंट और मोज़े!

"सब बच्चे लाइन में आ जाओ!" मिस फूलबहार ने ज़ोर से कहा। "पहली लाइन में वे बच्चे आएँ जिनके भाई या बहन नहीं हैं; दूसरी लाइन में वे आएँ जिनके एक या दो भाई-बहन घर पर हैं, तीसरी लाइन में वे बच्चे आएँ जिनके दो से ज़्यादा भाई-बहन हों।" इस तरह से कतारें बन रही थीं क्योंकि मिस फूलबहार हर चीज़ ढंग से करना चाहती थीं। और फिर उनकी बात थी भी सही क्योंकि जिन बच्चों के घर ज़्यादा भाई-बहनें हैं, उनके पास टॉफियों के बड़े पैकेट जाने चाहिए।

इम्तिहान शुरू हुआ। बच्चे थरथर काँप रहे थे! जिन्हें पूछे हुए सवालों का फौरन जवाब नहीं आता था, उन्हें कोने में खड़ा होने को भेजा जाता था और फिर उन्हें अपने भाई-बहनों के लिए कुछ भी न लिए बगैर, घर जाना पड़ता था। एक टॉफी तक नहीं!

टॉमी और अन्निका अपने स्कूल के काम में सही थे। फिर भी टॉमी के साथ लाइन में खड़ी अन्निका के सिर पर जो रिबन था, वह थरथरा रहा था – शायद फिक्र के मारे। जैसे-जैसे वे मिस फूलबहार के करीब पहुँच रहे थे, टॉमी के चेहरे से हवाइयाँ उड़ने लगी थीं। जब उसकी जवाब देने की बारी आई तो बिना भाई-बहन के बच्चों वाली कतार में हड़बड़ाहट हुई। एक लड़की सबको पीछे धकेलकर आगे आने की कोशिश कर रही थी। पिप्पी के सिवाय वह हो भी कौन सकती थी! उसने बच्चों को पीछे किया और सीधी मिस फूलबहार के सामने जाकर खड़ी हो गई।

"माफ कीजिए, लेकिन जब आपने कतारें बनाने को कहा तब मैं



यहाँ नहीं थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मुझे कौन-सी कतार में खड़े होना चाहिए। मेरे चौदह भाई-बहन जो नहीं हैं, उनमें से 13 भाई बहुत शरारती हैं।"

मिस फूलबहार ने उसे बहुत नापसंदगी से देखा। "जहाँ खड़ी हो, वहीं रहो।" उन्होंने कहा, "लगता है, हमें जल्दी ही तुम्हें उन बच्चों की कतार में भेजना पड़ेगा जो कोने में खड़े कर दिए जाएँगे।"

मिस फूलबहार के सहायकों ने पिप्पी का नाम लिख लिया और उसका वज़न भी, यह तय करने के लिए कि क्या उसे सूप की ज़रूरत है? पिप्पी का वज़न 3 किलो ज़्यादा निकला।

"तुम्हें कोई सूप नहीं मिलेगा!" मिस फूलबहार ने उसे सख़्ती से कहा।

"कभी-कभी, मेरी किस्मत अच्छी होती है!" पिप्पी बोल पड़ी। "अब मुझे सिर्फ उन गुलाबी हाफ पैंटों से बच निकलना है, तो फिर मैं चैन की साँस ले पाऊँगी।"

मिस फूलबहार ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वह किताब उलट-पुलटकर देख रही थीं कि पिप्पी को कौन-सा शब्द लिखने के लिए कहा जाए।

"अच्छा चलो," उन्होंने अंत में कहा, "बताओ टाइफॉइड कैसे लिखोगी?"

"हाँ, हाँ लाइए पेन्सिल।" पिप्पी ने कहा और लिखने बैठी ट- ई- फ- ई- ड।

मिस फूलबहार कड़ुवाहट से हँसीं। "अच्छा?" उन्होंने कहा, "लेकिन इस किताब में तो अलग तरीके से लिखा है।"

"मैं तो खुशकिस्मत हूँ कि आप ने मुझसे यही शब्द लिखने के लिए कहा। ट ई फ ई ड, ऐसे ही लिखती आई हूँ मैं आज तक!" पिप्पी ने जवाब दिया। "और वह चल भी गया, कभी कोई मुश्किल नहीं हुई!"

"लिख लो इसकी बात," मिस फूलबहार ने मुँह बिचकाकर अपने सहायकों से कहा।

"हाँ, ज़रूर!" पिप्पी ने कहा। "मेरे तरीके को लिख लो और जल्दी से जल्दी किताब में छपी गलती सुधार दो।"

"क्या इस सवाल का जवाब मालूम है तुम्हें?" मिस फूलबहार ने पूछा। "महाराजा चार्ल्स की मौत कब हुई थी?"

"ओह, ओह! वे मर भी गए?" पिप्पी ने कहा। "कितनी दुख की बात है कि आजकल लोग मरते जा रहे हैं। अगर उन्होंने अपने पाँव हमेशा सूखे रखे होते तो शायद ऐसा न होता।"

"लिख लो," मिस फूलबहार ने अपने सहायकों से बर्फ जैसी ठंडी आवाज़ में कहा।

"हाँ, बिल्कुल!" पिप्पी ने कहा, "यह भी लिख लो कि हमेशा ऐसे कमरों में सोना चाहिए जहाँ मच्छर आते-जाते हों। रात सोने से पहले एक कप मिट्टी का तेल ज़रूर पीना चाहिए, इससे बहुत ताकत बनती है।"

मिस फूलबहार तंग आ चुकी लगती थीं। "घोड़ों के दाँतों में काले निशान क्यों होते हैं?" उन्होंने सख्ती से पूछा।

"वाकई?" पिप्पी ने पूछा। "आप खुद ही पूछ लीजिए मेरे घोड़े से," उसने इशारा करते हुए कहा। फिर वह प्रसन्नता से हँस पड़ी, "अच्छा हुआ, मैं इसे साथ ले आई, वर्ना आप को कभी पता नहीं चलता कि इसके दाँतों में ये काले निशान क्यों हैं? मुझे इनके बारे में कुछ नहीं पता – और असली बात यह है कि मैं जानना भी नहीं चाहती।"

मिस फूलबहार ने अपने होंठ भींच लिए थे। उनके मुँह की जगह अब सिर्फ एक पतली रेखा नज़र आ रही थी। "यह मेरी तो समझ से बाहर है!" उन्होंने कहा, "मुझे यकीन नहीं होता!"

"वही तो मैं कह रही हूँ," पिप्पी ने खुश होकर कहा। "अगर मैं इसी तरह होशियारी से जवाब देती रही तो गुलाबी हाफ पैंट से बच सकूँगी।"

"लिख लो," मिस फूलबहार ने अपने सहायकों से कहा।

"नहीं, नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे कहने का मतलब वह नहीं था। आप मुझे टॉफियों का एक बड़ा पैकेट दे दें तो वह ठीक होगा।"

"मैं तुमसे बस एक सवाल और पूछती हूँ," मिस फूलबहार ने दाँत पीसते हुए कहा।

"ज़रूर, पूछती रहिए," पिप्पी ने कहा। "इस सवाल-जवाब के खेल में मुझे बड़ा मज़ा आ रहा है।"

"सोचकर जवाब दो।" मिस फूलबहार ने कहा, "सोनू और मोनू केक के हिस्सों के लिए लड़ रहे हैं। अगर सोनू ने एक चौथाई ले लिया तो मोनू को क्या मिलेगा?"

"पेट दर्द!" पिप्पी तपाक से बोली और मिस फूलबहार के सहायकों से बड़ी गंभीरता से कहा, "लिख लो! क्योंकि इससे तो मोनू को पेट दर्द ही मिल सकता है।"

अब मिस फूलबहार पिप्पी से कुछ और कहना-सुनना नहीं चाहती थीं। "तुम इस दुनिया की सबसे बेवकूफ और गंदी लड़की हो! जाओ, इसी वक्त कोने में जाकर खड़ी हो जाओ!" उन्होंने कहा।

पिप्पी उनकी आज्ञा का पालन करते हुए चली तो गई लेकिन गुस्से में कुनमुनाते, "कितनी गलत बात है! मैंने तो हर सवाल का जवाब दिया था।" कुछ ही दूर जाकर उसे कुछ याद आया और बच्चों को पीछे हटाती वह फिर से मिस फूलबहार तक जा पहुँची।

"माफ कीजिए, मैं अपना नाप देना और समुद्र तट से मेरी लंबाई तो भूल ही गई। वह भी तो लिखवाना होगा।" फिर उनके सहायकों से कहा, "लिख लो! मुझे सूप तो बिल्कुल नहीं चाहिए, कुछ किताबें मिलीं तो ठीक होगा।"

"अगर तुम चुपचाप जाकर कोने में खड़ी न हुई तो!" मिस फूलबहार गरज़ीं, "मुझे लगता है, एक लड़की यहाँ ऐसी है जिसकी पिटाई मुझे करनी ही होगी!"

"बेचारी लड़की!" पिप्पी ने कहा, "कहाँ है वह? मेरे पास भेज दीजिए उसे। मैं सब सँभाल लूँगी। लिख लो!"

पिप्पी उस कोने में चली गई जहाँ जिन्हें जवाब नहीं आते थे, वे बच्चे खड़े थे। वहाँ सब उदास थे। कई बच्चे यह सोचकर रोने लगे थे कि अगर वे कोई इनाम, कम से कम टॉफियाँ, जीतकर घर नहीं गए

तो उनके माँ-बाप और छोटे भाई-बहन उनसे क्या कहेंगे!

पिप्पी ने अपने इर्द-गिर्द उदास रोते हुए बच्चे देखे तो उसके गले में भी कुछ फँसने लगा। बड़ी मुश्किल से उस पर काबू करते हुए उसने कहा, "चलो, अब हम हमारे अपने सवाल-जवाबों का खेल खेलते हैं।"

बच्चों को ज़रा अच्छा लगा लेकिन पिप्पी की बात समझ में नहीं आई।

"दो कतारें बनाओ," पिप्पी ने कहा। "एक कतार में वे बच्चे होंगे जो महाराजा चार्ल्स की मौत के बारे में जानते हैं और दूसरी कतार उनकी जिनको इस बारे में कुछ नहीं मालूम।"

लेकिन महाराजा चार्ल्स मर चुके हैं, यह तो सभी जानते थे, इसलिए कतार एक ही बनी।

"यह ठीक नहीं है," पिप्पी ने कहा। "कम से कम दो कतारें तो होनी ही चाहिए, नहीं तो लगेगा कुछ गड़बड़ है। मिस फूलबहार से पूछ लो।" मिनट भर सोचकर पिप्पी ने कहा, "हाँ, यह ठीक रहेगा! सब होशियार और शरारत में माहिर बच्चे एक कतार बनाओ।"

"दूसरी कतार में कौन होगा?" एक छोटी-सी लड़की ने पूछा जो शरारती नहीं कहलाना चाहती थी।

"दूसरी कतार में वे होंगे जिन्हें शरारत ठीक से करनी नहीं आती।" पिप्पी ने कहा।

उधर मिस फूलबहार की टेबल पर सवाल-जवाब की झड़ी लगातार चल रही थी और बीच-बीच में कुछ बच्चे रोने की हालत में पिप्पी के गुट में आ जाते थे।

"अब एक मुश्किल काम करना है," पिप्पी ने कहा। "अब हम देखेंगे कि आपने अपना होमवर्क किया है या नहीं।" उसने नीली शर्ट वाले एक दुबले-पतले लड़के से पूछा, "सुनो, इधर आओ। क्या तुम ऐसे किसी का नाम बता सकते हो जो मर चुका है?"

वह लड़का ज़रा चौंक गया और उसने कहा, "सत्तावन नंबर में रहनेवाली अम्माजी!"

"तुम्हें कैसे पता?" पिप्पी ने पूछा, "किसी और को भी जानते हो?" लड़के ने न की। पिप्पी ने अपने हाथ माइक्रोफोन की तरह मुँह के सामने किए और स्टेज से बोलने के अंदाज़ में कहा, "महाराजा चार्ल्स! ठीक है न?"

पिप्पी ने बच्चों से पूछा कि वे ऐसे कितने लोगों को जानते हैं जो मर चुके हैं। बच्चों ने एक साथ कहा, "57 नंबरवाली अम्माजी और महाराजा चार्ल्स!"

"यह इम्तिहान तो मेरी उम्मीद से बेहतर चल रहा है," पिप्पी ने कहा। "अब मैं सिर्फ एक और बात पूछती हूँ। मान लो कि एक केक सोनू और मोनू को बाँटकर खाना है। सोनू खाना नहीं चाहता, वह कोने में बैठा ब्रेड खा रहा है, तो पूरा केक ज़बरदस्ती किसे खाना पड़ेगा?"

"मोनू को," सारे बच्चे चिल्लाए।

"पता नहीं, तुम जैसे होशियार बच्चे पूरी दुनिया में कहीं मिलेंगे या नहीं।" पिप्पी बोली, "तुम सबको इनाम मिलेगा।"

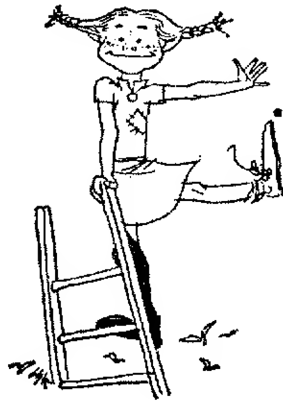
अपनी जेब से उसने सोने के सिक्के निकाले और हर बच्चे को एक-एक करके बाँट दिए। फिर अपने बस्ते से उसने बड़ी-बड़ी टॉफियाँ निकालकर हर बच्चे को दे दीं।

इसलिए जो बच्चे बुद्धू साबित हुए थे, उनके गुट में वाकई रौनक हो गई थी। जब मिस फूलबहार का इम्तिहान खत्म हुआ और सब घर जाने लगे तो सबसे पहले कोने में खड़े किए गए बच्चे भाग गए। लेकिन जाने से पहले उन्होंने पिप्पी को घेरकर कहा, "थैंक्यू पिप्पी! सोने के सिक्के और टॉफियों के लिए ढेर सारा धन्यवाद!"

"यह कुछ खास नहीं है।" पिप्पी ने कहा, "मुझे थैंक्यू कहने की कोई ज़रूरत नहीं है। पर यह न भूलना कभी कि गुलाबी ऊनी हाफ पैंट से तुम्हें बचानेवाली मैं ही हूँ।"

5

पिप्पी को चिट्ठी मिली



दिन गुज़रते गए और अचानक पतझड़ का मौसम आ गया। पतझड़ के बाद सर्दियाँ शुरू हो गईं। ऐसी सर्दी और ठंड जो खत्म होने का नाम ही न ले। टॉमी और अन्निका को स्कूल में बहुत काम होता था, हर आने वाले दिन के साथ थकान बढ़ती जा रही थी और रोज़ सुबह जल्दी उठना मुश्किल होता था। उनकी माँ को उनके खाने-पीने को लेकर फ़िक्र होने लगी थी, दोनों दुबले हो गए थे। और तो और, उन दोनों को अचानक खसरा हो गया था और उसके कारण दो हफ्ते बिस्तर में रहना पड़ा था।

अगर पिप्पी हर रोज़ उनकी खिड़की के बाहर खड़ी होकर कुछ अजीबोगरीब कारनामे न करती तो बिमारी के वे दो हफ्ते बहुत बोरियत से भरे होते। डॉक्टर ने उसे टॉमी और अन्निका के कमरे में जाने की मनाही की थी, जो पिप्पी ने मानी, पर यह कहते हुए कि वह हर रोज़ दोपहर में, अपने तेज़ नाखूनों से 200 लाख खसरे के जंतुओं का खात्मा कर सकती है।

लेकिन खिड़की से बाहर वह जो भी करना चाहे, उसे कोई रोक-टोक नहीं थी। बच्चों का कमरा दूसरी मंज़िल पर था, इसलिए पिप्पी को सीढ़ी लगाकर खिड़की तक पहुँचना होता था। टॉमी और अन्निका को हर रोज़ उसका इंतज़ार रहता कि आज पिप्पी किस सूरत

में मिलने आएगी। पिप्पी लगातार दो दिन कभी एक-सी नहीं होती थी। कभी वह छत साफ करनेवाली जमादारनी बनकर आती तो कभी सफेद चादर में छिपा भूत बन जाती। एक बार वह जादूगरनी बनकर भी आई थी। ऐसे भेस बदलकर वह खिड़की के बाहर छोटे-छोटे नाटक करती जिनमें वह अकेली ही सारी भूमिकाएँ निभाती। कभी-कभी वह जिस सीढ़ी से चढ़कर आती थी, उसी पर कसरत करने लगती। और कसरत भी क्या? वह सीढ़ी के ऊपरी सिरे तक चढ़ जाती और उसे झूले की तरह आगे-पीछे घुमाती, जिससे टॉमी और अन्निका डर से चीखने लगते। उन्हें ऐसा लगता कि अब पिप्पी धड़ाम से नीचे गिर जाएगी। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। जब वह नीचे उतरती होती तो वह सिर नीचे और पैर ऊपर करके चलती। उसकी ये करामातें देखने में टॉमी और अन्निका को बड़ा मज़ा आता।

पिप्पी हर रोज़ बाज़ार जाकर सेब, संतरे और टॉफियाँ खरीदती। वह ये सारी चीज़ें एक थैले में रखती और श्रीमान् नीलसन एक लंबी डोर से उसे बाँधकर ऊपर ले जाते। टॉमी खिड़की खोलकर उन चीज़ों को अंदर ले जाता और खाली थैला नीचे भेज देता। कभी श्रीमान् नीलसन पिप्पी से चिट्ठियाँ भी ले आते। पिप्पी जब और कामों में व्यस्त होती तो टॉमी और अन्निका से मिल नहीं पाती पर वह संदेश ज़रूर भेजती। लेकिन ऐसा कम ही होता था, पिप्पी का लगभग पूरा दिन सीढ़ी पर ही तो बीतता था। कभी वह अपनी नाक खिड़की के शीशे पर दबाती और पलकें ऊपर की तरफ मोड़ देती और डरावने चेहरे बनाती रहती। उसने टॉमी और अन्निका से कहा था उसे देखकर जो नहीं हँसेगा उसे वह एक सोने का सिक्का देगी। लेकिन यह तो हो ही नहीं सकता था। वे दोनों इतना हँसते कि अपने बिस्तरों से नीचे गिर जाते।

धीरे-धीरे वे ठीक हो गए और घूमने-फिरने लगे। लेकिन वे बहुत कमज़ोर हो गए थे। जब वह ठीक होकर खाना खाने वाले थे, पिप्पी उनके साथ टेबल पर बैठ गई। उसने देखा कि उन्हें दलिया खाना था जो उनके गले से उतर नहीं रहा था। उन्हें वहाँ बैठे, बेमनी से चम्मच से खेलते देखा तो उनकी माँ चिंता करने लगीं।

"खाओ बच्चो, यह तुम्हारे लिए अच्छा है," माँ ने कहा।

अन्निका ने अपनी थाली में चम्मच घुमाया और खाने का मन बनाने की एक असफल कोशिश की। "क्या यह खाना ज़रूरी है?" उसने शिकायत के अंदाज़ में पूछा।

"क्या पागलों जैसी बातें करती हो!" पिप्पी ने कहा। "तम्हें अपना दलिया खाना ही होगा। नहीं तो तुम बड़ी और ताकतवाली कैसे बनोगी? अगर तुम बड़ी और ताकतवाली न बनी तो तुम अपने बच्चों को सख्ती से दलिया कैसे खिलाओगी? जब कभी बच्चे होंगे, उन्हें भी तो पकड़-पकड़कर दलिया खिलाना होगा! नहीं अन्निका, यों काम न बनेगा। अगर तुम्हारी बात सुनकर सभी ऐसा बोलने लगे तो दलिया न खाने से होने वाली भयानक बीमारी चारों तरफ शुरू हो जाएगी।"

टॉमी और अन्निका ने दो-दो चम्मच दलिया गटक डाला। पिप्पी उन्हें बड़ी सहानुभूति से देखती रही।

"तुम लोगों को कुछ देर के लिए समुद्री जहाज़ पर जाना चाहिए," उसने अपनी कुर्सी आगे-पीछे करते हुए कहा, "ऐसा करोगे तो तुम फौरन जान जाओगे कि खाना किसे कहते हैं! मुझे याद है, जब मैं पापा के साथ समुद्री सफर पर गई हुई थी तो वहाँ एक हट्टा-कट्टा कर्मचारी था – फिरदौस नाम का। एक दिन पता चला कि फिरदौस सिर्फ सात प्लेटें दलिया खाकर रुक गया है। इससे ज़्यादा उससे खाया नहीं जा रहा था। फिरदौस के इतना कम खाने की वजह से मेरे पापा को बहुत चिंता होने लगी। " 'फिरदौस, मेरे यार,' उन्होंने रुँधी हुई आवाज़ में कहा, 'तुम्हें अपचन की भयानक बीमारी हो गई है। आज तुम अपने बिस्तर में लेटे रहना। तुम्हारी सेहत आराम से और थोड़ा बहुत खाते रहने से ठीक हो जाएगी। मैं तुम्हें देखने आ जाऊँगा और साथ में ताकत की कोई दुवाई भी लाऊँगा!' "

"दुवाई नहीं दवाई!" अन्निका ने कहा।

"फिरदौस लड़खड़ाता हुआ सोने चला गया। अब उसे भी फिक्र होने लगी थी कि यह कैसी बीमारी है जिसकी वजह से सात प्लेट दलिया के ऊपर कुछ खाया नहीं जा रहा!" पिप्पी बोली। "उसे लग रहा था, पता नहीं पापा के शाम को दुवाई के साथ लौटने तक वह बचेगा या नहीं। अजीब-सी शीशी थी उस दुवाई की। काली, गंदी लगने वाली और भी चाहे जो कह लो। लेकिन वह निकली बड़ी काम की। फिरदौस जैसे ही चम्मच भर पी गया उसके मुँह से आग की लपटें आने लगीं। उसने ऐसी चीख मारी कि हमारा जहाज़ ऊपर से नीचे तक डोल गया। उसकी चीख पचास मील की दूरी तक जितने भी जहाज़ थे, उन तक पहुँच गई।

"अभी रसोइये ने नाश्ते के बर्तन साफ नहीं किए थे कि फिरदौस दनदनाता हुआ ऊपर आ गया और ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा। वह फुँफकारता हुआ खाने की टेबल पर जा बैठा और उसने दलिया खाना शुरू किया। वह 94 प्लेट दलिया खा गया और फिर भी ऐसा शोर मचा रहा था, जैसे न जाने कब से भूखा हो। लेकिन अब दलिया तो खत्म हो चुका था, इसलिए रसोइया दरवाजे पर खड़ा रहा और एक-एक करके ठंडे उबले आलू फिरदौस के खुले मुँह में डालता गया। बीच में लगा कि अब उसका पेट भर गया है लेकिन फिरदौस फिर गुस्से से गुरगुराया और रसोइया समझ गया कि अगर वह खुद की खैर चाहता है तो उसे फिरदौस को खिलाते रहना होगा। लेकिन दुर्भाग्य से उसके पास सिर्फ 996 आलू पड़े थे। जब उसने फिरदौस के मुँह में आखिरी आलू फेंका, वह वहाँ से भाग गया और उसने दरवाज़े पर बाहर से ताला लगा लिया।

"हम सब बाहर खड़े खिड़कियों से फिरदौस को देख रहे थे। वह भूखे बच्चे की तरह भुनभुना रहा था। उसने फटाफट ब्रेड की टोकरी, गिलास और पंद्रह प्लेटें खा लीं, और टेबल पर हमला किया। उसे तोड़ फोड़कर, पीस-पीसकर खा गया। कुछ इस तरह कि उसके मुँह से लकड़ी का भूसा निकलने लगा। उसके हाव-भाव से लगा कि उसे टेबल पसंद आई है; वह मुँह में पानी भर-भरकर उसे खा रहा था। उसने कहा कि बचपन के बाद आज कहीं उसने अच्छा सैंडविच खाया है। यह सब

देखकर पापा को तसल्ली हो गई कि फिरदौस ठीक हो गया है। वह उसके पास जाकर समझाने लगे कि अब दो घंटे बाद खाना मिलेगा, तब तक तुम्हें इंतज़ार करना होगा। खाने में शलगम का भुरता और भुना हुआ गोश्त होगा। 'कप्तान साहब,' फिरदौस अपना मुँह पोंछता हुआ बोला, 'प्लीज़, यह बताइए कि खाना कब मिलेगा? क्या आज हम थोड़ा पहले नहीं खा सकते?' उसके चेहरे से भूख और खाने के लिए ललक साफ झलक रही थी।"

पिप्पी ने गर्दन एक तरफ झुकाई और टॉमी और अन्निका की प्लेटें देखीं और कहा, "इसीलिए तो मैं कह रही हूँ कि तुम्हें कहीं समुद्र की सैर करने जाना चाहिए। इससे तुम्हारी भूख जल्दी से लौट आएगी।"

तभी बाहर से डाकिये की आवाज़ आई। वह टॉमी के घर से गुज़रता आगे विला विल्लाकुला जा रहा था। उसने पिप्पी को खिड़की से देख लिया था। वह बाहर से चिल्लाया, "पिप्पी लंबे मोज़े, आपके लिए एक चिट्ठी है।"

सुनकर पिप्पी को इतना आश्चर्य हुआ कि वह कुर्सी से गिरती-गिरती बची। "चिट्ठी? मेरे लिए! सच्ची चिट्ठी? मतलब, सचमुच की चिट्ठी? पहले दिखाओ तो यकीन आएगा!"

लेकिन सचमुच चिट्ठी आई थी। उस पर रंगबिरंगे अजीब-से टिकट लगे हुए थे। "टॉमी, ज़रा पढ़कर तो सुनाओ क्या लिखा है?" पिप्पी ने कहा।

टॉमी पढ़ने लगाः

मेरी प्यारी पिप्पीलोटा,

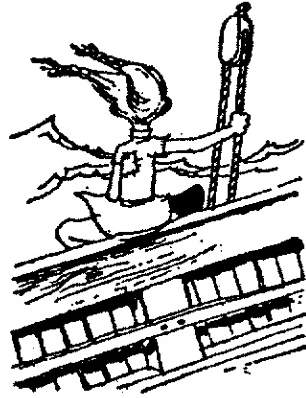
जब तुम्हें यह चिट्ठी मिल जाए, तो तुम बंदरगाह पर जाकर अपने जहाज़ की राह देखना क्योंकि अब मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ। मैं तुम्हें अपने साथ कुर्रकुर्रदत्त द्वीप ले आऊँगा। तुम्हें कुछ दिन तो आकर यह देश देखना चाहिए जिसके तुम्हारे पापा बड़े शक्तिशाली राजा हैं। यहाँ सब बहुत अच्छा है जो तुम्हें भी पसंद आएगा। अपने घर जैसा ही लगेगा। मेरे राज्य की सारी जनता भी राजकुमारी पिप्पीलोटा से मिलने

को बहुत आतुर है। उन्होंने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुन रखा है। तो फिर अब बात तय हो गई, यही समझ लेना। तुम आ रही हो यह मेरी इच्छा है। एक बड़ा प्यार और ढेर सारी शुभकामनाएँ भेज रहा है तुम्हारा बूढ़ा बाप,

महाराजा इफ्राईम प्रथम लंबे मोज़े
कुर्रकुर्रदत्त द्वीप के प्रमुख

जब टॉमी ने पत्र पढ़ना खत्म किया, रसोई में पूरी शांति छाई हुई थी।

6
पिप्पी समुद्री जहाज़ पर



और फिर एक दिन प्यारी सी सुबह पिप्पी के पापा का जहाज़ बंदरगाह आ पहुँचा। उस पर कई झंडे और पताकाएँ लगी हुई थीं। गाँव का बैंड भी वहाँ मौजूद था जो पूरे जोश से स्वागत का संगीत बजा रहा था। पिप्पी अपने पापा महाराजा इफ्राईम प्रथम लंबे मोज़े का स्वागत कैसे करती है, यह देखने के लिए सारा गाँव इकट्ठा हुआ था। पास में कैमरा लिए एक फोटोग्राफर भी खड़ा था, इस यादगार घड़ी की तस्वीर लेने।

पिप्पी बेसब्री से ऊपर नीचे कूद रही थी। जैसे ही जहाज़ किनारे आया और ज़मीन पर आने के लिए लकड़ी का फट्टा लग गया तो पिप्पी और उसके पापा कप्तान लंबे मोज़े एक दूसरे की तरफ दौड़ पड़े, खुशी से दोहरे होते। कप्तान लंबे मोज़े इतने खुश थे कि पिप्पी को उन्होंने कई बार ऊपर हवा में उछालकर पकड़ लिया। पिप्पी भी बहुत खुश थी; उसने अपने पापा को और भी ज़्यादा ऊपर हवा में उछालकर पकड़ लिया। वहाँ एक ही आदमी था जो इस मौजमस्ती से खुश नज़र नहीं आ रहा था, वह था बेचारा फोटोग्राफर! जितनी बार उसने फोटो लेने की कोशिश की, उतनी बार या तो पिप्पी हवा में थी या उसके पापा।

टॉमी और अन्निका ने भी आगे आकर कप्तान लंबे मोज़े को नमस्ते की। लेकिन कितने बेरंग और सूखे से लग रहे थे वे दोनों! बीमारी से उठने के बाद पहली बार वे बाहर निकले थे।



पिप्पी को जहाज पर जाकर फिरदौस और उसके बाकी पुराने दोस्तों को मिलना था। टॉमी और अन्निका भी उसके पीछे चल दिए। इतनी दूर से आए जहाज़ पर घूमते हुए उन्हें काफी अजीब-सा लग रहा था। कुछ नज़र से छूट न जाए, यह सोचकर वे आँखें बड़ी करके चारों तरफ देख रहे थे। उन्हें आगातोन और थिओ को देखने का बड़ा मन था पर पिप्पी ने बताया कि अब वे इस जहाज़ पर नहीं, कहीं और नौकरी करते हैं।

पिप्पी ने हर नौचालक को इतने ज़ोर से प्यार किया, झप्पी दी कि उसके बाद, काफी देर तक वे हाँफते नज़र आए। फिर उसने कप्तान लंबे मोज़े को अपने कंधों पर बिठा लिया और वहाँ पर जमा भीड़ से गुज़रते हुए, वह उन्हें घर ले आई। टॉमी और अन्निका हाथ में हाथ डाले, उसके पीछे-पीछे चलते रहे।

''महाराज इफ्राईम की जय!'' लोगों ने नारा लगाया। सभी को लग रहा था कि यह उनके छोटे से गाँव के लिए एक बड़ा महत्वपूर्ण दिन है।

कुछ ही घंटों बाद कप्तान लंबे मोज़े विला विल्लाकुला में अपने बिस्तर पर आराम से सोए दिखाई दिए। उनके खर्राटों से पूरा घर काँप रहा था। पिप्पी, टॉमी और अन्निका अभी खाने की मेज़ पर बैठे हुए थे जहाँ बचा-खुचा खाना पड़ा था। टॉमी और अन्निका चुपचाप थे, कुछ सोच रहे थे। किसके बारे में? अन्निका को लग रहा था कि जब उनके हालात इतने बिगड़ गए हैं, तो क्या मर जाना ही अच्छा न होगा? टॉमी वहाँ पर बैठा सोच रहा था कि इस दुनिया में मौजमस्ती जैसी कुछ चीज़ है भी या नहीं? उसे तो कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था, ज़िंदगी बकवास लग रही थी।

लेकिन पिप्पी बड़ी खुश थी। वह श्रीमान् नीलसन को, जो फिलहाल प्लेटों के बीच घूम रहे थे, प्यार से थपकियाँ दे रही थी। उसने प्यार से टॉमी और अन्निका को भी थपथपाया, कभी सीटी बजाते तो कभी गाते हुए। बीच में कभी वह नाच भी रही थी। वह कुछ देर तक अपने आप में इतनी मस्त थी कि टॉमी और अन्निका बुझे हुए से हैं, इसका उसे पता ही न चला।

''कुछ दिनों के लिए समुद्री जहाज पर जाकर रहना बड़ा मज़ेदार होगा,'' उसने कहा, ''ज़रा सोचो तो आगे खुला सागर फैला पड़ा है और आज़ादी ही आज़ादी है!''

टॉमी और अन्निका ने आह भरी।

''और मुझे कुर्रकुर्रदत्त द्वीप को देखने की भी बहुत उत्सुकता है। सोचो तो, समुद्र तट पर रेत में आराम से लेट जाऊँगी, पैर दक्षिण प्रशांत सागर में होंगे, और जैसे ही मुँह खोलूँगी, एक पका हुआ केला उसमें अपने आप आ टपकेगा!''

टॉमी और अन्निका ने आह भरी।

''वहाँ के बच्चों के साथ खेलने में बड़ा मज़ा आएगा।'' पिप्पी बोलती गई।

टॉमी और अन्निका ने आह भरी।

''तुम आहें क्यों भर रहे हो?'' पिप्पी ने पूछा, ''क्या तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा कि मैं वहाँ के बच्चों के साथ खेलूँ?''

''ज़रूर!'' टॉमी ने कहा, ''हम बस यही सोच रहे थे कि तुम्हें विला विल्लाकुला लौटने में तो काफी दिन लगेंगे।''

''हाँ, वह तो है!'' पिप्पी ने चहकते हुए कहा। ''लेकिन उसका मुझे कोई दुख नहीं है। मुझे लगता है, कुर्रकुर्रदत्त द्वीप पर काफी मज़ा आएगा।''

अन्निका के चेहरे से रंग उड़ता जा रहा था। दुखी चेहरे से पिप्पी को देखते हुए उसने पूछा, ''पिप्पी, तुम कब तक वापस आओगी?''

''पता नहीं! अभी से कैसे बताऊँ? शायद क्रिसमस तक!'' पिप्पी ने कहा।

अन्निका ने दुख से कहा, ''उफ्फ़!''

''क्या पता,'' पिप्पी ने कहा, ''शायद कुर्रकुर्रदत्त द्वीप मुझे इतना अच्छा लगे कि वहीं पर हमेशा रहने का मन बन जाए और वापस आऊँ ही ना!...ट्रा ला ला ला,'' वह गाने लगी और दो-चार कलाबाज़ियाँ लगा दीं। ''भाई, जो कभी स्कूल न गई हो, उस लड़की को राजकुमारी बनने का मौका मिले, तो क्यों न अच्छा लगे?''

टॉमी और अन्निका उतरे हुए चेहरे से उसे घूरते रहे। अचानक अन्निका टेबल पर सिर रखकर रोने लगी।

"लेकिन मुझे लगता नहीं है कि मुझे हमेशा के लिए वहीं बस जाना अच्छा लगेगा।" पिप्पी ने कहा, "राजकुमारी की ज़िंदगी से भी उकताहट हो सकती है। ऐसे में तुमसे मैं कहूँगी, टॉमी और अन्निका चलो, विला विल्लाकुला चलें।"

"यह पढ़कर हमें बहुत अच्छा लगेगा!" टॉमी ने कहा।

"पढ़कर? क्यों, तुम्हारे कान नहीं हैं क्या? लिखने-विखने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मैं सीधा-साफ कह दूँगी कि टॉमी, अन्निका, विला विल्लाकुला लौटने का वक्त आ गया है।"

अन्निका ने टेबल से सिर उठाया और टॉमी ने पूछा, "इसका क्या मतलब हुआ?"

"क्या मतलब हुआ?" पिप्पी ने कहा। "क्या तुम्हें सीधी-सादी बात का मतलब भी नहीं पता? या मैं तुम दोनों से कहना भूल गई कि तुम भी मेरे साथ कुर्रकुर्रदत्त द्वीप चल रहे हो? मुझे लगता है, मैंने कहा तो था!"

टॉमी और अन्निका कूदकर अपने पैरों पर खड़े हो गए। उनकी साँसें तेज़ चल रही थीं। तभी टॉमी ने कहा, "तुम भी क्या बात करती हो! हमारे माँ-बाप इसकी इजाज़त कभी नहीं देंगे।"

"ज़रूर देंगे!" पिप्पी ने कहा। "मैंने तुम्हारी माँ से बात कर ली है।"

अगले पाँच सेकंड विला विल्लाकुला के रसोईघर में सन्नाटा छाया रहा। फिर टॉमी और अन्निका की ज़ोरदार चीखों की आवाज़ आई, दोनों खुशी से पागल हुए जा रहे थे। श्रीमान् नीलसन, जो वहाँ बैठे अपनी टोपी पर मक्खन लगा रहे थे, आश्चर्य से ऊपर देखने लगे। उन्हें और भी आश्चर्य हुआ जब टॉमी और अन्निका हाथों में हाथ डाले पागलों की तरह नाचने लगे। इतनी ज़ोर से नाचे और इतना शोर मचाया कि छत से लटकता लैंपशेड ज़मीन पर आ गिरा और टूट गया। फिर श्रीमान् नीलसन ने भी मक्खन लगाने की छुरी खिड़की से बाहर फेंक दी और नाच में शामिल हो गए।

"क्या यह सच्ची सच्ची सच है?" टॉमी ने पूछा। अब वे ज़रा शांत हुए थे और एक जगह बैठकर बात कर रहे थे। पिप्पी ने हाँ में सिर हिलाया। हाँ, यह बात सच थी! टॉमी और अन्निका भी कुर्रकुर्रदत्त द्वीप जा रहे थे।

पूरी बात जानने के लिए गाँव की औरतें आ-आकर टॉमी और अन्निका की माँ से पूछती जा रही थीं, "क्या तुम बच्चों को वाकई पिप्पी लंबे मोज़े के साथ दक्षिण समुद्र के उस द्वीप पर भेज रही हो? यह सच नहीं है, तुम मज़ाक कर रही हो न?"

अन्निका की माँ ने कहा, "क्यों न भेजूँ मैं बच्चों को? बच्चे बीमार थे, डाक्टर ने कहा था इनके लिए बदलाव ज़रूरी है। और जहाँ तक पिप्पी की बात है, उसने टॉमी और अन्निका को कभी कुछ होने नहीं दिया है। उन्हें वह सबसे ज़्यादा प्यार करती है।"

"लेकिन वह है *पिप्पी लंबे मोज़े ही!"* वे औरतें नाक चढ़ाकर कहतीं।

"बिल्कुल सही!" अन्निका की माँ का जवाब होता, "पिप्पी लंबे मोज़े के तौर तरीके गड़बड़ हो सकते हैं पर उसका दिल बहुत साफ है!"

बसंत ऋतु की वह ठंडी सुबह थी जब टॉमी और अन्निका ज़िंदगी में पहली बार अपने गाँव से पिप्पी के साथ बाहर निकले। वे जहाँ जा रहे थे, वह दुनिया कुछ अलग ही थी। वे तीनों पिप्पी के पापा के जहाज़ पर चढ़ गए और रेलिंग से इर्दगिर्द देख रहे थे – जहाज़ के पाल में अब हवा भर रही थी। शायद यह कहना ठीक होगा कि वे तीन नहीं पाँच थे – घोड़ा और श्रीमान् नीलसन को मिलाकर।

उनकी क्लास के कई दोस्त उन्हें विदा करने बंदरगाह पर आए थे – उन सबकी आँखों में ऐसा मौका न मिलने के कारण आँसू थे और थोड़ी सी ईर्ष्या भी। कल उन सबको रोज़ की तरह स्कूल जाना था। भूगोल के होमवर्क में दक्षिण प्रशांत सागर में जो द्वीप हैं, उनकी जानकारी रटनी थी! और यहाँ टॉमी और अन्निका को कम से कम कुछ दिनों के लिए स्कूल के काम से छुट्टी मिली थी। "उनके स्कूल से

उनकी सेहत ज़्यादा महत्वपूर्ण है," डॉक्टर ने कहा था। "और दक्षिण समुद्री द्वीपों के बारे में वे खुद के अनुभव से सीखेंगे," पिप्पी ने बताया था।

बच्चों को विदा करने टॉमी और अन्निका के माँ बाप भी आए हुए थे। उन्हें रूमाल से आँसू पोंछते देखकर टॉमी और अन्निका का गला भर आया। लेकिन तब भी भाई-बहन अपनी खुशी से मुँह नहीं मोड़ सके, वे इतने खुश थे कि वह मन में समा नहीं रही थी।

धीरे-धीरे जहाज़ बंदरगाह को छोड़कर समुद्र में आगे बढ़ने लगा।

"टॉमी और अन्निका!" उनकी माँ चिल्लाईं, "जब उत्तरी सागर पहुँचो, तो अंदर से दो-दो बनियानें पहनना और..."

लेकिन उनकी बात ज़्यादा दूर तक सुनाई नहीं दी क्योंकि बाकी सारी भीड़ ज़ोर-शोर से "बाय-बाय!" कर रही थी, घोड़ा खुशी से हिनहिना रहा था, पिप्पी खुशी से चिल्लाए जा रही थी, और कप्तान लंबे मोज़े अपनी नाक साफ करते बिगुल बजाने जैसी आवाज़ें लगा रहे थे।

सफर शुरू हुआ था। अब जहाज़ सितारों से जड़े आसमान के नीचे चलता जा रहा था। जहाज़ की नाक के आगे से बर्फ की चट्टानों के हटने की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी और पाल में भरी हवा से एक अनोखा संगीत बज दे रहा था।

"ओह पिप्पी!" अन्निका ने कहा, "मुझे इतना अजीब-सा लग रहा है। सोच रही हूँ कि बड़ी होकर मैं भी समुद्री डाकू बनूँगी।"

7
पिप्पी पहुँची कुर्रकुर्रदत्त द्वीप



"वह देखो कुर्रकुर्रदत्त द्वीप!" पिप्पी ने बोट की रेलिंग से एक दिन सुबह दूर कहीं दिखाते हुए कहा।

इस यात्रा पर निकले अब उन्हें कई दिन, हफ्ते, महीने हो गए थे। बीच में तूफान आए थे तो कभी शांत, स्तब्ध समुद्र हुआ करता था रात की दूधिया चाँदनी में चमचमाता। कभी गरजते काले बादलों से आसमान घिरा हुआ नज़र आता था, तो कभी सूरज की सीधी पहुँचने वाली गर्मी जीना मुश्किल कर देती थी। उन्हें समुद्री जहाज़ पर रहने की ऐसी आदत हो गई थी कि टॉमी और अन्निका भूल गए थे कि उन्हें अपने घर में, छोटे से गाँव में कैसा लगा करता था!

अगर उनकी माँ अब उन्हें देखतीं तो उन्हें अपनी आँखों पर यकीन नहीं आता। गालों से उड़ा हुआ रंग और सूखे हुए चेहरे गई-बीती बात हो चुके थे। अब वे भूरे और स्वस्थ लग रहे थे – पिप्पी के साथ हर समय दौड़ते, कूदते रहते थे। जब मौसम में गर्मी बढ़ने लगी, तो उन्होंने कपड़े उतार दिए और गर्म कपड़ों की जगह वे सूती पतली धोतियों में घूमते नज़र आने लगे।

"कितना मज़ा आ रहा है!" टॉमी और अन्निका रोज़ सुबह उठते ही कहा करते थे। वे दोनों पिप्पी के साथ एक कमरे में रहते थे।

कई बार पिप्पी पहले से उठी, काम में जुटी नज़र आती थी।

उसके पापा कप्तान लंबे मोज़े ग़र्व से कहते, "आज तक सात समुंदर पार करने वाले नाविकों में मेरी बेटी जितना बढ़िया कोई नहीं हुआ!" वे ठीक कह रहे थे। पिप्पी बड़ी कुशलता से उनका जहाज़ चलाती थी, समुद्र के नीचे जो बड़ी बड़ी चट्टानें या टकराने वाली चीज़ें थीं, उन में से वह बहुत ध्यान से रास्ता बना लेती थी।

और अब वह सफर खत्म होने जा रहा था।

"सामने देखो, कुर्रकुर्रदत्त द्वीप दिखाई दे रहा है!" पिप्पी चिल्लाई।

हरे भरे ताड़ के वृक्षों की छाया में बहुत ही सुंदर लगने वाला वह द्वीप चारों तरफ से गहरे नीले समुद्र से घिरा हुआ था।

दो घंटों बाद उनका जहाज़ द्वीप के बाईं तरफ के किनारे पर जा पहुँचा। कुर्रकुर्रदत्त द्वीप के सभी नागरिक, आदमी, औरतें और बच्चे अपने राजा का और उनकी लाल बालों वाली बेटी का स्वागत करने वहाँ मौजूद थे। जब जहाज़ से उतरने का लकड़ी का फट्टा आधा समुद्र और आधा ज़मीन पर डाला गया तो चारों तरफ खुशी की आवाज़ें उठती सुनाई दीं।

"उसमकुरा, कुसमकुरा!" वे चिल्ला रहे थे, जिसका मतलब था, "लौटने पर स्वागत है, मोटे, गोरे, महाराज!"

राजा इफ्राईम बड़ी शान से जहाज़ से उतरे। उन्होंने नीला मखमली सूट पहना था। आगे के डेक पर खड़ा फिरदौस अपने बाजे पर कुर्रकुर्रदत्त का नया राष्ट्रगीत बजाने लगा – "लो आए हमारे राजा चमचमाते, धमधमाते!"

राजा इफ्राईम ने हाथ ऊपर उठाकर लोगों का अभिवादन करते हुए कहा, "मुओनी मनाना!" जिसका मतलब था, "तुम सबको मेरा प्रणाम!"

उनके बाद पिप्पी उतरी। उसने अपने घोड़े को हमेशा की तरह ऊपर उठा रखा था। उसे देखते ही उत्तेजना की लहर कुर्रकुर्रदत्त के निवासियों में फैल गई। पिप्पी और उसकी गज़ब की ताकत के बारे में उन्होंने सुन तो रखा था पर अपनी आँखों से देखना एक खास बात ज़रूर थी। टॉमी, अन्निका और बाकी के लोग भी उतरे लेकिन उस वक्त

तो सारी नज़रें पिप्पी पर टिकी हुई थीं। जब कप्तान लंबे मोज़े ने पिप्पी को उठाकर अपने कंधों पर बिठा लिया कि सब उसे आसानी से देख सकें, तब फिर से खुशी और उल्लास की एक लहर जनता के बीच दौड़ गई। उसके बाद पिप्पी ने कप्तान लंबे मोज़े को उठाकर अपने एक कंधे पर बिठा लिया और घोड़े को दूसरे पर, इससे लोगों की फुसफुसाहट ऊँचे नारों में बदल गई।

कुर्रकुर्रदत्त द्वीप की आबादी थी, कुल एक सौ छब्बीस लोग।

"मेरे विचार से आबादी की यह संख्या लगभग ठीक ही है," राजा इफ्राईम ने बताया। "इससे ज़्यादा हों तो उनका ध्यान रखना मुश्किल हो जाता है।"

वहाँ सब छोटी-सी, प्यारी-सी झोंपड़ियों में रहते थे। सबसे बड़ी और आलीशान कुटिया राजा इफ्राईम की थी। उनके जहाज़ के कर्मचारियों के लिए भी छोटी छोटी झोंपड़ियाँ बना रखी थीं। जब द्वीप पर होते, वे इन्हीं में रहते थे। उनका जहाज़ अब दिनभर वहीं खड़ा रहने वाला था। कभी कभी साथ वाले द्वीप तक सफर तय होता – वहाँ की एक दुकान से पिप्पी के पापा नसवार खरीदते थे।

पिप्पी के लिए नारियल के पेड़ के नीचे एक नई कुटिया बनाई गई थी। उसमें वह टॉमी और अन्निका के साथ बड़े मज़े से रह सकती थी। लेकिन मुँह-हाथ धोकर, तरोताज़ा होने से पहले, कप्तान लंबे मोज़े उन्हें एक चीज़ और दिखाना चाहते थे। पिप्पी की बाँह पकड़कर वे उसे फिर से समुद्र तट पर ले गए।

"यह है वह जगह," उन्होंने अपनी मोटी उँगली से इशारा किया। "जब मैं समुद्र में उड़कर गिरा था तो यहीं किनारे लगा था।"

कुर्रकुर्रदत्त द्वीप के निवासियों ने उस अजीब घटना की याद में वहाँ एक स्मृतिस्थल बना रखा था। उस पर कुर्रकुर्रदत्त की भाषा में यह लिखा था –

विशाल समुद्री लहरों पर सवार हमारे मोटे, गोरे मुखिया यहीं आ पहुँचे थे। जब वे इस किनारे पर पहुँचे तब ब्रेडफ्रूट फलों का मौसम था। भगवान करे, यह हमेशा ऐसे ही मोटे और रोबदार बने रहें।

भावुकता से काँपती आवाज़ में कप्तान लंबे मोज़े ने वह संदेश पिप्पी, टॉमी और अन्निका को पढ़कर सुनाया। और फिर ज़ोर से अपनी नाक साफ की।

जब सूर्यास्त होने लगा और सूरज दक्षिण समुद्र के पार डूबता नज़र आने लगा तो कुर्रकुर्रदत्त के ढोल बजने लगे। इसका मतलब यह था कि सब लोग शाही चौक में आ जाएँ जो उस गाँव के बीचोंबीच था। वहाँ राजा इफ़्राईम का बाँस का सिंहासन रखा था जो लाल जवाकुसुम के फूलों से सजाया गया था।

अपना सूट उतारकर राजा ने अब शाही पोशाक पहनी थी जो सूखी घास की बनी थी, गले में शार्क मछलियों के दाँतों का हार था, पाँवों में मोटे कड़े थे और सिर पर मुकुट! बड़ी शान से पिप्पी ने सिंहासन पर अपनी जगह ले ली। अभी भी वह सूती धोती ही पहने हुए थी लेकिन अब इस समारोह के लिए उसने बालों में लाल और सफेद फूल लगा लिए थे। अन्निका ने भी वही किया था। पर टॉमी ने नहीं, चाहे जो भी हो वह अपने बालों में फूल टाँकना नहीं चाहता था।

राजा इफ़्राईम काफी देर तक अपने राज्य और जनता से दूर थे इसलिए उन्होंने पूरे दम-खम से राज्य का काम शुरू कर दिया। इस बीच, कुर्रकुर्रदत्त के सारे बच्चे आगे खिसकते खिसकते पिप्पी के सिंहासन के पास पहुँच गए। अपनी राजकुमारी को वे बड़ी आश्चर्य से भरी नज़र से देख रहे थे। जब वे सिंहासन के बिल्कुल पास पहुँचे तो उन सबने अपने घुटने टेके और पिप्पी के सामने की ज़मीन को सिर से छुआ।

पिप्पी सिंहासन से कूदकर उनके बीच आ गई। "यह क्या हो रहा है?" उसने पूछा, "क्या आप लोग भी ज़मीन में छिपा खज़ाना खेल रहे हैं? मैं भी आती हूँ।" कहकर पिप्पी घुटने ज़मीन पर टेककर, नाक से ज़मीन को टटोलने लगी। "लगता है, हमसे पहले ही कोई खज़ाना ढूँढनेवाले यहाँ आकर सब साफ कर गए हैं।" उसने कुछ देर बाद कहा, "यहाँ एक पिन तक नहीं मिलना!"



इतना कहकर वह अपनी जगह पर लौटी ही थी कि उसने देखा बच्चे फिर सिर नीचे झुकाए बैठे हैं।

"क्या कुछ खो गया है?" पिप्पी ने पूछा। "हो भी तो अब नहीं मिलने वाला, अब उठकर ठीक से बैठ जाओ।"

यह तो अच्छी बात थी कि कप्तान लंबे मोज़े इस द्वीप पर काफी दिन रह चुके थे, और यहाँ के लोग उनकी बोली जानने लगे थे। उन्हें "डाक से भेजा मनीऑर्डर" या "ब्रिगेडियर जनरल" जैसे कठिन शब्दों के अर्थ भले ही मालूम न हों पर आम बोलचाल की भाषा वे सीख गए थे। बच्चों को भी काफी बातें समझ आने लगी थीं जैसे, "उसे रहने दो," या ऐसे ही कुछ शब्द। एक छोटा-सा लड़का था मोमो। वह कप्तान की भाषा काफी अच्छी जानने लगा था क्योंकि वह दिनभर जहाज़ पर काम करने वालों के बीच ही रहता था और उनकी बातें सुनने-समझने की कोशिश करता था। एक छोटी-सी सुंदर लड़की थी मोआना। उसे भी यह भाषा अच्छे से समझ आने लगी थी।

अब मोमो पिप्पी को बताने की कोशिश कर रहा था कि वे लोग उसके आगे घुटने क्यों टेक रहे हैं।

"तुम बहुत अच्छी राजकुमारी बनना," उसने कहा।

"मै नहीं बनूँगी राजकुमारी! मैं तो सिर्फ पिप्पी हूँ," पिप्पी ने जैसे तैसे समझाया। "मैं असल में सिर्फ पिप्पी लंबे मोज़े हूँ, अब काफी हो गया यह सिंहासन का ताम-झाम!"

कहकर पिप्पी कूदकर नीचे आ गई। महाराज भी नीचे उतरे, क्योंकि अब राज्य के काम-काज का समय खत्म हो गया था।

आग के लाल गोले जैसा लगने वाला सूरज अब दक्षिण समुद्र में डूब चुका था और आसमान में तारे चमकने लगे थे। कुर्रकुर्रदत्त के निवासियों ने शाही चौक में बड़ी-सी होली जलाई और राजा इफ्राईम, पिप्पी, टॉमी, अन्निका और जहाज़ के कर्मचारियों के सामने नाच दिखाया। ढोल की घनी आवाज़, वह नया उत्तेजित करनेवाला नाच, हज़ारों जंगली फूलों से आने वाली खुशबुएँ और सिर पर सितारों से जड़ा आसमान – टॉमी और अन्निका को बहुत अजीबोगरीब लग रहा

था। पीछे से समुद्र तट पर आ-आकर टूटने वाली लहरों की आवाज़ लगातार सुनाई दे रही थी।

"मुझे यह द्वीप बहुत पसंद आया," टॉमी ने कहा। अब वे तीनों अपनी नारियल के पेड़ के नीचे की कुटिया में आकर सोने लगे थे।

"मुझे भी!" अन्निका ने कहा। "और पिप्पी तुम्हें?"

पिप्पी चुपचाप लेटी हुई थी, पैर हमेशा की तरह तकिये पर रखे थे। "हूँ," उसने उनींदी आवाज़ में कहा, "लहरों की आवाज़ सुनते रहो। याद है, मैंने कहा था कि शायद कुर्रकुर्रदत्त इतना पसंद आए कि मैं कभी लौटना ही नहीं चाहूँगी...।"

8
पिप्पी ने शार्क को सबक सिखाया



दूसरे दिन सुबह-सुबह पिप्पी, टॉमी और अन्निका अपनी कुटिया से बाहर निकले। उनसे भी पहले कुर्रकुर्रदत्त द्वीप के कई बच्चे पेड़ के नीचे, अपने नए दोस्तों से खेलने का इंतज़ार कर रहे थे। वे फर्राटेदार कुर्रकुर्रदत्त भाषा में बोल रहे थे और हँसते हुए उनके दाँत चमकते थे।

सारी भीड़ पिप्पी के पीछे-पीछे समुद्र तट पर आ गई। सुंदर सफेद रेत और बाँहें पसारे बुलाता हुआ नीला समुद्र देखकर टॉमी और अन्निका हवा में छलाँगें लगाने लगे। द्वीप के करीब जो प्रवाल की दीवार खड़ी थी, वह इस द्वीप के कुदरती सुरक्षा कवच का काम करती थी। अंदर की तरफ पानी स्तब्ध, शांत था – बिल्कुल शीशे जैसा। सब बच्चों ने अपने कपड़े उतार फेंके और हँसते, खिलखिलाते पानी में कूद पड़े।

कुछ देर बाद वे बाहर आकर सफेद बालू में खेलने लगे। पिप्पी, टॉमी और अन्निका को भी लगने लगा कि उनका रंग भी सफेद की बजाय काला होता तो ज़्यादा अच्छा होता। काले शरीर पर सफेद बालू

बहुत अजीब-सा नज़र आता था। इसके जवाब में पिप्पी ने अपने आप को गर्दन तक रेत से ढक लिया। अब सिर्फ उसकी दो लाल चोटियाँ और लाल बूँदों वाला चेहरा बाहर नज़र आ रहा था, जो काफी मज़ेदार लग रहा था। सब बच्चे उसे बीच में रखकर गोलाकार में बैठ गए।

"हमें अपने उत्तरी प्रदेश के बच्चों के बारे में बताओ, जहाँ से तुम आई हो!" मोमो ने उस लाल बूँदों वाले चेहरे से कहा।

"उन्हें गुनगुनकार का बहुत शौक है," पिप्पी ने कहा।

"ओ हो! गुनगुनकार नहीं गुनाकार," अन्निका ने कहा, ज़रा-सा तुनककर, "और यह कोई नहीं कहेगा कि हमें गुनाकार करने का शौक है!"

"उत्तरी भाग के बच्चों को गुनगुनकार करते रहना सबसे अच्छा लगता है," पिप्पी अपनी बात पर अड़ी रही। "उत्तरी बच्चों को अगर किसी दिन गुनगुनकार करने को न मिले तो वे बहुत परेशान हो जाते हैं।"

अब उससे कुर्रकुर्रदत्त की भाषा में और बोला नहीं जा रहा था, इसलिए वह अपनी भाषा में शुरू हो गईः

"अगर उत्तरी बच्चों को रोते देखो, तो समझ लो कि या तो उसका स्कूल गिर गया है या स्कूल में छुट्टी हो गई है या टीचर बच्चों को गुनगुनकार के गणित का होमवर्क देना भूल गई हैं। गर्मी की छुट्टियों की तो बात ही मत करो! उसके दौरान इतना रोना, चीखना, चिल्लाना होता है कि उसे सुनने से तो कोई भी मर जाना पसंद करेगा। जब स्कूल के दरवाज़े गर्मी की लंबी छुट्टी के लिए बंद होते हैं तो हर बच्चा रोता हुआ घर जाता है। कई उदास बच्चे दुख भरे गाने गाते धीरे-धीरे घर लौटते हैं। यह सोचकर कि अब महीनों तक उन्हें गुनगुनकार के गणित का मौका नहीं मिलेगा, वे बिलख-बिलखकर रोते हैं। उनका यह रोना-धोना इतना मुश्किल होता है कि देखा नहीं जाता, क्या बताऊँ?" कहकर पिप्पी ने ठंडी आह भरी।

"हा!" टॉमी और अन्निका ने ज़ोर से असहमति जताई।

मोमो की समझ में नहीं आ रहा था गुनगुनकार किस चिड़िया का

नाम है, वह उसके बारे में जानना चाहता था। पिप्पी बोल पड़ी, "सुनो, ऐसा है कि सात बार सात यानी कि सात सत्ते एक सौ दो, है न? आ गया न मज़ा, हिसाब लगाने का?"

"सात सत्ते एक सौ दो *नहीं* होते," अन्निका ने कहा।

"क्योंकि सात सत्ते उनचास होते हैं।" टॉमी ने कहा।

"अरे भाई, हम इस वक्त कुर्रकुर्रदत्त द्वीप पर हैं!" पिप्पी ने कहा, "यहाँ की आबोहवा, ज़मीन सबकुछ बहुत ज़्यादा उपजाऊ है इसीलिए सात सत्ते बढ़कर इतने बन जाते हैं।"

"हा!" टॉमी और अन्निका ने ना के अंदाज़ में कहा।

गणित का यह अनोखा पाठ कप्तान लंबे मोज़े के आने से बीच में ही रुक गया। उन्होंने कहा कि वे अपने जहाज़ के साथियों और कुर्रकुर्रदत्त के सभी नागरिकों के साथ पास के किसी द्वीप पर जंगली जानवर का शिकार करने जा रहे हैं। कप्तान लंबे मोज़े के पास उसके हमलों की कई शिकायतें आ रही थीं। वे औरतों को भी साथ लिए जा रहे थे, शोर मचाकर खूँखार पशुओं को डराने के लिए। मतलब यही था कि बच्चे दो-तीन दिन इस द्वीप पर अकेले रहेंगे।

"तुम्हें इससे बुरा तो नहीं लगेगा?" लंबे मोज़े ने पूछा।

"चू चू! पापा," पिप्पी तपाक से बोली, "जिस दिन हम सुनेंगे कि बड़ों के बगैर बच्चे उदास हैं, क्योंकि वे अपनी देखभाल खुद नहीं कर सकते, उस दिन मैं गुनगुनकार के सारे पहाड़े नीचे से ऊपर तक याद करके दिखाऊँगी, पक्का!"

"मेरी प्यारी बच्ची!" कप्तान लंबे मोज़े ने गर्व से फूलते कहा।

इसके बाद वे अपनी फौज के साथ भाले और ढालें उठाकर बड़ी-बड़ी नावों पर सवार हुए और उस द्वीप की तरफ निकल गए जो कुर्रकुर्रदत्त द्वीप से बहुत दूर नहीं था।

पिप्पी ने अपने हाथ जोड़कर उसका माइक बनाया और विदा लेते हुए चिल्लाई, "भगवान करे आपकी यात्रा सफल हो! और याद रहे, अगर आप मेरे पचासवें जन्मदिन तक न लौटे तो मैं रेडियो पर आपके लिए 'फौरन चले आओ' संदेश भेजूँगी।"

जब सब बड़े नज़रों से ओझल हो गए तो पिप्पी, टॉमी और अन्निका, मोमो, मोआना और सब बच्चों ने बड़े खुश होकर एक दूसरे की तरफ देखा। अब दक्षिण समुद्री द्वीप पर चंद दिनों के लिए बच्चों का राज होगा।

"अब हम क्या करेंगे?" टॉमी और अन्निका ने पूछा।

"सबसे पहले तो हम पेड़ों से अपना नाश्ता ले आएँगे," पिप्पी ने कहा और देखते ही देखते वह सरसर करती नारियल के पेड़ पर चढ़ गई। पेड़ को हिलाकर वह नारियल नीचे गिराने लगी। मोमो और कुर्रकुर्रदत्त के बाकी बच्चे ब्रेडफ्रूट और केले तोड़कर ले आए। पिप्पी ने समुद्र के किनारे आग जलाई और उस पर ब्रेडफ्रूट सेंक लिए, जो अब टोस्ट की तरह काम आने वाले थे। सबने मिलकर ब्रेडफ्रूट, केले और नारियल पानी का भरपेट नाश्ता किया।

कुर्रकुर्रदत्त द्वीप पर कोई घोड़ा नहीं था इसलिए वहाँ के बच्चों के मन में पिप्पी के घोड़े को लेकर काफी दिलचस्पी थी। जिनकी हिम्मत हुई, वे घोड़े पर बैठकर सैर कर आए। मोआना ने तो यह भी कहा कि किसी दिन वह उत्तरी प्रदेश जाकर देखना चाहेगी जहाँ ऐसे अजीबोगरीब जानवर होते हैं।

श्रीमान् नीलसन का कोई अता-पता नहीं था। वे घूमने-घामने जंगल में चले गए थे, और वहाँ उनके कोई रिश्तेदार मिल गए थे।

"अब हम क्या करेंगे?" टॉमी और अन्निका ने पूछा। घुड़सवारी उनके लिए कोई नई बात नहीं थी।

"उत्तर के बच्चों को गुफाएँ देखनी हैं? हाँ या ना?" मोमो ने पूछा।

"उत्तर के बच्चों को गुफाएँ ज़रूर देखनी हैं! हाँ, हाँ!" पिप्पी का जवाब था।

कुर्रकुर्रदत्त एक प्रवाल द्वीप था। उसके दक्षिणी तट पर बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं जो समुद्र में नीचे तक गई थीं। उनमें ज़ोर से आनेवाली लहरों ने अद्भुत गुफाएँ बना डाली थीं। कुछ तो पानी के नीचे थीं जो पानी से भरी हुई थीं, पर कुछ ऊपर पहाड़ी पर थीं, जहाँ कुर्रकुर्रदत्त के बच्चे खेला करते थे। वहाँ एक बड़ी-सी गुफा थी

जिसमें बच्चों ने काफी सारे नारियल और अन्य खान-पान की चीज़ें सँभाल रखी थीं। वहाँ तक पहुँचना काफी कठिन काम था। पहले तो उस पहाड़ पर सीधी चढ़ाई करके ऊपर तक पहुँचना पड़ता था। सहारा होता था सिर्फ कुछ बाहर को निकले हुए ऊबड़खाबड़ पत्थरों का। अगर फिसल गए तो सीधे समुद्र में जा गिर सकते थे। इस द्वीप पर बाकी सारी जगहें बिल्कुल सुरक्षित थीं, कहीं कोई खतरा नहीं था, सिवाय इसके। इस जगह पर बड़ी-बड़ी शार्क मछलियों का भी खतरा था जो छोटे बच्चों को खाना बहुत पसंद करती थीं। इसके बावजूद कुर्रकुर्रदत्त के बच्चे मोतियों वाली सीपियाँ ढूँढने वहाँ पानी में छलाँग लगाते रहते थे, और किसी न किसी को वहाँ पहरा देने खड़ा करते थे। दूर से शार्क आता दिखाई दे तो पहरा देने वाला "शार्क! शार्क!" चिल्लाकर बच्चों को पानी से बाहर बुला लेता था।

कुर्रकुर्रदत्त के बच्चों ने उस बड़ी गुफा में चमकते मोतियों का एक खज़ाना सहेजकर रखा था जो उन्हें वहाँ की सीपियों से मिलते थे। उनसे वे कंचों की तरह खेलते थे, यह न जानते हुए कि बाहर की दुनिया में – यूरोप या अमरीका में – इनको बेचकर उन्हें ढेर सारी दौलत मिल सकती थी। कप्तान लंबे मोज़े कभी कभार कुछ मोती ज़रूर ले जाते थे जिन्हें देकर वे नसवार खरीदते थे। कई बार मोती देकर वे जनता की ज़रूरतों की कुछ चीज़ें भी खरीदते थे। लेकिन वह कुछ ज़्यादा नहीं होती थीं; कुर्रकुर्रदत्त के लोगों की सारी ज़रूरतें उनके द्वीप पर ही पूरी हो जाती थीं। इसलिए मोतियों का प्रयोग बच्चों के खेल में ही ज़्यादा होता था।

जब टॉमी ने उस चट्टान पर चढ़कर गुफा में जाने की बात की तो अन्निका के रोंगटे खड़े हो गए। पहले हिस्से में बहुत ज़्यादा कठिनाई महसूस नहीं हुई। एक चौड़ी-सी पगडंडी थी चलने के लिए जो आगे जाकर सिकुड़ती गई थी। गुफा तक पहुँचने के आखिरी कुछ फुट जैसे तैसे रेंगकर चलने वाले होते थे जिसमें बड़ी सावधानी और मुश्किल से अपना संतुलन बनाए रखना होता था।

"न बाबा न!" अन्निका ने पल्ला झाड़ते हुए कहा, "मैं तो नहीं जाऊँगी।" जहाँ चढ़ते वक्त, सहारे के रूप में पकड़ने के लिए कुछ न हो, और नीचे गिरो तो खाने के लिए शार्क मछलियाँ तैयार हों, ऐसी पहाड़नुमा चट्टान पर चढ़ जाना, यह अन्निका के लिए तो मौजमस्ती का सामान हो नहीं सकता था।

उसकी न-न से झल्लाकर टॉमी बोला, "दक्षिण समुद्र के साहस से अन्निका जैसी बहनजियों को दूर ही रखना चाहिए। ऐसा डर भी किस काम का!" चट्टान की दीवार पर खुद को फैलाता वह धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था और बोलता जा रहा था, "मुझे देखो! ऐसे जाना होता है – ऐसे – और ऐसे!"

अचानक धड़ाम की आवाज़ आई। टॉमी नीचे पानी में गिर पड़ा था। अन्निका ज़ोर से चिल्लाई। कुर्रकुर्रदत्त के बच्चे भी डर गए थे। "शार्क! शार्क!" चिल्लाते हुए उन्होंने समुद्र से टॉमी की तरफ बढ़ते हुए एक शार्क की तरफ इशारा किया। शार्क का एक डैना सतह से ऊपर, बहुत साफ नज़र आ रहा था और वह तेज़ी से टॉमी के पास आ रहा था।

धड़ाम! एक और आवाज़ सुनाई दी। पिप्पी नीचे कूद पड़ी थी। शार्क और पिप्पी लगभग उसी समय टॉमी के पास पहुँचे। टॉमी जी-जान से चीख रहा था। शार्क के दाँत उसके पैरों को छील रहे थे। तभी पिप्पी ने उस खून के प्यासे पशु को दोनों हाथों से थामा, और पानी से ऊपर उठा लिया।

"शर्म नहीं आती तुम्हें?" पिप्पी ने पूछा। शार्क ने चारों तरफ देखा। वह चौंक गया था, परेशान था। पानी के ऊपर उठाए जाने से वह साँस नहीं ले पा रहा था।

"मुझे वचन दो कि तुम ऐसा कभी नहीं करोगे, तभी मैं तुम्हें जाने दूँगी," पिप्पी ने गंभीर आवाज़ में कहा। फिर अपनी सारी ताकत लगाकर उसने उसे वापस समुद्र में दूर पटक दिया। पानी में वापस गिरते ही वह महाकाय शार्क वहाँ से दूर भाग गया, शायद उसने अटलांटिक महासागर चले जाना ठीक समझा होगा।

तब तक लड़खड़ाता टॉमी बीच की मैदानी जगह तक पहुँच गया था। वह अब भी थर-थर काँप रहा था, और उसके पैरों से खून निकल रहा था। पिप्पी भी ऊपर आ गई। उसका व्यवहार कुछ अजीब-सा लग रहा था। पहले उसने टॉमी को हवा में ऊपर उठा लिया और फिर उसे इतनी कसकर बाहों में जकड़ लिया कि बेचारे का दम घुटने लगा। फिर उसने उसे छोड़ दिया और धम्म से चट्टान पर बैठ गई। उसने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ रखा था। वह रो पड़ी। पिप्पी रोने लगी! टॉमी, अन्निका और कुर्रकुर्रदत्त के बच्चे उसे दंग होकर देखते रह गए, उसे रोते देखकर उन्हें एकदम डर-सा लगने लगा था।

"क्या तुम इसलिए रो रही हो कि टॉमी मरते-मरते बचा?" मोमो ने पूछा।

"नहीं!" पिप्पी ने आँखें पोंछते हुए तुनककर कहा, "मैं यों रोई कि बिचारे भूखे शार्क को अपना नाश्ता गँवाना पड़ा।"



9 पिप्पी और दो गुंडे

शार्क के दाँतों से टॉमी की टाँग में आई खरोंचें मामूली थीं। जब वह ज़रा ठीक-ठाक हो गया तो उसका मन फिर से गुफा देखने को करने लगा। पिप्पी ने जवाकुसुम के तनों से एक मज़बूत रस्सी बना ली और उसका एक सिरा पत्थर से बाँध दिया। फिर पहाड़ी भेड़ की तरह आसानी से पत्थरों पर कूदती वह गुफा तक गई और रस्सी का दूसरा सिरा वहाँ बाँध दिया। अब रस्सी के सहारे गुफा तक चढ़ने के लिए अन्निका भी राज़ी हो गई। रस्सी की वजह से चढ़ना आसान जो हो गया था।

वह गुफा थी भी बड़ी अद्भुत! इतनी बड़ी कि सारे बच्चे बिना किसी मुश्किल के अंदर चले गए।

"यह गुफा हमारे विल्लाकुला वाले पेड़ में जो खोखली जगह है, उससे बेहतर लग रही है," टॉमी बोला।

"बेहतर तो नहीं, लगभग वैसी ही है," अन्निका ने कहा। विल्लाकुला की याद आते ही उसका जी भर आया था और वह किसी भी और चीज़ को उससे बेहतर मानने के लिए राज़ी नहीं थी।

मोमो ने दिखाया कि गुफा में नारियल और ब्रेडफ्रूट किस तरह से सँभालकर रखे हैं। कोई अगर वहाँ रह जाए तो महीनों तक इन फलों से अपना गुज़ारा कर पाएगा। मोआना ने उन्हें बताया कि जंगलों में

खोखले बाँस के अंदर उन्होंने गज़ब के सुंदर मोती कैसे छिपा रखे थे। उसने पिप्पी, अन्निका और टॉमी को एक-एक मुट्ठी मोती निकालकर दिए।

"कितने अच्छे कंचे हैं, लेकिन इनसे सिर्फ इसी देश में खेलना होगा," पिप्पी ने कहा।

गुफा के प्रवेश के पास बैठकर नीचे चमकता विशाल समुद्र देखना बहुत अच्छा लग रहा था। पेट के बल लेटकर पानी में कंकड़ फेंकने और लहरें पैदा करने में मज़ा आता था। टॉमी ने कहा, "चलो देखें किसका पत्थर सबसे दूर जाता है।" मोमो ने काफी दूर फेंका। पर पिप्पी उससे भी बढ़कर रही। न जाने उसकी पतली दिखने वाली बाँहों में इतना ज़ोर कहाँ से और कैसे आता था। उससे मुकाबला करना किसी के बस की बात नहीं थी।

"अगर इन लहरों के उमड़ने से न्यूज़ीलैंड में आज समुद्री तूफान आ जाता है तो वे मुझे पकड़ेंगे!" पिप्पी ने कहा।

टॉमी और अन्निका को कुछ खास सफलता न मिली।

"उत्तरी बच्चे दूर नहीं फेंकते!" मोमो ने बड़प्पन जताते हुए कहा। उसके विचार में पिप्पी उत्तर की नहीं, उनके अपने द्वीप की थी।

"क्या कहा, उत्तरी बच्चे दूर नहीं फेंकते?" पिप्पी ने पूछा। "तुझे कुछ भी पता नहीं है अभी! यह तो उन्हें स्कूल में पहली कक्षा से सिखाया जाता है। ज़मीन से पत्थर फेंकना, पेड़ से पत्थर फेंकना, पहाड़ से पत्थर फेंकना, भागते-भागते पत्थर फेंकना, तुम्हें टॉमी और अन्निका की टीचर से मिलना चाहिए। क्या फेंकती हैं वह! उन्हें दौड़ते-दौड़ते दूर तक पत्थर फेंकने के लिए इनाम मिला है। जब वे दौड़ती हुई इधर उधर पत्थर फेंकती हैं, तो सारा गाँव तालियों से गूँज उठता है, ऐसी तालियाँ कि बैंड का बजना तक सुनाई नहीं देता।"

"हा!" टॉमी और अन्निका ने पिप्पी की लच्छेदार बातों के विरोध में कहा।

पिप्पी ने अपनी आँखों के ऊपर हाथ की छाँव बनाते हुए समुद्र को गौर से देखा। "मुझे वहाँ से एक जहाज़ आता दिखाई दे रहा है।"

उसने कहा, "एक छोटा-सा जहाज़। पता नहीं किसका है और हमारे इस इलाके में क्यों आ रहा है?"

पिप्पी का शक सही निकला।

वह जहाज़ सीधा कुर्रकुर्रदत्त की तरफ आ रहा था। उस पर बहुत से दक्षिण समुद्र के द्वीपों के रहनेवाले थे और दो गोरे आदमी भी। उनके नाम जिम और बक थे। वे बहुत गंदे, घटिया किस्म के डाकू लग रहे थे, और असल में थे भी!

एक बार जब कप्तान लंबे मोज़े दुकान से नसवार खरीद रहे थे, तब जिम और बक भी वहाँ पहुँच गए थे। उन्होंने देखा कि कप्तान लंबे मोज़े ने नसवार का दाम काउंटर पर दो मोटे-मोटे मोती रखकर चुकाया था। उन्होंने बातों-बातों में उन्हें यह भी कहते हुए सुना था कि कुर्रकुर्रदत्त के बच्चे इन मोतियों से कंचों की तरह खेलते हैं। यह सुनने के बाद दोनों ने ठान लिया था कि वे इस द्वीप पर ज़रूर जाएँगे और मोती हड़पने की कोशिश करेंगे। वे जानते थे कि कप्तान लंबे मोज़े एक शक्तिमान नेता तो थे ही, पर यह भी कि उनके जहाज़ पर जो कर्मचारी थे, वे सभी उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। इसलिए जब द्वीप के सारे आदमी शिकार के लिए द्वीप से दूर गए थे, उन्होंने इस मौके का फायदा उठाना चाहा।

दरअसल सही मौके के इंतज़ार में वे पास के ही एक द्वीप पर रुककर कप्तान लंबे मोज़े और उनके आदमियों के आने-जाने पर दूरबीन से नज़र रखे हुए थे। उन्होंने देख लिया था कि कप्तान और कुर्रकुर्रदत्त के निवासी कहीं जाने के लिए अपनी नौकाएँ तैयार कर रहे हैं। जब देखा कि वे सब उनमें बैठकर चले गए हैं तो वे कुर्रकुर्रदत्त की तरफ निकल पड़े।

"जहाज़ किनारे लगा दो!" बक ने कुर्रकुर्रदत्त की ज़मीन नज़र आने पर कहा। ऊपर गुफा से पिप्पी और बाकी बच्चे यह सब देख रहे थे। जहाज़ कुछ दूरी पर रोककर जिम और बक नावों में कूद गए और किनारे आने लगे। उन्होंने अपने आदमियों को वहीं दूरी पर रुकने के लिए कहा था।

"अब हम चुपचाप कुर्रकुर्रदत्त में घुसकर उस पर कब्ज़ा कर लेते हैं," जिम ने कहा। "लगता है घरों में सिर्फ औरतें और बच्चे हैं।"

"हाँ!" बक ने हामी भरी। "दरअसल मैंने इतनी औरतों को नावों पर चढ़ते हुए देखा कि लगता है यहाँ सिर्फ बच्चे रह गए हैं। शायद वे इस वक्त कंचे खेल रहे होंगे...हा! हा! हा!" पानी पर से उसकी आवाज़ बच्चों को साफ सुनाई दे रही थी।

"क्यों?" पिप्पी ने गुफा से ऊँची आवाज़ में पूछा। "क्या आप लोगों को बस कंचे खेलना अच्छा लगता है? मुझे तो कुदक-फुदक मेंढक खेलना भी अच्छा लगता है।"

जिम और बक ने चौंककर ऊपर देखा तो पिप्पी और बाकी बच्चों के गुफा से झाँकते चेहरे दिखाई दिए। वे दोनों खुशी से मुस्करा दिए।

"तो बच्चे वहाँ हैं," जिम ने कहा।

"बढ़िया!" बक ने कहा, "और यह रहा हमारा थैला।"

लेकिन दोनों ने सोच लिया था कि वे सावधानी से काम लेंगे। उन्हें पता नहीं था कि बच्चों ने मोती रखे कहाँ हैं, इसलिए ज़रूरी था कि बहला-फुसलाकर उनसे बातें उगलवाई जाएँ। उन दोनों ने ऐसा जताया कि वे कुर्रकुर्रदत्त सिर्फ सैर-सपाटे के लिए आए हैं, मोतियों की तलाश में नहीं। बहुत गर्मी और चिपचिपाहट थी इसलिए बक ने सुझाव दिया कि पहले थोड़ा तैर लें।

"मैं नाव से वापस जाता हूँ और जहाज़ से हमारे तैरने के कपड़े ले आता हूँ," उसने कहा और वह चल दिया। अब जिम तट पर अकेला कुछ सोच रहा था।

"क्या यह समुद्र तट अच्छा है?" उसने बच्चों से दोस्ती के अंदाज़ में पूछा।

"बढ़िया है!" पिप्पी ने कहा, "बहुत बढ़िया है, शार्कों के लिए। वे हर रोज़ यहाँ आते हैं।"

"अरे छोड़ो!" जिम ने कहा, "मैंने तो कभी नहीं देखे।" उसने अपना फिक्र छुपाते हुए कहा। जब बक लौटा तो जिम ने उसे पिप्पी की बात बता दी।

"अरे नहीं!" बक ने भी कहा और फिर ऊपर देखकर पिप्पी से ऊँची आवाज़ में पूछने लगा, "क्या तुम कह रही हो कि यहाँ तैरना खतरनाक है?"

"नहीं, मैंने ऐसा तो नहीं कहा," पिप्पी बोली।

"कमाल करती हो! क्या अभी तुमने मुझसे नहीं कहा कि यहाँ शार्क हैं?"

"हाँ, कहा तो था। लेकिन खतरे की कब कोई बात की मैंने? मेरे नाना पिछले साल यहीं तैरते थे।"

"ठीक ही तो है," बक ने कहा।

"उन्हें पिछले शुक्रवार ही अस्पताल से छुट्टी मिली है," पिप्पी ने कहा। "उन्हें बहुत सुंदर लकड़ी का पैर लगा दिया गया है।" पिप्पी ने पानी को घूरते हुए उसमें एक पत्थर फेंक दिया। "हम यह नहीं कह सकते कि समुद्र तट खतरनाक है। अगर तैरते-तैरते एकाध हाथ या पैर गायब हो जाए, तो क्या हुआ? लकड़ी का पैर अगर सौ-दो सौ क्रोनर में लग जाता है तो उसके पीछे तरोताज़ा करनेवाली तैराकी छोड़ देना तो गलत होगा – ऐसी भी क्या कंजूसी?" पिप्पी ने एक और पत्थर पानी में फेंका।

"मेरे नाना उस लकड़ी के पैर को लेकर यों खुश हैं जैसे बच्चा अपने नए खिलौने से होता है। उन्हें लगता है, लड़ाई में इस लकड़ी के पैर जैसा कोई हथियार हो नहीं सकता!" पिप्पी ने कहा।

"पता है, मैं क्या सोच रहा हूँ?" बक ने सख्ती से कहा, "मुझे लगता है तुम बातें बना रही हो। तुम्हारे नाना बूढ़े हो गए होंगे। वह क्यों लड़ाई झगड़े के पचड़े में पड़ना चाहेंगे?"

"क्या कह रहे हैं आप?" पिप्पी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा। "वे बहुत गुस्सैल आदमी हैं; अपने लकड़ी के पैर से दुश्मनों का सिर फोड़ देते हैं। अगर किसी दिन सुबह से रात तक उन्हें लड़ने को कोई नहीं मिले तो वे बहुत उदास हो जाते हैं। इतना गुस्सा आता है उन्हें कि वे अपनी नाक चबाने लगते हैं।"

"क्या बेवकूफी है!" बक ने कहा। "दुनिया में है कोई ऐसा जो खुद की नाक चबा सकता हो?"

"बिल्कुल!" पिप्पी ने आग्रहपूर्वक कहा, "वह कुर्सी पर चढ़कर यह कर लेते हैं।"

बक ने मिनट भर सोचा, और दबी आवाज़ में एक गाली निकाली। "मुझे तुम्हारी बकवास और नहीं सुननी! चलो जिम, कपड़े बदल लो," उसने कहा।

"बस इतना बता दूँ कि मेरे नाना की नाक दुनिया में सबसे लंबी है। उनके पाँच तोते हैं और सब नाना की नाक पर एक कतार में बैठते हैं।"

अब बक बहुत चिढ़ गया था। "ऐ लाल बालों वाली भूतनी, तुझ जैसी झूठी मैंने कोई नहीं देखी! शर्म नहीं आती तुझे अनापशनाप बकते हुए? तुझे क्या लगता है, नाक पर पाँच तोतों के बैठने वाली बात का मैं यकीन करूँगा? हिम्मत है, तो मान जा कि तूने झूठ कहा है!"

"हाँ!" पिप्पी ने दुखी चेहरे से मान लिया, "यह झूठ है।"

"देखा!" बक ने कहा। "मैंने कहा था ना?"

"यह बहुत बहुत बड़ा झूठ था।" पिप्पी ने और भी दुखी दिखते हुए कहा।

"मैं तो शुरू से ही जानता था," बक ने कहा।

"क्योंकि पाँचवाँ तोता," पिप्पी ने सुबकते हुए कहा, "पाँचवें तोते को तो एक पैर पर खड़े होना पड़ता है।"

"भाग जाओ!" बक चिल्लाया, और फिर जिम और वह पेड़ों के पीछे जाकर कपड़े बदलने लगे।

"पिप्पी, तुम्हारे नाना तो हैं नहीं!" अन्निका ने तीखेपन से कहा।

"नहीं हैं," पिप्पी ने आराम से कह दिया, "तो क्या हुआ?"

बक तैरने के कपड़े पहने बाहर निकला। उसने चट्टान से शानदार गोता लगाकर समुद्र में तैरना शुरू कर दिया। ऊपर से गुफा में बैठे बच्चे उसे गौर से देख रहे थे। उन्हें सिर्फ पलभर के लिए शार्क का एक डैना सतह से ऊपर दिखाई दिया।

"शार्क! शार्क!" मोमो चिल्लाया।

पानी में बड़े मज़े से तैरने वाले बक ने मुड़कर देखा तो वह बड़ा शार्क उसी की तरफ तेज़ी से आता दिखाई दिया।

बक इतनी तेज़ी से तैरकर वापस आया जितना कोई और न कर पाता। वह फौरन पानी से बाहर निकल आया। वह डरा हुआ था और गुस्से में भी, जैसे इस समुद्र में शार्क होना पिप्पी की ही गलती थी।

"गंदी लड़की! क्या तुम्हें अपने ऊपर ज़रा भी शर्म नहीं आती?" उसने चीखते हुए कहा। "समुद्र शार्कों से भरा पड़ा है!"

"मैंने भी तो यही कहा था!" पिप्पी ने मीठी आवाज में, सिर एक तरफ झुकाकर कहा। "मैं हर बार झूठ थोड़े ही बोलती हूँ?"

जिम और बक पेड़ के पीछे जाकर फिर से कपड़े बदल आए। उन्हें लगा अब मोतियों की बात कर लेनी चाहिए। पता नहीं कप्तान लंबे मोज़े और उनके साथी कितने समय के लिए गए होंगे? कहीं मौका न चूके!

"बच्चों, सुनो," बक ने कहा। "मुझे किसी ने कहा था कि इस इलाके में बहुत सारी मोतियों वाली सीपियाँ होती हैं। क्या यह सच है?"

"मैं बताती हूँ।" पिप्पी बोल पड़ी। "लाखों सीपियाँ कर्र कर्र टूटने लगती हैं आपके कदमों के नीचे। यही है वह जगह, समुद्र के नीचे। जाकर देखोगे?"

बक को डूबकर मरना तो नहीं था।

"हर सीप में इतने बड़े बड़े मोती होते हैं।" पिप्पी ने एक बड़ा-सा चमकदार मोती उँगलियों के बीच पकड़कर उन्हें दिखाया।

उसे देखकर जिम और बक इतने आतुर हो उठे कि एक जगह खड़े रहना मुश्किल हो गया।

"और भी हैं तुम्हारे पास?" जिम ने पूछा। "हम खरीदना चाहते हैं, आप लोगों से।"

यह झूठ था। जिम और बक के पास मोतियों की खरीद के लिए कोई पैसे नहीं थे। उन्हें तो कुछ गलत-सलत करके ही मोती हथियाने थे।

"हाँ, यहाँ इस गुफा में 90-92 मोतियों की थैलियाँ भरी रखी हैं," पिप्पी ने कहा।

अब जिम और बक की खुशी छिपाए न छिपे।

"बढ़िया!" बक बोला, "यहाँ ले आओ तो हम सारी की सारी खरीद लें।"

"नहीं, नहीं!" पिप्पी ने कहा। "ऐसा किया तो ये गरीब बच्चे कंचे किस चीज़ से खेलेंगे? इसके बारे में सोचा है आपने?"

ऐसे ही बहस होती रही और जिम और बक समझ गए कि चालबाज़ी से तो मोती मिलने से रहे। अब एक रास्ता था, गुफा तक पहुँच जाना और मोती ज़बरदस्ती उठा लेना। जो चालाकी से मिल सकता था, वह अब ज़ोर से हासिल करना था। कम से कम अब इतना तो पता था कि मोती हैं कहाँ। सिर्फ गुफा तक पहुँचकर उन्हें उठाकर ले आना था।

गुफा तक चढ़ना – कहना आसान था, करना कठिन। जब उनके बीच बहस हो रही थी तो उस दौरान पिप्पी ने जवाकुसुम की वह रस्सी हटा ली थी और अब गुफा में सुरक्षित रख दी थी।

जिम और बक को मालूम था कि गुफा तक की चढ़ाई आसान न होगी। लेकिन अगर मोती हथियाने थे तो कोई और रास्ता भी तो नहीं था।

"तुम जाओ, जिम," बक ने कहा।

"तुम जाओ ना, बक," जिम ने मनाया।

"जिम, तुम जाओ!" बक ने थोड़ी-सी सख्ती से कहा। वह जिम से बलवान था। जिम ने जैसे तैसे चढ़ाई शुरू की। वह बौखलाया हुआ, जो भी हाथ में आता, उसका सहारा लेता ऊपर की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसका पसीना छूट रहा था।

"ठीक से आओ, भगवान बचाए, गिरना नहीं!" पिप्पी उसका उत्साह बढ़ा रही थी।

लेकिन जिम धड़ाम से समुद्र में गिर ही गया। समुद्र तट पर खड़ा बक उस पर चिल्ला-चिल्लाकर गालियाँ बरसा रहा था। जिम भी चिल्ला



रहा था क्योंकि दो शार्क उसकी दिशा में आते दिखाई दे रहे थे। जब वे उससे तीन फुट की दूरी पर रह गए थे तो पिप्पी ने नारियल उठाकर सीधा उनकी नाक के सामने दे मारा। वे डर गए और जिम को इतना वक्त मिला की वह तैरकर किनारे तक आ सके और छोटे-से सपाट मैदान पर जा बैठे। उसके कपड़ों से पानी की बूँदें टपक रही थीं और वह बेचारा लग रहा था। बक उसे डाँट रहा था।

"खुद चढ़ के देखो ना, तो पता चले कितना आसान है!" जिम झल्लाया।

"ठीक है, मैं ही दिखाता हूँ।" बक ने कहा और चढ़ाई शुरू की। सब बच्चे उसे घूर रहे थे। उसे पास आता देखकर अन्निका ज़रा सहम गई थी।

"अरे, अरे यहाँ से नहीं, वहाँ से चढ़ो तो गिरोगे नहीं!" पिप्पी बोले जा रही थी।

"कहाँ से?" बक ने पूछा।

"वहाँ से!" पिप्पी के इशारे पर बक ने नीचे देखा।

"इससे बहुत सारे नारियल बरबाद होते हैं।" पिप्पी बुदबुदा रही थी। बक पानी में गिर गया था और शार्कों को भगाने के लिए पिप्पी को ऊपर से नारियल फेंकने पड़ रहे थे। बक पानी में बुरी तरह लड़खड़ा रहा था। जैसे तैसे वह बाहर आ गया, गुस्से में दनदनाता, लेकिन डरा हुआ बिल्कुल नहीं। उसने फिर से चढ़ना शुरू किया क्योंकि उसने ठान लिया था कि वह गुफा तक पहुँचेगा ज़रूर और मोती लेकर ही लौटेगा।

इस बार वह काफी सफल रहा। जब वह गुफा के प्रवेश तक पहुँचा तो उसने जीत की खुशी में बच्चों को ललकारा, "शैतानो, अब मैं तुम्हारा हिसाब-किताब बराबर करके ही लौटूँगा।"

तभी पिप्पी ने अपनी उंगली बढ़ाकर उसके पेट में भोंक दी।

धड़ाम की आवाज़ आई।

"यहाँ तक आए थे तो कम से कम यह तो ले जाते!" कहकर पिप्पी ने एक नारियल दे मारा, जो सीधा उस शार्क की नाक पर जा गिरा जो बक के पास आ रहा था। उसके पास आने वाले शार्कों को तितरबितर करने के लिए पिप्पी को काफी नारियल बरसाने पड़े। इस बीच एक बक के सिर पर भी पड़ा।

"अरे! यह क्या हुआ?" पिप्पी ने बक की चीख सुनकर कहा। "यहाँ से आप भी मोटे, भद्दे शार्क की तरह नज़र आ रहे हैं।"

जिम और बक ने सोचा तब तक नीचे ही बैठे रहें जब तक कि बच्चों को खुद नीचे आना पड़े।

"भूख लगेगी तो वे नीचे आएँगे," बक ने कहा, "और तब उन्हें चखाऊँगा मज़ा!" फिर बच्चों की तरफ मुड़कर वह चिल्लाया, "मुझे बुरा तो लग रहा है कि उस गुफा में तुम लोग बैठे रहोगे। भूख के मारे कहीं जान न चली जाए!"

"बहुत दयालु निकले आप!" पिप्पी ने कहा "हमारी चिंता छोड़िए। यहाँ पर इतना खानपान का सामान ज़रूर है कि हम दो हफ्ते मज़े से गुज़ार लें। उसके बाद, शायद कुछ कटौतियाँ करनी पड़ें।"

यह कहकर उसने एक बड़ा नारियल तोड़ा, उसका पानी पिया और गरी खाने लगी।

जिम और बक ने उसे कोसना चाहा। सूरज ढलने को था इसलिए रात सागर किनारे बिताने का इंतज़ाम भी करना था। वे अपने जहाज़ पर लौटकर सोना नहीं चाहते थे कि बच्चे मोतियों समेत चंपत न हो जाएँ। गीले कपड़ों में वे चट्टानों पर लेट गए। वह आरामदायक कैसे होता!

ऊपर गुफा में बच्चे मस्त थे। नारियल और ब्रेड फ्रूट पर मज़े से गुज़ारा हो रहा था। वह रोमांचक था और हँसी-खुशी वाला भी। कभी कभी वे गर्दन बाहर निकालकर बक और जिम को देख लेते थे। अब इतना अँधेरा हो चुका था कि नीचे मैदान में बैठे दो आदमी धुँधले से दिखाई दे रहे थे। लेकिन उनकी गालियाँ और बददुआएँ जब तब सुनाई देती थीं।

अचानक, जैसा कि सिर्फ उस जंगली प्रदेश में होता है, बारिश आने लगी। भारी बारिश, उमड़ उमड़कर गिरने वाली। पिप्पी ने अपनी नाक गुफा से बाहर निकालकर देखा। "कितने भाग्यशाली हैं, आप दोनों।" उसने चिल्लाकर जिम और बक से कहा।

"क्या मतलब है तेरा?" बक ने उम्मीद भरे लहज़े में पूछा। उसे लगा शायद बच्चों का मन बदल गया हो और वे उन्हें मोती दे-दवाकर छुट्टी करना चाहते हों। "क्यों कहती हो कि हम भाग्यशाली हैं?"

"वह इसलिए कि, अच्छा है कि आप पानी में गिरकर पहले से ही भीगे हुए थे, इस तूफानी बारिश से पहले। वरना बारिश में भीगना पड़ता।"

इसके बाद कुछ और गालियाँ सुनने में आईं। मिली-जुली आवाज़ों में कहना मुश्किल था कि कौन सी बक की थी और कौन सी जिम के मुँह से निकली थी।

"शुभ रात्रि! अच्छे से सोना," पिप्पी ने कहा, "क्योंकि अब हम भी वही करने जा रहे हैं।"

सब बच्चे गुफा में फैलकर सो गए। टॉमी और अन्निका पिप्पी की अगल-बगल में उसके हाथ पकड़कर सोए। बच्चे काफी ठीक-ठाक थे, कोई असुविधा नहीं थी। गुफा के अंदर सर्दी बिल्कुल नहीं थी, सब कुछ सही था। बाहर झमाझम बारिश हो रही थी।

10
पिप्पी गुंडों से परेशान हुई



बच्चे रात को बहुत अच्छी तरह से सोए। जिम और बक को नींद कैसे आती? वे बारिश को कोसते रहे और जब वह रुकी तो वे इसी बात को लेकर आपस में झगड़ने लगे कि मोती तो हाथ लगे नहीं और इस मनहूस कुर्रकुर्रदत्त द्वीप पर आने का सुझाव दोनों में से किसका था। खैर, जब सूरज निकला और उनके कपड़े सूख गए, पिप्पी का हँसमुख चेहरा गुफा से निकलकर सबको गुडमॉर्निंग करता दिखाई दिया तो अचानक उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब वे मोती लेकर रहेंगे, और यहाँ से रईस आदमी बनकर ही जाएँगे। सिर्फ उन्हें यह नहीं मालूम था कि कैसे।

जब यह तमाशा हो रहा था, पिप्पी का घोड़ा सोचने लगा कि आखिर पिप्पी, अन्निका और टॉमी हैं कहाँ? श्रीमान् नीलसन जंगल में अपने रिश्तेदारों से मिलकर लौटे थे और वे भी यही सोच रहे थे। उन्हें यह भी चिंता हो रही थी कि घास की टोपी खोने के लिए क्या पिप्पी उन्हें डाँटेगी?

श्रीमान् नीलसन घोड़े की पूँछ से लटक गए और दोनों पिप्पी की तलाश में चल पड़े। आखिर में, उन्हें द्वीप के दक्षिण में एक रास्ता मिला। जब घोड़े ने देखा कि पिप्पी गुफा से अपनी गर्दन बाहर निकाले झाँक रही है तो वह खुशी से हिनहिनाने लगा।

"पिप्पी, देखो तुम्हारा घोड़ा आ गया!" टॉमी चिल्लाया।

"और उसकी पूँछ पकड़े श्रीमान् नीलसन भी!" अन्निका ने कहा।

जिम और बक उनकी बात सुनकर समझ गए कि यह घोड़ा पिप्पी का है, जो गुफा में बैठी वही लाल बालों वाली लड़की है।

बक ने पास जाकर घोड़े का अयाल पकड़ लिया।

"सुना तूने, ऐ शैतान की बच्ची!" उसने पिप्पी को ललकारा, "अब मैं तेरे इस घोड़े को खत्म कर देने वाला हूँ!"

"क्या तुम मेरे घोड़े को मार दोगे, जिससे मुझे इतना ज़्यादा प्यार है?" पिप्पी ने पूछा। "मेरा अच्छा प्यारा घोड़ा! नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे।"

"हाँ, शायद मुझे इसे मारना ही पड़ेगा," बक ने कहा। "तुम नीचे आकर वह सारे मोती हमें न दे गई तो! सारे मोती, समझी तुम? नहीं तो मैं इस घोड़े को इसी वक्त उड़ा दूँगा।"

पिप्पी ने उन्हें गंभीरता से देखा। "प्लीज़!" उसने कहा, "मैं आप के हाथ जोड़ती हूँ – मेरे घोड़े को कुछ न करो और इन बच्चों के मोती भी इन्हीं के पास रहने दो।"

"सुना नहीं तुमने?" बक ने पूछा। "अभी इसी वक्त मोती दे दो वर्ना..."

फिर मुड़कर उसने धीरे से जिम से कहा, "इसे आने तो दो मोती लेकर, फिर देखना। मैं इसे मार-मारकर इसकी हड्डी-पसली एक कर दूँगा। कल रात इसी की वजह से बारिश में हमारी जो बुरी हालत हुई है, उसका बदला इससे लेंगे ज़रूर। इसके घोड़े को हम अपने साथ जहाज़ में ले जाएँगे और कहीं बेच देंगे।"

फिर पिप्पी पर गुर्राते हुए उसने पूछा, "आ रही हो तुम, या नहीं?"

"मैं आ रही हूँ," पिप्पी ने कहा, "पर भूलना नहीं कि मुझे तुमने बुलाया है।"

पिप्पी बड़े आराम से उस ऊबड़खाबड़ पहाड़ी से नीचे उतरी, कुछ ऐसे कि बगीचे में घूम रही हो। जब अंतर कम रह गया तो उसने ज़मीन पर छलाँग मारी और बक के सामने खड़ी हो गई। छोटी-सी

लड़की, दुबली-पतली, उसकी लाल चोटियाँ कानों के ऊपर से सीधी बाहर निकली हुईं और अब उसकी आँखों में खतरा दिखाई दे रहा था।

"मोती कहाँ है, भूतनी की बच्ची?" बक चिल्लाया।

"आज मोती-वोती कुछ नहीं मिलेंगे; आज तो बस कुदक-फुदक मेंढक खेलेंगे।" उसने कहा।

पिप्पी का जवाब सुनकर बक ने इतनी भयानक दहाड़ मारी कि ऊपर गुफा में बैठी अन्निका डर से काँप गई। "मैं अभी, इसी वक्त तुझे और तेरे इस घोड़े को ठिकाने लगाता हूँ।" उसने धमकाया और पिप्पी की तरफ आने लगा।

"आराम से, भले आदमी!" पिप्पी ने कहा और देखते ही देखते बक को कमर से पकड़कर दस फुट ऊपर हवा में उछाला। वह धड़ाम से चट्टानों पर जा गिरा। अब जिम की बारी थी। उसने पिप्पी को चाँटा लगाने के लिए हाथ उठाया ही था कि पिप्पी ने ज़रा-सा हटकर, खुद को बचा लिया। उस सुंदर सुनहरी सुबह पिप्पी ने जिम को भी बक की तरह आसमान की सैर कराकर दोनों दोस्तों को उसी चट्टान पर पास-पास बिठा दिया। वे वहाँ बैठे ऊह आह कर ही रहे थे कि पिप्पी चलकर उनके पास गई और दोनों को एक-एक पंजे में पकड़ लिया।

"ऐसी भी क्या जल्दी है कंचों से खेलने की!" उसने कहा, "कुछ तो हद होनी चाहिए खेल के शौक की!" पिप्पी उन्हें पहाड़ी चट्टानों से उठाकर समुद्र तट तक ले गई और पानी में फेंक दिया।

"जाओ घर, अपनी माँओं के पास और उनसे माँग लो दो-चार सिक्के, कंचे खरीदने के लिए," उसने कहा। "उनसे खेलना ठीक रहेगा तुम्हारे लिए।"

थोड़ी ही देर में एक छोटा-सा जहाज़ कुर्रकुर्रदत्त से समुद्र की तरफ लौटता नज़र आया। उसके बाद कभी वह कहीं आसपास नज़र नहीं आया।

पिप्पी ने अपने घोड़े को प्यार से थपथपाया। श्रीमान् नीलसन कूदकर उसके कंधे पर चढ़ गए। तभी दूर से नावों का एक पूरा कारवाँ द्वीप की तरफ आता दिखाई दिया। कप्तान लंबे मोज़े और उनके साथी

शिकार में कामयाब होकर लौट रहे थे। पिप्पी ने ज़ोर-शोर से उनका स्वागत किया और काफी देर तक हाथ हिलाती रही। नावों से सभी ने चप्पू उठा-उठाकर उसका उत्तर दिया।

फिर पिप्पी ने जल्दी से जवाकुसुम वाली रस्सी अपने गैंग के लिए गुफा से बाँध दी ताकि टॉमी और अन्निका औरों के साथ आसानी से नीचे आ सकें। जब नावें और पिप्पी के पापा का जहाज़ किनारे आ गया तो बच्चों की पूरी फौज उनके स्वागत के लिए तट पर खड़ी मिली।

कप्तान लंबे मोज़े ने पिप्पी को बाँहों में भर लिया और पूछा, "सब ठीक-ठाक था न यहाँ?"

"जी पापा, एकदम शांत और मज़े में!" पिप्पी ने कहा।

"अरे पिप्पी, तुम यह क्या कह रही हो?" अन्निका से कहे बगैर रहा न गया। "यहाँ पता नहीं क्या क्या होता रहा!"

"हाँ, मैं तो भूल ही गई," पिप्पी ने कहा। "महाराज इफ्राईम, एकदम शांत तो नहीं था सब। आप के पीठ फेरते ही न जाने क्या क्या होने लगा!"

"तू बता तो सही मेरी बच्ची कि हुआ क्या?" कप्तान लंबे मोज़े ने बड़े फिक्र से पूछा।

"बहुत गड़बड़ हुआ!" पिप्पी बताने लगी। "हुआ यह कि श्रीमान् नीलसन की घास वाली टोपी कहीं खो गई।"

11 कुर्रकुर्रदत्त द्वीप से पिप्पी की वापसी



ऐसे ही बहुत सुंदर दिन बीत गए। सूरज की प्यारी गुनगुनी धूप, नीला चमचमाता समुद्र और खुशबूदार फूलों की घनी झाड़ियाँ, इन सब के बीच दिन पता नहीं कैसे खत्म हो जाता था।

टॉमी और अन्निका सीधी धूप झेलते-झेलते अब भूरे रंग के हो गए थे, बिल्कुल कुर्रकुर्रदत्त के बच्चों की तरह। पिप्पी के चेहरे पर जो लाल दाने थे, वह अब और भी ज़्यादा फैल चुके थे।

"यह यात्रा तो मेरे लिए सुंदर बनाने वाली साबित हुई।" पिप्पी ने खुशी से कहा। "अब मेरे चेहरे पर लाल दानों की संख्या बढ़ गई है, और इसका मतलब है कि मैं और भी खूबसूरत हो गई हूँ। अगर यही सिलसिला चलता रहा तो मैं बहुत जल्दी किसी अप्सरा या परी जैसी लगने लगूँगी।"

खैर, मोमो और मोआना जैसे कुर्रकुर्रदत्त के बच्चों के लिए तो पिप्पी अब भी किसी करिश्मे से कम नहीं थी। उनकी ज़िंदगी में भी इतनी मौजमस्ती का दौर पहले कभी नहीं आया था। इसलिए वे टॉमी और अन्निका जितना ही प्यार पिप्पी से करने लगे थे। उन सबकी टॉमी

और अन्निका से खूब बनती थी। सबको दिनभर साथ खेलने में बहुत बहुत मज़ा आता था। कई बार वे लोग ऊपर गुफा में चले जाते थे।

पिप्पी ने वहाँ कुछ कंबल भी रखवाए थे कि वे जब चाहें रात को वहाँ सो सकें। इससे उनका गुफा में सोना पहले से भी अधिक आरामदायक हो गया था। उसने रस्सी की एक सीढ़ी बना ली थी जो नीचे पानी तक जाती थी। इस सुविधा के साथ बच्चों का ऊपर, नीचे, पानी में या पहाड़ पर चढ़ना और उतरना आसान हो गया था। नीचे पास की दो चट्टानों के बीच, एक जाली लगाकर पिप्पी ने शार्कों का रास्ता बंद कर दिया था। इससे, अब वे इस तरफ आ नहीं सकते थे और यह इलाका बच्चों के लिए सुरक्षित हो गया था। अब तैरकर पानी से भरी उन गुफाओं में आना-जाना रोज़ की बात हो गई थी। टॉमी और अन्निका भी पानी के नीचे जाकर सीपियाँ इकट्ठी कर ला सकते थे। अन्निका को जो सबसे पहला मोती मिला, वह बड़ा सुंदर गुलाबी रंग का था। उसने तय किया था कि इसे वह घर ले जाएगी और अँगूठी में जड़ा लेगी। वह अँगूठी उसके लिए कुर्रकुर्रदत्त की यादगार होगी।

कभी-कभी वे नाटक खेलते, जिसमें पिप्पी मोती चुराने गुफा तक जाने की कोशिश करनेवाला 'बक' बन जाती। टॉमी फुर्ती से रस्सी की सीढ़ी ऊपर खींच लेता और पिप्पी चट्टान से गिरती-फिसलती ऊपर जाने की कोशिश करती। सब बच्चे शोर मचाते, "बक आ रहा है!" जब वह गुफा के अंदर झाँकती तो वे उसके पेट में बारी-बारी से उँगलियाँ चुभोते, उसे समुद्र में गिराने के लिए। पिप्पी धड़ाम से पानी में गिर पड़ती, सिर्फ उसके नंगे पैर पानी से बाहर दिखाई देते और बच्चे हँस-हँसकर इतने लोट-पोट हो जाते थे कि गुफा से नीचे गिरते-गिरते बचते थे।

जब गुफा में खेलने से मन भर जाता तो वे बाँस की कुटिया में खेलने लगते जो पिप्पी और उन सबने खुद बनाई थी। कहना न होगा कि सबसे ज़्यादा मेहनत पिप्पी ने ही की थी। वह चौरस थी और काफी बड़ी। पतले बाँस से बनी होने के कारण बच्चे उस पर चढ़ सकते थे, उसकी छत पर जा सकते थे। कुटिया की बगल में ही नारियल का

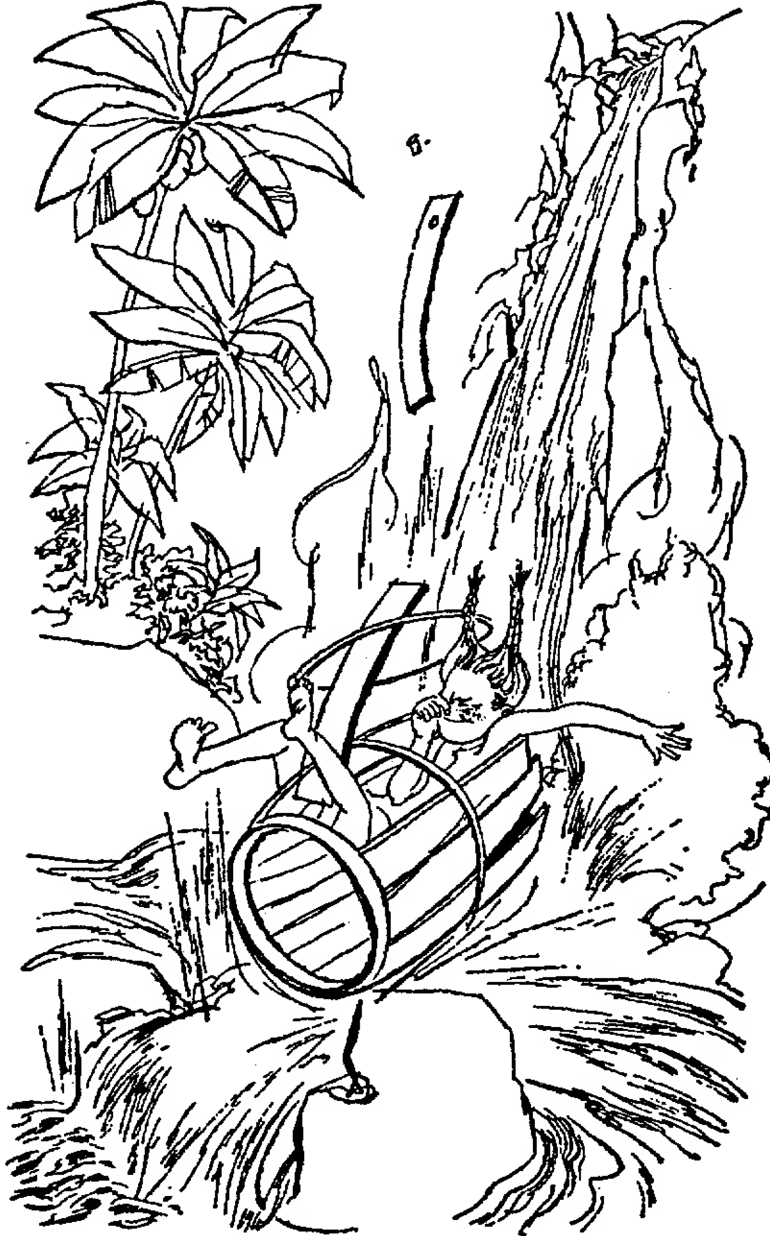
ऊँचा पेड़ था। पिप्पी ने उसके तने पर पाँव रखने की जगहें कुरेद रखी थीं कि आसानी से ऊपर चढ़ सकें। उसके ऊपर तक जाओ तो बहुत सुंदर नज़ारा दिखाई देता था। दो नारियल के पेड़ों के बीच जवाकुसुम की टहनी से पिप्पी ने एक झूला-सा बना लिया था। वह बड़ा मज़ेदार था क्योंकि उस पर बच्चे जितनी ऊपर पेंग भरना चाहें, भर सकते थे, और चाहते तो हवा में कूदकर सीधे समुद्र तक जा सकते थे।

पिप्पी इतनी ऊँची पेंग भरती थी और पानी में इतनी दूर-दूर तक पहुँच जाती थी कि कहती, "एक दिन यों ही मैं ऑस्ट्रेलिया पहुँच जाऊँगी, पता नहीं किसके सिर पर जा गिरूँगी!"

बच्चे जंगलों में सैर सपाटे के लिए जाते थे। वहाँ एक ऊँचा पहाड़ था और उससे निकलता सोता भी। पिप्पी ने ठान लिया था कि वह एक लकड़ी के पीपे में बैठकर सोते से नीचे जाएगी। उसने पापा के जहाज़ से एक लकड़ी का मज़बूत-सा लगने वाला पीपा चुन लिया और उसमें घुस बैठी। मोमो और टॉमी ने मिलकर पीपे का ढक्कन बाहर से लगा दिया और उसे ज़ोर से धक्का देकर सोते में डाल दिया। पीपा बहुत तेज़ी से नीचे गया और फिर टूट गया। बच्चों ने देखा कि पिप्पी जोर से गिरने वाले पानी में कहीं खो गई है। शायद वे अब कभी उसे देख भी ना पाएँ, लेकिन अचानक वह सतह पर दिखाई पड़ी, तैरकर किनारे आई और बोली, "ये लकड़ी के पीपे बड़ी तेज़ चलते हैं!"

दिन तेज़ी से गुज़रते गए। अब बारिश का मौसम शुरू होनेवाला था। बारिश के दिनों में कप्तान लंबे मोज़े अपनी कुटिया में बंद रहते थे। उन्हें डर था कि बारिश के दिनों अंदर ही अंदर घुटकर रहने से पिप्पी तंग आ जाएगी। आजकल टॉमी और अन्निका को भी उनके माँ-बाप की याद बहुत आती थी। उन्हें क्रिसमस पर घर ज़रूर जाना था। इसलिए जब पिप्पी ने उनसे पूछा, "टॉमी और अन्निका, क्या तुम्हें कुछ समय के लिए विला विल्लाकुला वापस जाना है?" तो उन्हें कतई बुरा नहीं लगा।

पर मोमो, मोआना और कुर्रकुर्रदत्त के बाकी सभी बच्चे ज़रूर दुखी हुए। पिप्पी, टॉमी और अन्निका के जाने का समय आ गया और वे पिप्पी के पापा के जहाज़ पर फिर सवार हो गए। लेकिन पिप्पी ने उन्हें



वचन दिया कि कुर्रकुर्रदत्त आती रहेगी। कुर्रकुर्रदत्त के बच्चों ने उन तीनों को फूलों के हार पहनाए। उनकी विदाई में एक गाना भी गाया, और जहाज़ समुद्र में चल पड़ा।

कप्तान लंबे मोज़े भी समुद्र तट पर खड़े हाथ हिला रहे थे। अपनी प्रजा की देखभाल के लिए उन्हें यहीं रहना था। फिरदौस ने बच्चों को ठीक से विल्लाकुला पहुँचाने का ज़िम्मा लिया था। कप्तान लंबे मोज़े और कुर्रकुर्रदत्त के दोस्तों से बिछड़ते हुए पिप्पी, टॉमी और अन्निका रो रहे थे। नज़रों से पार होने तक, वे तीनों जहाज़ पर खड़े हाथ हिलाते रहे।

घर पहुँचने तक जहाज़ का सफर बहुत अच्छा रहा, मौसम भी ठीक रहा।

"अब हम उत्तरी समुद्र में प्रवेश करने वाले हैं, चलो अपने-अपने गर्म कपड़े ढूँढो!" पिप्पी ने एक दिन कहा।

"उफ्फ! अब फिर वही सब सोच के ही घबराहट होती है!" टॉमी और अन्निका एक साथ बोल पड़े।

मौसम और हवा का रुख अच्छा होने के बावजूद वे क्रिसमस पर घर नहीं पहुँच पाए। जब पता चला कि क्रिसमस जहाज़ पर ही मनाना होगा, तो टॉमी और अन्निका को बहुत ही निराशा हुई। न क्रिसमस का पेड़ न कोई तोहफे – यह भी कोई बात हुई!

"इससे तो अच्छा होता कि कुर्रकुर्रदत्त ही रुक जाते!" टॉमी ने गुस्से में कहा।

अन्निका ने जब अपने माँ-बाप के बारे में सोचा तो लगा कि घर जाकर खुशी ही होगी, चाहे कभी भी हो! क्रिसमस पर न पहुँच पाने की निराशा दोनों के मन में थी, पर क्या करते?

जनवरी की एक ठंडी काली घुप्प रात थी। अचानक तीनों बच्चों को दूर से अपने गाँव की बत्तियाँ दिखाई दीं, मानो दिप-दिप करती उनका स्वागत कर रही हों। कुछ ही घंटों में उनकी घर वापसी हुई।

जहाज़ किनारे लगते-लगते, पिप्पी अपने घोड़े के साथ लकड़ी के फट्टों के पुल पर पहुँच गई और उसने टॉमी और अन्निका से कहा, "लो, खत्म हो गया हमारा सफर!"

उन्हें लेने बंदरगाह पर कोई नहीं आया था क्योंकि किसी को पक्का मालूम नहीं था कि वे कब लौटेंगे। पिप्पी ने टॉमी, अन्निका और श्रीमान् नीलसन को घोड़े पर बिठा लिया और वे विला विल्लाकुला की तरफ निकल पड़े। बेचारे घोड़े की हालत खस्ता हो गई थी। सड़क पर बर्फ और बर्फ को हटाने के फावड़े, जगह जगह फैले हुए थे। उनसे बचकर निकलना था। टॉमी और अन्निका बर्फ से आगे देख रहे थे। उन्हें उनके मम्मी-पापा मिलने वाले थे और अब पता चल रहा था कि उन्हें उनकी कितनी याद आ रही थी।

जब वे अपने घर तक पहुँचे तो घर बत्तियों से जगमगाता मिला। खिड़की से देखा तो उनके मम्मी-पापा खाने के टेबल पर बैठे नज़र आए।

"देखो, मम्मी-पापा!" टॉमी ने कहा। वह बहुत खुश था और उनसे मिलने को आतुर भी!

लेकिन विला विल्लाकुला में घना अँधेरा था। वह तो बर्फ से ढक गया था।

अन्निका को पिप्पी के अकेले घर लौटने के ख्याल से बहुत बुरा लग रहा था। "प्लीज़ पिप्पी, आज की रात तुम हमारे पास रहो!" उसने पिप्पी को मनाने की कोशिश की।

"अरे नहीं!" पिप्पी ने फाटक के बाहर पड़ी बर्फ में कूदकर कहा, "मुझे अपने घर में काफी काम होगा! चीज़ें, सामान सब कुछ तो देखना है।"

अपने पेट तक ऊँचे बर्फ के बीच से उसने घर में घुसने का रास्ता बना लिया। घोड़ा भी पीछे-पीछे आ रहा था।

"लेकिन अंदर बहुत ठंड होगी!" टॉमी ने कहा, "न जाने कितने दिनों तक यह बंद रहा है, किसी ने गर्म नहीं किया है।"

"छोड़ो यार!" पिप्पी बोली, "अगर आप का दिल गर्मजोशी से भरा है और ठीक से चल रहा है, तो यह ठंड क्या चीज़ है!"



12 पिप्पी लंबे मोज़े कभी बड़ी नहीं होगी

टॉमी और अन्निका के मम्मी-पापा ने अपने बच्चों को कितनी बार गले लगाया और चूमते रहे। फिर उनके लिए बढ़िया खाना बनाया। बच्चों को उनके बिस्तरों में सुलाते वक्त उनसे ढेर सारी बातें कीं, कुर्रकुर्रदत्त के अजीबोगरीब किस्से सुने। वे सब कितने खुश थे! एक ही बात का दुख था कि इस बार वे क्रिसमस मना नहीं पाए थे। टॉमी और अन्निका अपनी माँ को नहीं बताना चाहते थे कि क्रिसमस के पेड़ और तोहफों की उन्हें कितनी याद आई थी, लेकिन वह सच तो था ही! वापस लौटने के बाद सब कुछ अजीब-सा लग रहा था। ऐसा होता ही है जब आप महीनों बाद घर लौटते हैं; यह शायद इतना अजीब न लगता अगर वे क्रिसमस के एकाध दिन पहले घर पहुँच गए होते।

पिप्पी का ख्याल आने पर टॉमी और अन्निका को बुरा लग रहा था। अब वह विला विल्लाकुला में, अपने बिस्तर में पाँव तकिये पर रखे सोई होगी, लेकिन घर पर उसे सुलाने वाला कोई बड़ा नहीं था। कल सुबह जल्दी से जल्दी जाकर उसे मिलेंगे – उन्होंने तय कर लिया।

दूसरे दिन, माँ ने उन्हें कहीं जाने ही न दिया क्योंकि इतने दिन



उनके बच्चे उनसे दूर रहे थे। और फिर उनकी दादी रात के खाने पर बच्चों से मिलने आ रही थीं। टॉमी और अन्निका को दिनभर पिप्पी की फिक्र होती रही कि न जाने वह अकेली, क्या कर रही होगी? जब अँधेरा छाने लगा तो उनसे रहा न गया।

"प्लीज़ माँ, हमें पिप्पी से मिल आने दो!" टॉमी ने कहा।

"ठीक है, जाओ। लेकिन जल्दी लौट आना।" माँ ने इजाज़त दी।

टॉमी और अन्निका भागे पिप्पी के घर!

जब वे विला विल्लकुला के बगीचे के फाटक पर पहुँचे तो देखते ही रह गए। वह तो जैसे कोई चित्र था। पूरा घर बर्फ के हल्के कंबल से ढका हुआ था, खिड़कियों पर चमचमाते दीये जल रहे थे। बरामदे में एक मशाल जल रही थी और उसकी रोशनी बर्फ से ढकी हरियाली पर फैली हुई थी। बरामदे का एक हिस्सा साफ कर रखा था, इसलिए टॉमी और अन्निका को अंदर आने में कोई परेशानी नहीं हुई।

अभी वे अपने जूतों से बर्फ झाड़ ही रहे थे कि दरवाज़ा खुला और पिप्पी वहाँ खड़ी थी "मेरी क्रिसमस" (क्रिसमस मुबारक हो!) कहते हुए।

वह उन्हें रसोईघर में ले गई – वहाँ क्रिसमस का पेड़ रखा था! उस पर दीये जल रहे थे और सत्रह गोले चमचमा रहे थे। कमरे में उनके जलने की एक अलग-सी खुशबू आ रही थी। तरह-तरह की खाने की चीज़ों से खाने की मेज़ सजी हुई थी। मिठाइयाँ, चिकन और गोश्त की चीज़ें, और वे सारे केक वगैरह जो खास क्रिसमस पर बनाए जाते हैं। स्वीडन में क्रिसमस पर ज़रूर बनाए जाने वाले अदरक की ब्रेड के गुड्डे (जिंजर ब्रेड मैन) और पंछियों के घोंसले, जो कुरकुरे आलू से बनते हैं, भी हाज़िर थे। अलाव में लकड़ियाँ जल रही थीं और उससे घर गर्म लग रहा था। घोड़ा पास खड़ा बहुत ही शालीनता से अपने खुर साफ कर रहा था। श्रीमान् नीलसन क्रिसमस के पेड़ पर लगे चमकदार गोलों को घूरते इधर-उधर कूद रहे थे।

"इसे मैंने देवदूत बनने के लिए कहा था।" पिप्पी ने मुँह लटकाकर कहा, "लेकिन यह एक जगह टिककर बैठे तो!"

टॉमी और अन्निका दंग होकर देखते ही रह गए।

"पिप्पी यार!" अन्निका ने कुछ देर बाद कहा, "कितना खुबसूरत है यह सब! कैसे कर लिया तुमने?"

"मैं बहुत काम की चीज़ हूँ!" पिप्पी ने इतराकर कहा।

टॉमी और अन्निका की खुशी का अब कोई अंत ही नहीं था।

"अब महसूस हो रहा है कि विल्लाकुला में हमारी वापसी कितनी प्यारी और शानदार है!" टॉमी ने कहा।

वे खाने की मेज़ पर बैठ गए और क्रिसमस की दावत का मज़ा लेने लगे। अब ये मिठाइयाँ और घर की चीज़ें उन्हें कुर्रकुर्रदत्त के ब्रेडफ्रूट और केलों से ज़्यादा पसंद आ रही थीं।

"लेकिन पिप्पी, आज तो क्रिसमस है नहीं," टॉमी ने कहा।

"है। बिल्कुल है!" पिप्पी ने जवाब दिया। "विला विल्लाकुला में कैलेंडर ज़रा पीछे चल रहा है, इसलिए दिन ज़रा देर से आते हैं। मैं इस कैलेंडर को कारीगर के पास ले जाऊँगी और ठीक करवा लूँगी।"

"कितना मज़ा आ रहा है!" अन्निका ने फिर से कहा। "हम क्रिसमस मना ही रहे हैं – देर हुई तो क्या! क्रिसमस के तोहफे नहीं हैं, तो ना सही!"

"याद आया," पिप्पी ने कहा। "मैंने तुम लोगों के तोहफे इधर उधर छुपा रखे हैं। आओ, अपने आप ढूँढ लो।"

टॉमी और अन्निका के चेहरे उत्सुकता से खिल गए, वे फटाफट उठकर अपने तोहफे ढूँढने लगे। लकड़ी के टोकरे में टॉमी को एक बड़ा-सा पैकेट मिला जिस पर "टॉमी" लिखा था। उसमें रंगों का एक सेट था। मेज़ के नीचे अन्निका को उसके नाम का पैकेट मिला, खोलकर देखा तो लाल रंग का छाता था।

"यह मैं अगली बार कुर्रकुर्रदत्त ज़रूर ले चलूँगी," अन्निका ने कहा।

ऊपर आले में दो और पैकेट पड़े थे। एक में थी जीप, टॉमी के लिए, और एक में था गुड़िया के सामान का सेट, अन्निका के लिए। घोड़े की दुम से एक और पैकेट लटक रहा था। उसमें से निकली एक घड़ी, टॉमी और अन्निका के कमरे के लिए।

जब उन्हें अपने-अपने तोहफे मिल गए तो उन्होंने आकर पिप्पी को खूब प्यार किया और धन्यवाद भी दिए। अब पिप्पी रसोईघर के दरवाजे पर खड़ी खिड़की से बाहर बगीचे में पड़ी बर्फ देख रही थी।

"कल हम यहाँ एक बड़ी सी बर्फ की झोंपड़ी बनाएँगे," पिप्पी ने कहा। "और उसमें रात को दीये भी जलाएँगे।"

"हाँ! ज़रूर," अन्निका ने हामी भरी। घर लौटने का असली मज़ा तो अब शुरू हो रहा था।

"मैं यह भी सोच रही थी कि हमारे घर की छत से बगीचे तक एक बर्फ की चौड़ी-सी फिसलपट्टी बना लें तो? मैं घोड़े को बर्फ पर स्कीईंग सिखाना चाहती हूँ। यह तय नहीं कर पा रही कि इसे चार पहियों की ज़रूरत होगी या दो से काम चल जाएगा!"

"बड़ा मज़ा आएगा कल!" टॉमी ने कहा, "बहुत अच्छा हुआ जो हम क्रिसमस की छुट्टियों में घर आ गए।"

"हम हमेशा मज़े से रहेंगे।" अन्निका बोली! "चाहे हम विला विल्लाकुला में हों या कुर्रकुर्रदत्त द्वीप पर या कहीं और।"

पिप्पी ने सहमति में ज़ोर-ज़ोर से सिर हिलाया। अब वे तीनों चढ़कर खाने की मेज़ पर जा बैठे थे। इतने में टॉमी के चेहरे पर चिंता की काली घटा छा गई।

"मैं कभी बड़ा नही बनूँगा," उसने ज़ोर से कहा।

"मैं भी!" अन्निका ने कहा।

"नहीं! बड़े होने में रखा ही क्या है!" पिप्पी ने कहा "बड़ों को मौजमस्ती उड़ाते मैंने कभी नहीं देखा। उनके पास कई उबाऊ काम करने के लिए होते हैं, और अजीब-से कपड़े पहनने पड़ते हैं, और उल्टीपाल्टी के बिल भरने पड़ते हैं।"

"उल्टीपाल्टी नहीं, मुनसिपालटी," अन्निका ने कहा।

"जो भी हो! बात तो वही है, पागलपन की।" पिप्पी ने कहा, "उनके दिमाग में कई अजीब-सी बातें भरी रहती हैं, जैसे खाते वक्त छुरी मुँह में चिपक जाए तो कुछ भयानक घटना होगी और ऐसी ही कई बातें!"

"वे खेल भी नहीं सकते," अन्निका ने कहा।

"वाकई, बड़े होना बहुत बुरी बात है।"

"लेकिन यह किसने कहा कि बड़े होना ही पड़ेगा?" पिप्पी ने कहा, "हाँ, मुझे याद है मेरे पास कुछ गोलियाँ पड़ी हैं।"

"कैसी गोलियाँ?" टॉमी ने पूछा।

"छोटी-छोटी गोलियाँ, उनके लिए जो बड़े होना नहीं चाहते।" पिप्पी ने टेबल से नीचे कूदते हुए कहा। उसने दराज़ खोलकर ढूँढना शुरू किया और अलमारियाँ छान डालीं। कुछ देर बाद वह तीन गोलियाँ लेकर आई जो तीन सूखे मटर के दानों जैसी लग रही थीं।

"मटर!" टॉमी को आश्चर्य हो रहा था।

"देख के तुम यही कहोगे!" पिप्पी ने कहा, "पर ये मटर नहीं, चिलीलूग की गोलियाँ हैं। मुझे ये रियो में एक बूढ़े आदिवासी बावर्ची ने दी थीं जब मैंने उससे कहा था कि बड़े होने का ख्याल मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि ये छोटी गोलियाँ काम करेंगी?" अन्निका ने शक करते हुए कहा।

"बिल्कुल!" पिप्पी ने कहा "इन्हें अँधेरे में खाना होता है। खाते समय यह मंत्र भी बोलना होता है –

"छोटी नन्ही चिलीलूग
मेरा बूड़ा होना रुक"

"तुम्हारा मतलब है मेरा बड़ा होना रुक!" टॉमी ने कहा।

"बूड़ा का मतलब है बूढ़ा!" पिप्पी ने जमकर कहा। "यही तो खास बात है। बहुत सारे बच्चे 'बड़ा' कहते हैं और तब जादू उलटा पड़ जाता है। जादू उलटा पड़ जाने से आप पहले से भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ते हैं। एक लड़का था जिसने ये गोलियाँ खाते-खाते 'बूड़ा' की जगह 'बड़ा' बोला और वह ऐसा बढ़ने लगा कि पूछो मत! हर दिन उसकी लंबाई कई फुट बढ़ जाती थी। बहुत भयानक हो गया था वह मामला! वह काम चलाता रहा जब तक कि जिराफ की तरह सेब के पेड़ों से सेब तोड़कर खा सकता था। लेकिन वह और बढ़ा और इस तरह खाना-पीना भी मुश्किल हो गया। जब उसके घर उसकी माँ की सहेलियाँ आती थीं और उन्हें कहना होता था कि 'कितना बड़ा हो गया है,' तो उन्हें माइक्रोफोन का इंतज़ाम करना पड़ता था कि लड़के तक उनकी आवाज़ पहुँचे। आप को सिर्फ दिखाई देते थे उसके लंबे, पतले पैर, ऊँचे खंभों की तरह आकाश में ऊपर-ऊपर-और-ऊपर जाने वाले। उसकी आवाज़ कभी किसी ने नहीं सुनी – सिर्फ एक दिन को छोड़कर, जब उसने सूरज को चाटने की कोशिश की थी और उसकी ज़बान जल गई थी। तब वह इतनी ज़ोर से चीखा था कि ज़मीन पर सारे फूल डर के मारे सूख गए थे। बस इतना ही पता चला उसके बारे में। शायद उसके पैर अब भी शहर में घूमते दिखाई देते हैं, और उनसे सड़क पर यातायात में बहुत गड़बड़-घोटाला होता रहता है।"

"तो फिर मैं नहीं खाऊँगी वे गोलियाँ," अन्निका ने सिहरकर कहा, "अगर मंत्र बोलते वक्त मुझसे भी गलती हो गई तो!"

"अरे नहीं, नहीं। ऐसा नहीं होने देंगे हम," पिप्पी ने उसको भरोसा दिलाया। "अगर इसका खतरा होता तो यह गोली क्या मैं तुम्हें देती? सिर्फ तुम्हारे लंबे पैरों के साथ खेलना कितना उबाऊ होगा, है न? टॉमी, मैं और तुम्हारे पैर – यह भी कोई बात हुई!"

"तुमसे गलती नहीं होगी, अन्निका," टॉमी ने कहा।

उन्होंने धीरे-धीरे क्रिसमस की बत्तियाँ बुझा दीं। रसोईघर में पूरा अँधेरा हो गया था, सिर्फ चूल्हे में कुछ आग जलती दिखाई दे रही थी।

तीनों बच्चे चुपचाप फर्श पर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर गोलाकार बैठ गए। पिप्पी ने टॉमी और अन्निका को एक-एक चिलीलूग गोली पकड़ाई। उनके शरीरों में एक ठंडी लहर दौड़ गई। हम कभी बड़े न होंगे, कितना अच्छा है न!

"अब," पिप्पी फुसफुसाई।

"छोटी प्यारी चिलीलूग मेरा बूड़ा होना रुक," तीनों ने मंत्र का जप किया और गोलियाँ गटक लीं। बस, हो गया!

पिप्पी ने ऊपर की बत्ती जलाई। "बात खतम!" उसने कहा, "अब हमें बड़े नहीं होना होगा और न जोड़ों का दर्द जैसी बुढ़ापे की बीमारियाँ

हमें तंग करेंगी। ये गोलियाँ मेरी दराज़ में काफी सालों से पड़ी हैं, हो सकता है कि इनकी शक्ति कुछ कम हो गई हो, लेकिन उम्मीद करते हैं कि सब ठीक-ठाक ही होगा।"

अन्निका को अचानक याद आया। "अरे पिप्पी, तुमने तो कहा था कि बड़ी होकर तुम समुद्री डाकू बनना चाहती हो!"

"उफ्फ! लेकिन कोई बात नहीं!" पिप्पी ने कहा, "मैं छोटी खतरनाक समुद्री डाकू बन जाऊँगी और अपने आसपास ऊधम मचाऊँगी।"

पिप्पी कुछ देर चुपचाप बैठी सोचती रही। "सोचो तो," उसने कहा, "कई सालों बाद यहाँ ऐसी ही कोई औरत पास से गुज़रते हुए रुककर टॉमी से पूछेगी, 'तुम्हारी उम्र क्या है बच्चे?' और टॉमी जवाब देगा, 'तिरपन साल, अगर मुझे ठीक से याद है तो!'"

टॉमी खिलखिलाकर हँस पड़ा, "उसे लगेगा, मेरी उम्र ज़्यादा है लेकिन मैं बहुत छोटा हूँ।"

"बिल्कुल," पिप्पी बोली, "तुम्हें उसे समझाना होगा कि तुम इससे बड़े थे, जब तुम छोटे थे।"

तभी टॉमी और अन्निका को याद आया कि उनकी माँ ने उन्हें जल्दी लौट आने को कहा था।

"लगता है, अब घर जाना होगा!" टॉमी ने कहा।

"कल तो आएँगे ही," अन्निका ने कहा।

"ठीक है," पिप्पी ने कहा, "हम आठ बजे यहाँ बर्फ की झोंपड़ी बनाने का काम शुरू कर देंगे।"

उसने उन दोनों को फाटक तक छोड़ दिया और भागकर अपने घर वापस आई। भागते वक्त उसकी दोनों लाल चोटियाँ उसके साथ ऊपर-नीचे हो रही थीं।

टॉमी ने रात को सोने से पहले दाँत साफ करते हुए अन्निका से कहा, "मुझे पक्का पता है कि वे चिलीलूग की गोलियाँ-वोलियाँ कुछ नहीं हैं, वे सूखे मटर थे बस!"

अन्निका गुलाबी पाजामा पहने अपनी खिड़की से बाहर विल्लाकुला देख रही थी। "वह देखो, पिप्पी!" उसने खुशी से चहकते हुए कहा।

टॉमी भी दौड़ा-दौड़ा खिड़की के पास गया। वाकई पिप्पी उसके घर में साफ नज़र आ रही थी। सर्दियों में पेड़ों पर पत्ते तो बिल्कुल नहीं थे, इसलिए पिप्पी का रसोईघर सीधा नज़र आ रहा था।

पिप्पी मेज़ पर हाथ रखकर, सिर टिकाए बैठी हुई थी। वह सामने रखी मोमबत्ती की लौ को देख रही थी। कुछ ऐसे, जैसे कोई सपना देख रही हो।

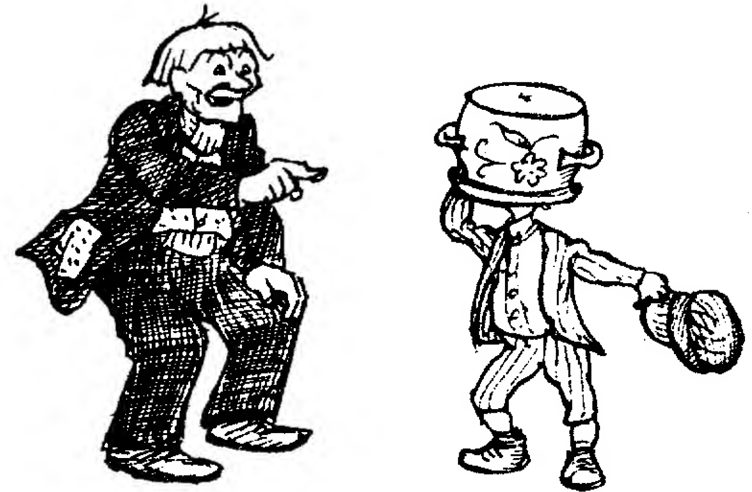
"वह, वह कितनी अकेली लगती है!" अन्निका ने कहा, उसकी आवाज़ काँप रही थी। "ओह टॉमी! अगर यह सुबह होती तो हम फौरन उसके पास चले जाते!"

वे दोनों वहीं चुपचाप खड़े रहे और सर्दियों की उस रात में जाने क्या देखते रहे। विला विल्लाकुला की छत के ऊपर आकाश में तारे चमक रहे थे। पिप्पी अंदर थी। वह हमेशा वहीं होगी, यह सोचकर उन्हें अच्छा लग रहा था। साल उलटते जाएँगे लेकिन टॉमी, अन्निका और पिप्पी कभी बड़े नहीं होंगे। हाँ, अगर चिलीलूग की गोलियाँ काम करें तो। बसंत ऋतु, गर्मियाँ, सर्दियाँ आती जाती रहेंगी लेकिन बच्चे और उनके खेल चलते रहेंगे। कल वे मिलकर बर्फ की झोंपड़ी बनाएँगे और विला विल्लाकुला की छत से नीचे तक आने वाली चौड़ी ढलान भी, स्कीईंग के लिए। जब बसंत ऋतु आएगी, वे बाज के पेड़ में जो खोखली जगह है, वहाँ जा बैठेंगे। जादू से वहाँ गोली वाला शरबत मिलता है। वे छुपे हुए खज़ाने ढूँढेंगे और पिप्पी के घोड़े पर सवार हो कर घुड़सवारी करेंगे। वे लकड़ी के बक्से में बैठ जाएँगे और कहानियाँ सुनेंगे। जब जब हो सके, तब तब वे कुर्रकुर्रदत्त भी जाया करेंगे – मोमो, मोआना और उनके बाकी दोस्तों से मिलने।

सबसे दिलासा देने वाली बात यह है कि विला विल्लाकुला में पिप्पी हमेशा मिलेगी।

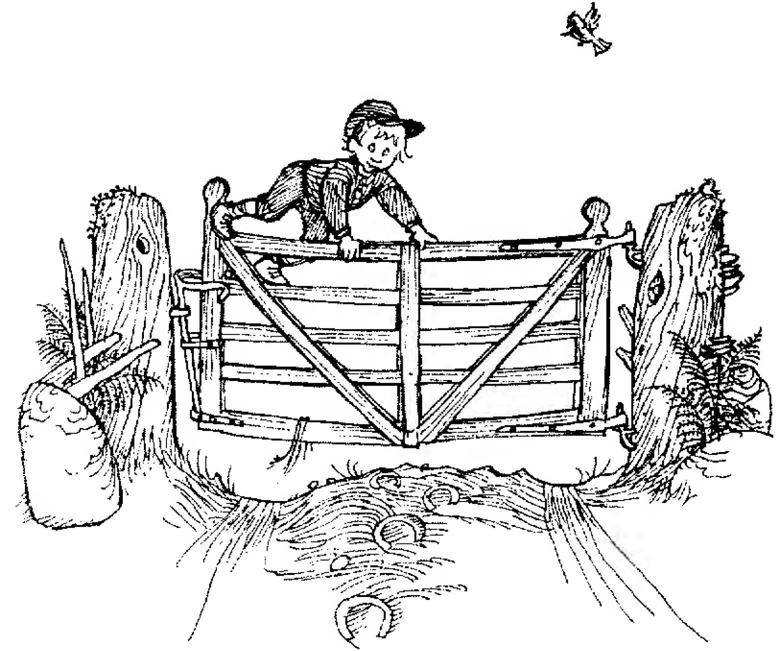
"वह हमारी तरफ देखे तो सही, हम उसे हाथ हिलाएँगे," टॉमी ने कहा।

लेकिन सपनीली आँखों से पिप्पी सामने देखती रही और कुछ देर बाद उसने बत्ती बुझा दी।

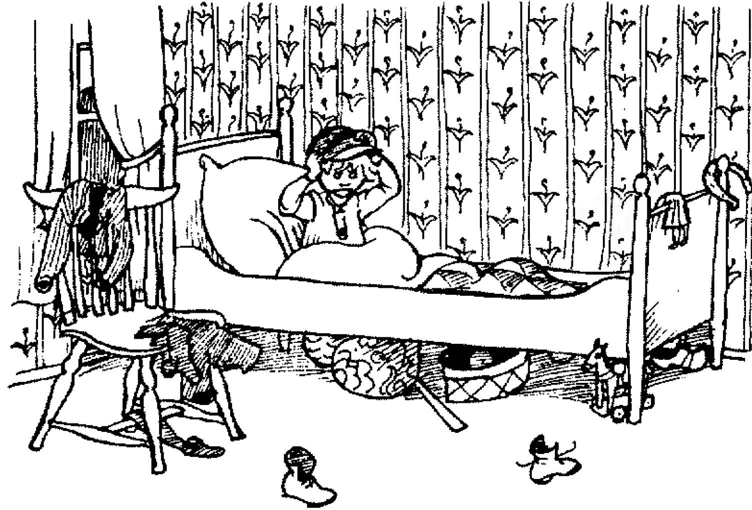


एमिल
सूप की हाण्डी में

एमिल सूप की हाण्डी में



बहुत दिन पहले की बात है, लोनबर्गा गाँव में एमिल नाम का एक लड़का रहता था। एमिल नटखट था और जिद्दी भी। वह तुम्हारी तरह अच्छा बच्चा थोड़े ही था? दिखने में प्यारा ज़रूर था, जब चीखता न हो तो अच्छा लगता था। गोल-गोल नीली आँखें, सेब जैसे गाल और भूरे बाल। उसे देखकर लोगों को लगता कितना प्यारा है। लेकिन उनका भ्रम टूटने में ज़्यादा देर न लगती।



एमिल बस पाँच साल का था लेकिन उसमें छोटे साँड़ की ताकत थी। वह लोनबर्गा गाँव के काटहुल्ट नाम की जगह में रहता था जो स्वीडन देश के स्मॉलंड राज्य में है।

एक दिन एमिल के पापा शहर से उसके लिए एक टोपी ले आए। वह एमिल को इतनी पसंद आई कि वह उसे पहनकर ही सोना चाहता था। माँ ने सोते वक्त टोपी उतारकर खूँटी से लटकाई तो एमिल ने चिल्ला-चिल्लाकर सारे गाँव को हिला दिया। फिर अगले तीन हफ्ते वह उसे पहनकर ही सोया।

टोपी में काली चमकीली चोंच थी और नीला मुकुट। उसे पहनकर सोना कोई आसान बात नहीं थी। पर एमिल को तो अपनी ज़िद पूरी करनी थी, सो उसने कर ही ली।

एक बार क्रिसमस में उसकी माँ ने उससे हरी सब्जियाँ खाने के लिए कहा था, जो हमारी सेहत के लिए अच्छी होती हैं। लेकिन एमिल ने कहा, ''ना।''

''हरा-भरा कुछ खाएगा नहीं तू?'' माँ ने पूछा।

''खाऊँगा,'' एमिल ने कहा, ''लेकिन कुछ ऐसा-वैसा नहीं।'' फिर वह क्रिसमस के पेड़ के पास बैठकर उसे काटकर खाने लगा। लेकिन

थोड़ी ही देर में मुँह छिलने लगा तो उसे छोड़ दिया।

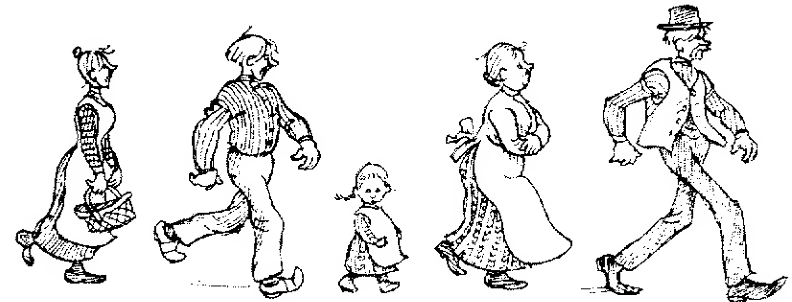


अब पता चला एमिल कितना हठी था? अगर उसका बस चलता तो वह अपने माँ-बाप ही नहीं पूरे लोनबर्गा पर राज करता, लेकिन गाँव वाले ऐसा क्यों होने देते!

''काटहुल्ट के लोग बेचारे पता नहीं इस आफत के टोकरे को कैसे झेलते हैं? इसका कभी कुछ नहीं बनने वाला,'' वे कहते।

खैर, यह तो उनकी उस वक्त की सोच थी। उन्हें तब पता नहीं था कि आगे क्या होनेवाला है। क्या वे सोच भी सकते थे कि एमिल गाँव का सरपंच बनेगा? सरपंच क्या होता है, यह शायद तुम्हें अभी मालूम न हो, लेकिन मैं बता दूँ कि यह एक बहुत शानदार काम होता है – रोब-रुतबे वाला।

लेकिन अभी तो हम एमिल के बचपन की बातें कर रहे हैं, जब वह काटहुल्ट में रहता था। उसके पापा का नाम अन्तोन स्वेनसन था और माँ का नाम अल्मा। उसकी छोटी बहन का नाम इडा था। आल्फ्रेड उनके खेतों में काम करता था और लीना उनका घर सँभालती थी। जब एमिल छोटा था, खेतों में या घर का काम करने के लिए नौकर बड़ी



आसानी से मिल जाते थे। खेतों में काम करने वाले हल चलाकर ज़मीन जोतते, घोड़ों की देखभाल करते, सूखा चारा लाते और आलू बोते थे। नौकरानियाँ दूध निकालतीं, झाड़ू-बुहारी करतीं और बच्चों को गाने गाकर सुलाया करती थीं।

काटहुल्ट में कौन-कौन रहता था, यह तो आप जानते ही हैं। पापा अन्तोन, माँ अल्मा, नन्ही इडा, आल्फ्रेड और लीना। और फिर उनके पास दो घोड़े, बैलों का जोड़ा, आठ गायें, तीन सूअर, दस भेड़ें, पंद्रह मुर्गियाँ, एक मुर्गा, एक बिल्ली और एक कुत्ता था। और था एमिल!

काटहुल्ट बड़ी प्यारी जगह थी। बड़े से खेत, पहाड़ पर बना लाल रंग का मकान, सेबों के बाग, लाल-गुलाबी फूलों के पेड़। काफी सारे खेत, जोती हुई ज़मीनें, तालाब और घना जंगल।

काटहुल्ट बड़ी शांत जगह होती, अगर एमिल न होता!

"यह लड़का हमेशा कुछ न कुछ शरारत करता ही रहता है!" लीना कहती। "और अगर खुद शरारत न करे, तो उसे कुछ न कुछ हो ही जाता है। ज़िंदगी में मैंने ऐसा लड़का कहीं नहीं देखा!"

लेकिन एमिल की माँ उसके बचाव के लिए आ जातीं।



"एमिल इतना बुरा तो नहीं है," वे कहतीं। "आज देखो, उसने बस इडा को चिकोटी काटी और कॉफी का दूध गिरा दिया, इतना ही तो किया। और हाँ, बिल्ली को मुर्गीखाने तक दौड़ाया भी। मुझे लगता है एमिल सुधरने लगा है। उसकी शरारतें कम हो गई हैं।"



कोई कभी यह नहीं कह सकता था कि एमिल बुरा है। उसे इडा से और बिल्ली से बहुत प्यार था। लेकिन इडा उसे अपना ब्रेड और जैम नहीं देती थी, इसलिए एमिल को उसे चिकोटी काटनी पड़ी थी। बिल्ली के पीछे तो वह इसलिए भागा था कि पता चले कि वह उसके जितना तेज़ दौड़ पाता है या नहीं। बिल्ली को खैर यह कहाँ मालूम था!

तो मार्च की 7 तारीख को एमिल एक अच्छा बच्चा था। सिर्फ इतना ही कि उसने इडा को चिकोटी काटी थी, कॉफी का दूध गिरा दिया था और बिल्ली का पीछा किया था। अब सुनो तीन और दिनों के किस्से जिनमें या तो एमिल ने शरारतें कीं या – जैसे लीना कहा करती थी – जहाँ एमिल होता था, कुछ न कुछ हो ही जाता था। तो करें शुरुआत?



22 मई – मंगलवार
एमिल का सिर सूप की हाण्डी में फँसा

उस दिन घर में, रात के खाने में मांस का शोरबा बना था। लीना ने गरम-गरम रसदार शोरबा नक्काशीदार हाण्डी में डाल रखा था। सब खाने की मेज़ पर बैठे मज़े से उसे सुड़क रहे थे – खास तौर पर एमिल। अगर एमिल को सूप पसंद आए तो उसके कहने की ज़रूरत नहीं होती थी – एमिल की ज़ोर-ज़ोर से सुड़कने की आवाज़ ही सब कुछ बता देती थी।

"इतनी आवाज़ क्यों करते हो?" माँ ने पूछा।

"नहीं तो फिर लोगों को पता कैसे चलेगा कि मैं सूप पी रहा हूँ!" एमिल ने कहा।

सब ने जी भर के सूप पिया। बस एक छोटी-सी बूँद रह गई थी बर्तन में। एमिल को वह बूँद नहीं छोड़नी थी और उस तक पहुँचने का तरीका यही था कि बर्तन में सिर डालकर उसे चाट लो। एमिल ने वही किया। और फिर? बर्तन से उसका सिर बाहर ही नहीं निकल रहा था! सिर पक्का फँस गया था। एमिल डरकर टेबल से उठ खड़ा हुआ।



बर्तन उसके सिर पर चिपक गया था। उसके कान और आँखें भी अंदर थीं। परेशान होकर एमिल बर्तन पर मुक्के मारने लगा, और चीखता रहा। लीना हैरान थी।

"यह तो हमारा सबसे बढ़िया बर्तन था," उसने कहा। "कितनी प्यारी नक्काशी थी इस पर। अब हम सूप किसमें डालेंगे?"

लीना थोड़ी बुद्धू ज़रूर थी लेकिन उसकी समझ में इतना तो आ ही गया था कि जब तक एमिल का सिर बर्तन से बाहर नहीं निकलता, उसमें सूप नहीं डाला जा सकता था।

एमिल की माँ को एमिल की चिंता ज़्यादा थी।

"हे भगवान, अब हम अपने बच्चे का सिर कैसे निकालेंगे बाहर? किसी चीज़ से बर्तन फोड़ना होगा!"

"तुम पागल तो नहीं हो?" एमिल के पापा गुर्राए। "पूरे चालीस क्रोनर (स्वीडन की मुद्रा) का है यह बर्तन!"

"मैं कोशिश करता हूँ," आल्फ्रेड ने कहा। खेतों पर काम करने से उसके हाथ मज़बूत हो गए थे। उसने दोनों हाथों से बर्तन ऊपर उठाने की कोशिश की पर एमिल भी साथ ऊपर उठ गया। एमिल का सिर बर्तन में धँस गया था, और वह हवा में पैर मार ज़मीन पर आने का प्रयास कर रहा था।

"जाने दो! मुझे नीचे रखो! रखो नीचे!" वह आल्फ्रेड पर चिल्ला रहा था। आल्फ्रेड ने उसे नीचे रख दिया।

अब घर में सभी परेशान थे। पापा, माँ, इडा, लीना और आल्फ्रेड एमिल को घेरे खड़े थे। समझ में नहीं आ रहा था कि एमिल को बाहर कैसे निकालें।



"देखो एमिल रो रहा है!" इडा बोली। एमिल के गालों पर कुछ बह रहा था।

"मैं रो नहीं रहा, यह तो बचा-खुचा सूप है।" एमिल ने कहा।

एमिल की आवाज़ हमेशा की तरह ढीठ थी, लेकिन सिर तो फँसा हुआ था, और सिर कभी बाहर ही न निकला तो? बेचारा एमिल! बर्तन सिर पर रहा तो वह अपनी प्रिय टोपी कैसे पहनेगा?

एमिल की माँ अपने बेटे को लेकर परेशान थीं। वह चाहती थीं कि बर्तन फोड़कर उसे बाहर निकाला जाए। तभी पापा ने कहा, "भूलो मत, यह बर्तन 40 क्रोनर का है। हमें शहर जाकर डॉक्टर से निकलवाना होगा! डॉक्टर 30 क्रोनर फीस लेगा लेकिन 10 तो फिर भी बचेंगे!"

एमिल की माँ को यह बात ठीक लगी। रोज़-रोज़ थोड़े ही 10 क्रोनर बचाने का मौका मिलता है। सोचो तो क्या हो सकता है बचे हुए क्रोनर से! इडा के लिए कोई चीज़ आ सकती है क्योंकि उसे तो घर पर ही रहना होगा!

बस, घर में हबड़ाधबड़ी मच गई। एमिल को साफ सुथरा तैयार करके बाहर ले जाना था। उसके कपड़े बदलने थे। बाल बनाने का या कान साफ करने का सवाल ही नहीं था। हालाँकि उसकी ज़रूरत थी।



एमिल का कान साफ करने के लिए माँ ने जैसे-तैसे उँगली अंदर डाली तो वह भी फँस गई।

"ये लो!" इडा बुदबुदाई।

अब पापा को गुस्सा चढ़ गया था। वैसे उन्हें आसानी से गुस्सा नहीं आता था। "क्या किसी और को भी बर्तन में सिर डालना है?" वे झल्लाकर गरजे। "अगर है तो जल्दी से डाल लो! सबको बड़ी घोड़ागाड़ी में डालकर डॉक्टर के पास ले चलता हूँ।"

माँ ने घुमा-घुमाकर अपनी उँगली बर्तन से निकाल ली। "एमिल, तुझे नाक-कान साफ किए बगैर जाना पड़ रहा है।" माँ ने उँगली पर फूँक मारते हुए कहा। बर्तन के अंदर से एमिल की आवाज़ आई, "कम से कम, इतना तो फायदा हुआ इसमें सिर फँसाने का!"

आल्फ्रेड घोड़ागाड़ी घर के सामने ले आया। एमिल गाड़ी में बैठने घर के बाहर आया तो बहुत अच्छा दिख रहा था। धारी वाला सूट, काले बटन वाले जूते और सिर पर एक नक्काशीदार बर्तन! ज़रा अजीब-सा लग रहा था, लेकिन कोई बात नहीं। बर्तन खिसककर उसकी आँखों के नीचे तक आ गया था, जिससे मुश्किल ज़रूर हो रही थी।

इस तरह बारात शहर की तरफ निकल पड़ी।

"इडा का ध्यान रखना," माँ ने पापा के साथ आगे बैठते हुए कहा। एमिल और बर्तन पीछे बैठे थे। एमिल ने अपनी टोपी भी साथ रख ली थी, वापस लौटते वक्त पहनने के लिए। अच्छा हुआ कि याद रहा।

"रात में खाने के लिए क्या बनाऊँ?" लीना ने चिल्लाकर पूछा।

"कुछ भी, फिलहाल तो मुझे और चीज़ों की फिक्र हो रही है।" माँ ने कहा।

"तो मैं मांस का सूप ही बनाती हूँ।" लीना ने कहा। तभी उसकी नज़र पीछे बैठे एमिल और बर्तन पर पड़ी और उसे जो भी हुआ था, उसका खयाल आया। आल्फ्रेड और इडा की तरफ मुड़ते हुए उसने दुख से कहा, "अब सूप कहाँ? मुझे कुछ और ही बनाना पड़ेगा।"

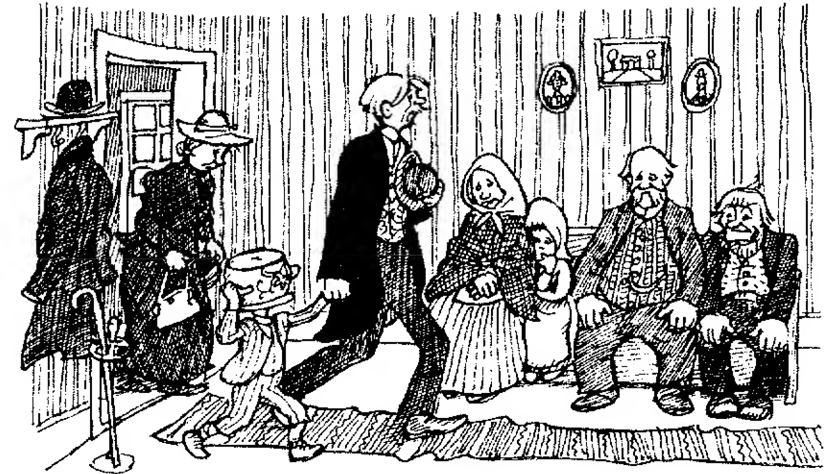
एमिल कई बार शहर जा चुका था। गाड़ी में ऊँचा होकर बैठना और घूमती सड़क और किनारे के खेतों-खलिहानों को देखना उसे बहुत



पसंद था। कभी घर और उनमें रहने वाले बच्चे नज़र आते थे। भौंकते हुए कुत्ते, घास चरती गायें और घोड़े बड़े अच्छे लगते थे। पर अब वह कुछ भी नहीं देख पा रहा था। सूप का बर्तन उसके सिर पर फँस गया था और उसके नीचे से बस अपने जूते ही ज़रा-से नज़र आते थे। वह पापा को बार-बार पूछता, "अब हम कहाँ पहुँचे हैं? पैन-केक वाली जगह अब कितनी दूर है? क्या सूअरों का बाड़ा आ गया?"

एमिल ने सड़क किनारे नज़र आने वाली सभी जगहों को अपने नाम दे रखे थे। 'पैन-केक वाली जगह' का नाम इसलिए पड़ा था कि एमिल ने वहाँ दो गोल-मटोल बच्चों को खड़े-खड़े पैन-केक खाते देखा था। 'सूअरों के बाड़े' का नाम पड़ा था क्योंकि वहाँ एक प्यारा-सा सूअर का बच्चा था, जिससे आते-जाते खेलना एमिल को पसंद था। अब वह इनमें से कुछ भी देख नहीं पा रहा था। अपने जूतों को कब तक देखता रहता? इसलिए वह पापा से लगातार पूछता जा रहा था, हम अब कहाँ हैं? शहर कितनी दूर है?

एमिल और बर्तन जब दवाखाने पहुँचे तो वहाँ बहुत भीड़ थी। सब को एमिल से हमदर्दी थी। सब समझ गए थे कि ज़रूर कुछ गड़बड़ है। सिर्फ एक बूढ़ा आदमी था जो हँसता जा रहा था, जैसे सिर सूप के बर्तन में फँसना मज़े की बात हो!





"हा हा! हा हा!" हँसी रोककर बूढ़े ने पूछा, "तुम्हारे कान में ठंड लग रही है?"

"नहीं तो," एमिल बोला।

"फिर तुमने यह कान पर क्या पहन रखा है?" उसने पूछा।

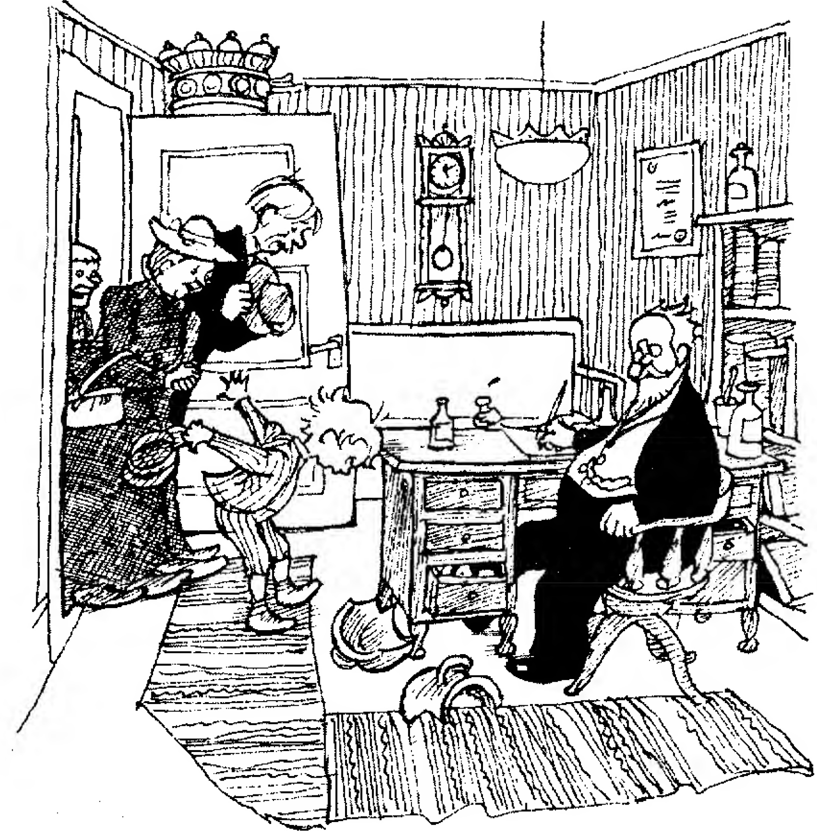
"न पहनता तो सर्दी लगती!" एमिल ने जवाब दिया। एमिल बच्चा ज़रूर था लेकिन मज़ाक कर सकता था।

जब एमिल की बारी आई तो वह अंदर गया। उसे देखकर डॉक्टर नहीं हँसे।

उन्होंने सिर्फ कहा, "क्यों भाई, तुम बर्तन के अंदर क्या कर रहे हो?"

एमिल को डॉक्टर साहब नज़र तो नहीं आ रहे थे पर उन्हें देखकर नमस्ते तो करनी थी। इसलिए एमिल ने कुछ ज्यादा ही झुककर नमस्ते की। धड़ाम्। बर्तन के दो टुकड़े हुए और ज़मीन पर गिरे। एमिल का सिर डाक्टर की मेज़ से टकराया था।

"हो गया सत्यानाश चालीस क्रोनर का," एमिल के पापा ने माँ को धीरे से कहा। लेकिन डॉक्टर ने वह सुन लिया और कहा, "फिर भी आप के दस क्रोनर बच गए। मैं छोटे लड़कों को बर्तन से निकालने के 50 क्रोनर लेता हूँ। एमिल ने अपने आप को निकाल लिया और मेरी फीस बचा ली।"



यह सुनकर एमिल के पापा खुश हुए, उसने उनके दस क्रोनर जो बचाए थे। उन्होंने जल्दी से बर्तन के दोनों टुकड़े उठा लिए और एमिल और उसकी माँ के साथ बाहर आ गए।

जब वे सड़क पर आए तो एमिल की माँ ने कहा, "सोचो तो, दस क्रोनर बच गए! अब इनका क्या करें?"

"कुछ नहीं। सँभालकर रखेंगे।" पापा ने कहा। "मुझे लगता है, इनमें से पाँच एमिल को मिलने चाहिए। यह लो एमिल, अपनी गुल्लक में डाल देना," उन्होंने एमिल को पाँच क्रोनर पकड़ाते हुए कहा। वे घर की ओर निकल पड़े।



एमिल पिछली तरफ बैठा था, हाथ में पाँच का सिक्का था और सिर पर प्यारी टोपी। वह मज़े से राह में नज़र आनेवाले बच्चों, कुत्तों, सूअरों और घोड़ों को देखता जा रहा था। एमिल अगर बाकी सारे बच्चों की तरह होता, तो कम से कम इसके बाद सब कुछ ठीक-ठाक होता। पर वह ऐसा था ही नहीं!

सोचो तो उसने अब क्या किया होगा? उसने पाँच का सिक्का मुँह में डाला और जब वे सूअरों के बाड़े से गुज़र रहे थे, तो उसे निगल भी



डाला! पिछली सीट से गट्क की आवाज़ आई। सिक्का एमिल के गले से नीचे उतर गया था।

"ओह!" एमिल ने कहा, "एकदम नीचे चला गया!"

अब उसकी माँ फिर से चिल्लाने लगी।

"अब कैसे निकालेंगे वह सिक्का बाहर? फिर से डॉक्टर के पास जाना होगा!" एमिल की माँ ने कहा।

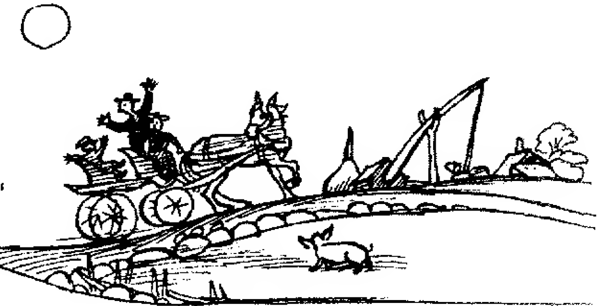
"तुम भी क्या गज़ब करती हो!" एमिल के पापा ने झिड़की दी। "डाक्टर को 50 क्रोनर देकर पाँच का सिक्का निकलवाने में क्या तुक है? लगता है स्कूल में तुम्हें हिसाब नहीं सिखाया गया!"

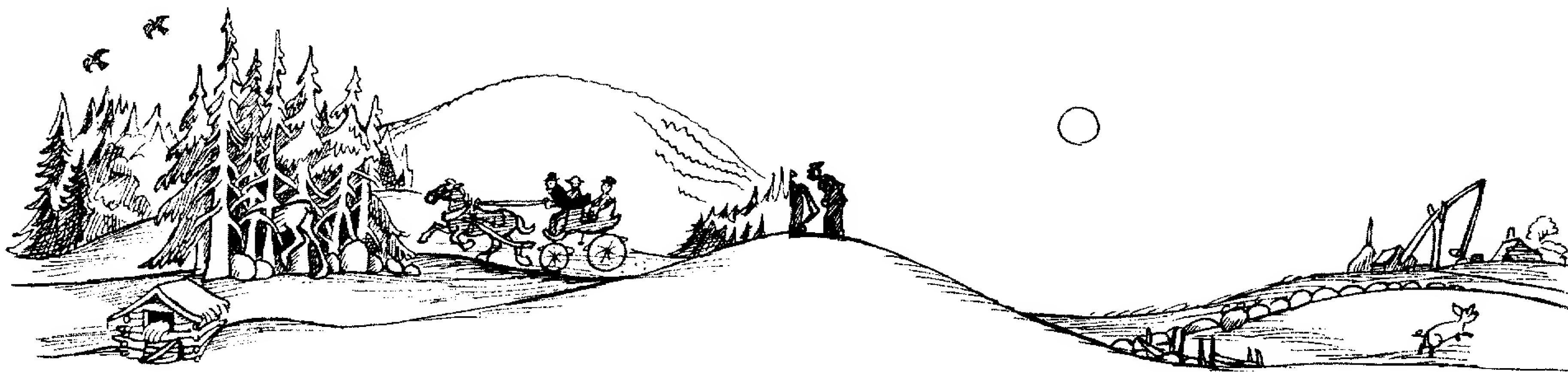
एमिल शांत था, उसने अपना पेट थपथपाकर कहा, "मैं ही अपनी गुल्लक न बन जाऊँ? वह पाँच का सिक्का मेरे पेट में ठीक से रहेगा। गुल्लक से पैसे निकल ही नहीं सकते। उसे ज़मीन पर गिराकर मैंने देख लिया है।"

लेकिन माँ नहीं मानीं। उन्होंने डॉक्टर के पास जाने की रट लगा दी।

"जब इसने बटन निगला था तो मैंने कुछ नहीं कहा।" उन्होंने पापा को याद दिलाते हुए कहा, "लेकिन यह धातु का सिक्का है, बच्चे को खतरे में डाल सकता है।"

माँ ने पापा को इतना डरा दिया कि उन्होंने गाड़ी को फिर से शहर की ओर मोड़ लिया। एमिल का फिक्र तो उन्हें भी था।





उन्हें फिर से दवाखाने में देखकर डॉक्टर ने पूछा, "क्या आप कुछ भूल गए थे?"

"नहीं!" एमिल के पापा बोले। "अब एमिल ने पाँच का सिक्का गटक लिया है। अगर आप ऑपरेशन करके वह बाहर निकालते हैं तो हम 40 क्रोनर आप को और देंगे, और हिसाब पूरा हो जाएगा। ठीक है?"

पापा का कोट खींचते हुए एमिल ने कहा, "लेकिन जो पेट में है वह सिक्का तो मेरा है!"

डॉक्टर को एमिल के सिक्के से कोई मतलब नहीं था। "ऑपरेशन की कोई ज़रूरत नहीं है," उन्होंने कहा। "एक-दो दिन में सिक्का अपने आप बाहर आ जाएगा।

"लेकिन तुम्हें ब्रेड के मोटे-मोटे पाँच बन खाने होंगे। इससे सिक्के को कुछ साथ मिलेगा और वह तुम्हारे पेट में खरोंच नहीं करेगा," डॉक्टर ने एमिल से कहा।

डॉक्टर बड़े अच्छे थे, उन्होंने कोई फीस नहीं ली। इससे एमिल के पापा खुश हुए और सब दवाखाने से बाहर निकले।

माँ चाहती थीं कि सीधे बन की दुकान पर जाएँ और बन खरीद लें।

"खरीदने की क्या ज़रूरत है? घर में ही बना लेना," पापा ने कहा।

एमिल ने पल भर के लिए सोचा, उसे भूख जो लगी थी, और बड़ी समझदारी से कहा, "पाँच का सिक्का मेरे अंदर है। अगर वह हाथ में होता, मैं खुद ही अपने बन खरीद लेता।"





फिर कुछ देर और सोचकर उसने पापा से कहा, "क्या आप मुझे पाँच क्रोनर उधार दे सकते हैं, पापा? मैं आप को वापस कर दूँगा।"

पापा मान गए और वे लोग बेकरी जाकर बन ले आए। गोल-गोल, ताज़े, मीठे बन, ऊपर से चीनी लगी हुई थी। उन्हें खत्म करते एमिल को देर न लगी।

"इससे अच्छी दवा मैंने ज़िंदगी में कभी नहीं खाई," एमिल ने कहा।

एमिल के पापा अचानक बड़े खुश नज़र आने लगे, इतने कि उन्होंने इडा के लिए टॉफियाँ खरीद डालीं, यह कहते हुए कि, "आज हमने काफी पैसे बचा लिए हैं।"

फिर एमिल और उसके माँ-बाप घर लौटे। घर आते ही कपड़े बदलने से पहले, वे उस बर्तन को चिपकाकर जोड़ने की कोशिश में लग गए। यह काफी आसान था क्योंकि बर्तन के दो बड़े-बड़े टुकड़े ही हुए थे।

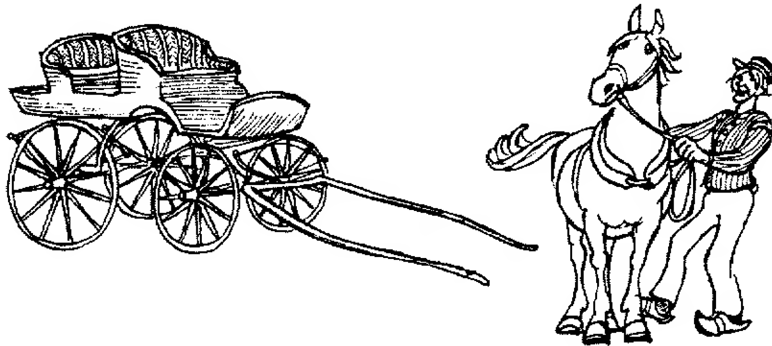




फिर से जुड़े बर्तन को देखकर लीना इतनी खुश हुई कि नाचने लगी। घोड़े को खोलने में व्यस्त आल्फ्रेड को ज़ोर-ज़ोर से बुलाकर उसने कहा, "अब इस घर में फिर से मांस का सूप बन सकता है।"

खैर, यह तो उस बेचारी का सपना था। वह भूल ही गई थी कि घर में एमिल भी तो है!

उस शाम देर तक एमिल इडा से खेलता रहा। उसने घास पर इडा के लिए पत्थरों से एक घर बना दिया। इडा को उसमें बड़ा मज़ा आया। बीच में जब उसे टॉफी चाहिए होती थी तो वह इडा को चिकोटी काटकर ले लेता था।



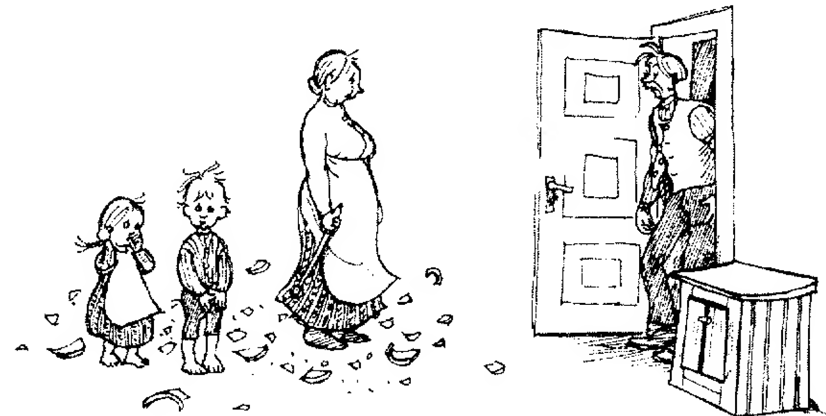
जब रात हो गई तो बच्चों के सोने की तैयारी होने लगी। एमिल और इडा माँ को ढूँढते हुए रसोई में जा पहुँचे पर वह वहाँ नहीं थीं। वहाँ कोई नहीं था। सिर्फ सूप का वह बर्तन था। फिर से जुड़ने के बाद अब वह नया-सा हो गया था। इतना घूम-फिरकर घर लौटने वाले उस बर्तन को इडा और एमिल बड़े ध्यान से देख रहे थे।

"सोचो तो, इसका शहर तक घूम आना और लौटकर नए जैसा बन जाना!" इडा ने कहा, और फिर पूछ बैठी, "लेकिन एमिल, तुमने इसके अंदर सिर डाला कैसे?"

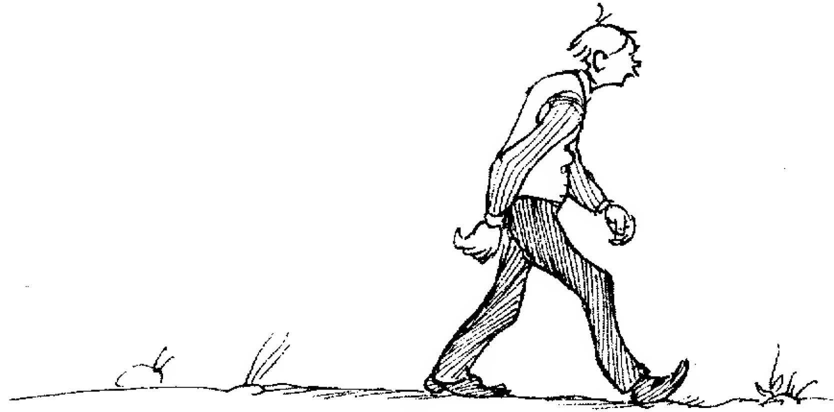
"अरे, बिल्कुल आसानी से!" एमिल ने दिखाया, "ऐसे!"

तभी माँ रसोई घर में आईं और बस देखती ही रह गईं। सूप का बर्तन एमिल के सिर पर सवार था। एमिल को इस तरह फँसा देखकर इडा शोर मचाने लगी और एमिल भी। यह तो फिर उसी मुसीबत में फँसना हुआ!

माँ ने बस एक डंडा लेकर बर्तन पर इतनी ज़ोर से मारा कि उसकी आवाज़ सारे गाँव को सुनाई दी। धड़ाम्! अब बर्तन फिर से टूटकर ज़मीन पर हज़ार टुकड़ों में बिखर गया। कुछ टुकड़े एमिल पर भी गिरे। धमाका सुनकर एमिल के पापा दौड़े-दौड़े रसोई में आए।



दहलीज़ पर खड़े वे चुपचाप देखते रहे। एमिल बर्तन के टुकड़े बदन पर लिए खड़ा था, माँ के हाथ में डंडा था, ज़मीन पर बिखरे पड़े बर्तन के टुकड़ों के बीच इडा थी। पापा ने कुछ भी नहीं कहा। वे मुड़कर भेड़ों के पास चले गए।





दो दिन बाद एमिल ने वह पाँच क्रोनर का सिक्का लौटा दिया, तो उन्हें ज़रा अच्छा लगा।

इसी से पता चलता है कि एमिल किस तरह का लड़का था! खैर, यह तो थी 22 मई की बात। आगे एक दिन क्या हुआ, बताऊँ?

10 जून – रविवार
एमिल ने इडा को झंडे की तरह खंभे पर फहराया

10 जून को एमिल के माँ और पापा ने काटहुल्ट के अपने घर में एक दावत रखी थी। उसमें लोनबर्गा और कई जगहों से लोग आनेवाले थे। दावत के लिए माँ न जाने कब से तरह-तरह की चीज़ें बना रही थीं।

"काफी खर्च होगा," एमिल के पापा ने कहा। "लेकिन दावतों में होता ही है। हमें कंजूसी नहीं करनी चाहिए। मगर देखो, मांस के कोफ्ते अगर छोटे बना सको तो..."

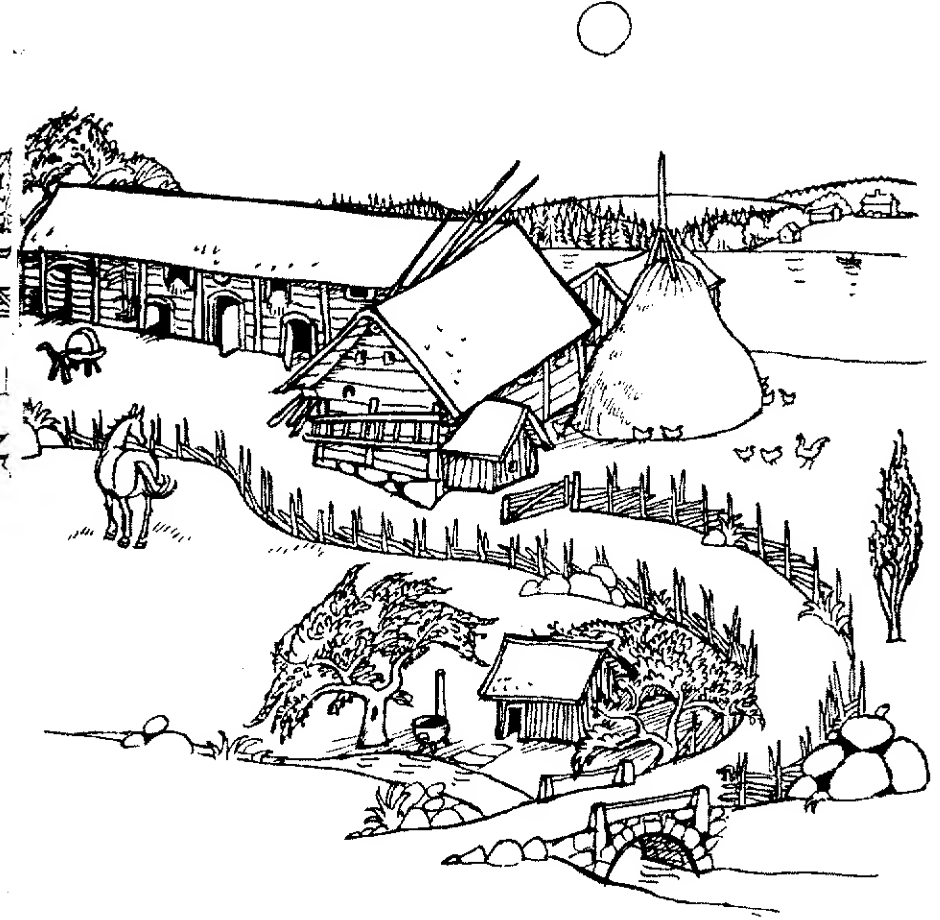
"मैं बिल्कुल सही कर रही हूँ," माँ ने कहा। "सही माप, सही मसाले और सही करारापन।"

माँ ठीक ही कह रही थीं। मांस के कोफ्ते, तली हुई मछली, कड़ाही मुर्गा, सेब का चीला, तरह-तरह के शोरबे, दो बड़े-बड़े केक और रेशमी मटन, ऐसा कि मुँह में डालते ही घुल जाए। खाने की खुशबू चारों तरफ कुछ ऐसी फैली हुई थी कि विमरबी और हुल्टफ्रेड जैसी दूर-दूर की जगहों से लोग चले आ रहे थे।

एमिल को रेशमी मटन बहुत पसंद था।







दावत के लिए यह बहुत सही दिन था। आसमान में सूरज चमक रहा था, हर तरफ लाल-गहरे गुलाबी फूलों के गुच्छे पेड़ों को सुंदर बना रहे थे, पंछी गा रहे थे और पहाड़ी पर बसा काटहुल्ट सपने जैसा लग रहा था। बगीचे में पगडंडियाँ साफ कर रखी थीं, घर भी सजा रखा था, हर कोना साफ-सुथरा था, और अब खाना भी तैयार था। कोई काम बाकी नहीं था – बस एक बात रह गई थी!

"अब बस झंडा फहराना बाकी है।" एमिल की माँ ने पापा को याद दिलाया।

एमिल के पापा दौड़े-दौड़े गए और झंडे का खंभा ले आए। एमिल और इडा उनके पीछे-पीछे दौड़े क्योंकि उन्हें भी खंभे पर झंडा फहराते देखना था। वे जानना चाहते थे कि झंडा कैसे खंभे के ऊपर तक पहुँचता है।

"मुझे लगता है, आज की हमारी दावत में बहुत मज़ा आएगा।" एमिल की माँ रसोई में लीना से कह रही थीं।

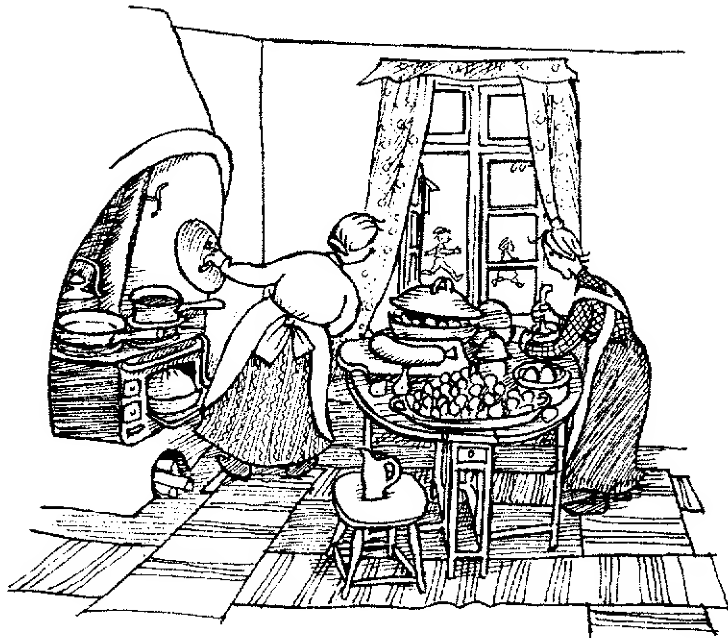
"क्यों न एमिल को अभी से दड़बे में बंद कर दिया जाए?" लीना ने कहा।

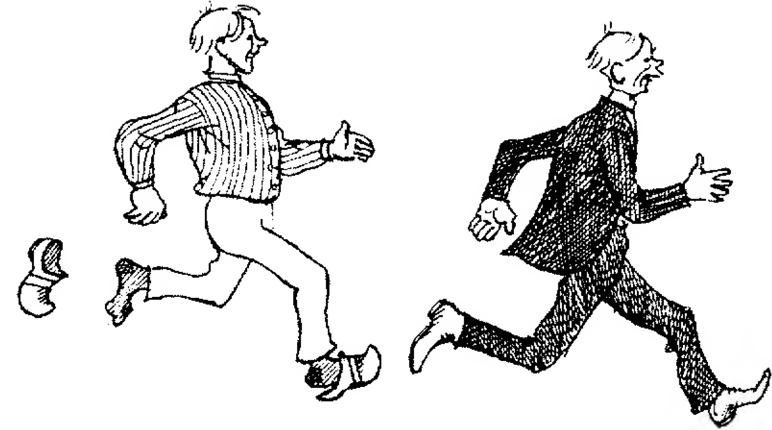
एमिल की माँ ने उसे गुस्से से देखा लेकिन कहा कुछ नहीं।

लीना ने मुँह फेर लिया और बुदबुदाई, "अभी करो या बाद में, मुझे क्या! लेकिन होना तो यही है।"

"एमिल एक प्यारा लड़का है।" माँ ने फैसला सुनाया। रसोई की खिड़की से बड़े संतोष से उन्होंने बाहर देखा तो एमिल और इडा खुशी से इधर-उधर दौड़ते दिखाई दिए। दोनों कितने मासूम और प्यारे लग रहे थे – एमिल अपने धारीदार सूट में घुँघराले बालों पर टोपी पहने हुए, और इडा लाल-सुर्ख फ्राक में अपने गोल-मटोल पेट पर सफेद कमरबंद बाँधे।

एमिल की माँ खुशी से मुस्काई। फिर उन्होंने सड़क पर नीचे देखकर कहा, "अन्तोन ने झंडा लगा दिया होगा। मेहमान अब आते ही होंगे।"





सब कुछ बहुत सही चल रहा था। पापा ने खंभा गाड़ दिया था और वे झंडा ऊपर चढ़ाने वाले ही थे कि आल्फ्रेड दौड़ा-दौड़ा आया और कहने लगा, "गाय को बच्चा हो रहा है! गाय जन रही है!"

यह वही बुरकी नाम की गाय थी, जिसमें इतनी भी समझ नहीं थी कि जब सब दावत की तैयारी में लगे हों, झंडा फहराया जा रहा हो, तो उन्हें तंग नहीं करना चाहिए।

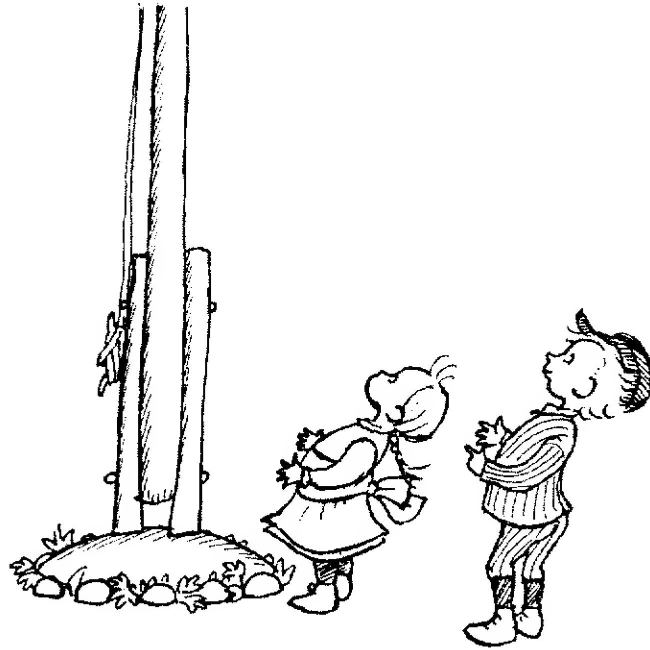
एमिल के पापा को सब कुछ छोड़कर गौशाला में भागना पड़ा। एमिल और इडा खंभे के पास खड़े रहे।

इडा ने गर्दन जितनी पीछे की तरफ हो सके, घुमाई और खंभे पर लगी सुनहरी घुंडी को देखकर बोली, "कितना ऊँचा है! वहाँ से तो सारा शहर नज़र आता होगा।"

एमिल ने पल भर के लिए कुछ सोचा, और इडा से पूछा, "देखना है? मैं चढ़ाऊँ तुझे ऊपर?"

इडा हँस पड़ी। कितना अच्छा है एमिल, हमेशा कुछ न कुछ मज़ेदार करने में लगा रहता है!

"हाँ, मुझे सारा शहर देखना है," इडा ने कहा।



"चल, दिखाता हूँ।" एमिल ने बड़े प्यार से कहा। उसने झंडे को फहराने वाला हुक इडा के कमरबंद में अच्छी तरह से खोंस दिया। फिर दोनों हाथों से उसने झंडे की रस्सी पकड़ ली।

"जा ऊपर!" एमिल ने कहा।

इडा, "ही ही" करती हँस रही थी।

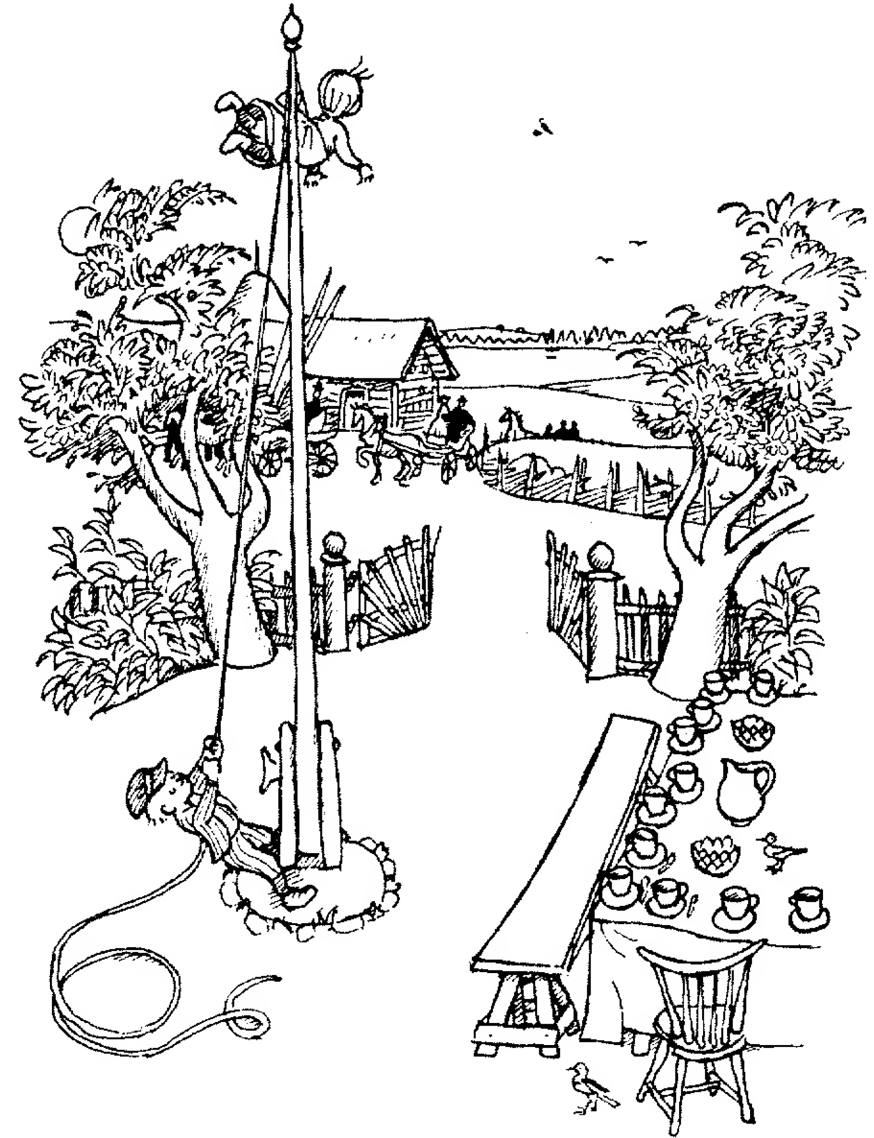
रस्सी खिंचते ही वह खंभे के ऊपर तक चली गई। अपनी तरफ से एमिल पूरी एहतियात बरत रहा था कि इडा गिरे ना। अब इडा झंडे की तरह फहराती, ऊपर से सब कुछ देख रही थी।

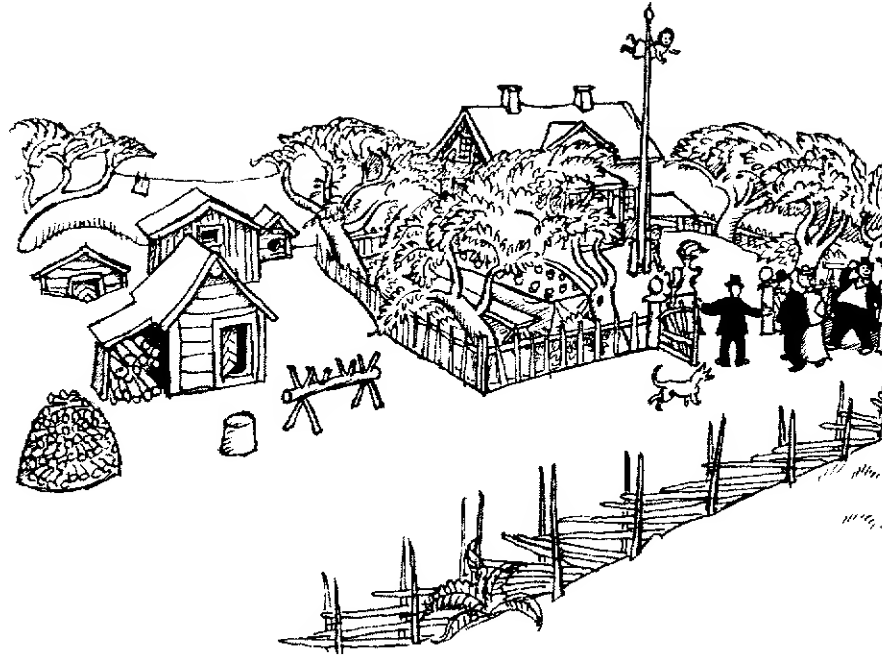
"सारा शहर नज़र आ रहा है?" एमिल ने पूछा।

"शहर तो नहीं, लेकिन सारा लोनबर्गा दिख रहा है," इडा ने कहा।

"सिर्फ लोनबर्गा! धत्-तेरी! आ, अब उतार लूँ तुझे नीचे?"

"अभी नहीं!" इडा बोली, "यहाँ से लोनबर्गा देखने में भी मज़ा आ रहा है। देखो, कुछ मेहमान भी आ गए।"

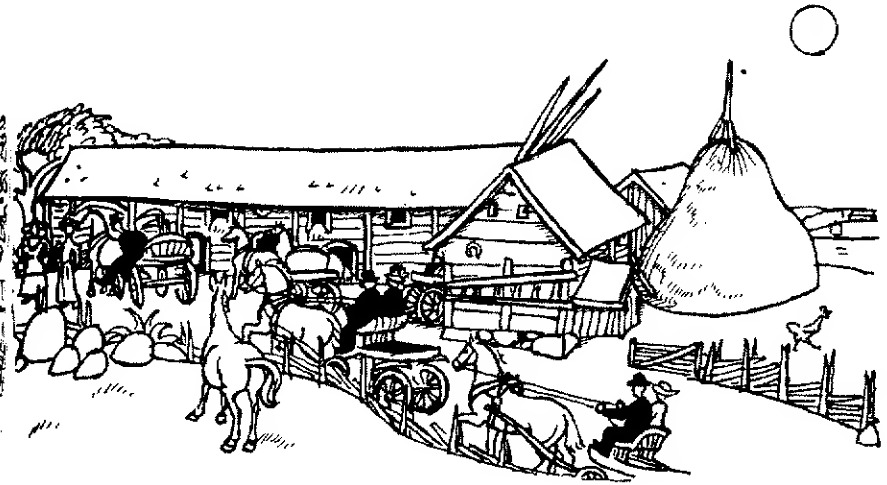




अब बाहर कई बग्घियों और गाड़ियों की भीड़ लग गई थी। उनमें से निकलकर लोग एमिल के घर की तरफ बढ़ रहे थे। सबसे पहले आईं श्रीमती पेटरेल। उन्हें बच्चे दादी कहते थे। एमिल की माँ के हाथ का खाना खाने वह इतनी दूर से आई थीं। उनकी टोपी पर लगे पंखों से वे और भी शानदार लग रही थीं, सबसे अलग-थलग। उन्होंने प्रसन्नता से चारों ओर देखा। कितना सुंदर लग रहा था सब कुछ। सुनहरी धूप, सेबों के पेड़, लाल गहरे गुलाबी गुच्छों वाले लाइलैक के पेड़ – सब कुछ इतना प्यारा, और झंडा भी लहरा रहा था।

दादी को दूर से ठीक नज़र नहीं आ रहा था। झंडा! लेकिन यह क्या? दादी ठिठककर देखती रह गईं।

एमिल के पापा अभी गौशाला से निकलकर आ रहे थे। उन्हें बुलाकर दादी ने कहा, "बेटे अन्तोन! क्या मतलब है इसका? तुमने डैनिश रंगों का झंडा क्यों लगा रखा है?"



एमिल साथ खड़ा था। उसे डैनिश रंगों का मतलब समझ नहीं आया। दादी का मतलब डेन्मार्क के लाल और सफेद झंडे से था। डेन्मार्क डैनिश लोगों का देश है।

"ही! ही!" एमिल ने हँसते हुए कहा, "यह तो इडा है, मेरी छोटी बहन!"

खंभे से लटकी इडा भी ही ही करके हँसी और बोली, "यह तो मैं हूँ! यहाँ से हमारा सारा गाँव नज़र आता है!"

पर एमिल के पापा नहीं हँसे। उन्होंने जल्दी से इडा को नीचे उतार लिया। इडा ने ही ही करते, नीचे उतरकर कहा, "इतना मज़ा बड़े दिनों बाद आया है। याद है, एक बार एमिल ने मुझे लाल रंग दिया था?"

इडा उस दिन की बात कर रही थी जब एमिल ने उसे टमाटरों से भरे बड़े टब में धकेल दिया था। वह तब खुद लाल टमाटर बन गई थी।

एमिल हमेशा ध्यान रखता था कि इडा को खेल में मज़ा आए। लेकिन इतना सब होने के बाद वाहवाही मिलने की बजाय बड़ों से डाँट ही पड़ती थी।



"मैंने कहा न था..?" पापा को एमिल को दड़बे की तरफ ले जाते देख लीना कुनमुनाई। हर बार कुछ शरारत करने के बाद, एमिल को पापा सज़ा देने के लिए दड़बे में बंद कर देते थे।

एमिल चीखा, चिल्लाया। "उसे सारा शहर देखना था," उसने सुबकते हुए कहा।

उसे लगा, पापा का उसे सज़ा देना सही नहीं है। उसे अब तक क़िसी ने यह नहीं बताया था कि वह इडा को पूरा शहर नहीं दिखा सकता। अब यह तो उसका कसूर नहीं था कि इडा पूरा शहर नहीं, सिर्फ गाँव देख पाई थी।

एमिल रोता रहा। जब उसने देखा कि पापा उसे बंद करके चले गए हैं तो वह रुक गया। वैसे दड़बे में हाल बुरा नहीं था। वहाँ लकड़ी के कई टुकड़े पड़े थे और गत्ते भी, जिनसे कई चीज़ें बन सकती थीं। एमिल को जब भी शरारत करने की सज़ा में दड़बे में बंद किया जाता, वह लकड़ी को तराशकर एक आदमी बना लेता था। अब तक उसके पास ऐसे 54 आदमी बन चुके थे और उनकी संख्या बढ़ती रहने वाली थी।

"मुझे उस ऊबाऊ पार्टी से कोई मतलब नहीं है," एमिल ने खुद से कहा। "पापा अगर खुद झंडा फहराना चाहते हैं तो ऐसा ही सही।



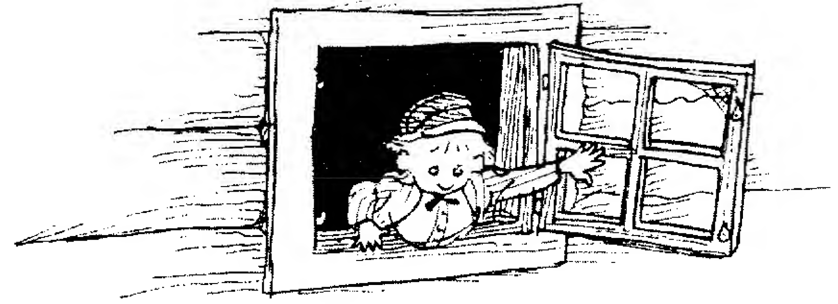
में एक और लकड़ी का आदमी बना लूँगा और सारा दिन गुस्से में तमतमाता रहूँगा।"

एमिल को पता था कि पापा उसे बहुत देर तक तो बंद नहीं रखेंगे। वह दड़बे में उसे ज़्यादा देर तक नहीं रखते थे।

हर बार उसे बंद करते वक्त पापा कहते थे, "यह सज़ा इसलिए है कि तुम अकेले कुछ देर अपनी गलती के बारे में सोचो और दोबारा ऐसे न करो!" एमिल उनकी बात मानकर एक बार की हुई शरारत फिर दोहराता नहीं था, वह हर बार नई शरारत करता था।

अब भी वह सोच रहा था कि इडा के साथ उसने ऐसी क्या गलती की थी? लकड़ी का आदमी बन चुका था। एमिल को उसे बनाने की आदत पड़ गई थी, इसलिए बनाने में देर नहीं लगती थी। अब सोचने से भी उकताहट हो रही थी – तो फिर क्या किया जाए? बाहर सब खाने-पीने में मस्त थे, किसी को एमिल का ख्याल नहीं था। वह इंतज़ार





में बैठा रहा, बैठा रहा लेकिन उसे बुलाने कोई नहीं आया। इसलिए वह खुद सोचने लगा कि बाहर कैसे निकले?

खिड़की से? यह मुश्किल था क्योंकि वह तो बहुत ऊपर थी। फिर भी लकड़ी की पटियों पर चढ़कर वहाँ तक पहुँचने की कोशिश की।

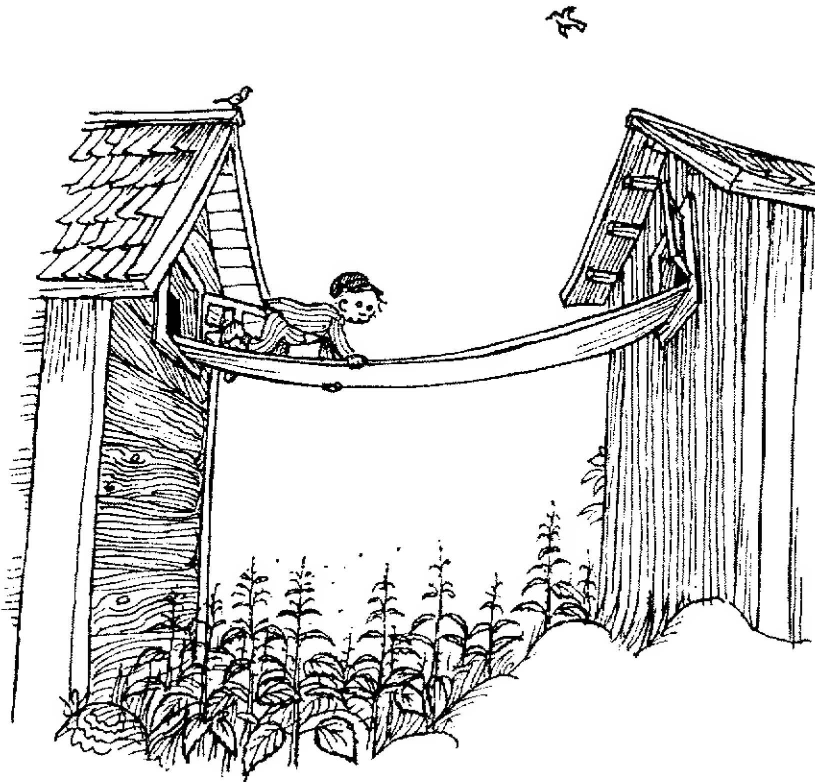
खिड़की खोली भी। पर नीचे देखा तो ततैयाँ भिनभिनाती दिखाई दीं। उसे मालूम था कि गलती से उन पर पैर पड़ जाए तो क्या होता है। उसने ऐसा एक बार किया था, लेकिन वह दोबारा करने वाली बात नहीं थी।

"कुछ और रास्ता ढूँढता हूँ।" उसने अपने आप से कहा।

अगर तुम कभी काटहुल्ट जैसे इलाके में रहे हो तो तुम्हें पता होगा कि ऐसी जगह में कई छोटे-छोटे घर होते हैं। उन्हें देखते ही छुपाछुपी खेलने का मन होने लगता है। एमिल के काटहुल्ट में सिर्फ खेत और उसका घर ही नहीं, और भी कई जगहें थीं, जैसे घोड़ों का अस्तबल, गायों की गौशाला, सूअरों का बाड़ा, मुर्गीखाना, भेड़ों का शेड और ऐसी ही कई जगहें। वहाँ एक अलग रसोई भी थी जहाँ एमिल की माँ खाना बनाती थीं। साथ में लीना का कपड़े धोने का कमरा था – और वहीं पास दो मकान थे। एक में लकड़ी और औज़ार रखे थे और दूसरे में ऐसी चीज़ें जो न काम की थीं, न फेंकने वाली। और एक अनाज का गोदाम।

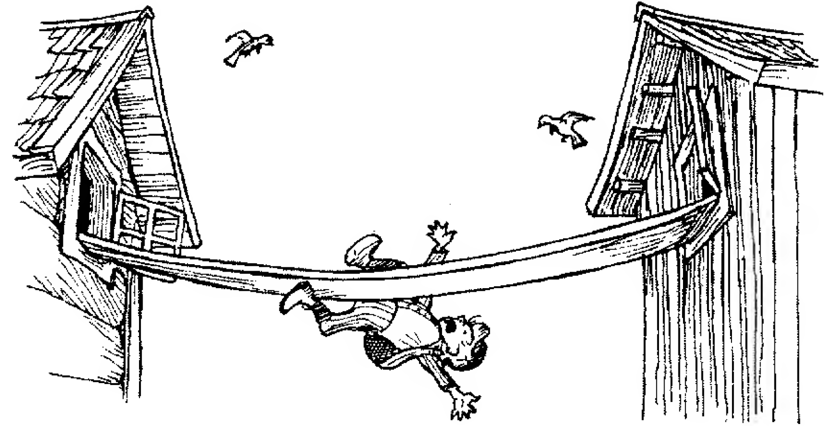
शाम को एमिल और इडा इन छोटे-छोटे कमरों मे छुपाछुपी खेलते थे – हाँ, सिर्फ ततैया वाली जगहें छोड़कर।

एमिल ने दिमाग दौड़ाया। जब देखा कि अनाज के गोदाम की



खिड़की खुली है तो उसे कुछ सूझा। उसे लगा कि दड़बे में पड़ी लकड़ी से क्यों न दो खिड़कियों के बीच एक पुल बनाया जाए और अनाज के गोदाम में उतरकर बाहर निकला जाए! दड़बे में बैठे-बैठे वह बहुत ऊब चुका था और अब उसे भूख भी लगी थी।

जब कोई अच्छी जुगत सूझे तो उसे काम में लाने में एमिल ज़रा भी समय गँवाता नहीं था। उसने फौरन एक लकड़ी की पटिया दड़बे की खिड़की तक घसीटी, और दड़बे की खिड़की से अनाज के गोदाम तक पुल बना डाला। उसके बाद वह उस पुल से रेंगता हुआ उस पार जाने लगा। उसे डर तो लग ही रहा था क्योंकि लकड़ी बहुत पतली थी और वह खुद भारी।



"अगर मैं ठीक-ठाक उस पार पहुँच गया तो अपना जोकर गुड्डा मैं इडा को दे दूँगा," उसने ऐसे ही कह डाला। लकड़ी बहुत करकरा रही थी, न जाने कब क्या हो! इतने में नीचे ततैयों पर नज़र पड़ी और एमिल डर से काँपने लगा।

"बचाओ!" एमिल चिल्लाया। वह नीचे गिरने ही वाला था कि उसने पैरों की कैंची बनाकर लकड़ी को पकड़ लिया। फिर धीरे-धीरे अपने आप को सीधा करके वह गोदाम की खिड़की तक पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही वह अंदर कूद गया।

"मुश्किल तो नहीं था," उसने सोचा। "लेकिन इडा को अब अपना जोकर गुड्डा देना होगा। दे दूँगा – कुछ दिन बाद! मतलब जब वह टूट जाए तब – देखूँगा क्या करना है।"

फिर लकड़ी को धक्का देकर उसने वापस दड़बे में धकेल दिया। एमिल को काम पूरा करना अच्छा लगता था। फिर उसने अनाज के गोदाम का दरवाज़ा खोलना चाहा तो वह भी बाहर से बंद था।

"ठीक है। यहाँ जो खाने की चीज़ें रखी हैं, उन्हें ले जाने तो कोई न कोई यहाँ ज़रूर आएगा और उसके साथ मैं भी खिसक जाऊँगा।" उसने खुद से कहा।



तभी उसे किसी चीज़ की खुशबू आई। वहाँ रखी दावत की चीज़ें एमिल ने एक-एक करके सारी देखीं। फिर उसने आसपास जो भी तैयारी थी, वह भी देखी। वहाँ पर कई किस्म की नमकीन चीज़ें और मेवेदार मिठाइयाँ पड़ी थीं, बक्सों में अच्छी तरह सजाकर रखी हुईं। माँ और लीना ने सारा इंतज़ाम यों कर रखा था कि जैसे-जैसे बाहर चीज़ें खत्म हों, अंदर से चीज़ें लाकर मेहमानों के लिए मेज़ पर रखी जाएँ। एक कोने में, एक बड़ी-सी अलमारी में तरह-तरह के ब्रेड की थप्पियाँ लगा रखी थीं और साथ में ताज़ा चीज़ और घर में बनाया मक्खन। साथ वाली शेल्फ पर तरह-तरह के अचार, फलों के रस और मुरब्बों की शीशियाँ थीं। और इन

सब चीज़ों के बीचोंबीच था, बड़े ध्यान से सजाया हुआ, रेशमी मटन जिसके टुकड़े काटकर मेहमानों को खिलाने थे।

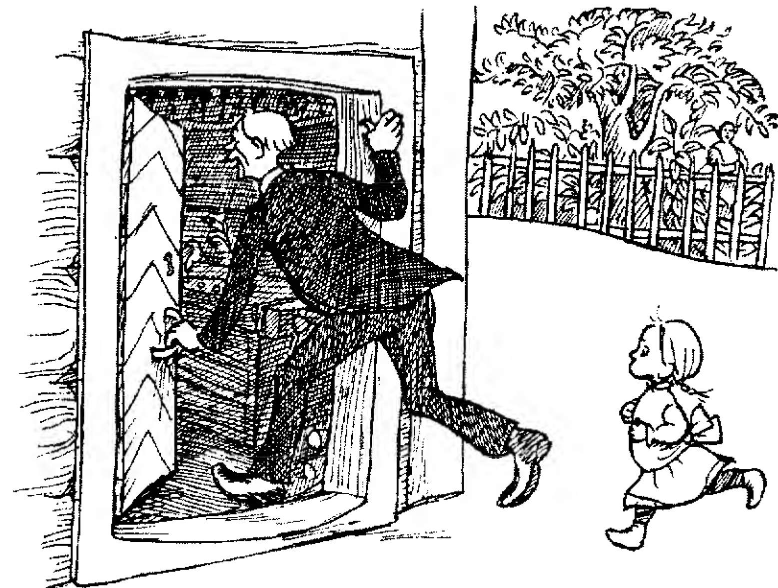
एमिल को रेशमी मटन बहुत पसंद था!

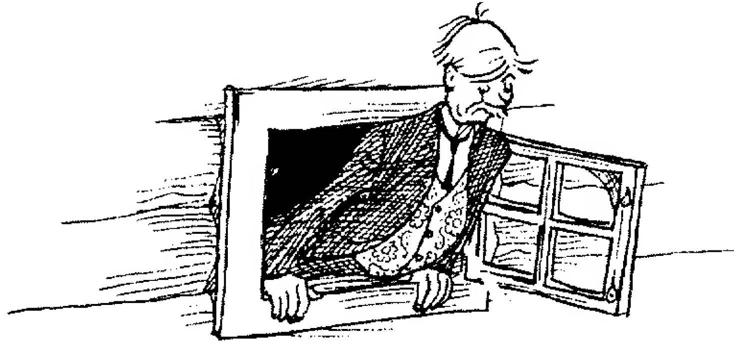
बाहर बड़े ज़ोर-शोर से दावत हो रही थी। खाने-खिलाने के दौर चल रहे थे। मेहमानों ने कॉफी पी ली थी और दावत की शुरुआत में पेश की हुई कुछ चीज़ें खाकर वे अब पके खाने का इंतज़ार कर रहे थे जैसे मांस के कोफ्ते, तली हुई मछली, कड़ाही मुर्गा, सेब का चीला, और रेशमी मटन।

अचानक एमिल की माँ को याद आया और वह बोल पड़ी, "ओ हो! हम तो भूल ही गए एमिल को! कितनी देर हो गई, वह अकेले दड़बे में बंद पड़ा है। बेचारा एमिल!"

एमिल के पापा दौड़कर दड़बे की तरफ गए, छोटी इडा भी उनके पीछे-पीछे भागती गई।

"एमिल, अब तुम बाहर आ सकते हो!" पापा ने दड़बे का दरवाज़ा जल्दी से खोलते हुए कहा। और वे दंग रह गए। एमिल वहाँ नहीं था!





"यह शरारती लड़का ज़रूर खिड़की से कूदकर निकल गया होगा!" पापा बोले। लेकिन जब उन्होंने वहाँ की घास और चीज़ें देखीं तो वे ज्यों की त्यों मिलीं। किसी के उनके ऊपर से चलने की कोई निशानी नज़र नहीं आई।

"ततैयाँ भी अपनी जगह शांति से बैठी हुई हैं, उन्हें या छत्तों को किसी ने छेड़ा, ऐसा नज़र नहीं आता!" उन्होंने कहा। अब इडा रोने लगी, उसे एमिल की फिक्र हो रही थी। कहाँ होगा एमिल? लीना एक गाना गाया करती थी, वह इडा को याद आने लगा। वह गाना कुछ दुखभरा था। उसमें एक लड़की को लकड़ी के पीपे में बंद करने की बात कही गई थी, जो इस तरह कैद रहने की बजाय, सफेद कबूतर बनकर आसमान में स्वर्ग की तरफ उड़ जाती है। एमिल को बंद कर रखा था, क्या पता, वह भी सफेद कबूतर बनकर कहीं उड़ गया हो? इडा ने आसपास घूमकर देखा कि कहीं कोई कबूतर नज़र आ जाए!



उसे सिर्फ एक सफेद मुर्गी दिखाई दी जो दड़बे के दरवाज़े के पास खड़ी कीड़े चुग रही थी।

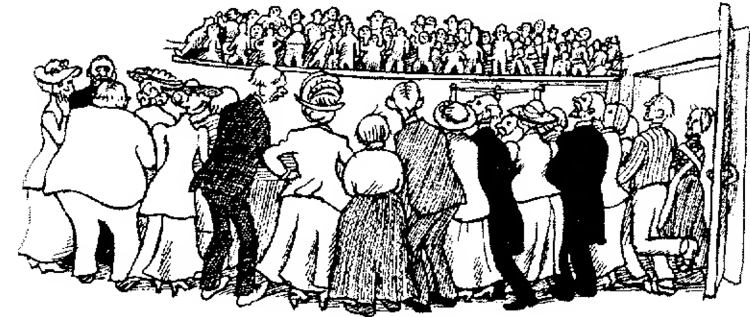
मुर्गी की तरफ इशारा करते हुए, रोते-रोते उसने कहा, "शायद वह एमिल है!"

एमिल के पापा ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। कुछ सोचकर वे एमिल की माँ से पूछने लगे, "तुमने एमिल को कभी उड़ना सीखते हुए देखा है?"

"मैंने तो नहीं देखा।" माँ ने कहा। अब वहाँ चिंता का वातावरण बनने लगा था। दावत बीच में ही रुक गई थी। सब को जहाँ संभव हो, एमिल को ढूँढना था।

"वह दड़बे से कहाँ जा सकता है, वहीं होगा कहीं।" उसकी माँ ने कहा और सब फिर वहीं गए।

वहाँ एमिल नहीं था। सिर्फ लकड़ी के 55 आदमी कतार में खड़े थे। मेहमान सोच रहे थे कि भला ये किसने बनाए होंगे?

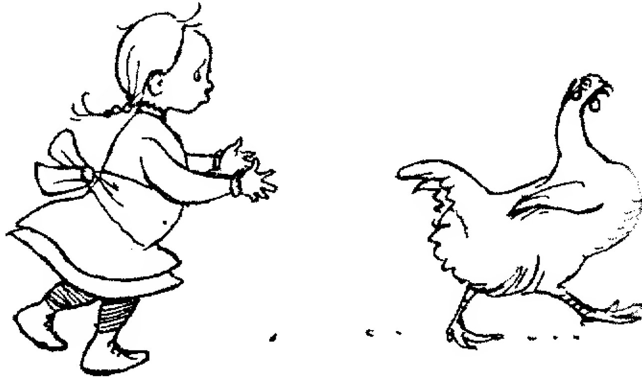


"वे? वे तो हमारे एमिल ने बनाए हैं।" एमिल की माँ ने कहा, "एमिल बड़ा प्यारा लड़का है, कुछ न कुछ करता ही रहता है।"

"हाँ हाँ!" लीना ने ज़ोर ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा। फिर वह बोली, "क्या हम रसोई घर में ढूँढ लें?" लीना ने मुद्दत बाद कुछ अकलमंदी की बात की थी। सब वहाँ चले गए। वहाँ भी ढूँढा लेकिन एमिल का कोई अता-पता न मिला!

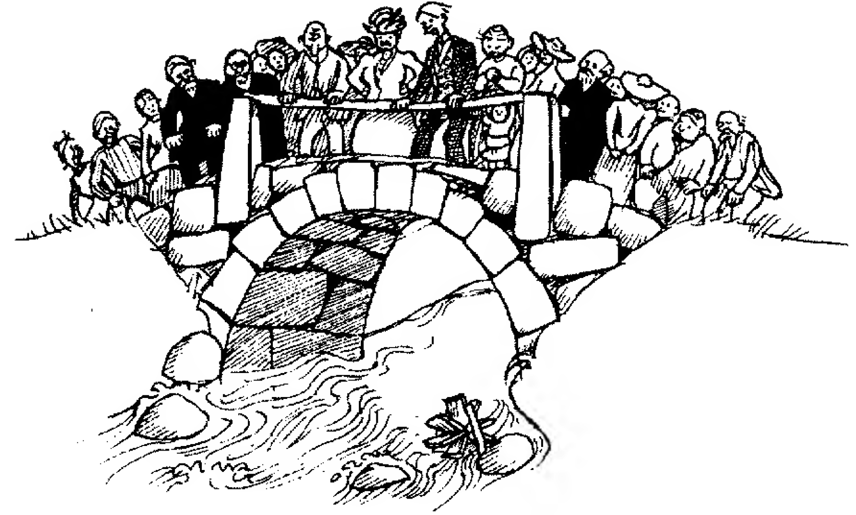
नन्ही इडा लगातार धीरे-धीरे रोती रही। जब कोई देख नहीं रहा था, वह सफेद मुर्गी के पास गई और उससे बड़े प्यार से बोली, ''मेरे प्यारे भैया एमिल, तुम आसमान में मत उड़ जाना। तुम यहीं हमारे पास रहो, मैं तुम्हें ढेर सारा दाना डालूँगी।''

लेकिन मुर्गी ने ऐसा कोई वादा नहीं किया। क्लक्, क्लक् करती वहाँ से चल दी।



काटहुल्ट आए मेहमानों ने सारा घर, सारा खेत और सारी ज़गहें छान मारीं। एमिल का कोई पता-ठिकाना न मिला। सूअरों के बाड़े में और गौशाला में जा देखा – नहीं मिला। भेड़ों के कमरे में, मुर्गीखाने में, गुसलखानों में, कमरों में, एमिल कहीं नहीं था। कुछ लोगों ने तो कुएँ में झाँककर भी देखा, एमिल वहाँ भी नहीं था। अब सब रुआँसे हो गए थे, और आपस में कह रहे थे, ''एमिल बड़ा प्यारा बच्चा था। इतना शरारती नहीं था जितना लोग कहते हैं – मैं हमेशा कहती आई हूँ।''

''कहीं सोते में न जा गिरा हो,'' लीना ने कहा। काटहुल्ट में सोते का प्रवाह तेज़ था और खतरनाक भी। उसमें कोई बच्चा गिरता तो उसके बचने की संभावना कम थी।



''हम उसे कभी वहाँ जाने न देते थे!'' एमिल की माँ ने सख्ती से कहा।

''तभी तो,'' लीना ने सिर झटककर कहा।

सब दौड़कर नीचे सोते के पास गए। एमिल वहाँ भी नहीं था। यह तो खुशी की बात थी कि वह वहाँ भी नहीं था, लेकिन सब और भी रोने लगे। एमिल की माँ ने सोचा था कि कितनी मज़ेदार दावत होगी!



अब ढूँढने के लिए कोई जगह भी तो नहीं बची थी।

''अब क्या करेंगे हम?'' एमिल की माँ ने हारकर पूछा।

''चलो, सब को खिला-पिला

दें और फिर कुछ सोचें!" पापा ने कहा। सब को उनका सुझाव पसंद आया क्योंकि अब तक सब थक चुके थे, भूख भी लग गई थी, उदासी के बावजूद! एमिल की माँ ने मेज़ पर खाना लगाना शुरू कर दिया। तली हुई मछली, मांस के कोफ्ते, कड़ाही मुर्गा और पनीर का केक, कई किस्म की ब्रेड वगैरह। पेटरेल दादी के मुँह में पानी आ रहा था लेकिन रेशमी मटन कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, और इसी से उन्हें फ़िक्र-सी हो रही थी।



तभी एमिल की माँ को कुछ याद आया और उन्होंने कहा, "लीना, हम रेशमी मटन तो भूल ही गए। जाओ, जल्दी से जाकर ले आओ।"

लीना उस तरफ दौड़ पड़ी। अब हर कोई उत्सुकता से रेशमी मटन का इंतज़ार कर रहा था। पेटरेल दादी ने गर्दन हिलाकर कहा, "रेशमी मटन? अच्छा रहेगा, इतनी दौड़-धूप और तनाव के बाद!"

और फिर लीना लौटती दिखाई दी। खाली हाथ। रेशमी मटन कहाँ था?

"आइए, मैं आप को कुछ दिखाना चाहती हूँ," उसने कहा।



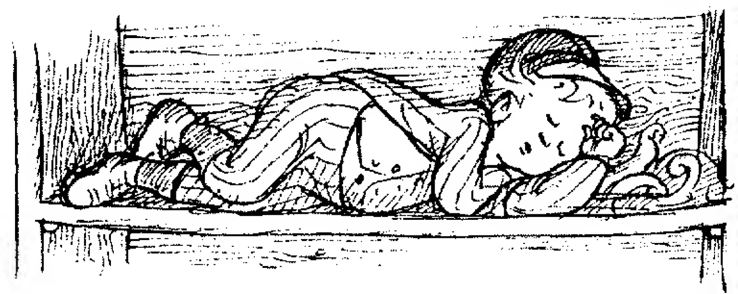
वह कुछ अजीब-सी लग रही थी। पर लीना थी भी तो अजीब-सी, और न जाने क्यों, वह दबी-दबी-सी हँस रही थी।

"आओ, मेरे साथ," उसने फिर कहा। और सभी उसके पीछे चल पड़े।

लीना सब को अनाज के गोदाम तक ले गई। उसने भारी भरकम दरवाज़ा खोला और ऊँची दहलीज़ पार की। अंदर जाकर लकड़ी की बड़ी अलमारी का दरवाज़ा धड़ाम से खोला, जहाँ एमिल की माँ ने रेशमी मटन की देगची रखी थी।

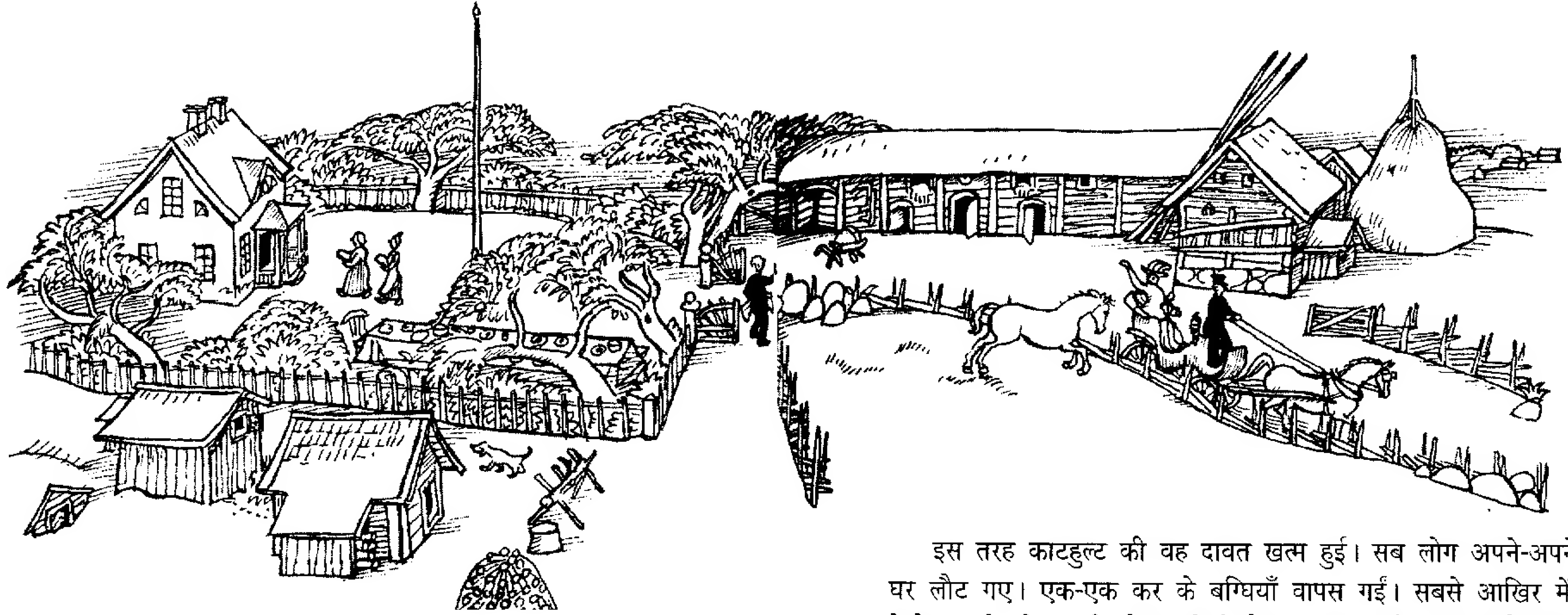
रेशमी मटन वहाँ से गायब था और उसकी जगह पर एमिल ज़रूर लेटा हुआ था!

एमिल गहरी नींद में था। नन्हा-सा, प्यारा-सा एमिल। उसके आस-पास मटन की हड्डियाँ और टुकड़े गिरे पड़े थे। एमिल की माँ इतनी खुश थीं कि जैसे उन्हें गुदड़ी में छिपा कोई हीरा मिला हो। सारा मटन वह उड़ा भी गया तो क्या हुआ? उसे वहाँ सोया हुआ पाना, खोए हुए रेशमी मटन के मिलने से हज़ार गुना बेहतर था। एमिल के पापा का भी यही खयाल था।



"ही! ही! वह रहा एमिल!" इडा बुदबुदाई। "कितना अच्छा है कि यह अदला-बदला नहीं है।"

कोई सोच भी सकता है कि एक लड़का जिसमें मटन ठूँसकर भरा हो, इतने सारे लोगों की खुशी की वजह हो सकता है? काटहुल्ट में दावत की असली मौज-मस्ती तो अब शुरू हुई! एमिल की माँ को



एमिल से बचा हुआ मटन का एक टुकड़ा मिला। उन्होंने वह पेटरेल दादी को ला दिया। उसे पाकर दादी बहुत खुश नज़र आईं। लेकिन वे जिन्हें रेशमी मटन नहीं मिला था, नाराज़ नहीं थे क्योंकि उनके खाने की वहाँ काफी सारी और चीज़ें सजी हुई थीं। मांस के कोफ्ते, कड़ाही मुर्गा, तली हुई मछली, ब्रेड, केक, मिठाइयाँ और मज़ेदार पीने की चीज़ें। सबसे आखिर में आया दही का केक, रासबेरी के टुकड़ों के साथ, ऊपर से मलाई का सफेद झाग ओढ़कर।

"दुनिया में इससे बढ़िया कोई चीज़ नहीं है!" एमिल ने कहा। अगर तुमने वह केक खाया होता, तो जान जाते कि एमिल ने बिल्कुल सही कहा था।

फिर शाम हुई। पूरे काटहुल्ट और लोनबर्गा ने सूरज को आसमान की गहराई में डूबते हुए देखा। एमिल के पापा ने झंडा नीचे उतार लिया। एमिल और इडा उन्हें देख रहे थे।

इस तरह काटहुल्ट की वह दावत खत्म हुई। सब लोग अपने-अपने घर लौट गए। एक-एक कर के बग्घियाँ वापस गईं। सबसे आखिर में, पेटरेल दादी भी अपनी घोड़ागाड़ी में बैठकर चली गईं। एमिल और इडा ने पहाड़ी से नीचे उतरते उनके घोड़ों की टप-टप सुनी।

"उम्मीद करता हूँ कि वह मेरे चूहे के पिल्ले को प्यार से रखेंगी!" एमिल ने कहा।

"चूहे का पिल्ला?" इडा ने पूछा।

"वही जो मैंने उनके थैले में डाल दिया था!" एमिल ने कहा।

"लेकिन क्यों?" इडा ने पूछा।

"क्योंकि मुझे उस नन्हे से चूहे पर तरस आ गया था!" एमिल ने कहा, "उसने उस मटनवाली अलमारी के बाहर की दुनिया देखी ही नहीं थी। मैंने सोचा, कम से कम पेटरेल दादी का विमरबी गाँव तो देख आए।"

"दादी उसे प्यार से रखेंगी ना?" इडा ने एमिल की तरफ देखकर पूछा।

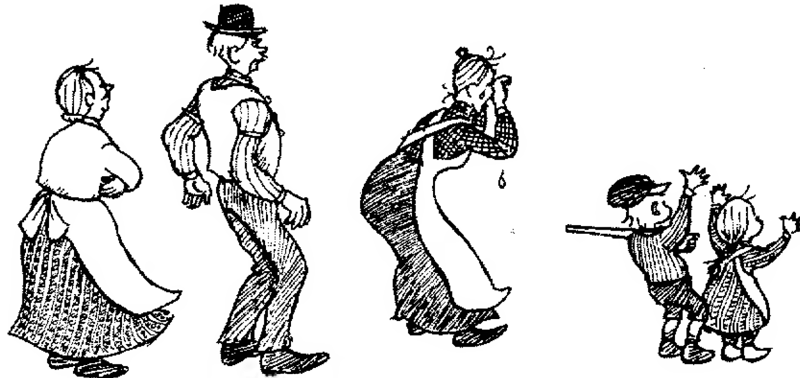
"हाँ, हाँ! बिल्कुल।" एमिल ने जवाब दिया।

तो यह था किस्सा 10 जून का – जब एमिल ने झंडे की तरह इडा को खंभे पर फहराया और सारा रेशमी मटन गटक डाला। उसके आगे क्या हुआ, पता है?

8 जुलाई – रविवार
एमिल के हुल्ट्सफ्रेड में कुछ और कारनामे

एमिल के पापा को खेती के कामों में मदद करनेवाले आल्फ्रेड को बच्चों से प्यार था। एमिल उसे ज़्यादा पसंद था; उसकी शरारतों से आल्फ्रेड कभी नाराज़ नहीं होता था। आल्फ्रेड ने एमिल को एक लकड़ी की बंदूक बना दी थी जो बिल्कुल असली लगती थी। लेकिन उससे गोली चलने का खतरा नहीं था। लेकिन एमिल "बँग! बँग!" चिल्लाता, उसे चलाने का नाटक करता था। इससे इतना ज़रूर हुआ था कि कई दिनों तक काटहुल्ट में चिड़ियाँ बाहर निकलनी बंद हो गई थीं। एमिल को अपनी बंदूक बेहद पसंद थी, इतनी कि वह उसे साथ लेकर सोता था।

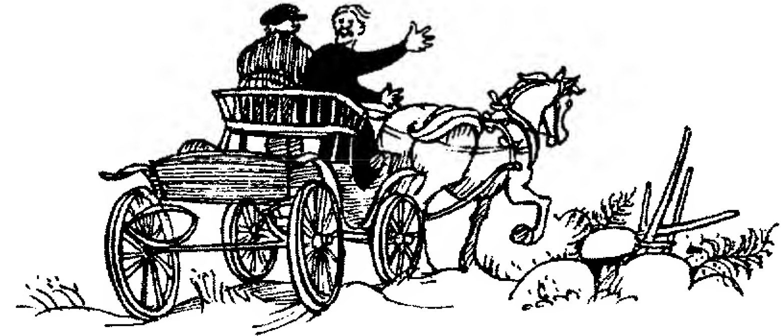
एमिल को अपनी बंदूक से तो प्यार था ही, लेकिन उससे भी ज़्यादा



आल्फ्रेड से था जिसने उसके लिए वह बंदूक बनाई थी। जब आल्फ्रेड को हुल्ट्सफ्रेड की छावनी में सैनिक प्रशिक्षण लेने जाना पड़ा तो एमिल रो पड़ा था। लोगों को सिपाही बनाने के लिए उन्हें छावनी में रखकर सिखाते थे। सरकार ने नया नियम बनाया था कि खेत पर काम करने वाले सभी लोगों को सैनिक बनने की शिक्षा लेनी होगी।

"अब फसल कटने को है और अभी आल्फ्रेड को जाना पड़ रहा है," एमिल के पापा ने कहा।

काटहुल्ट के उनके खेत पर जब फसल कटनी होती थी तो आल्फ्रेड काफी काम सँभाल लेता था। लेकिन यह तो देश के राजा और सेनाधिकारियों का हुक्म था, उसका पालन करना ही था। एमिल के पापा चाहे कुछ भी सोचें। प्रशिक्षण खत्म होने के बाद आल्फ्रेड वापस आनेवाला था, और इसमें बस कुछ ही दिन लगनेवाले थे। इसलिए एमिल को बहुत रोने-धोने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन एमिल रो पड़ा और लीना भी। लीना को भी आल्फ्रेड से एमिल जितना ही लगाव था।



आल्फ्रेड नहीं रोया। उसने कहा, हुल्ट्सफ्रेड की छावनी में कभी वह मौज-मस्ती भी तो कर पाएगा। लेकिन जब वह घोड़ागाड़ी में बैठकर चल पड़ा तो सब ने दुख के साथ उससे विदा ली। आल्फ्रेड मज़ेदार गाने गाता रहा और हँसी-मज़ाक करके सबको हँसाता रहा। उसका एक गाना यह भी था:

जाता हूँ मैं शहर की ओर
सुना है वहाँ है लड़कियों का शोर
नाचती हैं वे,
गाती हैं वे,
जाने क्या क्या खाती हैं वे।
लंबे लहँगे, घुँघराले बाल
बात-बात में हम तुम करें धमाल।

आल्फ्रेड का गाना सुनकर तो लीना और भी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। फिर धीरे-धीरे आल्फ्रेड की घोड़ागाड़ी आँखों से दूर जाती रही।

एमिल की माँ ने लीना को समझाने की कोशिश की।

"लीना, रोती क्यों है? बस, कुछ ही दिनों की तो बात है। जुलाई में हुल्टूसफ्रेड छावनी में मेला लगने वाला है। हम मेले में ज़रूर जाएँगे और आल्फ्रेड से मिलेंगे।"

"मैं भी जाऊँगा घूमने और आल्फ्रेड से मिलने।" एमिल ने तपाक से कहा।

"और मैं भी।" इडा ने फौरन कहा।

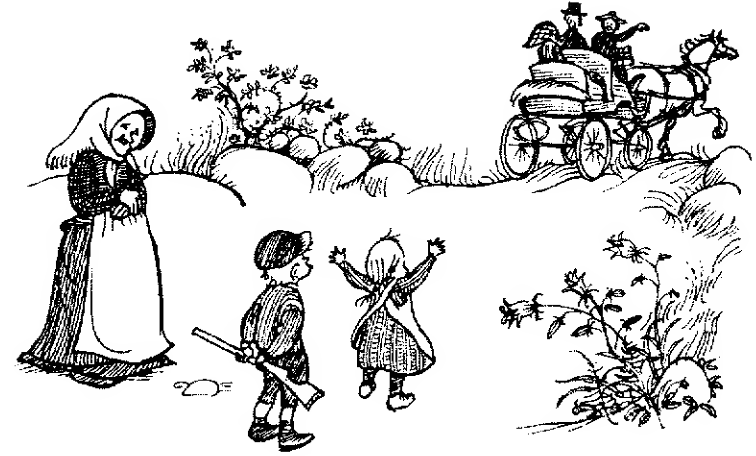
लेकिन माँ ने गर्दन हिलाकर कहा, "ना! वह बच्चों के जाने की जगह नहीं है। कहीं मेले की भीड़ में खो गए तो?"

"मुझे मेले में खो जाना बहुत अच्छा लगता है," एमिल ने कहा। लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ।

मेले के दिन एमिल के पापा, माँ और लीना सुबह हुल्टूसफ्रेड चले गए। एमिल और इडा को घर रुकना था और उनकी देखभाल के लिए वे माजा को बुला लाए थे। माजा जब तब, किसी न किसी काम के लिए उनके घर आती रहती थी।

इडा अच्छी बच्ची थी। उसने माजा की गोद में चढ़कर भूत की कहानियों की फर्माइश की। माजा से डरावनी कहानियाँ सुनना उसे बड़ा पसंद था।

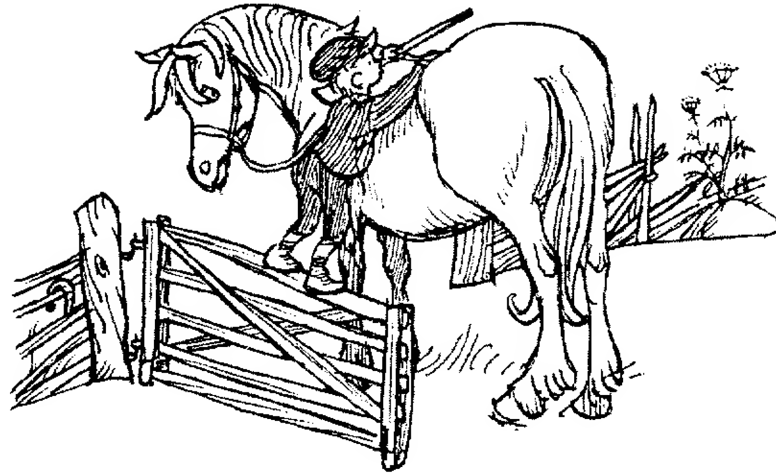
लेकिन एमिल बहुत गुस्से में था। वह अपनी बंदूक लेकर घोड़ों के अस्तबल में गया और ज़ोर से बोला, "मैं यह नहीं सह सकता! मैं भी



उनकी तरह मेले में जाना चाहता हूँ। और मैं जाकर ही रहूँगा, समझी जूलन?" उसकी यह नुक्ताचीनी जूलन के लिए थी जो बूढ़ी घोड़ी थी और इस वक्त आराम से घास चर रही थी। उनके पास एक जवान घोड़ा भी था – मार्कस। लेकिन आठ जुलाई को मेले के दिन, मार्कस तो एमिल के माँ-बाप और लीना को घोड़ागाड़ी में बिठाकर हुल्टूसफ्रेड गया था। जैसे मेले जाना सिर्फ बड़ों का अधिकार था, छोटों का नहीं!

"मुझे मालूम है जूलन, तेज़ी से उनका पीछा कौन कर सकता है – तुम और मैं!" एमिल ने जूलन से कहा।



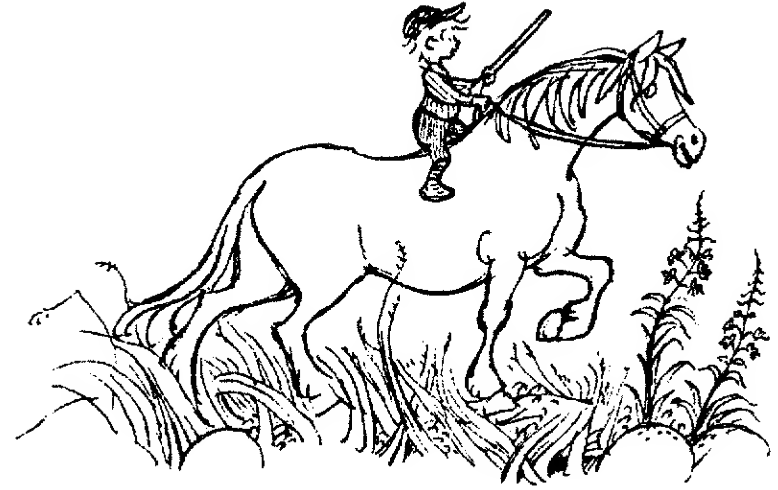


और हुआ वही! एमिल ने जूलन को तैयार किया और पुचकारकर उसे चरागाह से निकालकर, गेट के पास खड़ा कर दिया। लकड़ी के दरवाज़े पर चढ़कर, एमिल को उसकी पीठ पर सवार जो होना था। बड़ा तेज़ चलता था एमिल का दिमाग, ऐसे मामलों में।

"चलो!" एमिल ने कहा, "चक्! चक्! चलो, माजा से कहकर जाएँगे, लेकिन लौटने के बाद।"

तो इस तरह एमिल और जूलन टप-टप करते चल पड़े, पहाड़ी से नीचे उतरते हुए। एमिल बड़े ठाठ से जूलन पर सवार था। हाथ में बंदूक थी, क्योंकि उसे मेले में बड़ी शान से जाना था। अगर आल्फ्रेड सैनिक बनने वाला था तो क्या एमिल के पास भी बंदूक नहीं होनी चाहिए? यह ज़रूर है कि आल्फ्रेड के पास राइफल थी और एमिल के पास यह बंदूक – एक ही तो बात थी! वे दोनों सैनिक थे और एमिल यही चाहता था।

जूलन बूढ़ी हो चुकी थी। वह तेज़ दौड़ नहीं सकती थी। पर वह ठीक-ठाक चल रही थी। एमिल गाना गाकर उसे जोश दिला रहा था:



बूढ़ी है मेरी जूलन रानी
दौड़ में न करे आना-कानी
फिकर काहे की?

देख भाई देख
मेरी बंदूक तो देख
डर काहे का?

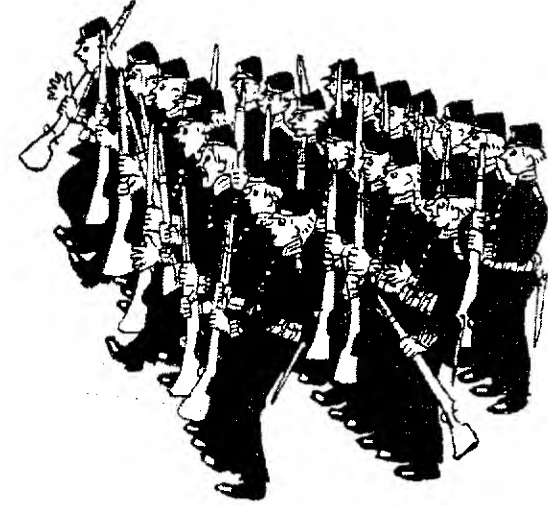
जूलन ने टपटपाते, हाँफते, रुकते, एमिल को हुल्ट्सफ्रेड के मेले तक पहुँचा ही दिया।

"आ हा हा, ओ हो हो," एमिल खुशी से चिल्लाया। "अब हम अच्छी तरह घूम-फिर लेंगे।"

लेकिन उसने जब सामने देखा तो ठिठक गया। वह जानता था कि दुनिया में बहुत सारे लोग हैं लेकिन उनमें से इतने इस मेले में आए होंगे ऐसा उसे पता नहीं था। उसने इतनी भीड़ पहले कभी नहीं देखी थी। एक बड़ा-सा गोल मैदान था और उसके बीच सैनिक कवायद आदि कर रहे थे। दाहिने, बाएँ घूमते, राइफलें उठाते-रखते। एक मोटा,







गुस्सैल लगने वाला आदमी घोड़े पर सवार, गोल-गोल चक्कर लगा रहा था और सैनिकों पर चिल्ला रहा था। उन्हें बता रहा था कि ऐसे करो और वैसे करो! एमिल को लगा यह बड़ी अजीब बात है।

"क्या आल्फ्रेड को सब का नेता नहीं बनाया है?" उसने पास खड़े किसानों के बच्चों से पूछा। लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, और सामने का दृश्य देखते रहे।

कंधे पर राइफल लिए 'टॉक्! टॉक्!' कवायद करने वाले सैनिकों को देखना एमिल को भी अच्छा लगा, लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं। उसका ध्यान बार-बार आल्फ्रेड की तरफ जा रहा था; वह यहाँ आया भी तो था आल्फ्रेड के लिए। सामने, सभी सैनिकों ने एक-सी नीली वर्दियाँ पहन रखी थीं, वे लग भी एक से रहे थे। उस भीड़ में आल्फ्रेड को ढूँढ निकालना मुश्किल था।

"देखना, आल्फ्रेड जैसे ही मुझे देख लेगा," एमिल ने जूलन से कहा, "फिर चाहे वह मोटा जितना चिल्लाए या राइफल पटके, आल्फ्रेड दौड़ा-दौड़ा मेरे पास चला आएगा।"

अब एमिल को ऐसी जगह पहुँचना था जहाँ आल्फ्रेड उसे देख सके। इसलिए वह सीधा सैनिकों की पलटन के सामने जा खड़ा हुआ और पूरा ज़ोर लगाकर चिल्लाया, "आल्फ्रेड, कहाँ हो तुम? चलो, हम घूमने चलें। क्या तुम्हें मैं अभी भी दिखाई नहीं दे रहा?"

आल्फ्रेड ने एमिल को देख लिया था। अपनी टोपी पहने और बूढ़ी जूलन पर बंदूक लेकर सवार था, उसका दोस्त एमिल! लेकिन आल्फ्रेड की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वह आगे आए। वह उस मोटे, गुस्सैल आदमी से डर रहा था जो बार-बार चिल्लाकर उन सैनिकों पर हुक्म चला रहा था।



अब हुआ यह कि आल्फ्रेड की बजाय वह मोटा आदमी ही अपना घोड़ा एमिल के पास ले आया और उसने बड़े प्यार से एमिल से पूछा, "क्या बात है मेरे बच्चे? क्या तुम खो गए हो?"

लो! इस पागलपन का एमिल क्या जवाब दे?

"मैं नहीं खोया!" एमिल ने कहा। "मैं तो यहाँ खड़ा हूँ। अगर कोई खोया हुआ है तो वे मेरे माँ-बाप हैं।"

एमिल वैसे ठीक कह रहा था। उसकी माँ ने कहा था कि छोटे बच्चे मेले में खो जाते हैं। अब माँ, पापा और लीना, तीनों उस ज़बरदस्त भीड़ में खोए हुए लग रहे थे। उनके लिए एक कदम भी आगे-पीछे करना मुश्किल हो गया था।

जब उनकी नज़र एमिल पर पड़ी तो पापा ने कहा, "इसका मतलब है, एक और लकड़ी का आदमी बनेगा।"

"और क्या?" माँ ने हारी हुई आवाज़ में कहा। "लेकिन हम एमिल तक पहुँचेंगे कैसे?"

सबसे बड़ी मुश्किल तो यही थी! अगर तुमने हुल्ट्सफ्रेड जैसा बड़ा मेला देखा होता तो तुम्हें पता चलता कि भीड़ का मतलब क्या होता है। जैसे ही सैनिकों की कवायद खत्म हुई, पूरा मैदान भीड़ से खचाखच भर गया। उसमें तुम अपने आपको ही ढूँढ नहीं पाते, एमिल को ढूँढना तो दूर की बात है। अब एमिल के माँ-बाप ही नहीं, आल्फ्रेड भी उसे ढूँढने की कोशिश में लगा हुआ था। उसका प्रशिक्षण खत्म हो गया था और अब वह घर वापस जा सकता था। अब वह जितनी जल्दी हो सके, एमिल के साथ मौज-मस्ती करने के लिए बेताब था। लगभग हर कोई किसी न किसी को ढूँढ रहा था। आल्फ्रेड एमिल को ढूँढ रहा था, और एमिल आल्फ्रेड को। माँ एमिल को ढूँढ रही थीं और लीना आल्फ्रेड को। एमिल के पापा, एमिल की माँ को ढूँढ रहे थे जो बीच में दो घंटे खो गई थीं। काफी ढूँढने के बाद, वह उन्हें विमरबी के दो मोटे लालाओं के बीच में फँसी मिली। उस वक्त माँ की हालत रोने वाली हो गई थी।

लेकिन एमिल को कोई ढूँढ नहीं पाया, न एमिल को कोई मिला। तो एमिल ने सोचा कि यहाँ आकर अगर मेला देखना है तो उसे अकेले ही घूम लेना चाहिए, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी।

लेकिन उसे याद आया कि निकलने से पहले उसने जूलन से वादा किया था कि वह उसे उसकी किसी पुरानी सहेली से मिलाएगा।

जूलन की सहेली को ढूँढते-ढूँढते उसे मार्कस ही नज़र आया। यह तो और भी अच्छा था। जंगल के बाहर, एक पेड़ से मार्कस बँधा मिला। वह सामने पड़ी घास मज़े से खा रहा था। साथ ही उनके परिवार की घोड़ागाड़ी खड़ी थी। देखकर लगा कि जूलन मारकस से मिलकर खुश थी। एमिल ने उसे भी मार्कस के साथ बाँध दिया और गाड़ी से घास का बंडल निकालकर उसके सामने रख दिया। जूलन ने फौरन घास खाना शुरू कर दिया, और एमिल को पता चला कि उसे भी भूख लगी है।



"लेकिन मैं घास तो खा नहीं सकता," उसने खुद से कहा।

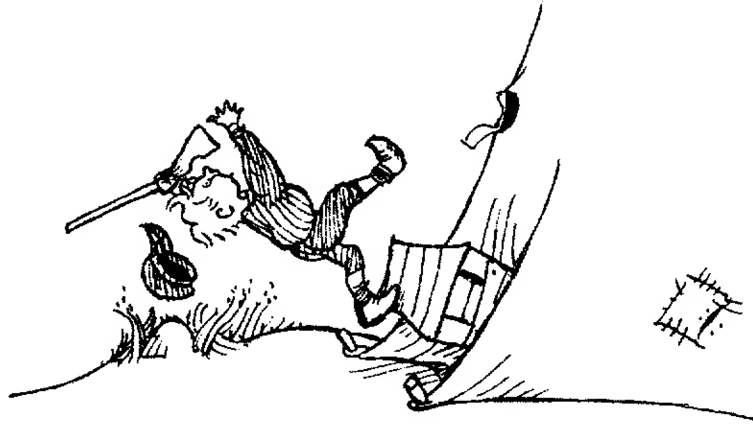
खाने की ज़रूरत भी नहीं थी क्योंकि साथ में कई छोटे-छोटे खोमचे लगे थे जिनमें कई तरह के ब्रेड, पैटी, केक और बन मिल रहे थे, लेकिन अगर जेब में पैसे हों तो! मेले में करने के लिए कई मज़ेदार चीज़ें थीं। सर्कस, नाचने-गाने के लिए बगीचे, गोल-चक्कर, खेलने के लिए कई खेल और जीतने के लिए इनाम! और तो और, एक आदमी छुरियाँ खा रहा था, एक मुँह से आग निकाल रहा था, एक बड़ी औरत जिसकी दाढ़ी थी, वह कुछ भी खा जाती थी – कॉफी और बन के अलावा! इससे वह अमीर तो हो नहीं सकती थी, लेकिन अच्छा था कि उसकी दाढ़ी थी। जो देखना चाहे, उससे पैसे लेकर वह अपनी दाढ़ी दिखा सकती थी, और इसी से उसका गुज़ारा हो जाता होगा।

हर चीज़ के लिए पैसे की ज़रूरत होती है और एमिल के पास पैसे थे नहीं। लेकिन उसका दिमाग क्या था, यह हम सब जानते हैं। वह जितना संभव हो, देख लेना चाहता था – जैसे सर्कस। सर्कस देखना









सबसे आसान था। तंबू के पीछे किसी बक्से पर खड़े हो जाओ और किसी छेद से झाँककर देख लो। तंबू में अजीब तरीके से दौड़ते जोकर को देखकर एमिल इतना हँसा, इतना हँसा कि बक्से से गिर गया और उसका सिर पास पड़े पत्थर से टकराया। सर्कस की तो हो गई छुट्टी। और भूख भी तेज़ हो गई!

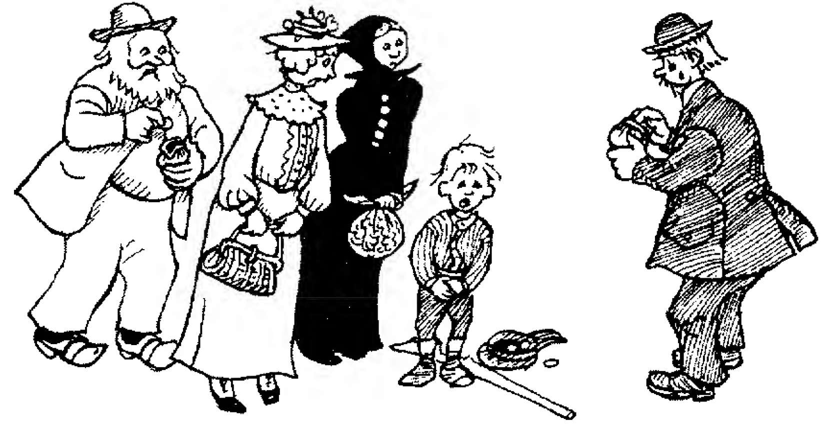
"भूखे पेट और घूमा नहीं जाएगा," उसने अपने आप से कहा। "लेकिन अब पैसे कहाँ से लाऊँ? कुछ सोचना पड़ेगा।"

उसने देखा कि वहाँ तरह-तरह की चीज़ें करके लोग पैसे कमा रहे थे। उसे भी कोई ऐसा तरीका ढूँढना था कि खाने लायक पैसे मिलें। वह छुरियाँ तो खा नहीं सकता था, न मुँह से आग निकाल सकता था। तो फिर क्या किया जाए? एमिल खड़ा-खड़ा सोच रहा था।

उसने भीड़ के बीच बैठा एक अंधा आदमी देखा। उसके सामने एक बक्सा रखा था। वह आदमी कुछ दर्द भरे गाने बहुत अच्छे से गा रहा था, और लोग इसके लिए उसे पैसे दे रहे थे।

"मैं भी तो ऐसा कर सकता हूँ," एमिल ने सोचा, "और पैसे इकट्ठे करने के लिए मेरे पास टोपी है।"

उसने अपने सामने टोपी रख दी और वही गाना गाने लगा जो उसने



जूलन के लिए रास्ते में बनाया था।

उसके आसपास भीड़ जमते देर न लगी। "चू! चू! कितना प्यारा बच्चा है। बहुत गरीब होगा, बेचारा – तभी तो पैसे के लिए गा रहा है।"

उन दिनों कई गरीब बच्चे सड़कों पर घूमते दिखाई देते थे, जिनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं होता था। एक औरत आगे आकर पूछने लगी, "बच्चे, क्या तुम्हारे पास खाने के लिए आज कुछ भी नहीं है?"

"सिर्फ घास है," एमिल ने कहा।

उन सबको एमिल पर बड़ा तरस आया। वेना गाँव का एक किसान भी पास में खड़ा था। उसकी आँखों में आँसू आ गए, जब उसने देखा कि एक छोटा-सा लड़का बिल्कुल अकेला वहाँ खड़ा है। कितने प्यारे बाल हैं उसके! सब ने एमिल की टोपी में सिक्के डालने शुरू किए – उस किसान ने भी दो का सिक्का जेब से निकाला, लेकिन कुछ सोचकर वापस जेब में रख लिया, और एमिल के पास जाकर फुसफुसाया, "मेरी घोड़ागाड़ी तक आओगे, तो मैं तुम्हें कुछ और घास दूँगा।"

लेकिन अब एमिल की टोपी सिक्कों से भारी हो गई थी। उसे घास

की ज़रूरत नहीं थी। वह एक खोमचेवाले के पास गया और उसने काफी सारे बन, ब्रेड और फलों के रस का एक डिब्बा खरीदकर अपना पेट भर लिया।

पेट पूजा के बाद, एमिल ने गोल-चक्कर में गोल-गोल घूमते बयालीस चक्कर लिए। वह तेज़ घूम रहा था और हवा से बाल अस्त व्यस्त हो रहे थे। एमिल को लगा, ''मैंने कई किस्म की मौजमस्ती की है लेकिन इसका तो जवाब नहीं। पूरी दुनिया में इसके बराबर की कोई चीज़ नहीं।''

एमिल का गोल-चक्कर पर घूमने का यह पहला मौका था और वह इतना खुश था कि क्या बताएँ! उसे लगा, ऊपर जाकर उसने सारा मेला भी देख लिया है।





इसके बाद वह चाकू खा जाने वाले को देखने गया और दाढ़ी वाली औरत के तंबू में भी। इतना सब करने के बाद उसके पास अब सिर्फ दो सिक्के बचे थे।

''मैं एक और गाना गा सकता हूँ, कुछ और पैसे मिल जाएँगे,'' उसने सोचा। ''यहाँ लोग भले लगते हैं।''

उसे ज़रा थकान महसूस हो रही थी। अब उसका गाने का मन नहीं था और पैसों की भी ज़रूरत नहीं थी। इसलिए उसने अपने बचे हुए सिक्के उस अंधे गायक को दे डाले। फिर वह आल्फ्रेड की तलाश में इधर-उधर भटकने लगा।

यहाँ सब लोग भले हैं, यह एमिल की गलतफहमी थी। उस मेले का फायदा लेने एक दो बदमाश भी वहाँ आए हुए थे। उनमें से एक का नाम था चिमनी, उससे तो पूरा शहर डरता था। वहाँ के अखबारों में उसकी तस्वीरें और कारनामे कई बार छप चुके थे। जब भी कहीं कोई मेला-वेला लगता तो उसमें चिमनी ज़रूर पहुँच जाता और चोरी का मौका ढूँढता। उसके पास कई तरह की नकली मूँछें थीं और दाढ़ियाँ भी। उसे पहचानना लोगों के लिए मुश्किल हो जाता था, और अगर कोई पहचान ले तो बहुत भगदड़ मच सकती थी।

अगर चिमनी को ज़रा भी अकल होती तो वह हुल्ट्सफ्रेड के मेले में आने की न सोचता। उसे इतना तो पता होना चाहिए था कि वहाँ एमिल आया है, वह भी अपनी बंदूक लेकर। पता है क्या हुआ?

एमिल आल्फ्रेड की तलाश में इधर-उधर घूम रहा था। जब वह उस दाढ़ीवाली औरत के तंबू के पास से गुज़रा तो उसने पर्दे से अंदर देखा। वह अपनी दिन भर की कमाई गिन रही थी। शायद वह जानना चाहती थी कि दाढ़ी ने उसके लिए, इस मेले में कितना फायदा कमाया है।

लगता है उसने काफी पैसा बटोर लिया था क्योंकि वह संतोष से मुस्करा रही थी और अपनी दाढ़ी थपथपा रही थी। तभी उसकी नज़र एमिल पर पड़ी।

"आ जा छोकरे," उसने बुलाया। "तू मुफ्त में मेरी दाढ़ी देख सकता है। बड़ा प्यारा बच्चा लगता है।"

एमिल तो उसे एक बार पहले ही देख चुका था, लेकिन अब बुलाए जाने पर, वह भी मुफ्त में दाढ़ी देखने के लिए, वह अंदर चला गया। उसने टोपी पहन रखी थी, और बंदूक हाथ में थी। उसने बहुत देर तक दाढ़ी वाली औरत को देखा। इतनी देर तक देखने के तो वैसे दो क्रोनर लग जाते।

"आपको इतनी शानदार दाढ़ी मिली कैसे?" एमिल ने अदब से पूछा। लेकिन उस औरत ने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि उसी वक्त एक डरावनी आवाज़ में हुक्म सुनाई दिया, "मुझे जल्दी से ये रकम दे दे, नहीं तो मैं तेरी दाढ़ी काट दूँगा।"

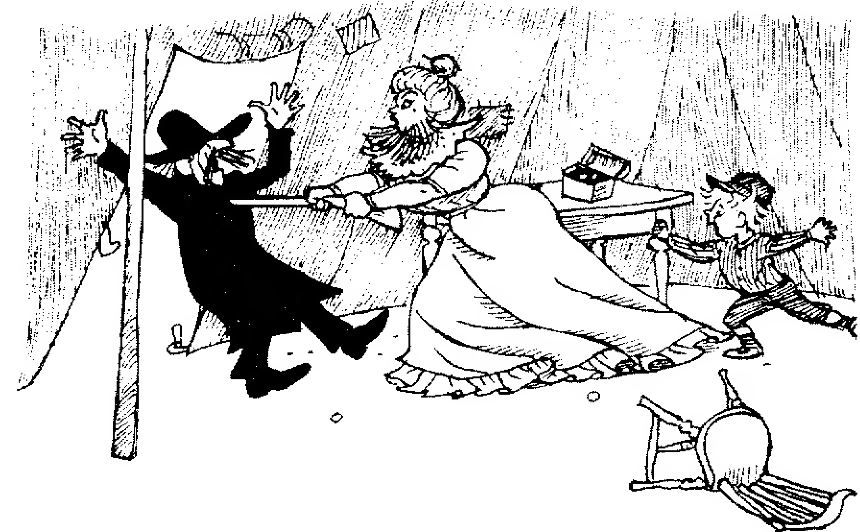


यह तो चिमनी ही था! न जाने कैसे तंबू में घुस आया था? दाढ़ी वाली औरत का चेहरा डर से सफेद पड़ गया।

दाढ़ी खैर जैसी थी, वैसी ही रही। वह बेचारी अपना सारा माल चिमनी को देने ही वाली थी कि एमिल धीरे से मुनमुनाया, "मेरी यह बंदूक लो!" उसने एमिल की ज़बरदस्ती पकड़ाई बंदूक हाथ में लेकर ऊपर उठाई। उस वक्त तंबू में अँधेरा था, इसलिए चीज़ें साफ नज़र नहीं आ रही थीं। उस औरत को लगा यह असली बंदूक है। मज़े की बात तो यह है कि चिमनी को भी ऐसा ही लगा।

"हाथ ऊपर उठाओ वरना मैं गोली चला दूँगी।" वह औरत चिल्लाई। चिमनी के चेहरे से रंग उड़ गया और वह हाथ ऊपर उठाकर थर-थर काँपता वहाँ खड़ा रहा। दाढ़ी वाली औरत ने शोर मचाकर पुलिस को बुला लिया। वह इतने ज़ोर से चिल्ला रही थी कि पूरे मेले में उसकी आवाज़ गूँज रही थी।

पुलिस फौरन आई और उन्होंने चिमनी को बेड़ियाँ पहना दीं। इसके बाद चिमनी कभी किसी को वहाँ या कहीं और दिखाई न दिया। दाढ़ीवाली औरत की अखबारों ने खूब तारीफ की – कितनी बहादुरी



से उसने चिमनी जैसे डाकू को पकड़ा। लेकिन कमाल की बात यह है कि किसी ने एमिल या उसकी बंदूक के बारे में कुछ नहीं कहा, पर मुझे लगता है कि अब लोगों को सच्चाई पता लगनी चाहिए।

"कितना अच्छा हुआ कि मैं अपनी टोपी और बंदूक लेकर हुल्ट्सफ्रेड आया।" एमिल ने उस औरत से कहा। तब तक पुलिस चिमनी को लेकर वहाँ से जा चुकी थी।

"तुम बहुत होशियार लड़के हो!" उस औरत ने कहा, "अब जब भी मेरी दाढ़ी देखनी हो, तुम मुफ्त में देखने के लिए आ सकते हो।"



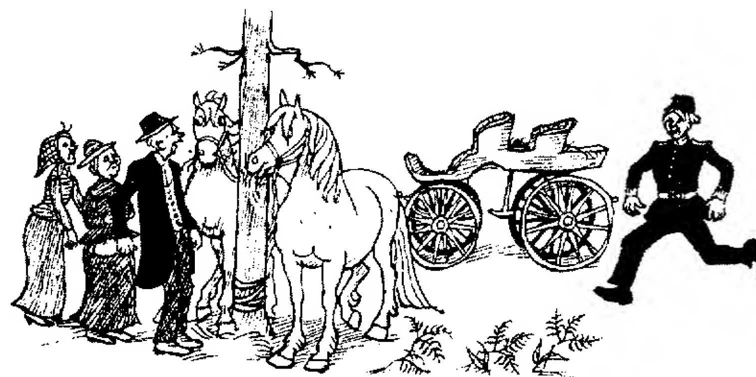
लेकिन एमिल थक चुका था। उसे न दाढ़ी देखनी थी, न घूमने का मन हो रहा था। उसे नींद आ रही थी। अब अँधेरा होने लगा था। पूरे दिन की मेहनत, पर आल्फ्रेड तो मिला ही नहीं!

उधर एमिल के माँ-बाप और लीना भी थक गए थे। उन्होंने एमिल को न जाने कहाँ-कहाँ ढूँढा था, और लीना ने आल्फ्रेड को। अब सब बहुत थक चुके थे और कुछ भी करने का दम नहीं बचा था।

"आह्! मेरे पैर!" एमिल की माँ ने कराहते हुए कहा और एमिल के पापा ने सहानुभूति में गर्दन हिलाई।

"मेलों में जाने का मज़ा ही तो यह है," उन्होंने कहा। और फिर बोले, "चलो, घर लौट चलें क्योंकि और कुछ तो हो नहीं सकता।"

जब वह मार्कस और गाड़ी के पास पहुँचे तो देखा कि जूलन और मार्कस एक ही पेड़ से बँधे हुए हैं और घास चर रहे हैं।



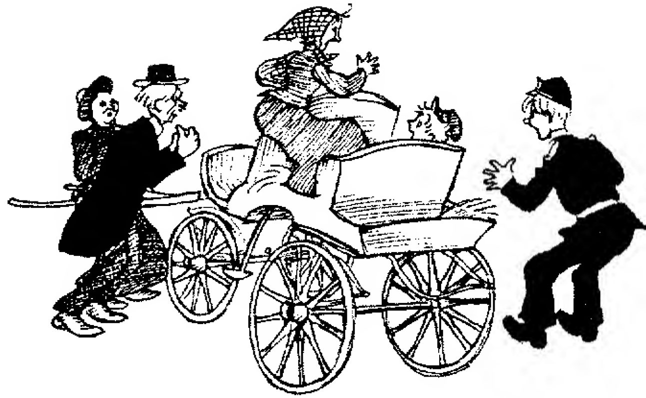
एमिल की माँ रो पड़ीं। "न जाने मेरा छोटा-सा एमिल कहाँ है?" उन्होंने कहा। लीना ने सिर झटकाया।

"हमेशा कुछ न कुछ शरारत करता रहता है, यह लड़का!" लीना बोली। "आफत का टोकरा है, एमिल!"

तभी उन्होंने किसी के दौड़ते-हाँफते आने की आवाज़ सुनी। वह आल्फ्रेड था।

"एमिल कहाँ है?" उसने पूछा। "मैं सारा दिन उसे ढूँढता रहा हूँ।"

"कहीं भी हो, मेरी बला से..." कहकर लीना घोड़ागाड़ी में चढ़ गई।



जैसे ही गाड़ी के अंदर पाँव रखा, उसके पैर में कुछ लगा – एमिल!

गाड़ी में थोड़ी-सी सूखी घास पड़ी थी और उस पर एमिल सो गया था। जब लीना का पैर उस पर पड़ा तो वह जाग उठा। एमिल ने देखा कि सब आ गए हैं, और नीली वर्दी में हाँफता आल्फ्रेड उसके पास खड़ा है। उसने अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं।

"आल्फ्रेड, आ गए तुम!" उसने कहा और वह फिर सो गया।

फिर, वे सब काटहुल्ट अपने घर लौट गए। मार्कस ने गाड़ी खींची और जूलन पीछे-पीछे चलती रही। बीच-बीच में एमिल उठकर देखता था तो उसे काले जंगल और गर्मियों का साफ आसमान नज़र आता



था। घोड़ों और पेड़ों की गंध आती थी। घोड़ों की टप-टप और पहिए की घिरघिराहट सुनाई दे रही थी। लेकिन ज़्यादातर वह सोता रहा, और आल्फ्रेड के घर लौटने का सपना देखता रहा, जो सच भी था।

तो इस तरह आठ जुलाई को एमिल ने मेले में धूम मचाई। सोचो तो, उसको उस दिन और कौन ढूँढ रहा था? माजा से पूछो! नहीं, नहीं! रहने दो क्योंकि इससे उसकी बाँह पर कुछ हो जाता है और उसमें गुदगुदी होती है। ऐसी गुदगुदी जो खत्म ही नहीं होती।

एमिल की ज़िंदगी के तीन दिनों के बारे में तो मैंने तुम्हें बताया है जो भरपूर थे, लेकिन साल में कितने दिन और हैं जो शरारतों से भर जाना चाहते हैं? बिना शरारत के पूरा दिन बिताने का क्या फायदा? मैंने तुम्हें अभी 9 अगस्त, 11 अक्तूबर और 3 नवंबर को जो भी हुआ था, उसकी कहानियाँ नहीं सुनाई हैं क्योंकि मैंने एमिल की माँ से वादा किया था कि वह मैं किसी को नहीं बताऊँगी। लेकिन उसके बाद इतना ज़रूर हुआ कि लोनबर्गा के लोगों ने एक समिति बनाई और उन्होंने काटहुल्ट के लोगों से सहानुभूति जताई कि उन्हें एमिल जैसे भयानक लड़के की शरारतों का सामना करना पड़ता है। उन सब ने पचास-पचास क्रोनर का चंदा किया और वह थैली एमिल की माँ को दी।

"इससे आप एमिल को पढ़ाई के लिए अमरीका भेज सकती हैं।" उन्होंने कहा।

खैर! सुझाव अच्छा था! एमिल को अमरीका भेज दो... लेकिन फिर यहाँ की पंचायत का मुखिया कौन बनेगा? वह काम तो एमिल ही को करना था, बड़े होकर!

एमिल की माँ ने उनके सुझाव को अनसुना कर दिया। उन्हें गुस्सा आया। उन्होंने वह चंदे का थैला भी ज़ोर से फेंक दिया, जिसकी वजह से पूरे लोनबर्गा में सिक्कों की बौछार हो गई।

"मेरा एमिल बहुत छोटा है अभी," एमिल की माँ ने चिल्लाकर कहा, "और वह जैसा भी है, हमें अच्छा लगता है!"

जो भी हो, उन्हें एमिल की फिक्र तो होती ही थी! जब लोग बार-बार आकर शिकायत करने लगते हैं तो माँओं को फिक्र होना स्वाभाविक है।



उस रात जब अपनी टोपी और बंदूक लेकर एमिल सोने लगा तो माँ उसके पास बैठीं और उससे पूछा, "एमिल, तुम जल्दी ही बड़े होकर स्कूल जाओगे। वहाँ भी तुमने यों ही ऊधम मचाया तो क्या होगा?"

उस वक्त एमिल का चेहरा बहुत मासूम लग रहा था। घुँघराले बाल और नीली शांत आँखें। "ट्रा ला ला ला!" उसने कहा, क्योंकि वह ऐसे सवाल सुनना नहीं चाहता था।

"एमिल!" अब की बार माँ ने सख़्ती से पूछा, "तुम स्कूल जाओगे तो क्या ऐसा ही करोगे?"

"नहीं!" एमिल ने कहा, "स्कूल जाने के बाद, मैं कोई ऐसी-वैसी बात नहीं करूँगा।"

एमिल की माँ ने लंबी साँस ली।

"चलो ठीक है।" उन्होंने कहा और अभी उठकर दरवाज़े तक गई ही थीं कि एमिल ने तकिये से सिर उठाकर मासूमियत से मुस्कुराते हुए कहा, "वैसे मैं कुछ पक्का कह नहीं सकता!"





मार्दी के कारनामे

मार्दी के कारनामे

स्वीडन के एक छोटे-से गाँव में, लाल ईंटों का एक बड़ा-सा घर था, जो एक सुंदर-से सोते के किनारे था, और उसमें रहती थी मार्दी। उसके घर में मम्मी-पापा के अलावा उसकी छोटी बहन लिसबेत थी, सासो नाम का एक झबरू कुत्ता था, और एक बिल्ली का बच्चा था, गूडी! हाँ, और अल्मा भी तो थी, जिसका काम था बच्चों की देखभाल करना। मार्दी और लिसबेत बच्चों के कमरे में रहते थे, अल्मा अपने कमरे में, सासो बैठक में रखी एक बास्केट में रहता था और गूडी रसोई घर में, चूल्हे के पास। मम्मी-पापा सारे घर में रहते थे। पापा गाँव के एक अखबार के दफ्तर में काम करते थे, शायद इसलिए कि गाँव के लोगों को पढ़ने के लिए कुछ मिले।

मार्दी का असली नाम मार्गरेट था, पर वह छोटी थी तब उससे यह बोला नहीं जाता था और वह अपना नाम मार्दी बताती थी। जब वह सात साल की हो गई थी, उसे सब मार्दी ही कहते थे। जब वह कोई शरारत करती, या उसे डाँटना होता, सिर्फ तभी उसे 'मार्गरेट' कहा जाता था। और ऐसे मौके बार-बार आते ही रहते थे। लिसबेत का असली नाम एलिज़ाबेथ था। उसे डाँट कम पड़ती थी। एक मार्दी का ही दिमाग था जिसमें तरह-तरह की शरारतें पैदा होती रहती थीं। शरारतों के बारे में पहले ज़्यादा सोचना मार्दी को पसंद नहीं था, क्योंकि बाद में तो वह हमेशा एक अच्छी, आज्ञाकारी बच्ची बनना चाहती थी। पर इसमें उसे अभी तक सफलता नहीं मिल पाई थी।

ईडा का कहना था, "मार्दी एक आफत की पुड़िया है। इसके



दिमाग में पलक झपकते ही कोई एक नई शरारत, पता नहीं कैसे पैदा हो जाती है!"

ईडा हर शुक्रवार, उनके परिवार के कपड़ों की धुलाई और ऊपर की साफ-सफाई के लिए आया करती थी।

उस दिन शुक्रवार था। सोते के किनारे ईडा कपड़े धो रही थी और मार्दी वहीं पर बैठी उसे देख रही थी। मार्दी उस वक्त बहुत खुश थी – उसकी फ्रॉक की जेब टॉफियों से भरी हुई थी और वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद उनमें से एक निकालकर खाती रहती थी। उसने अपने पैर पानी में लटका रखे थे और ईडा को वह एक गाना सुना रही थी :

"अ आ इ ई...
बिल्ली शहर घूम आई
गाय से चुराया दूध

और चाट गई मलाई...
चूहा गया भाग
खा अब रोटी और साग..."

यह गाना मार्दी का अपना बनाया हुआ था। इसका एक टुकड़ा मम्मी की किताब में लिखी कविता से उठाया था, एक और टुकड़ा अल्मा को गुनगुनाते हुए सुना था। मार्दी को लगता था कि कपड़े धोते हुए और टॉफियाँ चूसते हुए गाने के लिए यह बहुत सही गाना था, लेकिन ईडा को ऐसा बिल्कुल नहीं लगता था।

"माँ मेरी! गाने में भी उल्टी-सीधी बातें और लड़ाइयाँ! तुझे कुछ अच्छा-सा नहीं मिलता गाने को?" ईडा ने पूछा।

"क्यों, इसमें क्या खराबी है?" मार्दी ने कहा, "वैसे तुम जो गाने गाती हो, वे इससे ज़रूर अच्छे हैं। प्लीज़ ईडा, गाओ न वह गाना, आसमान में चलती भगवान की रेलगाड़ी..."

लेकिन कपड़े धोते-धोते गाने का ईडा का कोई इरादा नहीं था। यह ठीक ही था क्योंकि वह गाना सुनकर मार्दी का रोना निकल जाता था। गाने की याद आते ही वह गुमसुम हो जाती थी, और उसकी आँखों में आँसू भर आते थे। वह बहुत दुखी गाना था, जिसमें एक लड़की आसमान तक जाने वाली रेलगाड़ी में बैठकर ऊपर जाना चाहती है, अपनी मरी हुई माँ से मिलने। मार्दी को ऐसा कुछ सोचकर भी घबराहट होने लगती थी। ईडा के सभी गाने दुख-दर्द वाले हुआ करते थे। गरीब बच्चे, हरदम रोती माँएँ और कई सारे दुष्ट लोग। जैसे दुनिया में रोने-धोने के अलावा करने को कुछ भी न हो!

मार्दी ने लंबी साँस ली और एक टॉफी मुँह में रख ली। कितनी खुशी की बात थी कि उसकी माँ तो ज़िंदा थीं और उसके लाल रंग के प्यारे-से घर में सब कुछ ठीक-ठाक था! हर रात सोने से पहले वह जब भगवान से प्रार्थना करती तो यह भी कहती कि जब स्वर्ग जाने की बारी आए, तो वह, लिसबेत, मम्मी, पापा, अल्मा, ईडा और एब नीलसन, सब साथ ही जाएँ। अगर कभी जाना ही न पड़े तो और भी अच्छा

होगा क्योंकि यहीं वे सब बहुत खुश हैं। लेकिन वह भगवान को यह बता नहीं सकती थी, क्या पता वह नाराज़ हो जाएँ।

ईडा को गाने गाकर लोगों को रुला देना अच्छा लगता था।

"मार्दी, तुम्हें अब पता चल रहा है न," ईडा कहती, "कि गरीब बच्चों पर न जाने क्या-क्या गुज़रती है। तुम खुशकिस्मत हो, इसलिए तुम्हें शुक्रगुज़ार होना चाहिए। तुम्हारी ज़िंदगी सोने में जड़े हीरे की तरह सुंदर है।"

मार्दी खुशकिस्मत तो थी ही। वह अपने खुश परिवार के साथ जूनडेल जैसे सुंदर गाँव में रहती थी। इससे बढ़िया गाँव तो कोई हो ही नहीं सकता था। अगर मार्दी से कोई पूछता तो वह कहती:

"हमारा तो घर लाल है बस, कुछ खास नहीं। घर तो घर की तरह ही होता है न? सबसे अच्छा है रसोई घर! मैं और लिसबेत वहाँ लकड़ी के बक्सों के ऊपर खेलते रहते हैं, और खाना बनाने में अल्मा की मदद करते हैं। नहीं, सबसे बेहतर जगह है ऊपर का छज्जा! मैं और लिसबेत वहाँ छुपा-छुपी खेलते हैं और कभी-कभी राक्षस जैसे कपड़े पहनकर, लोगों को खाने का नाटक करते हैं। बरामदे में भी बड़ा मज़ा आता है, हम खिड़कियों से अंदर-बाहर कूदते रहते हैं, जैसे समुद्री डाकू अपनी रस्सियों के सहारे जहाज़ पर चढ़ गए हों। हमारे घर के इर्द-गिर्द बहुत से लंबे पेड़ हैं। मैं उन पर चढ़ जाती हूँ, लिसबेत नहीं। वह अभी बहुत छोटी है, सिर्फ पाँच साल की। कभी-कभी मैं लकड़ी रखने के कमरे की छत पर भी चढ़ जाती हूँ जो हमारे पड़ोसी नीलसन के बाड़े से लगा हुआ है। अगर आप उस कमरे की छत पर चढ़ जाओ तो नीलसन के रसोई घर में जो भी हो रहा है, वह साफ देख सकते हो। और सोते का किनारा भी। हमें धोबी घाट तक जाने देते हैं क्योंकि वहाँ पानी बहुत गहरा नहीं है, आगे जाकर पानी गहरा हो जाता है। सड़क दूसरी तरफ है। हमने अपने बाड़े के पास घने पेड़ और बेलें लगा रखी हैं। इससे सड़क पर से गुज़रने वालों की सारी बातें हम छुपकर सुन सकते हैं, है न मज़ेदार बात?"

मार्दी को आप अगर जूनडेल के बारे में पूछें तो वह यही सब बताएगी।

वह सचमुच बाड़े के पीछे छुप जाती थी और वहाँ से गुज़रने वालों की बातें सुनती थी। कभी वे कहते थे: "देखो, कितनी प्यारी बच्ची है!"

तब मार्दी को पता चल जाता कि ज़रूर लिसबेत चुपचाप गेट के पास जाकर खड़ी होगी और आने-जाने वालों को देखकर, उन पर अपनी मुस्कराहट बिखेरती होगी। मार्दी को कभी यह नहीं लगता था कि वह खुद एक 'प्यारी' बच्ची है, लेकिन लोग यह लिसबेत के लिए कहते तो वह बड़ी खुश होती। हर कोई कहता था कि लिसबेत बहुत सुंदर है, ईडा को भी ऐसा ही लगता था।

"मैं कहती हूँ, मैं कहती हूँ, लिसबेत बिल्कुल एक चित्र जैसी सुंदर है!" ईडा कहती।

"और अच्छी भी है," मार्दी कहती, लिसबेत की बाँह पर धीरे-से काटते हुए। इससे लिसबेत खिलखिलाकर हँसती, मानो मार्दी ने उसे गुदगुदाया हो। लिसबेत जहाँ भी छूकर देखो, नरम-नरम थी और सुंदर भी। लेकिन उसके छोटे-छोटे सफेद दाँत थे। उनसे वह मार्दी के गाल पर पूरा जोर लगाकर काटती थी। और उसके बाद, "तुम मुरब्बे-सी मीठी हो," कहकर लिसबेत और भी खिलखिलाती थी।

मार्दी का कुछ भी नर्म-मुलायम, सुंदर नहीं था। उसका चेहरा धूप से थोड़ा-सा झुलसा हुआ था, आँखें नीली थीं और बाल भूरे। वह डंडे की तरह सीधी थी, पतली और बिल्ली की तरह चपल!

"इसे लड़की होना ही नहीं चाहिए था," ईडा कहती। "इसे सच, लड़का होना चाहिए था।"

मार्दी को वह जैसी थी, ठीक लगती थी।

"मैं अपने पापा पर गई हूँ," मार्दी कहती। "कितना अच्छा है न! इसका मतलब यह भी हुआ कि पापा की तरह मेरी भी शादी ज़रूर होगी।"



लिसबेत को यह सुनकर फिक्र हो जाती – क्या होगा अगर उसकी शादी नहीं हुई तो? क्योंकि वह तो मम्मी पर गई थी – सब यही कहते हैं। यह नहीं कि उसे शादी का कोई खास शौक था, लेकिन अगर मार्दी की होती है, तो लिसबेत को भी करनी है। मार्दी जो करती है, वही उसे करना होता था।

"यह सब सोचने के लिए तुम अभी बहुत छोटी हो," मार्दी उसको प्यार से थपथपाकर कहती, "अभी तो तुम्हें बड़ी होकर मेरी तरह स्कूल जाना है!"

वैसे यह पूरा सच नहीं था। अभी तो उनके माँ-बाप मार्दी का नाम सिर्फ स्कूल में लिखवाकर आए थे। एकाध हफ्ते में उसका स्कूल शुरू हो जाने वाला था। तो इसका मतलब यही हुआ कि वह स्कूल जाने वाली लड़की हो चुकी थी।

"क्या पता, मेरी शादी शायद होगी भी नहीं," वह लिसबेत को दिलासा देने के लिए कहती। मन ही मन उसे पता नहीं था कि शादी में इतनी खास अकलमंदी जैसी क्या बात है? अगर है, तो वह एब नीलसन से शादी करेगी, मार्दी ने सोच लिया था। एब को भले ही इसके बारे में पता न हो।

ईडा कपड़े धो चुकी थी और इधर मार्दी की टॉफियाँ खत्म हो चुकी थीं। इतने में लिसबेत डगमगाती वहाँ आ गई। अब तक वह बरामदे में बैठी गूडी से खेल रही थी। जब उससे मन भर गया तो उसने सोचा, देखूँ तो, मार्दी क्या कर रही है?

"मार्दी, अब हम क्या करें?" उसने मार्दी से पूछा।

मार्दी ने कहाः

"दो बिल्लियों को साथ ले
निकल पड़ो घूमने
बर्फ से क्या डरना, बस
पूँछ की लगाम पकड़ना"

"हा हा, वह तो मैं पहले ही कर चुकी – गूडी के साथ। मैंने उसकी पूँछ की लगाम बनाई और बरामदे में भागती गई!" लिसबेत बोली।

"ठहर जा, अभी तुझे सीधा करती हूँ" मार्दी बोली। "अगर तूने गूडी की पूँछ खींची थी, तो मैं तुझे दिखाती हूँ कि कैसा लगता है।"

"नहीं, नहीं," लिसबेत ने बात सँभाल ली। "किसने कहा, मैंने उसकी पूँछ खींची? मैंने तो सिर्फ पकड़ रखी थी। गूडी ही उसे खींचकर, ज़ोर-ज़ोर से छुड़ा रहा था।"

इस बार ईडा ने भी लिसबेत को सख्ती से देखा और कहा, "लिसबेत, जब बच्चे जानवरों को तंग करते हैं, तो पता है न भगवान क्या करता है? वह ऐसी बारिश कर देता है कि वह रुकती ही नहीं, काफी दिन!"

"लेकिन अभी तो बारिश हो नहीं रही," लिसबेत ने कहा।

वाकई, उस वक्त बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं था। मीठी-मीठी धूप थी, तितलियाँ और मधुमक्खियाँ खेल रही थीं और सोता धीरे-धीरे बहता जा रहा था। बसंत तो मैं अपने अंदर भी महसूस कर रही हूँ, मार्दी ने सोचा। इस वक्त सोते का पानी भी तो हल्का गर्म लग रहा था।

"यह जो गर्मी महसूस हो रही है इस वक्त, मैं कहती हूँ, सही नहीं है!" ईडा ने अपने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा। "मुझे तो ऐसा लग रहा है, जैसे मैं अफ्रीका की नील नदी में कपड़े धो रही हूँ, हमारे स्वीडन के घर में नहीं!"

ईडा ने बस इतना कहा ही था कि मार्दी के दिमाग में एक नया विचार कौंध गया। मार्दी के दिमाग में नए फितूर आने में देर ही क्या लगती थी?

"चलो लिसबेत, हम मूसा खेलते हैं।" उसने कहा।

लिसबेत खुश होकर कूदने लगी।

"क्या मैं मूसा बन सकती हूँ?" उसने पूछा।

ईडा फिस्स करती हँस पड़ी और बोली, "हाँ, तुम मूसा बनकर अच्छी लगोगी!"

ईडा को अब जाकर कपड़े सुखाने के लिए डालने थे। वह घर के अंदर चली गई। बस मार्दी और लिसबेत रह गईं। सामने सोते के रूप में नील नदी बह रही थी।

हर रोज़ रात को कमरे की बत्ती बुझाने के बाद, मार्दी लिसबेत को कहानियाँ सुनाती थी। जब वह भूत, राक्षस और लड़ाइयों के कारनामे सुनाती, तब डरकर लिसबेत उसके बिस्तर में आकर, उससे लिपटकर सो जाया करती थी। लेकिन कभी-कभी मार्दी उसे बाइबिल से कहानियाँ सुनाया करती थी जो उसने बड़ों से सुन रखी थीं। इसलिए लिसबेत जानती थी कि मूसा कौन था। वह जानती थी कि मूसा को एक टोकरी में नदी में बहाया गया था। और इजिप्ट देश की राजकुमारी ने उस नदी में बहती सुंदर-सी टोकरी को देखकर मूसा को उसमें से



उठा लिया था। एक कपड़े धोने का टब यों ही सोते के किनारे पड़ा था, उसमें बैठकर लिसबेत बाँस के वन तक जा सकती थी। बाँस का वन काफी घना था और उसकी जड़ें चारों तरफ फैली हुई थीं। इसलिए मूसा के टोकरी में बैठकर बह निकलने के लिए वह बहुत सही जगह थी। मार्दी जो इजिप्ट की राजकुमारी बनी थी, बाँस के वन के किनारे आकर उसे ले जाने वाली थी। लिसबेत बड़ी खुशी से टब में जा बैठी।

"अभी नहीं, पानी में डालने के बाद बैठना!" मार्दी ने हुक्म दिया। लिसबेत टब से बाहर आ गई।

मार्दी और लिसबेत बड़ी मुश्किल से टब खींच-खींचकर ऐसी जगह लाईं जहाँ से वह सीधा बाँस के वन पहुँच सके। दोनों के चेहरे लाल



हो गए थे। लिसबेत फिर से टब में जा बैठी। अभी वह ठीक से बैठी ही थी कि ज़रा परेशान-सी लगने लगी।

"मार्दी, पता है क्या?" उसने कहा, "नीचे से पानी मेरी चड्डी में घुस रहा है।"

"कोई बात नहीं, रुक जाएगा," मार्दी ने कहा। "जैसे ही मैं तुम्हें बचा लूँगी, तुम्हारे कपड़े सूखने डाल देंगे।"

"जल्दी से बचा लेना!" लिसबेत ने कहा। मार्दी ने उसे भरोसा दिलाया कि यह जल्दी से जल्दी होगा। मार्दी ने अपने सूती, घर के कपड़ों को देखा और सोचा मुझे तो इजिप्ट की राजकुमारी बनना है, कपड़े ढंग के पहनने चाहिए।

"एक मिनट रुक जा लिसबेत," मार्दी ने कहा। "मैं अभी गई और अभी आई। मैं ज़रा मम्मी से कुछ कह आऊँ।"

लेकिन घर जाकर देखा तो मम्मी नहीं थीं। वे बाज़ार गई थीं और अल्मा रसोई घर में खाना बना रही थी। राजकुमारी लायक कपड़ों का कुछ तो इंतज़ाम करना ही था। उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई। एक कोने में मम्मी का पुराना बूटेदार रेशमी दुपट्टा पड़ा था। मार्दी ने उसे शाही पोशाक की तरह लपेट लिया। शायद ऐसा ही कुछ पहना होगा इजिप्ट की राजकुमारी ने जब वह नदी के किनारे गई थी – सालों पहले। उन दिनों वे लोग सिर पर जालीदार रुमाल भी बाँधते थे, आधा चेहरा ढकने वाला। वह उसे एक अलमारी में मिल गया। दरअसल, वह सफेद लेसदार पर्दा था। मार्दी ने वह सिर पर बाँधा और अपने को शीशे में देखा; खुद को इतना सुंदर देखकर वह चौंक गई। लगा, इजिप्ट के राजा की बेटी ज़रूर ऐसी ही लगती होगी।

टब में भरते पानी से भीग जाने के बावजूद, लिसबेत को काफी मज़ा आ रहा था। हवा के झोंकों के साथ टब आगे-पीछे हो रहा था। कहीं तीतर उड़ते दिखाई देते थे, तो कहीं पानी में छोटी-छोटी मछलियाँ दिखाई पड़तीं। दोनों हाथों से टब को कसकर पकड़े लिसबेत उन्हें गौर से देख रही थी।

तभी मम्मी के रेशमी दुपट्टे में लिपटी मार्दी पानी में छप-छप करती उसके पास आ गई! उसने अपनी 'रेशमी पोशाक' बड़े ध्यान से ऊपर उठा रखी थी कि कहीं पानी में भीग न जाए। लिसबेत को भी लगा कि मार्दी बिल्कुल इजिप्ट के राजा की बेटी जैसी लग रही थी। वह बहुत खुश होकर खिलखिलाई। अब खेल सचमुच शुरू हो रहा था।

"ओ हो! तो तुम हो मूसा, मेरे प्यारे बच्चे!" मार्दी ने कहा।

"जी," लिसबेत बोली, "क्या आप मुझे रख लेंगी?"

"हाँ, हाँ, ज़रूर!" मार्दी ने कहा, "इसके लिए, पहले तो मुझे तुम्हें इस टब से निकालना पड़ेगा। तुम्हें यहाँ रखा किसने?"

"मैं अपने आप चढ़ गई थी," कहते-कहते लिसबेत रुक गई। मार्दी ने उसे नज़रों से ही डाँटकर कहा, "यह कहो कि मेरी माँ ने मेरी जान बचाने के लिए मुझे नदी में बहा दिया था।"

लिसबेत ने आज्ञाकारी बच्ची की तरह, जैसा मार्दी ने बताया था, कह दिया।

"अच्छा हुआ मूसा कि तुम मेरे जैसी शानदार राजकुमारी के पास आए।"

"जी हाँ," लिसबेत ने हामी भर दी।

"मैं तुम्हें भी शानदार बना दूँगी, नए कपड़े देकर," मार्दी ने कहा।

"और सूखी चड्डी भी!" लिसबेत ने याद दिलाया और कहा, "मार्दी, मुझे लगता है इस टब के नीचे एक छेद है!"

"चुप कर!" मार्दी बोली, "नहीं तो तेरी आवाज़ सुनकर मगरमच्छ आ जाएँगे। पता है, वे बच्चों को खा जाते हैं! मैं सोचती हूँ, तुझे फौरन बचा लेना चाहिए।"

"बिक्कुल!" लिसबेत ने कहा।

पर जल्दी ही मार्दी समझ गई कि बच्चों को नदी से बचाना कितना मुश्किल काम है। लिसबेत एक बोरे की तरह उसके गले से लटक रही थी और माँ का दुपट्टा पानी में खिंचता चला जा रहा था।

"यहाँ तो बहुत मगरमच्छ हैं, मैं तुम्हें ज़रा आगे पड़ोसियों के हिस्से से उठा लेती हूँ। वह ज़्यादा आसान होगा," लंगड़ाती मार्दी ने किनारे लौटते हुए कहा।

"वह देखो, एब," लिसबेत ने पड़ोस के घर की तरफ देखकर कहा।

मार्दी डर गई। उसे पता था कि कोई बड़ा देखेगा तो उसे बहुत डाँट पड़ेगी।

"अच्छा? तो फिर लिसबेत, तू फौरन अपने आप बाहर निकल और इधर आ जा!"

लेकिन लिसबेत इसके लिए तैयार नहीं थी।

"अगर मैं नन्हा बच्चा मूसा हूँ तो मैं अपने आप कैसे आ सकती हूँ?"

और उसने अपनी बाँहें मार्दी के गले में डालकर कस दीं।

"मुझे डर लगता है। मगरमश मुझे पकड़ लेगा!" उसने कहा।

"लेकिन यहाँ तो मगरमच्छ नहीं है! और अब खेल खत्म हो चुका है। चल उतर नीचे!" मार्दी ने कहा।

लिसबेत फिर भी न मानी, और मार्दी को गुस्सा आ गया। मार्दी अपने आप को लिसबेत की पकड़ से छुड़ा सकती थी लेकिन मम्मी का दुपट्टा बीच में आ रहा था। वह गीला न हो, इसलिए उसे दोनों हाथों से सँभालना पड़ रहा था। वह गुस्से से लिसबेत को झटकने की सिर्फ कोशिश कर सकती थी। कुछ ही दूर खड़ा एब सारा तमाशा देख रहा था।

"ध्यान से! वरना उसे गड्ढे में गिरा दोगी," उसने मार्दी से कहा। मार्दी को पता था कि पड़ोसियों के अहाते के पास ही एक बहुत बड़ा गड्ढा है, लेकिन उस वक्त उसे लिसबेत को झटक देने के अलावा कुछ सूझ नहीं रहा था। इसलिए वह तेज़ी से मुड़ी, बगैर देखे कि वह जा कहाँ रही थी।

"मैं नहीं आ सकती। मुझे मगरमश से डर लगता है," लिसबेत कह ही रही थी कि धड़ाम की आवाज़ आई। मार्दी और लिसबेत पानी में गिरकर गड्ढे के करीब पहुँच गई थीं। अगर एब वहाँ खड़ा न होता तो इन दोनों का बचना संभव नहीं था।



उसने चुपचाप, नाव को किनारे लगाने का हुक वाला लंबा डंडा उनकी तरफ फेंका और उसे तुरंत अपनी ओर खींच लिया। दो छोटी लड़कियाँ उसे पकड़कर किनारे की तरफ बढ़ रही थीं जो बहुत दूर नहीं था। अब लिसबेत जंगली भैंसे की तरह चिल्ला रही थी।

"चुप कर," मार्दी ने कहा। "शांत रह लिसबेत। बड़ों को पता चला तो हम फिर कभी सोते के किनारे आ नहीं पाएँगे।"

"तो तूने गड्ढे में क्यों गिराया मुझे?" लिसबेत ने चिल्लाते हुए कहा। अभी रोना बंद करने का उसका कोई इरादा नहीं था। अभी तो उसने रोने की शुरुआत की थी और वह गुस्से से मार्दी को घूर रही थी।

"मैं मम्मी को सब बता दूँगी!"

"ऐसा मत करना!" एब बोला।

"जो चुगली करता है, उसकी ज़बान कटती है।" मार्दी ने कहा। फिर उसे खयाल आया कि यह जो गीली, लटकती ड्रेस उसने पहन रखी है, वह तो मम्मी का दुपट्टा है। लिसबेत न भी बताए, इससे सब कहानी पता चल जाएगी।

"आओ, मैं तुम दोनों को एक-एक मीठा-बन देता हूँ," एब ने कहा।

कितनी सराहने लायक बात थी कि सिर्फ पंद्रह साल का होने के बावजूद, एब नाव के डंडे से लोगों की जान बचा सकता था। इतना ही नहीं, मीठे-बन बनाकर वह बाज़ार में बेच सकता था। ये काम तो उसके घर के बड़ों को करने चाहिए थे। लेकिन पता नहीं क्यों उसके पापा नहीं करते थे। मार्दी को एब पर तरस आता था। एब को बड़े होकर, समुद्री जहाज़ व्यापारी बनकर समुद्री तूफानों का सामना करना था। उसे खाना बनाने का शौक न होते हुए भी बनाना पड़ता था।

लेकिन गड्ढे के पानी में डुबकी लगाने के बाद, ताज़े, मीठे-बन और भी अच्छे लगते हैं। अब तक लिसबेत भी चुप हो गई थी। वह एक ओर बन खा रही थी, दूसरी ओर अपने गीले कपड़ों को देखकर दुखी हो रही थी।

"मार्दी, तूने कहा था, जैसे ही तू मुझे बचा लेगी मैं सूख जाऊँगी। पर वह तो नहीं हो रहा!"

थोड़ी देर बाद जब मम्मी घर लौटीं तो उन्हें उनकी बेटियाँ साफ, सूखे कपड़ों में, रसोई में अल्मा से बतियाती मिलीं। उन्होंने सासो को एक लकड़ी के बक्से में डाला था और वह सर्कस का शेर होने का नाटक खेल रहा था। मार्दी उससे तरह-तरह के खेल करवाकर लिसबेत और अल्मा का मन बहला रही थी। इस सर्कस का टिकट था दो क्रोनर – असली क्रोनर नहीं, बटन जो सिक्कों की जगह इस्तेमाल होते थे।

"यह शेर भी तो नकली है!" लिसबेत का कहना था। "इसलिए फिर क्रोनर की जगह बटन ही ठीक हैं।"

बाहर ईडा के धुले कपड़ों के साथ, सेब के पेड़ों के बीच टँगी कपड़ों की रस्सी पर, दो छोटी फ्रॉकें और एक दुपट्टा भी सूख रहा था।

मम्मी ने पहले मार्दी को और फिर लिसबेत को प्यार से चूमा। फिर उन्होंने अपने थैले से सब्ज़ियाँ निकालीं और कहा, "मुझे लगता है, खाने में आज हमें सब्ज़ियों का सूप और चावल बनाने चाहिए।" फिर दोनों

बेटियों की तरफ मुड़कर उन्होंने पूछा, "सारा दिन तुम दोनों क्या करतीं रहीं?"

अब रसोई घर में शांति थी – किसी ने कुछ नहीं कहा। लिसबेत ने डरकर मार्दी को देखा और मार्दी नज़रें झुकाए, अपने पैर के अँगूठे को देखती रही। नज़र गड़ाकर, जैसे उसे पहले कभी देखा ही न हो!

"क्या कर रही थीं तुम दोनों, बताओ!" मम्मी ने फिर से पूछा।

"हमने अपने कपड़े धोए," मार्दी ने जैसे-तैसे कहा, "हमने आपका दुपट्टा भी धोया। ठीक किया न?"

"मार्गरेट!" मम्मी ने कहा।

बाहर कपड़े हवा में झूल रहे थे और पड़ोस से एब के गाने की आवाज़ आ रही थी।



2
रोहन

मार्दी का स्कूल खुल गया था। उसे स्कूल बहुत अच्छा लगता था। अब उसके पास उसकी अपनी एबीसी की किताब हो गई थी। हरे कवरवाली, जिस पर उसका नाम लिखा था मार्गरेट – कक्षा पहली। मार्गरेट को अब मार्दी नहीं कह सकते थे। स्कूल में तो सबको सही नामों से बुलाते हैं! अब उसकी अपनी स्लेट थी जिस पर वह जो चाहे लिख सकती थी। साथ में स्पंज था पानी से उसे साफ करने के लिए, और पेंसिलें। पेंसिलें रखने के लिए एक बॉक्स था और बॉक्स को बस्ते में रखना होता था। सबसे मज़े की बात तो यह थी कि पुस्तक में कई रंग के चित्र बने हुए थे – रंगबिरंगे! एक मुर्गे वाला खिलौना भी था।

स्कूल के पहले ही दिन मार्दी इतनी खुश होकर घर लौटी कि कहने लगी, "क्रिसमस की छुट्टी क्यों होती है? छुट्टी कभी होनी नहीं चाहिए।"

अभी तो क्रिसमस के आने में कई महीने पड़े थे, फिर भी।

मार्दी ने अपनी एबीसी की किताब, स्लेट, और पेंसिल बॉक्स का नया खज़ाना लिसबेत, मम्मी और पापा, अल्मा, ईडा और पड़ोस के एब को भी दिखाया। उसने लिसबेत को किताब के पन्ने उलटने दिए और स्लेट पर लिखने तो दिया, लेकिन कई सख्त हिदायतों के साथ। हर रोज़ सुबह, जब मार्दी तैयार होकर स्कूल के लिए निकलती तो घर पर रहने वाली लिसबेत को लगता कि इस तरह पीठ पर बस्ता रखकर तो मार्दी



को नहीं, उसे जाना चाहिए। मार्दी के घर आने तक का समय लिसबेत को बहुत लंबा लगता था। और वापस आकर भी मार्दी अपना होमवर्क करने बैठ जाती और ज़ोर-ज़ोर से एबीसी, एबीसी पढ़ती रहती जो सारे घर को सुनाई देता था।

लिसबेत को पता नहीं चल रहा था कि बार-बार एबीसी पढ़ने की क्या ज़रूरत है लेकिन वह तो स्कूल नहीं जाती थी।

हर रोज़, खाना खाते हुए पापा उससे पूछते, "अच्छा तो मार्दी, आज क्या हुआ स्कूल में?"

"बहुत अच्छा रहा!" मार्दी कहती। "अपनी क्लास में मैं सबसे अच्छी लड़की हूँ।"

"यह कौन कहता है, तुम या तुम्हारी टीचर?" मम्मी ने पूछा।

"हम दोनों," मार्दी ने बताया।

मम्मी और पापा ने एक-दूसरे की तरफ खुशी और राहत के मिले-जुले भाव से मुस्कराकर देखा। चलो! इसका मतलब तो यह हुआ कि उन्हें फिक्र करने की अब कोई ज़रूरत नहीं थी। मार्दी जैसी उधम मचाने वाली लड़कियाँ भी स्कूल जाकर सुधर सकती हैं।

कुछ और दिन बीते और मार्दी का होमवर्क के लिए उत्साह कुछ

ठंडा पड़ता नज़र आया। मम्मी को बार-बार उसे गणित के सवाल करने की याद दिलानी पड़ती थी और मार्दी के कमरे से ज़ोर-ज़ोर से एबीसी की रट नहीं सुनाई देती थी। बच्चों के कमरे से अब वही पहले जैसी आवाज़ें आती रहती थीं — मार्दी और लिसबेत के फर्नीचर पर चढ़ने की, कुर्सियों के उलटने की। एक दिन अचानक मार्दी के गाने की आवाज़ सुनाई दी -- *"मेरी जान, मेरी जान, संडे के संडे"*

मम्मी को अच्छा नहीं लगा।

"मार्गरेट, तुम ये क्या अनाप शनाप गा रही हो? कहाँ से सीखा यह तुमने?" उन्होंने पूछा।

अब मम्मी को क्या पता! वे तो यह भी नहीं जानती थीं कि पड़ोसियों के घर में एक बड़ी-सी मशीन है, जिसे पता नहीं क्या कुछ कहते हैं। उस पर वे यह गाना बार-बार चलाते हैं और कभी-कभी उस पर नाचते भी हैं। कभी-कभी बीच में खर्रर, खर्रर, की आवाज़ भी आती है लेकिन गाना भी सुनाई देता है।

सच तो यह था कि मम्मी को अपने पड़ोसी ज़्यादा पसंद नहीं थे। वे नहीं चाहती थीं कि मार्दी उनके यहाँ आए-जाए। पता नहीं क्यों!

"मार्दी, ये गंदा गाना किसने सिखाया तुझे?" मम्मी ने फिर पूछा।

मार्दी का चेहरा लाल हो गया था।

"रोहन ने!" मार्दी ने कह दिया। वह नहीं चाहती थी कि मम्मी को पता चले कि यह तो उसने पड़ोसियों से सीखा है।

"रोहन कौन है?" मम्मी ने पूछा।

"मेरी क्लास में पढ़ता है," मार्दी ने जल्दी से बताया।

"अच्छा!" मम्मी ने कहा। "उससे ज़्यादा दोस्ती मत करना।"

कुछ दिन और बीते और मार्दी को कहीं से एक क्रोनर मिला। एक क्रोनर में स्कूल के बाहर एक लॉलीपॉप मिलती थी। मार्दी ने लिसबेत से कहा था, वह उसके लिए ले आएगी। लिसबेत सारा दिन मार्दी का इंतज़ार करती रही। मार्दी के लौटते ही वह दौड़ी-दौड़ी बाहर आ गई।



उसे देखते ही मार्दी बोली, "ओ हो, लिसबेत! रोहन ने तुम्हारी लॉलीपॉप उड़ा ली।"

"रोहन की तो पिटाई होनी चहिए," लिसबेत ने बहुत नाराज़ होकर कहा।

वाकई रोहन की शरारतें तो हर दिन बढ़ती नज़र आ रही थीं। हर दूसरे-तीसरे दिन कुछ न कुछ होता ही रहता था।

एक दिन मार्दी अपना एक ही जूता पहने घर आई। दूसरा खो गया था। वे जूते बहुत ही सुंदर थे, काले चमकीले, उन पर लाल रंग की कढ़ाई थी।

"तेरा दूसरा जूता कहाँ है?" मम्मी ने पूछा।

"रोहन ने नहर के पानी में फेंक दिया," मार्दी ने कहा।

"रोहन की तो पिटाई होनी चाहिए!" लिसबेत बोली।

मम्मी रोहन से बहुत नाराज़ हुईं।

"बहुत बुरी बात हैं, रोहन जैसा शरारती, उधमखोर लड़का तेरी क्लास में होना!" उन्होंने कहा। "लगता है, किसी दिन आकर मुझे तेरी टीचर से उसकी शिकायत करनी पड़ेगी।"

लेकिन मम्मी को काम इतने होते थे कि मार्दी के स्कूल जाकर रोहन की शिकायत वे कर नहीं पाईं। और उधर रोहन हर दिन एक नई शरारत करता रहा।

एक दिन मार्दी की ड्रेस पर एक स्याही का धब्बा लगा था – यह काम भी रोहन का ही था! एक दिन मार्दी की स्लेट के दो टुकड़े हो गए – रोहन ने वह दीवार पर दे मारी थी। वह देखना चाहता था कि स्लेट मज़बूत है या नहीं। वह मज़बूत नहीं थी!

मार्दी की किताब में स्वीडन की रानी का एक चित्र बना हुआ था। उन्हें मरे हुए कई साल हो गए थे, पर उनकी तस्वीर किताब में अब भी छपी हुई थी। एक दिन देखा कि रानी की दाढ़ी और मूँछें निकल आई हैं।

"मार्गरेट, क्यों अपनी किताबें इस तरह गंदी कर रही हो तुम?" मम्मी ने डाँटा।

"मैंने नहीं कीं, रोहन ने की थीं," मार्दी ने कहा।

"रोहन की पिटाई तो होनी ही चाहिए," लिसबेत बोली।

हर दिन खाने के वक्त मार्दी उन सबको रोहन की उलटी-सीधी शरारतों की कहानियाँ सुनाती थी। बहुत तंग करता था वह, हर किसी को! पढ़ते वक्त, वह क्लास में इतना शोर मचाता था की लगभग हर रोज़ उसे कोने में खड़ा होने की सज़ा मिलती थी।

"और आज पता है क्या, वह मेरी रबड़ ही खा गया!" मार्दी ने कहा।

"तुम्हारी रबड़ खा गया?" मम्मी ने आँखें फाड़कर पूछा।

"उस लड़के में ज़रूर कुछ गड़बड़ है!" पापा बोले।

"रोहन की तो पिटाई होनी चाहिए," लिसबेत बोली।

एक दिन मार्दी घर आई तो उसके बाल बदले हुए से लग रहे थे।



यह रोहन की नई करामात थी। उसने स्कूल से लौटते वक्त मार्दी से कागज़ काटने की कैंची माँगी और आगे के बाल काट डाले। कैसे टेढ़े-मेढ़े लग रहे थे, मार्दी के बाल!

"बहुत हो चुका! मैं कल ही आकर तुम्हारी टीचर से बात करती हूँ!" मम्मी ने दाँत पीसते हुए कहा।

"रोहन की तो..." लिसबेत कहने लगी।

"बस, अब चुप भी करो!" मार्दी ने झल्लाकर कहा। "रोहन की पिटाई नहीं हो सकती, वह आज से स्कूल छोड़ गया है।"

"अच्छा?" माँ ने आश्चर्य से कहा।

"हाँ, क्योंकि अब वह स्कूल नहीं जाना चाहता," मार्दी ने बताया।

"स्कूल नहीं जाना चाहता!" मम्मी ने कहा। "यह कैसी बेवकूफी है। शायद उसके मम्मी-पापा कहीं और जा रहे होंगे, और उसे दूसरे स्कूल में भेजने वाले होंगे।"

"अब वह रबड़ खाने किसी और स्कूल जा रहा है!" लिसबेत ने हँसकर कहा।

इसके दो-तीन दिन बाद मौसी का जन्मदिन था। मौसी एक छोटे-से

घर में रहती थीं, स्कूल के पास ही। मम्मी दोनों बच्चियों को लेकर उनके घर जा रही थीं।

मौसी के घर के बाहर ही उन्हें मार्दी की टीचर मिलीं। मम्मी उन्हें देखते ही बात करने रुक गईं। मार्दी ज़ोर-ज़ोर से उनकी कमीज़ खींच रही थी कि बात न करें। मार्दी को टीचर से बिल्कुल बात नहीं करनी थी, पर मम्मी को तो करनी ही थी।

"मार्गरेट, ठीक-ठाक कर रही है स्कूल में?" मम्मी ने पूछा। दरअसल पूछने की ज़रूरत ही नहीं थी, मार्दी ने उन्हें खुद ही बताया था कि सब बढ़िया चल रहा है। लेकिन मम्मी टीचर के मुँह से सुनना चाहती थीं कि मार्दी क्लास में सबसे अच्छी लड़की है।

कितनी अजीब बात थी कि ऐसा कुछ भी उसकी टीचर ने नहीं कहा।

"हाँ, धीरे-धीरे मार्गरेट को स्कूल की आदत हो जाएगी और फिर सब ठीक हो जाएगा।" टीचर ने तो बस इतना ही कहा, "कई बच्चों को स्कूल की आदत डालने में परेशानी होती है।"

अब मम्मी सोचने लगी। क्या यह टीचर सचमुच सोचती है कि मार्दी उस तरह के बच्चों में से एक है? तो फिर उस रोहन जैसों को क्या कहना चाहिए?

"जी हाँ, बिल्कुल! अब उस रोहन की ही बात लें।" मम्मी ने कहा, "अच्छा हुआ जो वह स्कूल छोड़कर चला गया। ऐसे शरारती बच्चे का क्लास में होना बहुत मुश्किल होता है!"

"रोहन?" मार्दी की टीचर ने आश्चर्य से कहा। "यह आप किसकी बात कर रही हैं? हमारे स्कूल में तो रोहन नाम का कोई लड़का न था और न है!"

"अच्छा! पर मैं तो..." मम्मी कुछ कहने जा रही थीं। पर उन्होंने अचानक बात रोक दी, और सख्ती से मार्दी की तरफ देखा।

"रोहन की तो पिटाई होनी चाहिए," लिसबेत बोली।

मार्दी का चेहरा लाल हो चुका था और वह लगातार नीचे अपने

जूतों को देख रही थी। लिसबेत ने कहा था पिटाई! आज ज़रूर पिटाई होने वाली है। पर किसकी?



3
मार्दी और लिसबेत की छत पर पिकनिक

मार्दी अब रोहन के बारे में कुछ कहती नहीं थी पर लिसबेत को उसकी बातें याद आती रहती थीं। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि रोहन है ही नहीं। उसे खाने के मेज़ पर उसकी ज़रूर याद आती और वह कहती, ''पता नहीं, रोहन अपने नए स्कूल में क्या-क्या करता होगा!''

मार्दी चिढ़कर उसकी ओर देखती थी। मम्मी ऐसा जतातीं जैसे उन्होंने सुना ही न हो, और पापा हँस देते थे और मार्दी को चिढ़ाते थे।

''और मेरी करामाती बिटिया, वैसे तेरे दिमाग का तो कोई जवाब ही नहीं है! अब यह बता 'रोहन' के बगैर तेरा स्कूल कैसे चल रहा है?''

मार्दी बताने लगती, ''टीचर के पास एक बहुत सुंदर सोने की घड़ी है, लंबी चेन वाली और मीता के बालों में जूएँ हैं और लड़के बहुत शैतान हैं। जब देखो लड़ते रहते हैं। स्कूल के बरामदे में सब के साथ बैठकर खाने में घर से लाया खाना बहुत अच्छा लगता है।''

''और बच्चे क्या ले आते हैं, डिब्बे में?'' लिसबेत पूछती। उसे स्कूल के बारे में सब कुछ जानना ज़रूरी लगता था।

''कोई ब्रेड और जेम, कोई नूडल, कोई मछली, कोई केक,'' मार्दी बताती। लिसबेत लंबी साँस लेती।

मज़े हैं इन लोगों के – पेंसिल बॉक्स, किताब और स्लेट लेकर, स्कूल के बस्ते पीठ पर डालकर, इन सबको स्कूल जाने को मिलता है, और ऊपर से तरह-तरह का खाना। पता नहीं मेरी बारी कब आएगी!

पापा मार्दी से हर रोज़ स्कूल के बारे में ज़रूर पूछते।

मार्दी को लगता, अब रोहन तो है नहीं, तो कुछ और मज़ेदार, बताने लायक ढूँढना होगा।

"मीता के सिर में जूएँ बहुत बढ़ गई हैं। कभी-कभी नीचे बेंच पर भी टपक पड़ती हैं," मार्दी ने कहा। "शायद मेरे सिर में भी हो जाएँ!"

"गंदी बातें न किया कर!" मम्मी ने डाँटा।

लिसबेत खाते-खाते रुक गई और अचानक चौड़ी होकर बोली, "मेरे स्कूल में... मेरे स्कूल में, सब बच्चों के सिर में जूएँ हैं।"

"श् श्!" मार्दी ने कहा, "तुम तो स्कूल जाती भी नहीं।"

"हाँ, मैं जाती हूँ।" लिसबेत ने कहा। "मार्दी अकेली क्यों मज़ेदार कहानियाँ सुनाए। मैं भी कुछ सुनाऊँगी।"

पापा हँसने लगे।

"अच्छा, तो अब तुम भी स्कूल जाने लगी? क्या यह वही स्कूल है जहाँ रोहन जाता है?"

लिसबेत ने ऊपर देखा। "क्या बढ़िया विचार है!" अब तक उसे सिर्फ मार्दी के पुराने कपड़े और खिलौने मिलते थे, अब उसका पुराना दोस्त रोहन भी उसे मिल गया था! लिसबेत खुश होकर मुस्काई और सिर हिलाती बोली, "हाँ, रोहन मेरे स्कूल में आ गया है, और उसके सिर में भी जूएँ हो गई हैं।"

"तुम क्या बच्चों जैसी बातें करती हो, लिसबेत!" मार्दी ने कहा।

कुछ और हफ्ते गुज़र गए। सितंबर के एक शनिवार, मार्दी दौड़ी-दौड़ी स्कूल से आई, बड़ी खुश नज़र आ रही थी वह। उसने चमकती आँखों से पूछा, "मम्मी कहाँ है?" वैसे भी यह उसका हर रोज़ घर आते ही पहला सवाल हुआ करता था। दरवाज़े तक पहुँचते-पहुँचते मार्दी ने बातों की झड़ी लगा दी थी।

"मम्मी, हम सैर के लिए जा रहे हैं। बुधवार... पूरा स्कूल जाएगा। पहले हम रेलगाड़ी से जाएँगे, फिर काफी चलकर कहीं जाएँगे, और फिर हम पहाड़ पर चढ़ेंगे। वहाँ मज़ेदार चीज़ें खाएँगे, ऊपर से सारा नज़ारा देखेंगे। मम्मी, मैं बहुत बहुत खुश हूँ!"

मार्दी इतनी खुश थी कि उससे एक जगह खड़ा नहीं हुआ जा रहा था। वह ऊपर-नीचे कूद रही थी। माँ को बाँहों से घेर रही थी और खुशी उसके चेहरे पर समा नहीं रही थी! लिसबेत बेचारी बनकर उसके पास चुपचाप खड़ी थी। कुछ देर बाद गंभीर होकर उसने कहा, "मेरा स्कूल भी सैर पर जा रहा है। हम भी रेलगाड़ी में बैठकर बहुत ऊँचे पहाड़ पर जाने वाले हैं।"

"बिल्कुल नहीं," मार्दी बोली।

"गंदी बात!" लिसबेत चिल्लाई। फिर उसने अपने आपको मम्मी की गोद में डाल लिया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

"मुझे भी सैर पर जाना है और पहाड़ पर बैठकर केक खाना है!"



मार्दी को लिसबेत पर तरस आ गया।

"तुम और मैं सैर पर जाएँगे!" मार्दी ने कहा।

बात पक्की होने तक लिसबेत ने रोना जारी रखा। फिर अपनी रोनी आँखें ऊपर उठाकर पूछा, "और पहाड़ पर भी बैठेंगे?"

"शायद!" मार्दी ने कहा, "अगर मुझे कोई नज़र आया तो!"

"मार्दी, तुम बहुत अच्छी हो!" मम्मी ने कहा। "तुम दोनों ज़रूर कहीं सैर के लिए जा सकती हो, बड़ा मज़ा आएगा। है ना लिसबेत?"

मम्मी को लगा, क्यों न आज ही इन्हें सैर पर भेजा जाए? आज वैसे भी मम्मी-पापा को उनके दोस्त के यहाँ खाने पर बुलाया था।

"तुम लोगों के लिए एक टोकरी में खाने का सामान रख देते हैं। उसे लेकर तुम किसी अच्छी जगह चली जाना," मम्मी ने लिसबेत का गाल थपथपाते हुए कहा।

"किसी अच्छे से पहाड़ पर!" लिसबेत ने उनकी गलती सुधारी।

मम्मी ने अंदर से, एक प्यारी-सी लाल बेंत की टोकरी निकाली। उन्होंने उसमें कई मज़ेदार चीज़ें रख दीं, सेब और अंगूर, केक, सेंडविच, उबले अंडे और दूध!

"इतना अच्छा खाना तो मम्मी-पापा को भी नहीं मिलने वाला, उनके दोस्त के घर!" मार्दी ने कहा।

अब मम्मी को जल्दी से तैयार होकर निकलना था। तैयार होते-होते वे मार्दी को बताती जा रही थीं, "बहुत दूर मत जाना, और अल्मा को ज़रूर बताना कि तुम लोग कहाँ जा रहे हो।"

फिर उन्होंने अल्मा से कहा, "अल्मा, मैं निकल रही हूँ, तुम बच्चों का ध्यान रखोगी न?"

"जी हाँ, फिक्र न कीजिए। ज़रूर रखूँगी!" अल्मा ने कहा।

और फिर मम्मी चली गईं।

मार्दी और लिसबेत भी टोकरी उठाकर खड़ी हो गईं। उन्हें भी तो निकलना था, अपनी सैर पर।

"पहाड़ कहाँ है?" लिसबेत ने पूछा।

मार्दी बरामदे की सीढ़ी पर खड़ी सोचने लगी। आसपास पहाड़ तो

कोई नहीं था और मम्मी ने कहा था, बहुत दूर मत जाना। लेकिन मार्दी को बहुत ज़्यादा सोचना नहीं पड़ा। उसके दिमाग में विचार आते देर नहीं लगती थी। उसे मम्मी की बताई हुई एक कहानी याद आई कि कुछ बच्चों को जंगल की सैर करने जाना होता है और उनकी माँ ढेर सारे बन उन्हें साथ दे देती हैं। लेकिन जंगल जाने की बजाय, वे खेत में एक कमरे की छत पर चढ़कर बैठ जाते हैं। और फिर उनके हाथ से टोकरी लुढ़ककर खुल जाती है और बन टपटप करते नीचे गिरते हैं। नीचे खड़े सूअर और मुर्गियाँ सारे बन खा जाते हैं। क्या मज़ेदार कहानी थी!

"लिसबेत, बात सुनो!" मार्दी ने कहा। "हम पहाड़ पर तो अभी जा नहीं सकते, वह बहुत दूर है। लेकिन हम घर की छत पर चढ़कर अपना सारा गाँव देख सकते हैं।"

लिसबेत को विचार अच्छा लगा। "हाँ बिल्कुल! कहानी वाले उन बच्चों की तरह?" उसने कहा, "पर हमारे पास तो बन हैं नहीं, नीचे गिराने के लिए!"

"और न सूअर हैं, न मुर्गियाँ," मार्दी ने कहा, "इसलिए हमारी टोकरी नीचे फिसल भी जाए तो कोई बात नहीं।"

"लेकिन क्या मम्मी मान जाएँगी?" लिसबेत ने पूछा।

मार्दी ने सोचा और कहा, "मम्मी ने कहा था, हमें किसी अच्छी जगह जाना चाहिए जो बहुत दूर न हो। हमारे घर की छत बहुत अच्छी रहेगी और हम आसपास का सब कुछ देख पाएँगे। बिल्कुल वैसा ही जैसे हम बुधवार को स्कूल वाली सैर में करने वाले हैं।"

तभी अल्मा दौड़ी-दौड़ी बाहर से आई और पूछने लगी, "कहाँ जा रहे हो तुम लोग? मुझे बताकर जाना!"

"बहुत दूर नहीं," मार्दी ने कहा। "हम घर पर ही रहेंगे!"

"घर पर या घर के ऊपर?"

लिसबेत हँसने लगी। "बहुत दूर नहीं – हम तो..."

"श्‌ श्‌! चुप!" मार्दी ने कहा। "मैंने कहा न, हम घर पर ही रहेंगे।"

अल्मा को लगा, चलो ठीक है। वह कपड़ों को इस्तरी करने चली गई।

बाहर सीढ़ी खड़ी थी, दीवार से सटकर। मार्दी उस पर चढ़कर कई बार ऊपर जाया करती थी। सीढ़ी से ऊपर चढ़कर, सर्कस की लड़कियों की तरह, अपना संतुलन बनाकर आगे बढ़ना उसे पसंद था। छत पर चढ़कर वह पड़ोसियों के नाशपाती के पेड़ से फल तोड़कर खा सकती थी। नाशपातियाँ बहुत मीठी थीं।

लिसबेत भी नीचे वाली 3-4 सीढ़ियाँ चढ़ चुकी थी। लेकिन वह बहुत ऊपर नहीं गई थी। अब उसे एकदम ऊपर तक जाना था। इससे वह खुश थी और डर भी रही थी, लेकिन यही तो सैर का मज़ा है, उसने सोचा। मार्दी खाने की टोकरी लेकर पहले चढ़ गई। उसके बाद लिसबेत भी चढ़ने लगी, धीरे-धीरे सँभलकर! जैसे-जैसे वह ऊपर की तरफ बढ़ रही थी, वैसे-वैसे वह और भी धीरे चढ़ रही थी। चढ़ते-चढ़ते जब उसकी नाक छत की कगार से ऊपर गई तो उसने देखा कि मार्दी बास्केट से चीज़ें निकाल रही है। लिसबेत को अचानक लगने लगा, छत की बजाय पहाड़ चढ़ना ठीक होगा।

"मार्दी, पता है क्या?" उसने कहा। "मुझे नहीं चढ़ना इस छत पर!"

"अब तंग मत करो, वर्ना हमारी कोई सैर नहीं होगी!" मार्दी ने कहा और आगे बढ़कर बोली, "आओ, मैं तुम्हारी मदद करती हूँ।"

डर के मारे लिसबेत काँप रही थी। लेकिन सहारा देकर, खींच-तानकर, मार्दी उसे छत पर ले ही आई। लिसबेत मुनमुना रही थी, "तू पागल है मार्दी, तू बिल्कुल पागल है!"

लेकिन जब वह छत पर मार्दी की बगल में बैठ गई और अपने इर्द-गिर्द देखा तो उसे भी मज़ा आने लगा।

"मुझे यहाँ से एब के घर का सब कुछ दिखाई दे रहा है," लिसबेत ने कहा। मार्दी ने सिर हिलाकर जवाब दिया, "है न? तभी तो मैं कह रही थी। मैं यहाँ आकर कई बार उनके घर में झाँकती रहती हूँ।"

वे पड़ोसियों के घर को काफी देर तक देखती रहीं। एब रसोई घर में बन बना रहा था। उसकी माँ कहीं नज़र नहीं आ रही थीं। उसके पापा सोफे पर सो रहे थे।

"क्यों सो रहे हैं?" लिसबेत ने पूछा, "बीमार तो नहीं हैं?"

इतने में एब ने ऊपर देखा, और वह काम रोककर खड़ा रह गया। फिर वह खिड़की के पास आकर अजीब-से चेहरे बनाने लगा। दोनों लड़कियाँ हँस-हँसकर चीखने लगीं। मार्दी को समझ नहीं आ रहा था कि एब ऐसे भयानक चेहरे कैसे बनाता है? वैसे तो एब देखने में अच्छा है – नीली आँखें, सुनहरे बाल और हमेशा हँसता चेहरा!

लेकिन अभी वह भूत की तरह शक्ल बना रहा था। वह बहुत बदसूरत लग रहा था, और इसलिए उसे देखकर इतनी हँसी आ रही थी कि लग रहा था वे दोनों गिर ही जाएँगी।

"हल्लो!" एब ने उन दोनों को देखकर कहा, "क्या हो रहा है?"

"बड़ा मज़ा आ रहा है," मार्दी ने जवाब दिया।

छत पर बैठकर, एब के साथ इस तरह बात करना उसे अच्छा लग रहा था।

"हम सैर कर रहे हैं," लिसबेत बोली।

"वह तो मैं देख ही रहा हूँ!" एब ने कहा, "पर तुम्हारी उस टोकरी में क्या है?"

"केक, अंडे, सेंडविच, और भी बहुत कुछ!" मार्दी ने बताया।

"बढ़िया," लिसबेत ने कहा।

एब अपने घर की दीवार पर चढ़कर कुछ देर तक सोचता रहा।

"चलो, निशाने की शर्त लगाएँ? तुम कितनी भी कोशिश करो मेरे मुँह में उबला अंडा नहीं डाल सकोगी!"

मार्दी और लिसबेत खुशी से चिल्लाईं। ऐसी मज़ेदार बातें सिर्फ एब के दिमाग में आ सकती थीं।

"हा, हा! यह देखो," कहकर मार्दी ने एक उबला अंडा, उसके खुले मुँह पर निशाना साधते हुए दे मारा। वह एब के सिर पर जा लगा। एब ने ऊपर से पकड़कर उसे खा लिया।

"क्या कहा था मैंने? तुम्हारा निशाना लग ही नहीं सकता!" एब ने चिढ़ाते हुए कहा।

"कोई बात नहीं," मार्दी ने एक और उबला अंडा उठाकर उसकी तरफ फेंका। "अब देखो!"

यह भी एब के कान से टकराकर ज़मीन पर गिर गया। एब ने फौरन उसे उठाया और साफ करके मुँह में रख लिया।

अंडा खा लेने के बाद उसने मार्दी से कहा, "मैंने कहा नहीं था? तुम नहीं कर सकती!"

"अब मेरी बारी है," लिसबेत ने कहा। "मैं भी निशाना लगाऊँगी अंडे से।"

उसका फेंका अंडा पास ही गिरा। एब ने दौड़कर उसे उठाया और मुँह में ठूस लिया। "यह तुम दोनों के बस की बात नहीं है।" लड़कियों ने फिर कोशिश की। आखिर में मार्दी ने कह दिया, "अब तो अंडे खतम हो गए!"



"केक को फेंक के देखो, डिस्क की तरह!" एब ने कहा। दोनों बहनों ने उसकी भी कोशिश की। जब दो ही टुकड़े बचे तो मार्दी ने कहा, "यह तो हम खाएँगे!"

"ज़रूर! वैसे भी तुम्हें क्या लगता है, मेरे पास कोई और काम नहीं है, तुम्हारी गलत-सलत निशानेबाज़ी के अलावा?" एब ने कहा। "बाय-बाय! अब किसी और को ढूँढना निशाना बनाने के लिए।"

और वह घर के अंदर चला गया।

दोनों बहनें टोकरी से बची हुई चीज़ें निकालकर खाने लगीं। पेट भर चुका तो उन्होंने दूध की बोतलें निकाल लीं। इसी बीच लिसबेत का गिलास छलका और छत से नीचे के सँकरे नाले तक दूध की धारा बहने लगी।

"जब चिड़ियाँ आएँगी तो सोचेंगी, अरे यह क्या हो गया। दूध की नदी कैसे बहने लगी है?" मार्दी ने कहा।

"हाँ, वे तो बड़ी खुश हो जाएँगी।" मार्दी से लिसबेत ने पूछा, "अब हम क्या करें?"

"बैठे-बैठे, यहीं से नज़ारा देखना होगा, काफी देर तक! क्योंकि सैर पर जाकर यही तो किया जाता है?" मार्दी ने कहा।

"अच्छा?" लिसबेत ने पूछा।

"मतलब, मैम ने तो यह कहा था, और यही हम बुधवार को करने जा रहे हैं। लड़कों ने तो कह दिया, हमें नहीं देखना नज़ारा। हमें तो बस मौज-मस्ती करनी है।"

मार्दी और लिसबेत लड़कों जैसी थोड़े ही थीं! जितनी देर हो सके उन्होंने नज़ारा देख लिया। सिर्फ पड़ोसियों के घरों में ही नहीं, उन्होंने गर्दनें घुमा-घुमाकर, जितना भी संभव था देखा। उन्होंने घर के पास से बहता हुआ सोता देखा, उसके किनारे लगे पेड़ देखे, साफ सुथरा आकाश देखा। उन्होंने सिर पीछे करके जितनी दूर संभव था, आकाश को देखा। एक पंछी आसमान में उड़ता दिखाई दिया।

"इस पंछी के कितने मज़े हैं। पता नहीं उसे क्या-क्या दिखाई देता होगा?" मार्दी ने कहा। "काश, मैं भी उड़ पाती!"

"लोग तो उड़ नहीं सकते," लिसबेत ने कहा।

"हाँ, उड़ सकते हैं, हवाई मशीन में बैठकर। वही तो होता है विमान!" मार्दी बोली।

उसे एब ने बताया था कि विमान आकाश में कैसे उड़ता है। लेकिन उन दिनों स्वीडन में बहुत ज़्यादा विमान नहीं होते थे। विमान को अच्छी तरह से देखने की, और उसके बारे में जानने की, मार्दी को बहुत उत्सुकता थी। जबकि ईडा का कहना था कि विमान बहुत खतरनाक चीज़ है।

"मैं कहती हूँ, अगर भगवान चाहते कि हम चिड़ियों की तरह उड़ें, तो क्या वे हमें पंख नहीं देते?"

लिसबेत को भी आसमान में उड़ने का खयाल अच्छा लगा था, और पैराशूट से आसमान से ज़मीन पर आने का भी।

मार्दी ने मुँह बिचकाया।

"लिसबेत, तू बहुत बच्चों जैसी बातें करती है!"

लेकिन फिर मार्दी सोचने लगी। एब ने भी तो कहा था कि लड़ाई के दौरान लोग विमान से छाते जैसे पैराशूट से कूद पड़ते हैं। पैराशूट होता क्या है, एक बड़ा छाता ही तो है। यह ज़रूर है कि उसे लेकर आप फुग्गे की तरह इधर-उधर हवा में तैर नहीं सकते। पर आकाश से या किसी और ऊँची जगह से ज़मीन पर उतर सकते हैं। मार्दी ने सोचा, क्यों न घर की छत से कोशिश की जाए!

"मुझे लगता है, कोशिश करके देखूँ।" मार्दी ने कहा।

"क्या?" लिसबेत ने पूछा।

"छाते से," मार्दी ने बताया।

जब लिसबेत समझ गई कि मार्दी के दिमाग में क्या चल रहा है तो हँसते-हँसते उसकी आँखों में आँसू आ गए।

"तू पागल है, मार्दी! तेरा मतलब है, अब तू छाता लेकर नीचे कूदेगी?"

"नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है।" मार्दी ने कहा, "तू भी क्या बच्चों जैसी बातें करती है, हर वक्त! मैं विमान से नीचे कूदने का नाटक खेलना चाहती हूँ!"

अब सवाल यह था कि अल्मा की नज़र बचाकर पापा का बड़ा छाता छत पर कैसे लाया जाए। अल्मा को तो लड़ाई में विमान से कैसे कूदते हैं, यह मालूम न था। इसलिए वह ज़रूर अड़ंगे डालेगी।

उधर छत पर अकेले बैठने के खयाल से लिसबेत की हँसी गायब हो गई थी। मार्दी ने उसे समझाया, "अरे नहीं! मैं तो बस दो मिनट में आ जाऊँगी। तब तक तुम पड़ोसियों के घर में क्या हो रहा है, वह देखते रहना। एक जगह सँभलकर बैठी रहो तो गिरोगी नहीं।"

यह कहकर मार्दी सीढ़ी से उतरकर गायब हो गई। मार्दी ने रसोई में झाँककर देखा। अल्मा कपड़ों पर इस्तरी करते, पसीने से चूर हो गई थी। इस्तरी में डाले कोयलों की वजह से रसोई में काफी गर्मी हो रही थी। खिड़कियाँ खुली रखने पर भी राहत महसूस नहीं हो रही थी।

अल्मा ने मार्दी को देखा तो बड़े संतोष से पूछा, "लगता है, सब मज़े में चल रहा है। अब तुम दोनों बहुत समझदार हो गई हो। तुम पर नज़र रखने के लिए मुझे पीछे-पीछे दौड़ना नहीं पड़ता। कैसी हो रही है सैर?"

"बढ़िया!" मार्दी बोली।

"लिसबेत कहाँ है?" अल्मा ने पूछा।

"वह अभी बाहर ही है," मार्दी ने वहाँ से खिसककर बाहर कमरे की तरफ बढ़ते हुए कहा। वह नहीं चाहती थी कि अल्मा और भी सवाल पूछे। पापा का छाता वहीं अपनी जगह पर खड़ा था। मार्दी ने झपटकर उसे उठा लिया कि अल्मा दरवाज़े से उसे देख न ले।

"क्या सासो भी तुम लोगों के साथ गया है?" उसने पूछा।

"नहीं," कहकर मार्दी ने छाता अपने पीछे छुपाने की कोशिश की।

"तो फिर ज़रूर वह सड़क पर चला गया होगा, और हमेशा की तरह लौट भी आएगा," अल्मा ने कहा। "लेकिन यह छाता लिए तुम कहाँ जा रही हो?"

"क्या पता अगर बारिश आ गई तो?" मार्दी ने कहा।

"बारिश! आज? आसमान में बादलों का नामोनिशान नहीं है!"

मार्दी भुनभुनाने लगी। अब उसका मन उसकी ज़िंदगी की पहली

उड़ान भरने में था। वहाँ खड़े-खड़े अल्मा से 'मौसम का हाल' सुनने से उसे उकताहट हो रही थी। "बाहर जाओ तो साथ छाता होना ही चाहिए," उसने ज़िद की। "अगर मौसम बदल जाता है, तो हमारा क्या होगा?"

अल्मा हँस पड़ी।

"मौसम इतनी जल्दी तो नहीं बदलेगा कि तुम बरामदे तक भी न पहुँच पाओ।" अल्मा ने कहा, "ले जाना है छाता तो ले जाओ। लेकिन वापस ज़रूर ले आना, नहीं तो तुम्हारे पापा नाराज़ हो जाएँगे।"

"ठीक है! ठीक है!" मार्दी ने हड़बड़ी में बरामदे से भाग निकलते हुए कहा।

चारों तरफ इस वक्त शांति थी, इतनी कि किसी नए व्यक्ति को लगता कि यहाँ कोई नहीं रहता। यहाँ आज एक अद्भुत उड़ान की तैयारी हो रही थी और उसे देखने वाला लिसबेत के अलावा कोई नहीं था। अल्मा की रसोई की खिड़की दूसरी दिशा में खुलती थी। एब पड़ोस में कहीं नज़र नहीं आ रहा था। उसके पापा अब भी सोफे पर लेटे खर्राटे भर रहे थे। इसलिए जब मार्दी लड़ाई के किस्सों की तरह छाता लेकर कूदने जा रही थी तो उसे देखने वाला कोई भी आसपास नहीं था। मार्दी घर की छत की कगार पर खड़ी हो गई। उसने वह बड़ा काला छाता खोल लिया। फिर उसे उसने अपने दोनों हाथों से सिर के ऊपर पकड़ लिया, और कूदने के लिए तैयार हो गई। लिसबेत अकेली यह सब देख रही थी।

"तू पागल है," उसने कहा, "मार्दी, तू बिक्कुल पागल है।"

"इसमें डरने वाली कोई बात नहीं है," मार्दी ने कह तो दिया लेकिन वह सोच रही थी कि नीचे पहुँचते-पहुँचते काफी देर लगेगी। लेकिन अगर लोग विमान से छाता लेकर ज़मीन पर उतर जाते हैं तो वह बहुत ऊँचाई से कूदना हुआ। उसकी तुलना में घर की छत से कूदना तो आसान ही होगा।

कुछ देर तक वह सिर के ऊपर खुला छाता लिए खड़ी मुँह से मशीन की आवाज़ निकालती रही। एब ने उसे ऐसे ही तो दिखाया था।

एब ने खुद अपनी आँखों से कहाँ देखा था पैराशूट खुलते हुए, लेकिन उसे मालूम था। एब सब कुछ जानता था।

"बर्रर्रम बर्रम..." मार्दी ने मशीन की आवाज़ निकाली।

"बाबा रे..." लिसबेत ने कहा।

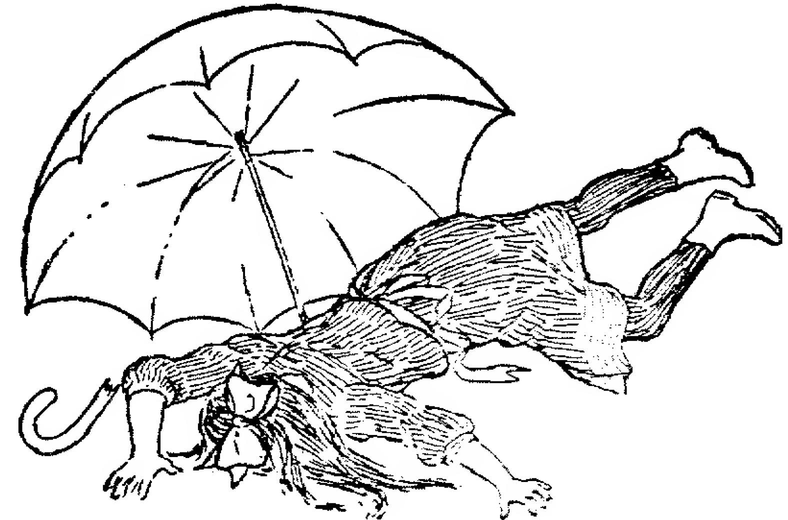
फिर मार्दी कूद पड़ी। वह सीधी हवा में गई और एकदम धड़ाम की आवाज़ आई।

"अरे, इतनी जल्दी हो भी गया!" लिसबेत चिल्लाई। वह छत की कगार तक आकर, अपने पेट के बल लेटकर, नीचे मार्दी को देखने की कोशिश में थी। लेकिन मार्दी ज़मीन पर चुपचाप पड़ी थी। कोई जवाब नहीं दे रही थी। उसकी बगल में छाता पड़ा था, वह टूट गया था।

"क्या हुआ तुझे?" लिसबेत चीखती हुई पूछने लगी। "मार्दी, तू मर तो नहीं गई?"

इसका भी कोई जवाब नहीं मिला।

"मार्दी, बता तो सही कि तू ज़िंदा है या नहीं?" लिसबेत फिक्र के मारे चिल्ला रही थी।



मार्दी से अब भी कोई जवाब नहीं मिला। लिसबेत ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी, "मम्मी! मम्मी..."

उसे लगा वह बहुत अकेली है दुनिया में। छत से उतरकर नीचे जाना भी मुश्किल लग रहा था। उसकी चीखें सुनकर एब के पापा जाग गए और उन्होंने खिड़की से झाँककर उससे पूछा, "अरे, तुम यों छत पर क्या कर रही हो? और चिल्ला क्यों रही हो?"

"मार्दी!" लिसबेत चिल्लाई। "कहीं वह मर तो नहीं गई?"

एब के पापा खिड़की से हटे और जल्दी से दीवार फाँदकर मार्दी के पास आ गए। उन्होंने घास पर गिरी मार्दी को देखा। वे नीचे बैठ गए और उन्होंने मार्दी का उतरा हुआ चेहरा अपनी तरफ किया। उसके सिर से ख़ून निकल रहा था।

तभी दौड़कर अल्मा वहाँ पहुँच गई। मार्दी की हालत देखकर उसके मुँह से अजीब-सी चीख निकली।

"यह क्या हो रहा है?"

एब के पापा ने दुख से सिर हिलाकर कहा, "लगता है जैसे सब खत्म हो गया है, हमारी छोटी-सी मार्दी!!"

4
एक खुश और बुरा दिन

मार्दी के सिर पर पट्टी बँधी हुई थी, उसे बिस्तर से उठने की इजाज़त नहीं थी।

"जब बीमार हो जाओ," लिसबेत ने कहा, "तब थोड़ा ही घूम सकते हो।"

मार्दी वापस मिल गई, इसलिए लिसबेत खुश थी। सिर ज़मीन पर ज़ोर से टकराने की वजह से, उसे ज़ख्म हो गया था, लेकिन घाव गहरा नहीं था। डॉक्टर का कहना था कि इससे मार्दी को एकाध दिन बीमार-सा लगेगा पर उसकी जान को कोई खतरा नहीं था।

लेकिन बात सारे गाँव में फैल गई। मार्दी के छत से नीचे गिरने की और उसके बेहोश हो जाने की खबर मिलते ही मम्मी-पापा रोने लगे। मम्मी खूब रोई थीं पर सबसे ज़्यादा अल्मा रोई थी।

"गलती मेरी ही थी," अल्मा ने कहा, "लेकिन मैं कैसे जानूँ कि छाता वह किसलिए ले जा रही है?"

अब मार्दी बिस्तर पर लेटी थी, और हैरानी की बात यह है कि इतना भी याद नहीं आ रहा था कि उड़ते समय कैसा लगता है – कितनी बुरी बात है, है ना? मतलब, यह उड़ान बेकार ही गई। ऊपर से यह घाव हो गया और अब डॉक्टर ने कहा कि, चार दिन बिस्तर से हिलना नहीं है।

जब मार्दी से मम्मी ने चार दिन बिस्तर में रहने की बात की तो वह शोर मचाने लगी।

"चार दिन... यह नहीं हो सकता! हमें बुधवार सैर पर जाना है, और मैं ज़रूर जाऊँगी।"

"जी नहीं! आप कहीं नहीं जा रहीं।" मम्मी ने कहा, "काफी सैर कर चुकी हैं आप।"

लिसबेत ने 'हाँ' में सिर हिलाया।

"तूने काफी सैर कर ली है! अब सिर्फ लेटी रह, बीमार बनकर।" इसके जवाब में मार्दी ने 'बड़ा भूचाल' खड़ा कर दिया। जब मार्दी को गुस्सा चढ़ता था और वह किसी चीज़ के लिए ज़िद पकड़ती थी तब यही होता था। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उसकी चीखें सारे घर में गूँज रही थीं।

"मैं जाऊँगी! मैं मर ही क्यों नहीं गई!"

पहले तो लिसबेत उसे बड़े चाव से घूरती रही, और फिर उसने उसे समझाने की कोशिश की।

"मेरे स्कूल में तो सारे बच्चों के सिर में घाव हो गए हैं और हममें से कोई सैर पर नहीं जा पाएगा।"

मम्मी ने मार्दी को समझाया, "अगर तुम यों ही रोती रही तो सिर का दर्द और बढ़ जाएगा।"



"बढ़ने दो!" मार्दी ने कहा। "जो मर्ज़ी होने दो!"

मम्मी खीझकर वहाँ से चली गई। ईडा उस वक्त नीचे रसोई में अल्मा की मदद कर रही थी। दोनों मिलकर सेब की कोई चीज़ पका रही थीं। मार्दी का चीखनां-चिल्लाना सुनकर वह ऊपर आई और मार्दी को सख़्ती से देखकर बोली, "मैं कहती हूँ, चुपचाप पड़ी रहो! भगवान का नाम लो कि इतनी बड़ी मुसीबत से उन्होंने तुम्हें बचा लिया।"

मार्दी के सिर पर स्कूल वाली सैर का भूत सवार था, वह और कुछ सुनने को राजी नहीं थी। उसने ईडा से भी कहा, "मुझे अकेली छोड़ दो!"

ईडा और लिसबेत एक-दूसरे को देखती रहीं। मार्दी उन दोनों को गुस्से से देख रही थी। जाते-जाते ईडा ने फिर एक बार कहा, "मार्दी, भगवान की दया से तुम बच गई! तुम्हें उनको धन्यवाद देना चाहिए। अब शांति से लेटी रहो और तभी ठीक हो पाओगी।" लेकिन मार्दी पर इसका कोई असर न हुआ। सिर पर गिलाफ ओढ़कर रोते-रोते वह अब भी भुनभुना रही थी।

उसके बाद, हर दिन सुबह उठकर उसे लगता आज के दिन कोई न कोई चमत्कार ज़रूर होगा, मम्मी आ जाएँगी और कुछ इस तरह कहेंगीः "अरे, एक छोटा-सा घाव ही तो है! इसका क्या? जैसे ही सैर पर जाओगी ठीक हो जाएगा, बुधवार की सैर तुम्हें तो गँवानी नहीं। है न?"

लेकिन मम्मी ने ऐसा कुछ भी नहीं कहा। उन्होंने सिर्फ मार्दी का साहस बढ़ाने वाली मुस्कान के साथ उसका गाल थपथपाया।

"बुरा मत मान!" उन्होंने कहा, "हम कुछ और सोचते हैं, मौज-मस्ती के लिए।"

कुछ और! स्कूल की उस सैर जितना अच्छा हो भी क्या सकता था सारी दुनिया में?

मंगलवार की शाम, मार्दी ने भगवान से प्रार्थना की कि उसका काम बन जाए। उसने भगवान से फुसफुसाते हुए अपने मन की बात कह दी, क्योंकि वह नहीं चाहती थी, लिसबेत को पता चले।

"हे भगवान, मेरी मदद करो! सैर पर जाने का मेरा बहुत मन है। प्लीज़, डॉक्टर से कहो कि वह मम्मी को फोन करें और कह दें कि मैं ठीक हूँ – क्योंकि मैं अब सचमुच ठीक हो गई हूँ। डॉक्टर जितनी जल्दी फोन कर दें, अच्छा होगा, क्योंकि तैयारी भी तो करनी होगी। मेरे साथ में ले जाने के लिए चीज़ें बननी हैं और मेरी सबसे प्यारी फ्रॉक भी इस्तरी होनी है। तो डॉक्टर से कह दो भगवान कि वे जल्दी से जल्दी फोन कर दें। मेरी बहुत-बहुत इच्छा है जाने की भगवान, मेरी मदद करो!"

उसके बाद मार्दी कान लगाकर फोन की घंटी बजने का इंतज़ार करती रही। पर उसे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। उधर लिसबेत बार-बार अपने बिस्तर से उसे बुलाकर कह रही थी, "मुझे भूतों की और डाकुओं की कहानी सुना!"

लेकिन मार्दी का कहानी सुनाने का बिल्कुल मन नहीं था। वह चुपचाप लेटी काफी देर तक फोन का इंतज़ार करती रही और जब वह नहीं आया तो थोड़ा-सा रोते-रोते सो गई।

बुधवार की सुबह वह जल्दी जागी। साफ-सुथरी धूप निकली हुई थी, नीला आसमान कितना सुंदर लग रहा था। स्कूल के सारे बच्चे कितने खुशनसीब थे कि किसी के भी सिर पर चोट नहीं आई थी, सिर्फ मार्दी को छोड़कर। मार्दी ने जल्दी से घड़ी देखी। आठ बजने वाले थे। रेलगाड़ी के चलने का समय हो रहा था। वे सब इस वक्त स्टेशन पर इकट्ठे होते होंगे। हँसते, बातें करते, धक्का-मुक्की से रेलगाड़ी में चढ़ते होंगे, अच्छी सीटों के लिए लड़ते होंगे, गाड़ी छूटने से पहले ही काफी मज़ा आता होगा।

उसके बिस्तर के सामने लगी घड़ी को मार्दी उदास होकर देख रही थी। उसने आठ बजते देखे, टन-टन की आवाज़ भी आठ बार सुनी। मार्दी रो पड़ी क्योंकि वह जानती थी कि अब रेलगाड़ी चल चुकी होगी। और वह बेचारी बनकर यहाँ पड़ी थी, उसके लिए न कोई मौज-मस्ती, न दोस्त!

लिसबेत की नींद खुली तो वह टनाटन महसूस कर रही थी। उसे पता ही नहीं था कि आज का दिन कितने दुख का है। वह गाने लगी:

अ... आ... इ... ई
बिल्ली पेड़ पर चढ़ गई
चढ़ते-चढ़ते फिसल गई
फिसलते-फिसलते गिर गई।

यह गाना उसे वैसे मार्दी ने ही सिखाया था। पर इस वक्त मार्दी को गुस्सा आ रहा था, ऊपर से लिसबेत का यह गाना!

"चुप रह लिसबेत! बोल मत! बेवकूफ लड़की, शांत रह!"

"अच्छा, तो तेरा दिमाग सुबह-सुबह गरम है!" लिसबेत ने ईडा की तरह कहा।

तभी दरवाज़ा खुला और मम्मी अंदर आईं। मम्मी नहा-धोकर तरोताज़ा हो गई थीं। उनके हाथों में बहुत सुंदर ट्रे थी, ट्रे में उन्होंने दोनों बेटियों के लिए, उनकी खास पसंद का नाश्ता रखा था। चॉकलेट वाला दूध और ताज़ा केक।

लिसबेत ने आँखें फैलाईं।

"कहीं आज मेरा जन्मदिन तो नहीं?" उसने पूछा।

"नहीं," मम्मी ने कहा। "लेकिन ऐसा भी तो नहीं कि मौज-मस्ती सिर्फ जन्मदिन पर ही हो! आओ मार्दी, नाश्ता करो।"

मार्दी मुँह धोकर धीरे-धीरे आगे आई। उसकी आँखें अब भी गीली थीं। मम्मी ने उसे गाल पर चूमा और केक सामने रखा। मार्दी बिना कुछ बोले खाने लगी। अब भी उसकी आँखों में आँसू उमड़-उमड़कर आ रहे थे। नाश्ता बहुत ही अच्छा होते हुए भी इस दिन की वजह से खराब लग रहा था।

"बिल्कुल जन्मदिन के केक जैसा बना है," मार्दी ने न चाहते हुए कहा।

"अच्छा है न? चलो, बात बन गई," मम्मी ने उठते हुए कहा और वहाँ से चली गईं।

लिसबेत का भी नाश्ता हो गया। उसने उँगलियों में लगा मीठा क्रीम चाट-चाटकर खाया। अब वह नहाकर कपड़े बदलने वाली थी। तभी उनके दरवाज़े की घंटी बजी और वह मार्दी से पूछने लगी, "यह ज़रूर डाकिया होगा, मैं जाकर देखूँ कि हमारे लिए कोई चिट्ठी आई हो?" मार्दी और लिसबेत के लिए कभी-कभार चिट्ठियाँ आती थीं। लेकिन वे दोनों हर रोज़ अपना लेटर बॉक्स देखती ज़रूर थीं, क्या पता कुछ आ ही जाए! लेकिन आज मार्दी ने जवाब में सिर्फ कंधे उचकाए। यह दुख भरा दिन था, आज डाक में भला क्या आना था?

लिसबेत फिर भी देखने चली गई। मार्दी अकेली बैठी रह गई। उसके दिमाग में अब तक यही चल रहा था कि रेलगाड़ी का सफर खत्म हो गया होगा और उसके सारे दोस्त गाते-गाते सड़क पर चल रहे होंगे। वह मन की आँखों से देख रही थी कि दो-दो की जोड़ियाँ बनाकर वे अब पहाड़ी पर चढ़ेंगे और ऊपर पहुँचने पर घर से लाई तरह-तरह की चीज़ें खाएँगे। और वह है कि यहीं पड़ी है। पता नहीं ज़िंदगी में आगे ऐसा कोई मौज-मस्ती का मौका अब कब आएगा!

तभी लिसबेत सीढ़ियों से दनदनाती ऊपर आई। उसकी साँस फूल रही थी।

"तू सोच भी नहीं सकती, मार्दी!" उसने कहा, "तेरे लिए तीन कार्ड और एक पार्सल आया है।"

"क्या? मेरे लिए?" कहकर मार्दी उठ खड़ी हुई।

मार्दी और लिसबेत उनके लिए आनेवाले सारे कार्ड सँभालकर रखती थीं। अब उनके पास कार्डों से भरे तीन डिब्बे हो गए थे। जब तुम्हारा जन्मदिन होता है तो तुम्हारे लिए कुछ सुंदर कार्ड आते हैं। कुछ फूलों वाले होते है तो कुछ नन्ही बिल्लियों वाले, कुछ पर तितलियाँ बनी होती हैं तो कुछ पर मज़ेदार चित्र! चमकते कार्डों पर सुंदर चित्र! आज, अब ये तीन नए और आए थे – मार्दी के लिए – उसका जन्मदिन न होते हुए भी, उसे तो सिर्फ चोट आई थी। कार्डों को देखकर मार्दी का चेहरा खिल गया। कितने सुंदर थे! एक पर सफेद कबूतर बना हुआ था और उसने एक लाल गुलाब अपनी चोंच में पकड़ रखा था। दूसरे में एक गुलाबी फरिश्ता नीले आकाश से उतरता दिखाई दे रहा था, आसमान में सुनहरे तारे भी चमचमा रहे थे। तीसरे में एक लड़का था जो पीले फूलों का एक गुच्छा हाथ में लिए खड़ा था। मार्दी उन्हें बारी-बारी से देखती रही और खुश हो गई। इतनी कि जैसे उसका गला रुँध गया था, कार्ड वाकई बहुत खूबसूरत थे!

"ज़रा देख तो सही, किसने भेजे हैं!" लिसबेत ने कहा। मार्दी ने कार्ड उलट-पलटकर देखे। सबके नीचे एक ही बात लिखी थी – "एक दोस्त की तरफ से।"

"क्या मतलब?" मार्दी ने अपने आप से पूछा।

कार्ड ज़्यादातर तो नानी के यहाँ से, चचेरे-ममेरे भाई-बहनों से आते थे, दोस्तों से नहीं। इसलिए यह कुछ नया था, और फिर पता भी न चलना कि ये भेजे किसने हैं!

"शायद एब हो!" लिसबेत ने कहा।

"तीन कार्ड भेजने वाला?" मार्दी ने कहा, "वह पागल नहीं है!"

मार्दी कार्डों को देखकर इतनी खुश थी कि वह पार्सल के बारे में भूल ही गई थी। जब उसकी नज़र पार्सल पर पड़ी तो उसे खोलने की बड़ी जल्दी हुई। अंदर एक बॉक्स था, उसके अंदर काफी सारा कागज़ ठुँसा पड़ा था। मार्दी और लिसबेत एक-दूसरे को देखकर उत्सुकता से दोहरी हो रही थीं। क्या होगा उन सुंदर गुलाबी कागज़ों के नीचे? पता न होने में भी कितना आनंद था! मार्दी ने उसे सूँघकर देखा।

"यह क्या हो सकता है?"

लिसबेत ने भी सूँघकर देखा।

"पता नहीं चल रहा।"

"देखूँ, अंदर क्या है?" मार्दी ने पूछा।

"बिक्कुल!" लिसबेत ने कहा।

मार्दी ने ऊपर का पतला झीना-सा कागज़ आतुरता से हटाया। लिसबेत साँस रोके खड़ी थी।

सबसे ऊपर एक चिट्ठी थी। लिफाफे पर लिखा था, "मेरी प्यारी मार्दी के लिए, नानी।" लेकिन नानी ने सिर्फ चिट्ठी ही नहीं भेजी थी।

उसमें एक छोटी-सी गुड़िया थी, और नन्हा-सा टब था उसके नहाने के लिए। उसकी छोटी-सी दूध की बोतल थी और छोटा-सा तौलिया भी था, नहाने के बाद उसे सुखाने के लिए। उसमें एक छोटा बॉक्स था, जिसमें रंगबिरंगे मोती थे, माला बनाने के लिए, और दो हरी डिब्बियाँ भी थीं जिनके ढक्कनों पर सुंदर गुलाबी चित्र बने थे और अंदर दो अँगूठियाँ थीं।

मार्दी के लिए नानी की भेजी वे कई सारी मज़ेदार चीज़ें देखकर लिसबेत की आँखें बड़ी होती गईं। कुछ देर चुपचाप रहने के बाद वह उदास होकर बोली, "मुझे भी चोट आनी चाहिए!"

मार्दी ने दोनों हाथों में अँगूठी की डिब्बियाँ उठाकर लिसबेत के आगे कीं और उसे पूछा, "तुझे लाल मोती वाली अँगूठी चाहिए या नीली वाली?"

"हरी वाली," लिसबेत ने कहा।

"हरी तो है ही नहीं, पागल!" मार्दी ने कहा।

"तो फिर नीली दे दे!" लिसबेत बोली। "मार्दी, तू कितनी अच्छी है।"

मार्दी को भी लगा कि वह बहुत अच्छी है। उसे अच्छा लग रहा था। इस बात से भी अच्छा लग रहा था कि उदासी भाग गई थी और सैर न जा पाने का दुख भी कम हो रहा था।

"पहाड़ ठीक हैं," उसने लिसबेत से कहा, "पर हमारे घर की छत से जो नज़ारा दिखता है, वह कुछ कम नहीं।"

"बिक्कुल!" लिसबेत ने हामी भरी। "हम पड़ोसियों के घर में भी झाँक पाते हैं।"

मार्दी और लिसबेत ने अपनी-अपनी अँगूठियाँ पहन लीं और अपनी ऊँगलियाँ फैलाकर उन्हें अच्छे से देखा। इससे उन्हें अब महसूस हो रहा था कि वे बड़ी हो गई हैं।

"मेरा मोती खून की बूँद जैसा लग रहा है," मार्दी ने कहा, "और तेरा?"

"मेरा नीले जैसा लग रहा है, वह है भी नीला!" लिसबेत से जवाब आया।

दोनों काफी देर तक अँगूठियों की तुलना करती रहीं। हाथ एक दूसरे के पास रखकर, मिलकर सोचा कि किसकी अँगूठी बेहतर है। मार्दी को लाल मोती अच्छा लगा क्योंकि वह खून की बूँद जैसा था। लिसबेत को उसका नीला मोती अच्छा लगा क्योंकि वह नीले जैसा था।

अचानक मार्दी को याद आया, "अरे, अभी तो मैंने नानी की चिट्ठी पढ़ी नहीं!" और यह कहते हुए उसने लिफाफा खोला।

नानी ने चिट्ठी एक-एक अक्षर अलग से लिखते हुए तैयार की थी क्योंकि मार्दी अभी जुड़े हुए अक्षर पढ़ नहीं पाती थी। और इधर लिसबेत को पता नहीं चल रहा था कि नानी ने जो कहा है, वह मार्दी को कागज़ पर बनाए गए अक्षरों से कैसे पता चल रहा है?

"क्या तुझे सचमुच पढ़ना आता है?" उसने मार्दी से पूछा।

बिल्कुल आता था। जब नानी इस तरह से लिखती थी तो एक-एक शब्द जोड़कर मार्दी समझ जाती थी कि लिखा क्या है। नानी ने लिखा था, मार्दी को उड़ने के बारे में बिल्कुल नहीं सोचना है और साथ भेजी दो डिब्बियों में से एक लिसबेत को देनी है, माला बनाने के उन रंगबिरंगे मोतियों में से आधे भी उसको देने हैं।

"लेकिन मैं कितनी अच्छी हूँ, लिसबेत, यह चिट्ठी पढ़ने से पहले ही मैंने तुझे एक डिब्बी दे दी थी," मार्दी ने कहा।

"हाँ, तुम बहुत अच्छी हो," लिसबेत ने मोतियों के डिब्बे पर पकड़ जमाते हुए कहा, "मुझे मेरे हिस्से के मोती दे दो, माला बनाऊँगी।"

लेकिन मार्दी ने मोतियों का डिब्बा वापस खींच लिया और कहा, "छोड़ इसे, इसके लिए तुझे थोड़ा रुकना पड़ेगा। मुझे मोतियों के दो हिस्से करने होंगे, अभी मेरे पास यह सब करने का टाइम नहीं है।"

"है! तुम्हारे पास टाइम है, अभी, इसी वक्त!" लिसबेत ने ज़िद की।

"नहीं है," मार्दी ने कहा।

उसने टेबल पर रखी सुराही से अपने गिलास में पानी डाला। फिर

धीरे-धीरे, एक-एक घूँट भरते हुए उसे खाली किया। फिर उसने वह गुलाबी महीन कागज़ उठाया जो बक्से में से निकला था और उसको तह करने लगी। करते-करते वह इतना छोटा हो गया कि अब उसको और मोड़ना मुमकिन नहीं था। देखने वाले को साफ पता चल रहा था कि मार्दी के पास बहुत सारे ज़रूरी काम हैं, और मोतियों को गिनकर उनके दो हिस्से करने की फुरसत नहीं है। वह सोच रही थी, अँगूठियों की डिब्बियाँ मोतियों से सुंदर थीं, पर उनमें से एक लिसबेत को दे डालना आसान था। मोतियों को उसके साथ बाँटना ज़रूर मुश्किल था। मार्दी यह भी जानती थी कि उसे चाहे वह मोतियों वाली डिबिया कितनी भी अच्छी लगे और लिसबेत के साथ बाँटने का मन न हो, फिर भी उससे छुटकारा नहीं था। नहीं तो लिसबेत शिकायत लेकर मम्मी के पास जाएगी और आखिर उसे उसका हिस्सा देना ही पड़ेगा।

मार्दी ने वह महीन कागज़ जितनी भी धीरे हो सके, सँभालकर वापस बक्से में रख दिया और एक आह भरकर बोली, "अब मेरे पास टाइम है।"

उसने सारे मोती ट्रे में उलट दिए और उनके दो समान हिस्से बना दिए। एक बड़ा पीला मोती बाकी बचा था, वह उसने लिसबेत को दे दिया।

"ले लो!" मार्दी ने कहा। वैसे मार्दी ज़्यादा देर कोई टुच्ची बात मन में रख नहीं सकती थी।

दोनों ने बैठकर मालाएँ बनाईं और उन्हें पहनकर तो वे और भी शानदार लगने लगीं। वे नई गुड़िया से भी खेलीं, उसे उसके टब में नहलाया, उसके तौलिए से पोंछा। उसके तौलिए से बड़ी प्यारी खुशबू आ रही थी। फिर उन्होंने उसे सिगरेट की डिब्बी में लिटाया और उसकी बोतल उसके मुँह से लगा दी।

"यह बड़ा दुख का दिन है," मार्दी को याद आया, "लेकिन इसमें बहुत मज़ा आ रहा है।"

लिसबेत इस बात से सहमत थी।

"इतना प्यारा, दुखभरा दिन है," उसने कहा।

लेकिन कुछ ही देर में लिसबेत बोर हो गई, उसका मन बाहर जाने को हो रहा था।

"मुझे सासो को घुमाकर लाना चाहिए," कहकर वह गायब हो गई।

अकेले खेलने में कोई मज़ा नहीं आ रहा था। मार्दी भी बोर हो गई और अब क्या करूँ, सोचने लगी। तभी पापा खाने की छुट्टी में घर आ गए। मार्दी के कमरे में आकर उन्होंने पूछा, "अब कैसी हो तुम?"

"बढ़िया!" मार्दी ने कहा, "पर मेरे पास करने को कुछ नहीं है।"

"चाहो तो अखबार पढ़ लो," पापा ने अपना अखबार उसे देते हुए कहा। "और यह है ड्रॉइंग के लिए कॉपी! इसमें कुछ अच्छे से चित्र बनाओ, जब मैं शाम को घर आऊँगा तो दिखाना।"

मार्दी इतनी जल्दी पढ़ना सीख गई थी कि उसकी टीचर भी दंग रह गई थी। पापा के वहाँ से जाने के बाद अखबार उठाकर मार्दी ने



फटाफट पढ़ना शुरू कर दिया। लेकिन उसे कुछ खास समझ में नहीं आया। ज़्यादातर उसमें मार-धाड़ की खबरें थीं, या इश्तिहार, मरने वालों की तस्वीरें और फैशनदार कपड़े पहने औरतों के फोटो। और भी चीज़ें थीं, पर सारी ऊबाऊ थीं। एक जगह लिखा था, "बीते हुए कल से"। मार्दी को उसका मतलब पहले तो समझ नहीं आया पर उसने ढूँढ निकाला। यह बीते हुए समय की कहानियाँ थीं जब लोग, निहायत उबाऊ तरीके से जीते थे! मार्दी ने लंबी साँस के साथ अखबार नीचे रख दिया। कितनी अजीब सी बात थी कि उसके इतने दिलचस्प पापा इतना उबाऊ अखबार निकालते थे। वे संपादक थे, अखबार में क्या छापना है उन्हीं को तय करना था। एक दिन मैं कोशिश करके देखूँगी। मार्दी सोच रही थी – मैं जो लिखूँगी, वह छपा हुआ तो नहीं होगा लेकिन इस ड्रॉइंग की कॉपी में पापा के अखबार से लाइनें काटकर चिपकाई जा सकती हैं, जिससे खबर सच्ची लगे।

वह ड्रॉइंग की कॉपी, पेंसिल, कैंची और गोंद ले आई और बस शुरू हो गई। उसने शीर्षक काट लिया, "बीते हुए कल से", और सफेद कागज़ पर चिपका दिया। उसके नीचे क्या लिखना है, यह तो मार्दी को ही सोचना था। उसने अपनी पेंसिल चबाते हुए कुछ सोचा और वह लिखने लगी।

बीते हुए कल से

अब मैं आपको वह बतती हूँ जो पहले बच्चे करते थे। वह अपनी मम्मी की बात मनते थी। लेकिन कुछ बहुत उधम मचाते थे। उनके पास पत्थर की कुल्हाड़ियाँ थी। पर उन्होंने बंदूक से गोली मारना सीखा।

मार्दी को बीते हुए कल के बारे में बस इतना ही पता था। उसने फिर कैंची उठाई और पापा के अखबार से एक और शीर्षक काटा। "सरहद से"। उसने वह कॉपी में चिपकाया, थोड़ी देर पेंसिल चबाते हुए सोचा और लिखने लगीः

सरहद से

लड़ाई बहुत कठिन होती है। सिपाहियों को सुरंगों मे छिपना पड़ता है। एक सिपाही तो छाता लेकर आसमान से कूद पड़ा। पर उसे चोट नही आया। वह एक उड़ती मशीन से कूदा था जिसे विमान कहते हैं।

अब लड़ाई की खबर भी हो गई। मार्दी पापा के अखबार में नया विचार ढूँढने लगी। सूचनाएँ? क्या वे भी ज़रूरी होती हैं, असली अखबार बनाने के लिए?

मार्दी ने "शोक समाचार" शीर्षक चुना और उसे काटकर एक नए कागज़ पर चिपकाया। इस बार उसे काफी सोचना पड़ा कि वह क्या लिखे। फिर कुछ दिमाग में आ गया और वह लिखने लगी।



लिखने के बाद उसने उसके चारों तरफ काली लाइनें खींचकर एक बॉक्स बना दिया। फिर उसे लगा, अखबार लिखना बहुत हो गया, चित्र बनाने में ज़्यादा मज़ा आएगा। इसलिए उसने पापा के लिए एक चित्र बनाया। उसमें उसने दिखाया था कि एक लड़की घर की छत से उड़ रही है और उसमें उसे सफलता मिली है।

जब पापा शाम को घर आए तो उन्होंने वह देखा और बहुत खुश हुए। मार्दी अब रसोई में आकर खाने लायक तो ठीक हो गई थी,

लेकिन अभी उसे घर से बाहर निकलना मना था। उसे अब ज़्यादातर चीज़ें खाने की इजाज़त भी थी, जैसे आलू का पैन केक या सेब का हलुवा।

रात हो गई। मार्दी और लिसबेत के सोने का वक़्त हो गया तो मम्मी और पापा उन्हें सुलाने उनके कमरे में आ गए। मम्मी ने उन्हें बहादुर राजकुमार की कहानी सुनाई जो ज़मीन के नीचे रहा करता था। बीच-बीच में पापा ने उसके कुछ चित्र सायों के खेल से दीवार पर दिखाए। उन्होंने बच्चों के कमरे में वैसे तो बहुत धीमी रोशनी का बल्ब जला रखा था। पर चित्र अच्छे दिखने के लिए पापा ने वहाँ तेज़ रोशनी का बल्ब लगा दिया। अब सायों से बनने वाले चित्र बहुत सुंदर, साफ नज़र आने लगे। दीवार पर काफी हलचल हो रही थी। कभी वहाँ दो सींगों वाला हिरन दिखाई देता था तो कभी नाचती लड़की, कभी सिर्फ पापा के हाथ की परछाई दिखाई पड़ती थी तो कभी पेड़।

मम्मी और पापा से रात को कहानी सुनना दोनों लड़कियों को बड़ा अच्छा लगा। मार्दी को तो लग रहा था कि वे यों ही इकट्ठे बैठे रहें — बहुत, बहुत देर तक! आखिर में मम्मी ने कहा, "अब बहुत देर हो गई है, चलो सो जाओ!"

दरअसल लिसबेत तो सो भी चुकी थी। लेकिन मार्दी उस रात देर तक जागती रही। उसे फिर से सैर की बात याद आ रही थी। सैर तो अब खत्म हो ही गई थी, फिर भी। परसों से उसे स्कूल जाना था और वह जानती थी कि उसकी क्लास के सभी बच्चे किस चीज़ की बातें करते रहेंगे। यही कि कितना मज़ा आया सैर पर... क्या, क्या किया हमने। लेकिन मार्दी को तो चुप ही रहना होगा। काश! उसे सैर पर जाने दिया होता!

पर्दों के बीच की जगह से आसमान में तारे चमकते नज़र आ रहे थे। उसके फरिश्ते वाले कार्ड पर लगे सितारों जैसे वे भी सुंदर लग रहे थे। मार्दी ने उन्हें गिनना शुरू कर दिया। मुश्किल तो था, लेकिन इससे नींद आती है।

अब सारा गाँव सो गया लगता था। सोते की कलकल भी धीमी

पड़ गई थी। रुपहले पेड़ों के साये थरथरा रहे थे। उनके घर में भी घुप्प अँधेरा था, सब सो रहे थे। सिर्फ मम्मी का काम अभी खत्म नहीं हुआ था। वे भी अब सोने जा रही थीं, लेकिन उनका मन हुआ कि एक बार जाकर दोनों बच्चियों को देख तो लूँ।

उन्होंने रात की हल्की रोशनी वाली बत्ती जलाकर लिसबेत को देखा। वह हमेशा की तरह अपने पेट के बल सोई थी! पीछे से देखने वाले को सिर्फ उसकी गर्दन और घुँघराले बालों का गुच्छा नज़र आ रहा था। जब मम्मी उसको चूमने नीचे झुकी तो लिसबेत नींद में कह रही थी, "तू पागल है, मार्दी!"

जब मम्मी उनकी बड़ी बेटी की तरफ मुड़ीं तो उन्हें लगा, बड़ी भी अभी बच्ची ही है। छोटी-सी, प्यारी-सी, उसकी पलकें गालों पर झुकी हुई हैं। उसके पास एक सफेद कागज़ पड़ा था। मम्मी ने उठाकर पढ़ा।

शोक समाचार

बड़ी अच्छी बात है कि काला भूत
मर गया है।
उसके लिए कोई प्रर्थना नही होगी

शुक्रवार की सुबह मार्दी बड़े बेमन से स्कूल गई। उसका बिल्कुल मन नहीं था जाने का, और सैर की कहानियाँ सुनने का।

लेकिन बस बीस मिनट में वह दौड़ी-दौड़ी घर में घुसी। कूदती, छलाँगें लगाती, वह सीधी रसोई में जा धमकी। पहले तो उसे देखकर मम्मी डर ही गई कि न जाने अब क्या नई मुसीबत खड़ी हो गई है! नहीं तो मार्दी स्कूल जाने के बस बीस मिनट बाद, यों जंगलियों की तरह क्यों लौटने लगी?

"ममा..." मार्दी ने हाँफते-हाँफते कहा। "ममा, हमें सैर पर जाना है। आज, अभी! बुधवार की सैर हो नहीं पाई थी। टीचर ज़ीने से गिर गई थीं, और उन्हें चोट आई थी... मुझे थरमस में ठंडी चॉकलेट डाल

दो। मेरी लाल वाली फ्रॉक कहाँ है, जल्दी करो ममा, जल्दी!"

उस वक्त, घर की सफाई के लिए ईडा आई हुई थी। उसने जब मार्दी को टोपी पहनकर तैयार होते देखा तो देखती ही रह गई। मार्दी खुशी से दोहरी होती जा रही थी, आँखों में चमक और चेहरे पर मुस्कान। जब उछलती-कूदती थी तो पीठ पर रखा बस्ता भी डोलने लगता!

"मैं सैर पर जा रही हूँ!" मार्दी ने कहा, "मैं बहुत खुश हूँ।"

"अच्छा!" ईडा ने कहा, "और उस रोज़ कौन थी जो बिस्तर में लेटी चिल्ला रही थी और कह रही थी कि मैं मर जाऊँ तो अच्छा! और आज देखो!"

"हा! हा! वह तो काला भूत था। तुमने देखा नहीं, उसके मरने की खबर तो अखबार में भी छपी है?"

"कौन से अखबार में?" ईडा ने पूछा।

"मैं क्यों बताऊँ?" कहकर मार्दी भाग गई।

अब तो उसे रेलगाड़ी में बैठकर जाना था, पहाड़ पर चढ़ना था, मज़ेदार चीज़ें खानी थीं। अब मार्दी खुश क्यों न होती?



5
लिसबेत की नाक में मटर का दाना

अब सर्दियाँ आने को थीं, और हर गुरुवार मार्दी के घर में मटर का सूप बना करता था। लेकिन लिसबेत हर गुरुवार अपनी नाक में मटर का दाना थोड़े ही फँसाती थी। वह तो उसने बस पहली बार किया था। वैसे लिसबेत की बड़ी अजीब आदत थी, जो चीज़ जहाँ नहीं होनी चाहिए, उसे वहाँ ठूँसने की। एक बार उसने अल्मा के कमरे की चाबी पोस्ट बॉक्स में डाल दी थी, और एक बार मम्मी की अँगूठी अपनी गुल्लक में डाल दी थी, ताकि उसे कोई छू न सके। एक दिन उसने पापा का टूथपेस्ट खाली बोतल में फँसा रखा था। वह ये सब शरारत में नहीं करती थी। वह तो सिर्फ जानना चाहती थी कि ऐसा करने से क्या होता है? चीज़ें कभी-कभी ऐसे फँस जाती थीं कि जैसे आपने कभी सोचा भी न हो, और तब बड़ा मज़ा आता था। अब भी ऐसा ही हुआ था। उसे रसोईघर में ज़मीन पर एक मटर का दाना गिरा पड़ा दिखा था। न जाने क्या सोचकर उसने उसे तपाक से अपनी नाक में डाल लिया था। उसे सिर्फ देखना था कि वह अंदर जाता है या नहीं। वह चला गया। काफी अंदर चला गया।

फिर उसने उसे बाहर निकालने की कोशिश की। उसका काम तो हो गया था। लेकिन वह मटर बाहर आने को तैयार नहीं था। वह जहाँ था, वहीं रुका रहा। लिसबेत ने अपनी उँगली काफी गोल-गोल घुमाई,



पर वह बाहर नहीं आया। लिसबेत ने मार्दी से मदद माँगी। उसने भी कोशिश की, पर वह बाहर निकला नहीं।

"शायद उसने वहाँ जड़ पकड़ ली है," मार्दी ने कहा। "अब देखना, जल्दी ही तेरी नाक से मटर निकलने लगेंगे।"

सुनते ही लिसबेत चिल्लाने लगी। उसे मटर पसंद तो थे पर उनका पौधों पर उगना ही सही था, नाक से नहीं। उसकी अपनी नाक से तो बिल्कुल ही नहीं। वह चीखती-चिल्लाती मम्मी के पास गई।

"मम्मी, मेरी नाक में मटर चला गया है, उसे निकाल दो! अभी, इसी वक्त! मुझे नहीं चाहिए।"

"ओह!" मम्मी ने कहा, "उफ्फ!"

आज मम्मी वैसे ही परेशान थीं, उन्हें सरदर्द हो रहा था और इस वक्त वे ज़रा पलंग पर लेटी रहना चाहती थीं, आँखें बंद किए। लिसबेत की नाक से मटर खींच निकालने का बिल्कुल मन नहीं था।

"मुझे अच्छा नहीं लग रहा!" लिसबेत ने चिल्लाकर कहा, "इसे निकालो ना!" मम्मी के पास एक पिन थी, उससे मटर को निकालने की कोशिश की, पर कुछ नहीं हो पाया। मटर अपनी जगह से हिलने के लिए तैयार नहीं था।

उन्होंने पास खड़ी मार्दी से कहा, "मार्दी, तुम इसे डॉक्टर के पास ले जाओ। अब वे ही मटर को निकाल पाएँगे।"

"ऐसा लगता है, आपको?" लिसबेत ने पूछा।

"बिल्कुल!" मम्मी ने कहा और वे फिर से पलंग पर लेट गईं। उनका सरदर्द उन्हें चैन नहीं लेने दे रहा था।

"चलो मार्दी, जल्दी से जाएँ!" लिसबेत ने कहा। उसे लग रहा था, पता नहीं कब नाक से मटर उगने लगे और फलियाँ झूलने लगें। अगर यह डॉक्टर के पास पहुँचने से पहले ही हो जाता है तो लोग उसे सड़क पर चलते देख हँसने लगेंगे। मार्दी ने उसका साहस बढ़ाने की कोशिश की। मान लो ऐसा हो भी जाता है, उसमें आफत जैसी कोई बात नहीं है।

"तब फिर तुम उसे चुपचाप काट देना, जब कोई देख न रहा हो, और अपनी जेब में ठूँस देना!" मार्दी ने कहा। लिसबेत उन लड़कियों में से नहीं थी जो एक मटर को लेकर रोंदू की तरह बार-बार शिकायत करती रहती हैं। वह अब डॉक्टर के पास जा रही थी, और मटर समझ लो निकल ही चुका था। उसे इस बात की खुशी भी हो रही थी कि वह मार्दी के साथ बाज़ार जा रही थी। डॉक्टर का दवाखाना बाज़ार में था।

"मज़ा भी तो आएगा! आओ मार्दी, चलें!" लिसबेत ने कहा।

डॉक्टर के दवाखाने तक का रास्ता लंबा था। वह शहर के बीच, चौक में था और मार्दी का घर गाँव से बाहर था।

मार्दी ने लिसबेत का हाथ अच्छी तरह पकड़ रखा था। मम्मी देखतीं तो खुश हो जातीं कि उनकी दो बेटियाँ कितने आपसी प्यार से और ज़िम्मेदारी से, अपने आप डॉक्टर के पास जा रही थीं।

"तू कभी-कभी पागलों जैसी चीज़ें करती है!" मार्दी ने बड़ों की तरह अकलमंदी दिखाते हुए कहा। घर में पागलों की तरह शरारतें करने के लिए सबसे ज़्यादा डाँट किसको पड़ती है, यह वह भूल गई थी। लेकिन लिसबेत के साथ इतनी दूर शहर जाना उसे अच्छा लग रहा था। उसने उसे और डाँट-फटकार नहीं सुनाई।

सड़क सूखे पत्तों से भरी पड़ी थी। उस पर चलने में मज़ा आ रहा था। पत्ते पैर के नीचे आते तो 'कर्र कर्र' की आवाज़ आती। मार्दी और लिसबेत, उन पर ज़ोर-ज़ोर से पैर जमाती चल रही थीं। उनके चेहरे लाल हो गए थे और हाथ भी चल रहे थे। मौसम तरोताज़ा था और हवा में ठंडक थी। अब बगीचे में सारे फूल सूख गए थे। इससे भी लिसबेत को तसल्ली मिल रही थी। फूलों का, नए पेड़ों का मौसम खत्म हो रहा है, तो ज़ाहिर है कि अब मटर भी शायद नहीं आएँगे।

"ईडा का घर पास में पड़ता है, चलो ज़रा उसके यहाँ भी हो आएँ।" मार्दी ने कहा।

"हाँ, चलो!" लिसबेत ने कहा, यह सोचते हुए कि बहुत दिन से ईडा मिली नहीं थी, और वह मटर कुछ देर और नाक में बैठा रहा तो कुछ बिगड़नेवाला नहीं था।

मार्दी और लिसबेत को ईडा तो अच्छी लगती ही थी, लेकिन उसका घर भी बहुत प्यारा लगता था। ईडा का घर बहुत ही छोटा था; जब वह खड़ी हो जाती थी तो उसका सिर छत से छूने लगता था। एक ही कमरा था और साथ में छोटी-सी रसोई, लेकिन वह था बड़ा प्यारा! ईडा ने खिड़की में फूल सजा रखे थे और अपने पलंग के ऊपर दीवार पर दो भयानक चित्र लगा रखे थे। बाहर रखे मिट्टी के चूल्हे पर वह मार्दी और लिसबेत के लिए मज़ेदार चीज़ें बनाकर उन्हें खिलाती थी। तभी तो, उससे मिले बगैर उसके घर के पास से निकल जाना बहुत मुश्किल बात होती।

जब मार्दी और लिसबेत उसके घर पहुँचीं तो दरवाज़े पर एक चिट्ठी लिखी मिली। "अभी आ रही हूँ," ईडा ने लिख रखा था। वह घर पर नहीं थी, इसलिए मार्दी और लिसबेत अंदर जाकर बैठ गईं। उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई। क्योंकि दरवाज़े पर ताला नहीं था, इसलिए।

ईडा के घर के अंदर गर्माइश थी। उन्होंने चूल्हे में जलती लकड़ियों के पास खड़े होकर हाथ-पैर सेंक लिए और ईडा के पलंग के ऊपर लगे अजीब-से चित्र देखते रहे। एक में ज्वालामुखी था; पर्वत के ऊपर निकलती आग की लपटें, और डर से इधर-उधर भागते लोग देखकर उन्हें भी डर लगा। कितनी अच्छी बात थी कि स्वीडन में ऐसे आग उगलने वाले भयानक पर्वत नहीं थे! दूसरा चित्र भी ऐसा ही खतरनाक था। काफी लोग बाढ़ में डूबने को थे। वे पानी में पड़े घबराए हुए थे, और किनारे पहुँचने की जी-जान से कोशिश कर रहे थे! ऐसी किसी बाढ़ में कभी न फँसने का फैसला मार्दी और लिसबेत ने मन ही मन कर लिया।

"मेरी पूरी ज़िंदगी में मैंने इतने बढ़िया चित्र कभी नहीं देखे!" मार्दी बोली।

"बिक्कुल," लिसबेत ने हामी भरी।

फिर उन्होंने ईडा की दो बेटियों की तस्वीरें देखीं। वे दोनों अमरीका चली गई थीं। वे बहुत सुंदर लग रही थीं, दोनों ने अपने बाल चिड़ियों के घोंसले की तरह ऊपर बाँध रखे थे। उनकी तस्वीरें ईडा ने मेज़ पर सजा रखी थीं। पता नहीं अब शिकागो में बसी लड़कियाँ वापस आएँगी भी या नहीं। मेज़ के पास ईडा का गिटार टँगा हुआ था। मार्दी ने उसे छेड़कर देखा, बहुत अच्छी आवाज़ आ रही थी। ईडा की तरह बजाना सीखना मार्दी को बहुत अच्छा लगता। लिसबेत को गाने-बजाने में खास दिलचस्पी नहीं थी। वह खिड़की से बाहर देख रही थी कि बगीचे में क्या हो रहा है। कुछ हो रहा था, और उससे परे, ईडा के घर की तरह के और घर थे। लेकिन उन सब में ऐसी कोई खास बात नहीं थी। एक लाल बालों वाली लड़की एक घर के बाहर की सीढ़ियों पर बैठी हुई थी। उन्होंने ईडा से मैटी नाम की लड़की के बारे में सुन रखा था; लगता है यह वही थी। अचानक लिसबेत को लगा, जाकर मैटी से बात करके देखूँ।

"मैं अभी आई," मार्दी से कहकर लिसबेत वहाँ से निकल गई। इस वक्त मार्दी का पूरा ध्यान गिटार की तारें छेड़ने में था; उसने उसे न देखा, न सुना। गिटार से उठती आवाज़ ही उसे खुश कर रही थी।

लिसबेत बाहर के बगीचे से निकलकर मैटी के घर की तरफ गई। मैटी के हाथ में एक छुरी थी जिससे वह लकड़ी के एक टुकड़े पर कुछ कर रही थी। उसने ऐसा जताया कि जैसे लिसबेत को देखा ही न हो। लिसबेत अच्छी बच्ची की तरह धीरे-धीरे उसके पास जाकर थोड़ी दूर खड़ी हो गई। वह मैटी के कुछ कहने का इंतज़ार कर रही थी। मैटी ने उसे देखकर ज़ोर से कहा, "गंदी बच्ची!" और वह अपने लकड़ी के टुकड़े को तराशती रही।

लिसबेत को गुस्सा आया। अगर कोई गंदा था तो वह मैटी थी, पता नहीं कब नहाई थी।

"तू ही है गंदी बच्ची, सूअरनी!" लिसबेत ने कहा और फिर डर गई क्योंकि मैटी उससे बड़ी थी और तेज़ दिमागवाली और खतरनाक लग रही थी।

"एक झापड़ लगाऊँ तो उड़ जाएगी। लगाऊँ?" मैटी ने पूछा।

लिसबेत चुप रही और पीछे हटकर उसने अपनी जीभ बाहर निकालकर मैटी को चिढ़ाया। जवाब में मैटी ने भी जीभ बाहर निकालकर मुँह बनाते हुए कहा, "मेरे पास तो दो खरगोश हैं, तेरे पास कुछ नहीं। तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल।"

लिसबेत ने "तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल" पहले कभी नहीं सुना था। लेकिन अगर मैटी वह कह रही थी तो ज़रूर वह कोई लड़ाई झगड़े की बात होगी। लिसबेत नए शब्द पटाक से सीख लेती थी।

"मेरे पास एक बिल्ली है, गूडी जो तेरे पास नहीं है, तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल।" उसने कह डाला।

"हाँ हाँ! बिल्ली चाहता कौन है? मुझे कोई मुफ्त में दे तो भी मैं न लूँ।" एक पल शांति रही। फिर मैटी और लिसबेत गुस्से से एक दूसरे को देखती रहीं।

"मेरा एपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ है, मेरे पेट पर लंबा निशान है।

तेरे पास तो है नहीं! तेरे मुँह में कीड़े, तेरे..." यह लिसबेत के लिए काफी था। उसने जल्दी से सोचा। पेट पर निशान के मुकाबले के लिए उसके पास क्या था? हाँ, एक बात थी तो सही।

"मेरी नाक में मटर है, तेरे पास नहीं! तेरे मुँह में कीड़े..." मैटी ने तुच्छता से उसकी तरफ देखा और हँसकर बोली, "मटर? मेरे घर में इतने सारे मटर हैं कि मेरी नाक भर सकती है। उसमें कौन-सी बड़ी बात है?"

लिसबेत को अजीब-सा लगने लगा, वह कहने लगी, "अगर वहाँ मटर की बेल उग जाती है..." लेकिन यह कहते हुए वह चुप हो गई। जो बेल उसे चाहिए नहीं थी उसके बारे में क्या डींगें हाँकना!

तभी लिसबेत ने देखा कि मैटी सीढ़ियों पर बैठी, स्वेटर की बाँह पर नाक रगड़ रही है। यह देखते ही उसने कहा, "पता है क्या, तेरी नाक गंद से इतनी भरी हुई है कि उसमें मटर घुस ही नहीं सकते।" यह सुनकर मैटी का पारा चढ़ गया।

"अब दिखाती हूँ मैं, कि कौन क्या है!" वह चीखी और लिसबेत की तरफ दौड़ी। लिसबेत ने उसे मारकर खुद को बचाने की कोशिश



की, पर मैटी में ताकत ज़्यादा थी। उसने लिसबेत को मुक्के मारे और हाथ पकड़कर उसे दीवार में चीनने लगी। लिसबेत ने जितनी ज़ोर से हो सका, मार्दी को पुकारा, "मार्दी! मार्दी!"

लिसबेत इस तरह का व्यवहार क्यों बरदाश्त करती, जब उसके पास मार्दी जैसी बहन हो! मार्दी को लड़ना आता था। उसे गुस्सा आता था तो वह बगैर सोचे-समझे काफी कुछ कर बैठती थी। मम्मी जो मर्ज़ी है कहें, उस पर कोई असर नहीं होता था। "लड़कियों को मार-पीट कभी नहीं करनी चाहिए," मम्मी ने बता रखा था। लेकिन ऐसी बातें मार्दी को हमेशा बाद में, सब कुछ करने के बाद, याद आती थीं। उसके बाद वह फौरन पछताती थी, और सोच लेती थी कि फिर कभी नहीं लड़ूँगी। लेकिन अब जब उसने देखा कि कोई उसकी बहन पर हमला कर रहा है तो वह चुप कैसे रह सकती थी। वह लड़ाई के लिए तैयार बकरे की तरह भागती वहाँ आ गई। देखते ही देखते उसने मैटी को ऐसा घूँसा रसीदा कि वह लड़खड़ाती पीछे गिर गई।

"तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल!" लिसबेत ने कहा।

लेकिन मैटी की भी बड़ी बहन थी।

"मीता!" उसने पुकारा, "मीता!"

अब सोचो, वहाँ किसको आना था। वह तो मीता निकली, जो मार्दी की क्लास में पढ़ने वाली जूओं वाली लड़की थी।

मैटी ने मार्दी की तरफ इशारा कर कहा, "उसने मुझे मारकर गिरा दिया।"

"गंदी सूअरनी, लड़ाई तूने शुरू की!" लिसबेत चिल्लाई। पर तब तक देर हो चुकी थी। मार्दी और मीता एक दूसरे पर टूट पड़ी थीं। मीता कद में छोटी होने पर भी गर्म दिमाग की और ढीठ थी। वह चिकोटियाँ काटती थी, नाखूनों से नोचती थी और बाल खींचती थी। मार्दी का लड़ने का तरीका लड़कों जैसा था, वह तड़ातड़ घूँसे बरसाती थी। जल्दी ही मीता को उसने ज़मीन पर गिरा डाला और उसके हाथ कसके पकड़कर, उसके सीने पर बैठ गई।

"हार गई?" मार्दी ने पूछा।

तभी मीता ने कुछ गलत कहा।

"हार तुमसे? शैतान की बच्ची!"

मार्दी और लिसबेत हैरानी से उसे ताकती रहीं। एक दूसरे को सूअरनी, गंदी, पागल कहना एक बात थी, लेकिन शैतान का नाम लेने वाले नर्क में जाते हैं, ऐसा ईडा का कहना था।

बेचारी मीता! मार्दी को उस पर तरस आया और उसने उसके हाथ छोड़ दिए। जो नर्क में जा गिरने वाला हो, उससे क्या लड़ना! हाथ खुलते ही मीता ने अपनी मुठ्ठी बंद कर ली और मार्दी की नाक पर जमकर मुक्का मारा। मुक्का बहुत ज़ोर का न सही लेकिन उससे मार्दी की नाक से खून बहने लगा। ऐसा उसे कई बार होता था लेकिन तब तो लिसबेत को उसकी चिंता नहीं हुई थी। अब जब उसने मार्दी की नाक से खून निकलता देखा, वह शोर मचाने लगी।

"मार डाला! मार्दी को मार डाला!!"

तभी न जाने कहाँ से, दयालु परी की तरह ईडा प्रकट हो गई!



"मैं कहती हूँ, तुम लोग पागल हो गई हो, पूरी पागल! साफ नज़र आ रहा है!"

उसने मार्दी और मीता के हाथ पकड़कर, उन्हें खींचकर एक-दूसरे से अलग कर दिया।

"क्या तरीका है? शर्म नहीं आती तुम लोगों को?"

मार्दी और लिसबेत को अचानक शर्म महसूस होने लगी। लेकिन मीता और मैटी को नहीं। वह वहीं पहले जैसी खड़ी रहीं। वे जल्दी से घर के अंदर तो घुस गईं लेकिन दरवाज़े पर खड़ी मार्दी और लिसबेत को मुँह बनाते चिढ़ाती रहीं। उनके लाल बाल और झगड़ालू चेहरे देर तक बाहर झाँकते नज़र आए।

बीच में एक बार चिल्लाकर यह भी कहा, "है हिम्मत तो आओ हमारे पास यहाँ, दिखाते हैं तुमको!" ईडा ने गुस्से से तिलमिलाते कहा, "मैं कहती हूँ, ये दोनों लड़कियाँ एक दिन पुलिस थाने में बंद नज़र आएँगी!"

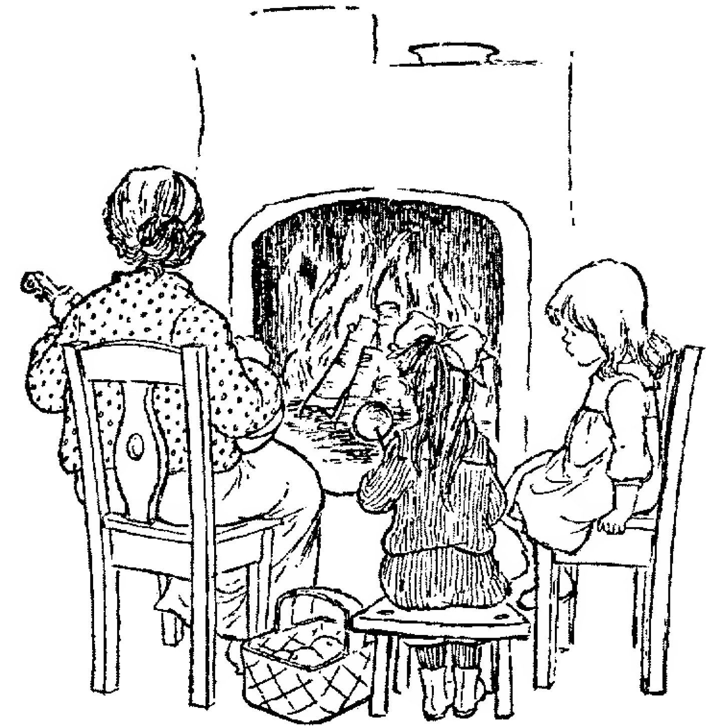
लड़ाई से थकान होती है। मार्दी और लिसबेत ईडा के घर में जा बैठीं। ईडा ने उन्हें डाँट पिलाई। मार्दी के सुंदर गहरे नीले कोट पर धूल, मिट्टी लगी हुई थी, नाक से बहा थोड़ा-सा खून होंठों के ऊपर सूख गया था। ईडा ने उसे नाक साफ करने के लिए गीला कपड़ा दिया और उसके कपड़े झटककर साफ कर दिए। उन्हें भुने हुए सेब खिलाकर अपनी गिटार पर एक गाना भी सुनाया।

दरअसल कई गाने सुनाए। लिसबेत और मार्दी हर बार एक और, एक और की माँग जो कर रही थीं। लिसबेत तो रोती नहीं थी, लेकिन दुख भरे गाने सुनने पर मार्दी के आँसू निकल आते थे।

कुछ देर बाद ईडा ने कहा, "अब भागो घर, नहीं तो मम्मी को फिक्र हो जाएगी।"

मम्मी के फिक्र की बात सुनकर मार्दी को याद आया! मटर! डॉक्टर! पता नहीं वे कैसे भूल गई थीं कि वे घर से किस काम से निकली थीं!

"चल लिसबेत, चल जल्दी से, हमें तो डॉक्टर के यहाँ जाना था।" ईडा देखती रह गई।



"मेरा यह मतलब नहीं था कि तुम्हें भगा दूँ, रुको तो सही!" लेकिन अब मार्दी और लिसबेत कैसे रुकतीं! जैसे-तैसे जूते पहनकर वे भागने लगीं। पाँच मिनट में वे डॉक्टर के पास पहुँच गईं। मार्दी की नाक से फिर खून आने लगा था। जब डॉक्टर ने उन्हें देखा, तो एक अजीब-सी सूरत नज़र आई।

"हे भगवान!" उनके मुँह से निकल गया। "कहीं तुम किसी से लड़-झगड़ तो नहीं आई हो?"

"क्या ऐसा लग रहा है?" मार्दी ने पूछा।

"हाँ!" डॉक्टर ने कहा। वे ठीक ही कह रहे थे। मार्दी की नाक सूजकर एक लाल आलू जैसी नज़र आ रही थी। डॉक्टर ने उन दोनों की तरफ देखते हुए कहा, "मुझे लगा था कि लिसबेत को कुछ हुआ

है, तुम्हारी मम्मी ने ऐसा ही तो कहा था!"

"क्या मम्मी ने फोन किया था?" मार्दी ने चिंता भरे स्वर में पूछा।

"हाँ, बस तीन बार!" डॉक्टर ने बताया।

"ओह!" मार्दी ने कहा।

"ओह!" लिसबेत ने कहा।

"वह फिक्र कर रही थीं कि तुम दोनों गईं कहाँ?" डॉक्टर ने कहा, "उनको लग रहा था कि ज़रूर कुछ हुआ है।"

"हुआ था," मार्दी झेंपकर बुदबुदाई।

डॉक्टर ने मार्दी को कुर्सी पर बिठाया और उसकी नाक में दो रुई के गोले फँसा दिए। उसे देखकर लिसबेत हँस-हँसकर गिरने लगी।

"तू पागल-सी लगती है, मार्दी!" उसने कहा, "किसी घोंघे जैसी जिसकी नाक के आगे दो सफेद सींग होते हैं।"

लेकिन लिसबेत की बोलती अचानक बंद हो गई। डॉक्टर ने एक डरावनी लगने वाली आँकड़ी उसकी नाक में डाली थी। उससे दर्द नहीं हुआ, पर गुदगुदी ज़रूर हो रही थी। पहले दाहिनी और फिर बाईं तरफ, और फिर दाहिनी तरफ!

"तुम्हें याद है, मटर किस तरफ डाला था?"

"इस तरफ!" लिसबेत ने दाईं तरफ इशारा किया।

डॉक्टर ने फिर एक बार, ज़्यादा गहराई से उसमें आँकड़ी डालकर देखा, उससे और भी गुदगुदी हुई।

"चू! अजीब सी बात है," उन्होंने कहा। "मुझे मटर कहीं नज़र नहीं आ रहा!"

"आएगा भी कैसे?" लिसबेत ने कहा, "वह तो मैटी से झगड़ा करते वक्त बाहर निकल आया था!"

उस रात देर तक मार्दी और लिसबेत को नींद नहीं आ रही थी। उस दिन इतना कुछ हुआ था कि दोनों को बिस्तर में लेटे-लेटे उस पर बात करनी थी।

घर आकर डाँट तो पड़ी थी, लेकिन ज़्यादा नहीं। मम्मी ने चैन की साँस ली थी, जब दोनों ठीक-ठाक घर लौटीं। उन्हें जल्दी-जल्दी खाना

खिलाकर सोने भेज दिया गया। लेकिन वे सोईं कहाँ, बत्ती बुझाने के बाद भी बातें करती रहीं।

"मार्दी मैं तेरे पलंग पर आ जाऊँ?" लिसबेत ने पूछा।

"हाँ, लेकिन मेरी नाक का ध्यान रखना।" मार्दी ने कहा।

मार्दी को लिसबेत का यों उसके पास सोना अच्छा लगता था। इससे उसे खुद के बड़े होने का और लिसबेत के छोटे होने का एक प्यारा-सा एहसास होता था।

"उस मैटी को तो एक पड़नी चाहिए!" लिसबेत ने कहा। आज उसने काफी नए शब्द सीखे थे।

"मीता को भी एक पड़नी चाहिए!" मार्दी बोली।

"बिल्कुल!" लिसबेत ने कहा। "क्या वह स्कूल में भी ऐसा ही पागलपन करती है?"

"इतना तो नहीं!" मार्दी ने कहा। "लेकिन वह है ही पागल!" कहकर मार्दी ने मीता के पागलपन के कुछ किस्से सुना डाले।

फिर भी उन्हें लगा कि जो गलत-सलत बातें मीता और मैटी ने की थीं, उसकी क्षमा भगवान से माँग लेनी चाहिए। अगर मीता पर भगवान को गुस्सा आया तो?

"भगवान, प्लीज़ मीता को माफ कर दो! सिर्फ एक बार!" लिसबेत ने कहा। मार्दी बोली, "भगवान, शायद वह अपनी बात का मतलब नहीं जानती। और हो सकता है उसने 'शैतान की बच्ची' न कहा हो। मुझे लगता है, उसने सिर्फ 'गंदी बच्ची' कहा था।" इसके बाद दोनों को अच्छा लगा। अब मीता को उन्होंने भगवान के गुस्से से बचा लिया था और वे चैन से सो सकती थीं।

उसके बाद लिसबेत अपने पलंग पर वापस चली गई। मार्दी ने अपनी नाक छूकर देखी, अब दर्द हल्का पड़ गया था, और सूजन कम हुई लगती थी।

"वैसे आज के दिन कितना कुछ हुआ। खैर, अच्छा ही था।" मार्दी ने कहा, "और सोचो तो, सिर्फ एक मटर की वजह से..."

"तो मैंने नाक में घुसाकर ठीक ही किया न?" लिसबेत ने कहा।



"ज़रा सोचो तो।"

"हाँ!" मार्दी ने कहा। "अगर एक और मटर दूसरी तरफ की नाक में फँसा लेती तो डबल मज़ा आता! है ना? हा! हा!"

लेकिन तब तक लिसबेत आधी सो गई थी। अब मज़ाक का उसका मूड नहीं था।

"पता है मार्दी," उसने नींद में कहा, "मेरे स्कूल में सभी बच्चों की एक ही नाक है!"

और फिर दोनों बच्चियाँ सो गईं।

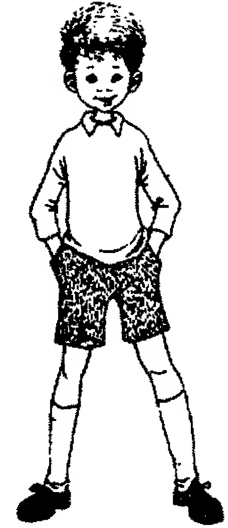


कार्लसन – छत पर रहने वाला

कार्लसन – छत पर रहने वाला

स्टॉकहोम शहर की एक बहुत ही साधारण सड़क पर, एक बहुत ही साधारण मकान में, एक बहुत ही साधारण परिवार रहा करता था, सुंदरसन नाम का। बहुत ही साधारण माँ-बाप के, बहुत ही साधारण तीन बच्चे थे – बासू, बार्बी और मीज।

"मैं उतना साधारण नहीं हूँ," मीज का कहना था। लेकिन यह सही नहीं था। वह आम बच्चों जैसा ही तो था। उसकी उम्र के कई बच्चे थे, भूरी आँखों वाले, छोटी-सी नाक वाले, कानों के पीछे मैल वाले और घुटनों पर फटा हुआ पैंट पहनने वाले। तो मीज एक बहुत ही साधारण बच्चा हुआ न, इसमें है कोई शक की बात?



मीज का बड़ा भाई, जिसे सब बासू कहते थे, फुटबॉल खेलता था और स्कूल में बहुत अच्छा नहीं था। यह भी एक साधारण बात थी। और उसकी बड़ी बहन बार्बी अपने बालों का पोनीटेल बनाती थी, सभी जवान साधारण लड़कियों की तरह।

इस घर में सिर्फ एक व्यक्ति था जो साधारण नहीं था और वह था कार्लसन, जो घर की छत पर रहता था। पता नहीं दुनिया में कहीं और ऐसा होता है या नहीं, लेकिन स्टॉकहोम में कार्लसन जैसा कोई नहीं था – छत पर एक छोटा-सा घर बनाकर रहने वाला।

यही तरीका था कार्लसन का। वह छोटा-सा था, गोल-मटोल था, उसकी सोच-समझ हमेशा पक्की रहती थी, और वह उड़ सकता था। विमान में या हैलिकॉप्टर में बैठकर तो कोई भी उड़ सकता है, लेकिन क्या कोई अपने आप उड़ सकता है? कार्लसन के पेट के बीचोंबीच एक बटन था जिसे दबाकर वह उड़ सकता था – पता है कैसे? बटन दबाते ही उसकी पीठ पर लगा हुआ छोटा-सा इंजन 'भर्रर' से शुरू हो जाता था और उसके गर्म होने तक पल-दो-पल खड़ा रहकर कार्लसन उड़ने लगता था। उड़ता भी था तो कैसे? बहुत शान से, सहजता से – देखने वालों को लगता कि कोई बैंक मैनेजर उड़ रहा है, अपनी पीठ पर उड़ने की मशीन लगाए।

छत पर उसका जो छोटा-सा घर था, उससे कार्लसन बहुत खुश



था। हर शाम वह अपने घर की सीढ़ियों पर बैठा आसमान के तारों को देखता रहता था। दरअसल, छत पर से आसमान के तारे इतने साफ नज़र आते थे, पता नहीं और लोग छतों पर क्यों नहीं रहते? खैर, इस घर के किराएदारों को भी तो कहाँ मालूम था कि छत पर रहा जा सकता है। कार्लसन का घर इमारत की चिमनी के पीछे जो छिपा हुआ था। सच्ची बात तो यह है कि ज़्यादातर लोग कार्लसन के घर जितने छोटे घरों को देखे बगैर ही आगे बढ़ जाते हैं। पर जब इस इमारत की सफाई करनेवाला एक आदमी छत पर चढ़ा तो वह भी कार्लसन का घर देखकर दंग रह गया।

"कितनी अजीब-सी बात है," उसने खुद से कहा, "यहाँ एक घर है! भला मानेगा कोई? लेकिन वाकई यह छोटा-सा घर पता नहीं कैसे यहाँ पहुँच गया है..."

बस इतना कहकर वह अपना काम करने लगा और चिमनी की साफ-सफाई में उस छोटे से घर की बात भूल गया। कार्लसन से जान-पहचान मीज के लिए बहुत अच्छी बात थी क्योंकि कार्लसन के आते ही मज़ेदार चहल-पहल शुरू हो जाती थी। कार्लसन को भी मीज के साथ दोस्ती अच्छी लगती थी क्योंकि सारा दिन अकेले ऐसे किसी घर में रहना, जिसके बारे में कोई सपने में भी न जानता हो, बहुत बोरियत वाला हो जाता। जब आप न जाने कितनी दूरी तय कर उड़ते हुए घर पहुँचते हैं, तो घर पर "है सन, उड़ उड़ सन, कार्लसन!" कहकर आप का स्वागत करनेवाला कोई हो तो अच्छा ही लगता है।

कार्लसन और मीज की मुलाकात कुछ ऐसे हुई।

वह एक आम दिन था, वही रोज़-रोज़ की बोरियत से भरा। वैसे मीज को ज़िंदगी से कोई शिकायत नहीं थी। अपने परिवार में सबसे छोटा होने की वजह से सब उसे बड़े लाड़-प्यार से बिगाड़ते रहते थे। लेकिन कुछ दिन ऐसे भी होते थे, जब हर बात गलत ही होती जाती थी। उस रोज़ उसे माँ से डाँट पड़ी थी क्योंकि उसकी पैंट में एक और छेद हो गया था। बार्बी, उसकी बहन ने फटकारते हुए उसे कहा था, "अपनी नाक तो साफ कर लिया कर!" और पापा ने स्कूल से सीधे

घर न लौटने पर उसकी अच्छे से खबर ली थी।

"ज़रूरत क्या है, सड़कों पर घूमने की?" पापा ने पूछा।

'सड़कों पर घूमने की...' अब पापा को क्या पता था कि मीज को एक कुत्ता मिला था। बड़ा प्यारा-सा, दोस्ती करने वाला कुत्ता। उसने मीज के पास आकर उसे सूँघा, और अपनी दुम ज़ोर-ज़ोर से हिलाई जैसे कह रहा हो, मुझे अपने साथ ले चलो।

अगर मीज का बस चलता तो उसे सीधे ही घर में दाखिला मिल जाता। लेकिन मीज के माँ-बाप को कुत्तों का कोई शौक नहीं था। पर न जाने कहाँ से एक औरत वहाँ आई, और रोब से कहने लगी, "रिकी! चलो घर।" और मीज समझ गया कि वह कुत्ता किसी और का है, वह उसका नहीं हो सकता।

"लगता है, मेरा कभी कोई कुत्ता हो नहीं सकता," मीज ने दुखी होकर कहा। पता नहीं कैसा दिन चढ़ा था कि सब गलत ही गलत होता जा रहा था। "माँ और पापा, आप एक-दूसरे के लिए हैं, बासू और बार्बी हमेशा एक-दूसरे के साथ रहते हैं, एक मैं ही हूँ जिसका कोई नहीं है।"

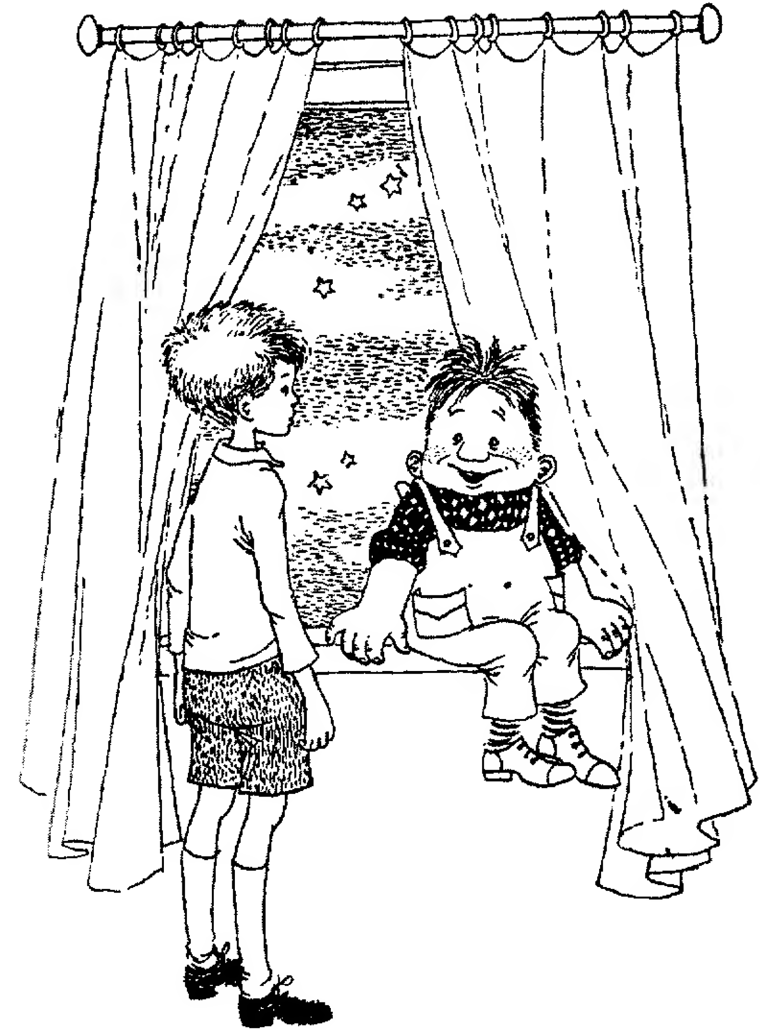
"लेकिन मीज, हम सब हैं ना, तेरे लिए!" उसकी माँ ने कहा था।

"नहीं, कोई मेरा नहीं है!" मीज ने कडुवाहट से कहा। उस वक्त उसे पूरी दुनिया में वाकई अकेला महसूस हो रहा था।

लेकिन हाँ, उसके पास एक चीज़ ज़रूर थी, उसका कमरा – इसलिए वह फिर वहीं चला गया।

वह बसंत ऋतु की एक सुहानी शाम थी, उसकी खिड़की खुली थी। सफेद पर्दे हवा के झोंकों से आगे-पीछे हो रहे थे, जैसे धीरे-धीरे आसमान में आने वाले सितारों को हाथ हिलाकर बुला रहे हों। खिड़की के पास जाकर मीज ने बाहर झाँककर देखा। उसे उस कुत्ते की याद आ रही थी। पता नहीं, वह क्या कर रहा होगा – शायद घर में अपनी टोकरी में जा बैठा होगा, और कोई और लड़का उसे प्यार से थपथपाता कह रहा होगा, "रिकी, यार, तेरे जैसा कोई नहीं है!"

मीज ने लंबी आह भरी। तभी उसे 'भर्रर' की आवाज़ कहीं पास



से सुनाई दी। आवाज़ जितनी करीब आ रही थी, उतनी बढ़ती जा रही थी, और अचानक एक छोटा, मोटा आदमी खिड़की से गुज़रता नज़र आया। वही तो कार्लसन था, छत पर रहनेवाला, लेकिन मीज को क्या पता?

कार्लसन ने मीज को अच्छी तरह देखा और उड़ता हुआ आगे बढ़ा। वह सामने वाली इमारत का चक्कर लगाकर, ऊपर चिमनी के पीछे से होकर, फिर मीज की खिड़की तक आ गया। अब उसकी उड़ान की रफ्तार और भी तेज़ हो गई थी और वह एक छोटे-से हेलिकॉप्टर जैसा लग रहा था। उसने वहाँ के कुछ चक्कर काटे। मीज चुपचाप खड़ा उसे घूर रहा था। उसके पेट में अब कुछ मज़ेदार गुड़गुड़ हो रही थी। और क्यों न हो, एक मोटा आदमी खिड़की से बाहर उड़ता दिखाई देना कोई आम बात थोड़े ही थी? आखिर कार्लसन ने उसकी खिड़की के पास अपनी रफ्तार धीमी कर दी और उससे पूछा, "क्या मैं अंदर आ जाऊँ?"

"हाँ, हाँ!" मीज ने कहा। "लेकिन यह तो बताओ कि इस तरह उड़ना क्या बड़ा मुश्किल है?"

"नहीं तो, मेरे लिए तो बिल्कुल नहीं," कार्लसन ने ऐंठकर कहा। "मेरे लिए यह कतई मुश्किल नहीं है। मैं दुनिया का सबसे बड़ा उड़ान करामाती हूँ। खैर, मैं यह तो नहीं कहूँगा कि यह किसी लल्लू-पंजू का काम है।"

मीज को लगा, शायद उसकी गिनती भी उन लल्लू-पंजुओं में होती होगी। उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह कार्लसन की करामातें देखा-देखी में करने की कोई कोशिश नहीं करेगा।

"क्या नाम है तुम्हारा?" कार्लसन ने पूछा।

"मीज," मीज ने बताया, "पूरा नाम है मीज सुंदरसन।"

"कितनी अलग होती हैं हमारी चीज़ें। मेरा नाम है कार्लसन — सिर्फ कार्लसन!" फिर दोनों ने हाथ मिलाया।

"तुम्हारी क्या उम्र है?" कार्लसन ने पूछा।

"मैं सात साल का हूँ," मीज बोला।



"बहुत अच्छा! बढ़ते रहो," कार्लसन ने कहा और अपना एक छोटा, मोटा पैर मीज की खिड़की की चौखट पर रखा और चढ़कर अंदर आ गया।"

"और तुम्हारी उम्र क्या है?" मीज ने पूछा। कार्लसन लगता तो बड़ा आदमी था पर उसकी हरकतें बच्चों जैसी थीं।

"मैं कितना बड़ा हूँ?" कार्लसन ने बताया, "मैं एक हट्टा-कट्टा जवान हूँ, बस इतना कहूँगा।"

मीज को उसकी बात समझ में नहीं आई। उसे लगा कुछ तो पता लगाना चाहिए...

"क्या मतलब है, हट्टा-कट्टा जवान होने का?"

"मतलब, मैं देखने में अच्छा हूँ, अक्लमंद हूँ और ताकतवाला भी।" कार्लसन ने खुशी से गुनगुनाते हुए कहा।

फिर उसने मीज की किताबों के शेल्फ पर रखा रेल का इंजन उठाया, भाप पर चलनेवाला।

"क्या हम इसे चला सकते हैं?" उसने पूछा।

"पापा मुझे अकेले इसे चलाने नहीं देते!" मीज ने कहा। "जब मैं इसे चलाऊँ, पापा या बासू का वहाँ होना ज़रूरी होता है।"

"पापा या बासू या कार्लसन छत पर रहने वाला!" कार्लसन ने कहा। "मैं दुनिया का सबसे बड़ा इंजन ड्राइवर हूँ, तुम अपने पापा को बता देना!"

यह कहकर उसने इंजन के पास रखी वह बोतल उठाई जिसमें इंजन चलाने का तेल भरा रखा था, और इंजन शुरू कर दिया। कार्लसन दुनिया का सबसे बड़ा इंजन ड्राइवर भले ही हो, पर उसने काफी सारा तेल ज़मीन पर गिरा दिया और जब इंजन शुरू हुआ तो उसके आसपास काफी जगह आग की लपटें लपलपाने लगीं। मीज चीखा और दूर भाग गया।

"अरे डरो नहीं!" कार्लसन ने उसको अपने मोटे हाथ से पीछे करते हुए कहा।

लेकिन तेल की वजह से लगी आग को देखकर वह चुप भी कैसे बैठ सकता था। पास में पड़ी चिंदियों से उसने आग की लपटों को फटकारना शुरू किया जो थीं तो छोटी-छोटी, लेकिन बड़े मज़े से नाच रही थीं। जल्दी ही आग तो बुझ गई पर बुक शेल्फ पर उसका काला-भद्दा निशान ज़रूर रह गया।

"यह देखो, क्या हो गया है मेरे शेल्फ पर?" मीज ने परेशान होकर कहा। "पता नहीं माँ क्या कहेंगी?"

"अरे यह तो मामूली है!" कार्लसन ने कहा। "हो भी गए एक या दो धब्बे तो क्या हुआ, कह देना तुम माँ से!"

कहकर जब कार्लसन उस रेल के इंजन के पास धम्म से बैठ गया तो उसकी आँखें चमक रही थीं।

"यह किसी भी वक्त भक्-भक् करता दौड़ने लगेगा," उसने कहा।

और हुआ भी ऐसा ही! फट् फट् करता इंजन इधर-उधर दौड़ने लगा। वह बहुत शानदार इंजन था। उसे दौड़ाने वाला कार्लसन इतना जोशीला और खुश नज़र आ रहा था, जैसे यह इंजन उसी का बनाया हुआ हो।

"मैं ज़रा इसके पुर्ज़े देख लूँ," कार्लसन ने कहा और इंजन को घुमा-फिराकर देखने लगा। "अगर अपने इंजन की अच्छी तरह छान-बीन कर लो तो फिर दुर्घटना का खतरा नहीं रहता।"

"फट्-फट-फट्," इंजन बोला। फिर वह तेज़ी से कहने लगा, "फट्-फट-फट-फट्!" आखिर में तो इतनी तेज़ी से बोलने लगा कि जैसे वह कुलाँचें भरता दौड़ रहा हो। कार्लसन की आँखें चुँधिया गईं। अब मीज के मन में धब्बों को लेकर जो चिंता छाई हुई थी, वह हटने लगी। वह अब अपने इंजन और कार्लसन से बहुत खुश था – कार्लसन, दुनिया का सबसे बढ़िया इंजन ड्राइवर, जिसने इंजन की पूरी छान-बीन कर डाली थी।

"हा! हा! मीज," कार्लसन ने कहा। "फट् फट् फट्! इंजन की आवाज़ हो तो ऐसी! दुनिया के सबसे बड़े इंजन ड्राइ..."

उसकी बात पूरी होने से पहले ही "धड़ाम् धम" की आवाज़ आई। इंजन के टुकड़े-टुकड़े होकर कमरे में फैल चुके थे।

"यह तो फट गया," कार्लसन ने खुशी-खुशी कहा, मानो इंजन से उसने कोई करामात दिखाई हो। "वाकई फट गया यह! क्या धमाका हुआ – है ना?"

लेकिन मीज को इसकी कोई खुशी नहीं हुई। उसकी आँखों में आँसू भर आए थे।

"मेरा इंजन टूट गया!" उसने कहा।

"ओह, तो क्या हुआ?" कार्लसन ने अपना मोटा हाथ हवा में झाड़कर कहा, "तुम्हारे लिए नया ले आएँगे।"

"कहाँ से?" मीज ने पूछा।

"मैं जहाँ रहता हूँ, वहाँ ऐसे कई हज़ार इंजन हैं।"

"कहाँ रहते हो तुम?" मीज ने पूछा।

"वहाँ ऊपर। मेरा घर छत पर है।"

"क्या तुम्हारा घर सचमुच छत पर है? और उसमें हज़ारों इंजन भरे पड़े हैं?"

"कुछ सौ तो ज़रूर होंगे!" कार्लसन ने कहा।

"ओह, तब तो मुझे तुम्हारा घर ज़रूर देखना चाहिए!" मीज ने कहा। उसे यकीन ही नहीं आ रहा था कि छत पर कोई छोटा-सा घर हो सकता है, जहाँ कार्लसन रहता है।

"सोचो तो, एक घर रेल के इंजनों से भरा!" मीज ने कहा। "कई सौ इंजन!"

"खैर, मैंने गिने तो नहीं हैं, लेकिन कई दर्ज़न होंगे ज़रूर," कार्लसन ने कहा। "कभी-कभार कोई फट जाता है, फिर भी कई सारे बचे रहते हैं।"

"तो क्या उनमें से एक मुझे दे दोगे?"

"क्यों नहीं!"

"अभी?" मीज ने पूछा।

"म् म् म्! मुझे ज़रा-सा आसपास देखना होगा," कार्लसन ने कहा। "सबके पुर्ज़े ठीक-ठाक कर लूँ, तब दे दूँगा। सब्र करो। तुम्हें मिल जाएगा एक इंजन..."

मीज टूटे इंजन के टुकड़े इकट्ठे करने लगा।

"पता नहीं, पापा क्या कहेंगे?" उसने फिक्रमंद होकर कहा।

आश्चर्य में भौहें ऊपर उठाते हुए कार्लसन ने पूछा, "इस इंजन के बारे में?" फिर वह बोला, "कह देना उनसे कि यह तो ज़रा-सी बात है। अगर मेरे पास वक्त होता तो रुककर मैं ही कहता उनसे। लेकिन अब मुझे घर जाकर कुछ काम निबटाने हैं।"

"फिक्र न करो, सब ठीक हो जाएगा!" कार्लसन ने अपने पेट पर लगा बटन दबाकर कहा। इंजन खाँसने लगा, और कार्लसन चुपचाप खड़ा रहा, उसके शुरू होने तक। फिर वह उड़ा और उड़ते हुए उसने कमरे के दो चक्कर लगाए।

"इंजन धक् धक् कर रहा है। गराज में जाकर मुझे उसमें तेल-वेल डालना होगा। यह सब मुझी को करना होता है!" उसने कहा। "दुनिया का सबसे बड़ा मैकेनिक जो हूँ... लेकिन मेरे पास वक्त कहाँ है। मैं खुद ही गराज चला जाता हूँ।"

मीज को लगा यही सही होगा।

कार्लसन खिड़की से बाहर निकल गया। अब सिर्फ उसका गोल सिर सितारों भरे आसमान में आगे बढ़ता हुआ नज़र आ रहा था।

"बाय-बाय मीज!" उसने कहा। कार्लसन चला गया था।

कार्लसन की मीनार

"मैंने कहा तो सही कि उसका नाम कार्लसन है और वह छत पर रहता है," मीज ने कहा। "इसमें इतनी अजीब-सी क्या बात है? लोग जहाँ चाहें रह सकते हैं, है ना?"

"मीज, पागलों की तरह बात न करो," उसकी माँ ने कहा। "तुमने तो हमें डरा ही दिया! क्या तुम्हें इतनी भी समझ नहीं है कि जब वह इंजन फटा तो तुम्हारी जान को खतरा था।"

"हाँ, लेकिन कार्लसन तो दुनिया का सबसे बढ़िया इंजन ड्राइवर है," मीज ने गंभीर होकर माँ से कहा। वह उन्हें बताना चाहता था कि जब दुनिया का सबसे बड़ा इंजन ड्राइवर आपका इंजन चलाना चाहता है, आप उसे कैसे मना कर सकते हैं?

"जो भी गलती तुमसे हो गई है, उसकी ज़िम्मेवारी लेना सीखो मीज!" पापा ने कहा। "कार्लसन नाम का कोई आदमी छत पर नहीं रहता, बेकार की बात है।"

"ऐसा आदमी है!" मीज ने कहा।

"और वह उड़ भी सकता है, है ना?" बासू ने चिढ़ाने के अंदाज़ में कहा।

"हाँ, यह सच है। वह उड़ सकता है," मीज ने कहा। "शायद वह वापस आएगा, तो ज़रूर देख लेना।"

"क्या पता, वह कल ही आ जाए!" बार्बी ने कहा। "अगर तुम मुझे उससे मिला दो तो मैं तुम्हें दस क्रोनर दूँगी।"

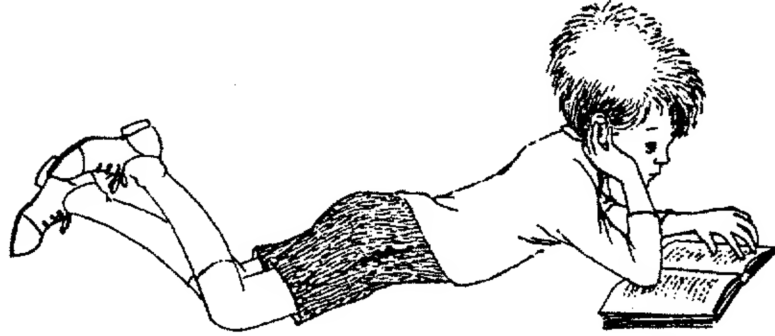
"कल नहीं आ पाएगा वह," मीज ने कहा। "क्योंकि उसे गराज जाकर इंजन का तेल-पानी बदलवाना है।"

"तेल-पानी की ज़रूरत तो तुम्हारे दिमाग को है, मीज!" माँ ने कहा। "देखो तो, बुक-शेल्फ की क्या हालत बना दी है!"

"कार्लसन कहता है, यह तो कोई बात ही नहीं है," मीज ने बिल्कुल कार्लसन की तरह कहा। उसे लगा, इससे माँ मान जाएँगी कि किताबों की शेल्फ पर धब्बे लगना जैसी बातें मायने नहीं रखतीं। लेकिन उसकी बात का माँ पर कोई असर नहीं हुआ।

"अच्छा, तो ऊपर से यह भी कहता है कार्लसन!" माँ ने कहा। "जाकर कह दो उसे कि हमारे घर में अगर फिर कदम रखा तो मैं उसकी अच्छी मरम्मत करूँगी!"

मीज की बोलती बंद हो गई। उसे यह अच्छा नहीं लगा कि माँ के मुँह से दुनिया के सबसे बढ़िया ड्राइवर के लिए ऐसी बात निकले। लेकिन आज के दिन शायद यही होना था, और क्या! सब कुछ उलटा-पुलटा ही तो हो रहा था।



अचानक मीज को कार्लसन की बहुत याद आने लगी। कार्लसन, जो इतना खुशमिज़ाज और हँसमुख था। कोई दुर्घटना हो भी जाए तो उसे फिक्र नहीं होती थी – कोई बात नहीं कहकर मन से झटक देता था। मीज को कार्लसन की वाकई बहुत याद आ रही थी। साथ ही, उसे फिक्र भी हो रही थी, क्या होगा अगर कार्लसन कभी लौटकर न आए?

"फिक्र मत कर, सब ठीक हो जाएगा," मीज ने खुद को समझाया, बिल्कुल वैसे जैसे कार्लसन कहता था। और फिर कार्लसन ने वादा भी तो किया था!

यह तो बात साफ थी कि कार्लसन भरोसा करने लायक इंसान था। बीच में एक-दो दिन निकल गए। मीज अपने कमरे में फ़र्श पर पेट के बल लेटा कुछ पढ़ रहा था, जब उसे भर्रर की जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी। वह कार्लसन ही था; एक भँवरे की तरह भर्रर की आवाज़ के साथ वह खिड़की से अंदर आ गया। दीवारों के चक्कर काटते हुए वह खुशी से कुछ गुनगुना रहा था। बीच-बीच में तस्वीरों को देखने खड़ा हो जाता था। तब वह गर्दन थोड़ी-सी मोड़कर आँखें फाड़कर उन्हें गौर से देखता नज़र आता था।



"सुंदर हैं ये तस्वीरें," उसने कहा। "बहुत ही सुंदर हैं! लेकिन मेरे घर में जो हैं, वे और भी सुंदर हैं।" मीज उठ बैठा और उत्साहित होकर वहाँ खड़ा हो गया था। कार्लसन के लौट आने से उसे बेहद खुशी हो रही थी।

"क्या तुम्हारे घर में भी तस्वीरें हैं?" उसने कार्लसन से पूछा।

"हज़ारों!" कार्लसन ने कहा। "अपने खाली समय में मैं तस्वीरें

और चित्र बनाता हूँ। मैं मुर्गे, पंछी और ऐसी ही कुछ अच्छी-अच्छी चीज़ें बनाता हूँ। शायद मेरे जैसे मुर्गियों के चित्र बनाने वाला दुनिया में और कोई न होगा!'' कार्लसन ने बड़े सलीके से मीज के पास उतरते हुए कहा।

''सच?'' मीज ने पूछा। ''क्या मैं तुम्हारे घर आकर तुम्हारे रेल इंजन और तस्वीरें देख सकता हूँ?''

''बिल्कुल!'' कार्लसन ने कहा। ''तुम्हारा स्वागत है। आज नहीं लेकिन ज़रूर किसी दिन!''

''जल्दी ही!'' मीज ने मनुहार की।

''सब्र करो, आराम से करेंगे यह सब!'' कार्लसन ने कहा। ''पहले मैं ज़रा साफ-सफाई तो कर लूँ, उसमें देर ही क्या लगनी है। दुनिया का सबसे बढ़िया सफाई करने वाला पता है कौन है?'' कार्लसन ने झेंपते हुए कहा।

''शायद तुम...'' मीज ने अंदाज़ा लगाया।

''शायद?'' कार्लसन चीखा! ''मतलब क्या है तुम्हारा... इसमें कोई शक की बात नहीं है कि कार्लसन ही दुनिया का सबसे बड़ा सफाई कर्मचारी है। यह तो जग भर में मानी हुई बात है।''

कार्लसन जैसा आदमी दुनिया भर में नहीं है, इस पर मीज आराम से यकीन कर लेने को तैयार था। खेलने के लिए उसके जैसा दोस्त मिल नहीं सकता था! उसके और दो दोस्त क्रिस और सुज़न अच्छे तो थे पर वे छत पर रहने वाले कार्लसन जितने दिलचस्प नहीं थे।

अगली बार जब स्कूल के बाद क्रिस और सुज़न खेलने आएँगे तो उन्हें कार्लसन के बारे में बताने का निर्णय मीज ने मन ही मन ले डाला था। क्रिस के पास एक कुत्ता था जेफी, वह उसके बारे में बातें करता रहता था। उसे लेकर मीज को काफी देर तक क्रिस से ईर्ष्या होती रहती थी।

''अगर वह कल भी अपनी जेफी की कहानियाँ सुनाने लगता है तो मैं कार्लसन के बारे में बताकर उसे चुप कर दूँगा,'' मीज ने सोच रखा

था। ''आखिर, छत पर रहनेवाले कार्लसन की तुलना में जेफी है क्या चीज़? मैं कह दूँगा उसे!'' लेकिन मीज की सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि उसका अपना भी एक कुत्ता हो।

कार्लसन ने उसके विचारों में बाधा डाल दी।

''और थोड़ी मौज-मस्ती करने का मेरा मन हो रहा है। क्या तुम्हारे पास कोई और भापवाला इंजन नहीं है, चलाने को?'' उसने इर्द-गिर्द देखते हुए मीज से पूछा।

मीज ने सिर हिलाकर इंकार किया। भाप का इंजन! हाँ, अब कार्लसन सामने था, माँ और पापा को बुलाकर दिखाना चाहिए कि वह सचमुच है। बासू और बार्बी को भी देख लेना चाहिए अगर वे घर पर हुए तो!

''आकर मेरे माँ-बाप से मिलना चाहोगे?'' मीज ने पूछा।

''हाँ हाँ, क्यों नहीं!'' कार्लसन ने कहा। ''मुझ जैसे सजीले और अक्लमंद आदमी से मिलकर उन्हें ज़रूर खुशी ही होगी।'' वहीं पर शान से चहलकदमी करता कार्लसन इस खयाल से बहुत खुश नज़र आ रहा था।

तभी मीज को रसोई से कोफ्तों की खुशबू आई। खाने का वक्त हो रहा था। उसने सोचा खाना-वाना हो जाए तो उसके बाद कार्लसन को माँ और पापा से मिलवाने ले जाता हूँ। जब माँ रसोई में कोई खास चीज़ बना रही हों तो उन्हें बीच-बीच में तंग नहीं करना चाहिए, यह तो वह जानता ही था। और क्या पता शायद वे कार्लसन से शेल्फ पर पड़े निशानों के बारे में या फटे इंजन के बारे में बात करना शुरू कर दें। चाहे जो भी हो, वह तो होने नहीं देना है! खाना खाते-खाते शायद मीज को इतना वक्त मिल जाए कि बड़ी चतुराई से वह अपने माँ और पापा को समझाए कि दुनिया के सबसे बड़े इंजन ड्राइवर से ज़रा अदब और सूझबूझ से पेश आना चाहिए। इसके लिए उसे बस थोड़ा-सा वक्त चाहिए था। खाने के समय वह मिल सकता था। उसके बाद वह पूरे परिवार को अपने कमरे में बुलाकर कार्लसन से मिला सकता था।

''इनसे मिलिए, यह हैं कार्लसन – छत पर रहनेवाले!'' वह कहेगा।

और वे लोग तो बस दंग रह जाएँगे! उनके अचरज भरे चेहरे देखने में कितना मज़ा आएगा।

कार्लसन ने अब चहलकदमी रोक दी थी। अब वह एक जगह खड़ा किसी चिड़िया की तरह चहक रहा था।

"कोफ्ते!" उसने कहा, "मुझे बेहद पसंद हैं, कोफ्ते।"

मीज को शर्म-सी लगी। इस तरह की बात का जवाब क्या होना चाहिए?

"आओ, हमारे साथ खाना खाओ!" कहना तो उसे यही चाहिए था। लेकिन कार्लसन को बस यों ही नहीं बुलाया जा सकता था, खाने के लिए। क्रिस या सुज़न की बात अलग थी। वह उन्हें किसी भी वक्त बुलाकर कह सकता था, चाहे परिवार बिल्कुल खाने की मेज़ पर पहुँच चुका हो, कि "माँ, क्या सुज़न और क्रिस भी आज हमारे यहाँ खाना खा सकते हैं?"

पर कार्लसन की बात और थी। वह उसके परिवार के लिए बिल्कुल अनजान, एक गोल-मटोल, छोटा-सा आदमी था, जिसने उसका इंजन तोड़ दिया था और किताबों के शेल्फ पर निशान बना दिए थे... नहीं, परिवार को उससे नहीं मिलाया जा सकता था।

लेकिन उसने तो अभी-अभी कहा था कि उसे कोफ्ते बेहद पसंद हैं। अब मीज के लिए ज़रूरी हो गया था कि किसी तरह वह उसे कोफ्ते खिला दे, वर्ना कार्लसन मीज से दोस्ती तोड़ देगा। कितना कुछ निर्भर करता था, कोफ्तों पर!

"एक मिनिट रुक जाओ!" मीज ने कहा। "मैं रसोई में जाकर तुम्हारे लिए कोफ्ते ले आता हूँ।"

कार्लसन ने खुशी से सिर हिलाया।

"अच्छा," उसने कहा, "बहुत अच्छा! लेकिन जल्दी! सिर्फ तस्वीरें देखकर तो किसी का पेट नहीं भरता! खासकर जब उनमें मुर्गियाँ न हों।"

मीज भागकर रसोई में चला गया। माँ पूरी तैयारी में वहाँ खड़ी कोफ्ते तल रही थीं। उनके सामने कड़ाही में तेल खौल रहा था जिसमें गर्मागर्म कोफ्ते नाच रहे थे।

"मीज!" उन्होंने कहा। "अभी लगा रही हूँ खाना, भूख लगी है ना?"

"माँ, क्या मुझे दो-तीन कोफ्ते पहले दे सकती हो? अपने कमरे में ले जाऊँगा।" मीज ने माँ को मनाने की कोशिश की।

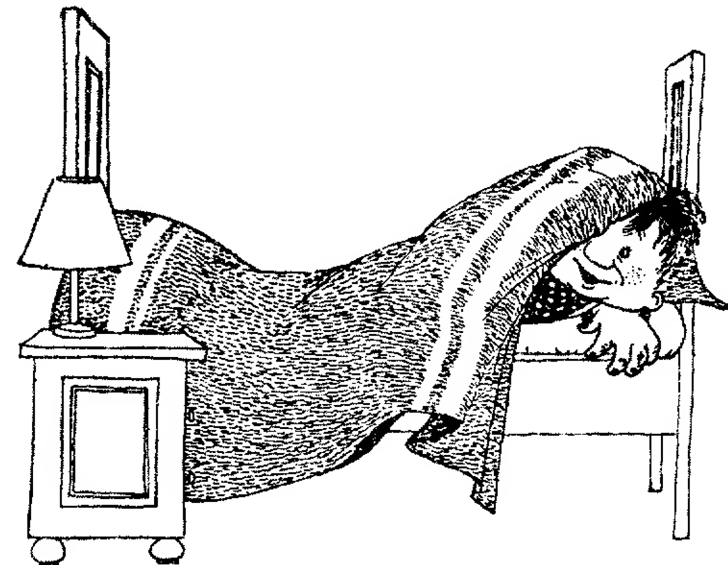
"लेकिन राजा बेटा, मैंने कहा तो सही कि हम बस खाना खाने ही जा रहे हैं!" माँ बोली।

"फिर भी!" मीज ने ज़िद की। "वजह, मैं खाने के बाद बताऊँगा।"

"ठीक है, यह लो!" कहकर माँ ने एक प्लेट में 5-6 कोफ्ते डालकर उसे पकड़ाए। मीज ने दोनों हाथों से प्लेट ध्यान से पकड़ी और जल्दी-जल्दी अपने कमरे में लौटा।

"यह लो, कार्लसन!" कहते-कहते वह कमरे में घुसा। पर कार्लसन कहाँ था! उसका तो कोई अता-पता नहीं था। मीज उसके लिए कोफ्ते ले आया और कार्लसन है कि गायब ही हो गया। अब मीज बहुत दुखी हो गया, आसपास सब कुछ निराशाजनक लगने लगा।

"चला गया..." उसने अपने आप से कहा। "लेकिन..."



"चू चू चू!" उसने किसी को कहते हुए सुना। कोई था जो अजीब-सी आवाज़ें मुँह से निकाल रहा था। "चू चू चू!" मीज ने हर तरफ देखा। उसके पलंग के एक तरफ, कंबल के नीचे एक बड़ी-सी पोटली नज़र आ रही थी। अच्छा, तो यह आवाज़ वहाँ से आ रही थी। एकाध मिनट में कार्लसन का गोल-मटोल चेहरा कंबल के नीचे से बाहर झाँकता नज़र आया।

"ही! ही!" कार्लसन ने हँसते हुए कहा। "चला गया... तुमने यही सोचा ना, वह चला गया, यही ना... ही ही! लेकिन मैं तो गया नहीं, मैं बस नाटक कर रहा था।"

तभी उसकी नज़र कोफ्तों पर पड़ी। उसने अपने पेट पर लगा बटन दबाया, इंजन भर्राने लगा। फिर उसने एक कोफ्ता उठाकर मुँह में ठूँसा और सीधा ऊपर उड़ा, कमरे की बत्ती का चक्कर काटा, बड़े मज़े से कोफ्ता खाते हुए।

"बढ़िया!" उसने कहा। "कितना अच्छा बना है! यह खाकर तुम्हें ज़रूर लगेगा कि दुनिया के सबसे अच्छे रसोइये ने इसे बनाया है, लेकिन ऐसा कहाँ हुआ है!" कार्लसन ने कहा और झपट्टा मारकर उसने प्लेट से एक और कोफ्ता उठाया।

तभी रसोई से आवाज़ आईः "मीज, चलो खाना खाएँ। हाथ धोकर जल्दी से आ जाओ!"

"सुनो, थोड़ी देर के लिए मुझे जाना होगा," कहकर मीज ने प्लेट नीचे रख दी। "लेकिन मैं जल्दी ही वापस लौटूँगा। मेरे लिए रुकोगे ना?"

"हाँ, लेकिन तब तक मैं करूँगा क्या?" कार्लसन ने धड़ाम से नीचे कूदकर, मीज के साथ खड़े होकर पूछा। "मुझे मन बहलाने के लिए कुछ तो चाहिए। क्या तुम्हारे पास कोई और इंजन-विंजन नहीं है?"

"नहीं!" मीज ने कहा। "लेकिन तुम मेरा मेकैनो ले सकते हो।"

"ठीक है, तो आ जाना जल्दी से," कार्लसन बोला।

मीज ने खिलौनों की अलमारी से मेकैनो निकाला। वह सचमुच बड़ा अच्छा मेकैनो था। उसमें तरह-तरह के टुकड़े थे और उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़कर बहुत-सी चीज़ें बनाई जा सकती थीं।

"यह लो, इससे तुम गाड़ियाँ, बसें और इमारतें बना सकते हो और..."

"अब दुनिया के सबसे बढ़िया मेकैनिक को क्या बताना कि तुम क्या बना सकते हो और क्या नहीं!" कार्लसन ने कहा और फुर्ती से एक और कोफ्ता मुँह में ठूँसा। फिर वह मेकैनो की तरह मुड़ा।

"देखते हैं... देखते हैं कि क्या हो सकता है!" उसने मेकैनो का डिब्बा ज़मीन पर उलटते हुए कहा।

मीज को खाने के लिए जाना था, वर्ना वह वहीं रुककर देखना चाहता था कि दुनिया का सबसे बड़ा मेकैनिक क्या करता है।

जाते-जाते, उसने पीछे मुड़कर देखा तो कार्लसन ज़मीन पर चौकड़ी जमाकर बैठा था और गुनगुना रहा थाः "हे है हे... अब देखो मैं क्या करता हूँ... इतना होशियार... इतना ताकतवर... हो... होहम्म... हम्म!"

गाते-गाते, उसने एक और कोफ्ता गटक डाला था।



माँ, पापा, बासू और बार्बी खाने की मेज़ पर बैठे मीज का इंतज़ार कर रहे थे। मीज हाथ गोद में रखे अपनी जगह बैठ गया।

"मुझे कुछ कहना है माँ, और आपसे भी पापा, एक वादा चाहिए आपसे।" उसने कहा।

"कैसा वादा, बेटे?" माँ ने पूछा।

"पहले हाँ तो करो," मीज ने कहा।

पापा को बात पूरी जाने बगैर यों ही वादा करना मंज़ूर नहीं था।

"ऐसा कहकर अगर तुमने कुत्ता माँग लिया तो!" उन्होंने कहा।

"नहीं, कुत्ते वाली बात नहीं है," मीज ने कहा। "कुत्ता दिलाने का वादा आप मुझसे बाद में कभी कर सकते हैं। यह कुछ और है, और बुरा बिल्कुल नहीं है। वादा करें कि आप पूरा करेंगे!"

"अच्छा, वादा करते हैं!" माँ ने कहा।

"बात यह है कि छत पर रहने वाले कार्लसन को आप टूटे इंजन के बारे में कुछ नहीं कहेंगे!" मीज ने चैन की साँस लेते हुए कहा।

"हा!" बार्बी चहकी, "जब इस कार्लसन से कभी मुलाकात ही नहीं होनी तो उससे कहेंगे क्या?"

"आप सभी उससे मिलने वाले हैं," मीज ने विजेता की मुस्कान बिखेरते हुए कहा, "खाने के बाद। अभी वह मेरे कमरे में बैठा है।"

"लगता है कोफ्ता मेरे गले में फँस गया है," बासू ने कहा।

"तुम कह रहे हो कार्लसन तुम्हारे कमरे में है?" माँ ने पूछा।

"हाँ, बिल्कुल!"

मीज के लिए यह विजय की घड़ी थी। जल्दी से खाना खत्म हो तो उसके कमरे में जाकर वे सभी...

माँ मुस्काई।

"बड़ा मज़ा आएगा, तुम्हारे इस कार्लसन से मिलने में!" उन्होंने कहा। "कार्लसन ने भी यही कहा," मीज ने उन्हें आश्वस्त करते हुए बताया।

फल खाने के बाद, माँ मेज़ से उठीं। वह महत्वपूर्ण घड़ी आ गई थी।

"आओ सब!" मीज ने कहा।

"बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं है," बार्बी ने कहा, "तुम्हारे कार्लसन से मिलने के लिए मैं बेताब हूँ।"

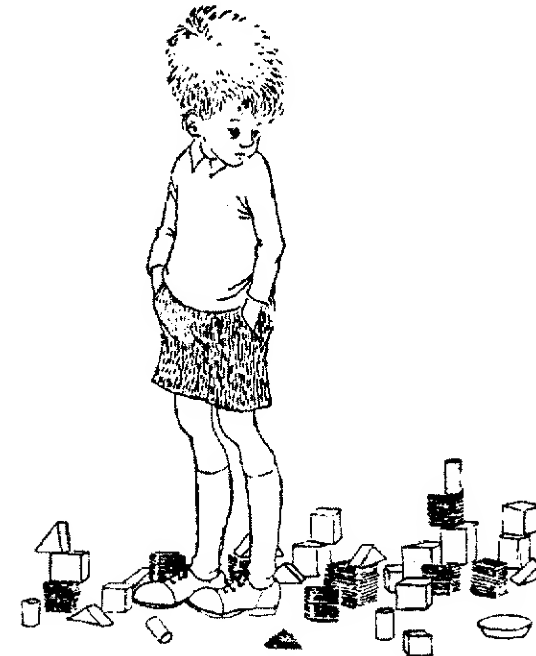
मीज आगे बढ़ा।

"याद है ना अपना वादा," उसने कहा, "इंजन के बारे में कोई उसे कुछ नहीं कहेगा!"

वे सब अंदर गए तो कमरा खाली था।

कार्लसन चला गया था। वह वहाँ नहीं था। मीज के बिछौने से वह ऊपर उठी हुई पोटली गायब थी।

ज़मीन पर मेकैनो की ईंटों से बना एक मीनार खड़ा था। बाकी सब चीज़ें अस्त-व्यस्त ज़मीन पर फैली हुई थीं। कार्लसन तो ज़रूर कई तरह की चीज़ें बना सकता था पर उसने एक के ऊपर एक ईंट रखकर सिर्फ एक पतली लंबी मीनार बनाई थी। उस पर एक चीज़ सजाकर रखी थी,



जैसे मीनार का गुंबद हो। वह गुंबद कोफ्ते से बनाया हुआ था।

उसके बाद मीज की हालत काफी खराब रही। मीज की माँ को यह कतई मंज़ूर नहीं था कि उनके कोफ्तों का उपयोग चीज़ों की सजावट में हो। उन्होंने तो यही सोचा कि मीनार को इस तरह सजाना मीज ही का काम था।

''छत पर रहने वाला कार्लसन...'' मीज ने शुरू ही किया था कि पापा सख्ती से बोलेः ''अब हमें इस कार्लसन के बारे में और कुछ नहीं सुनना! बेवकूफी की भी कोई हद होती है।''

बासू और बार्बी खिलखिलाकर हँस दिए।

''वह कार्लसन!'' बासू ने कहा, ''जब उसे पता था कि हम उसे मिलने आ रहे हैं, भाग क्यों गया?''

मीज ने चुपचाप वह कोफ्ता उठाकर खा लिया और मेकैनो हटाकर अपनी जगह रख दिया। इस वक्त तो कार्लसन के बारे में कुछ कहना ठीक न होता लेकिन अब कमरा खाली लग रहा था, बहुत ही खाली।

''चलो, अब नीचे चलकर गर्म दूध पीते हैं, और कार्लसन को दिमाग से हटा देते हैं,'' पापा ने मीज का गाल सहलाते हुए कहा।

बैठक के कमरे में एक जगह आग जली होती थी और पूरा परिवार उसके सामने बैठकर दूध या कॉफी पीता था। वह बसंत ऋतु की शुरुआत थी। बाहर सड़क किनारे चट्टानों की बगल में लगे पौधों में हरे पत्ते नज़र आने लगे थे। मीज को दूध नापसंद ही सही, पर अपने माँ-बाप और भाई-बहन के साथ यों बैठना अच्छा लगता था।



''माँ, अपनी आँखें बंद कर लो,'' मीज ने माँ से कहा। वह अभी-अभी कॉफी और दूध लिए कमरे में दाखिल हुई थीं।

''क्यों?''

''क्योंकि तुम्हें मेरा चीनी खाना पसंद नहीं है और मैं अभी थोड़ी-सी खाना चाहता हूँ।''

उसे मन हल्का करने के लिए कुछ चाहिए था -- अब तक उसे समझ नहीं आ रहा था कि कार्लसन अचानक चला क्यों गया... लोगों को ऐसा तो नहीं करना चाहिए – एकदम गायब हो जाना, बिना वजह बताए, और सिर्फ एक कोफ्ता पीछे छोड़कर।

मीज आग के पास अपनी प्रिय जगह पर बैठा था, इससे उसे बड़ी अच्छी गर्मी मिलती थी। यहाँ बैठकर दूध पीने जैसी कोई बात जैसे दुनिया में थी ही नहीं। इस वक्त, माँ और पापा चैन से बैठे होते थे, जैसे दिन में कभी नज़र नहीं आते थे। एक दूसरे की खिंचाई में लगे, बासू और बार्बी भी अपने स्कूलों को लेकर पटर-पटर करते रहते थे, जिसे सुनने में मीज को मज़ा आता था। मीज का अपना स्कूल छोटा-सा था; उन दोनों का स्कूल बड़ा था और शायद ज़्यादा दिलचस्प भी।

मीज को अपने स्कूल में क्या हुआ, यह बताना अच्छा लगता था लेकिन वह सुनने में सिर्फ माँ और पापा की दिलचस्पी थी। बासू और बार्बी मज़ाक उड़ाते थे, इसलिए मीज उनसे दूर ही रहता था। खैर, उसका मज़ाक बनाना भी बासू और बार्बी के लिए आसान नहीं था, मीज भी हमले का जवाब देने में कोई कम नहीं था। जब बासू जैसा बड़ा भाई हो और बार्बी जैसी बड़ी बहन, तो आप को धाकड़ होना ही पड़ता है।

''मीज, आज तुम्हारी पढ़ाई कैसी रही?''

अब इस तरह की बातें मीज को कतई पसंद नहीं थीं। लेकिन चीनी खाने पर उन्होंने आज कोई रोक-टोक नहीं लगाई थी, इसलिए उसने उनके सवाल का सही जवाब देना मुनासिब समझा।

''बढ़िया रही! मेरी समझ में सब कुछ आ गया है।''

दरअसल, उसके मन पर तो कार्लसन छाया हुआ था। जब कार्लसन बगैर कुछ बताए अचानक गायब हो जाए, तो वह बात अनदेखी करके

पढ़ाई जैसी चीज़ की तरफ ध्यान देना कैसे संभव था, यह लोग समझते क्यों नहीं! जब सब मिलकर आग सेंक रहे हों, वह पढ़ाई जैसे विषय पर बात करने का समय तो नहीं होता!

"आज हमें हमारी प्राकृतिक दुनिया के बारे में पढ़ाया," मीज ने कहा। उसने एक और चम्मच चीनी खाई और फिर कार्लसन के बारे में सोचने लगा। वे सब उसके इर्द-गिर्द ज़माने भर की बातें कर रहे थे और मीज का मन कार्लसन के बारे में ही सोच रहा था – पता नहीं अब वह दोबारा कब दिखाई दे।

बार्बी ने उसे उसके खयालों की दुनिया से जगाया।

"मीज, सुनो! तुम्हें पाँच क्रोनर चाहिए?"

धीरे-धीरे मीज की समझ में बातें आ रही थीं। पाँच क्रोनर कमाने पर उसे क्या एतराज़ होना था, लेकिन उसके एवज़ में बार्बी चाहती क्या थी, यह जानना ज़रूरी था।

"पाँच क्रोनर काफी नहीं हैं," उसने कहा। "आजकल महँगाई कितनी बढ़ गई है। पता है आइस्क्रीम कितने की हो गई है अब? पूरे दस क्रोनर लगते हैं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" बार्बी ने चालाकों की तरह कहा। "मैं किसी भी हालत में इससे ज़्यादा तो दूँगी नहीं।"

"वही तो मैं कहता हूँ," मीज बोला, "आजकल आता क्या है पाँच क्रोनर में?"

"तुम्हें अभी पता नहीं है कि मैं चाहती क्या हूँ," बार्बी ने कहा। "तुम्हें ये कुछ करने के लिए नहीं, कुछ न करने के लिए मिल सकते हैं।"

"मुझे क्या नहीं करना है?"

"तुम्हें अब बैठक के कमरे में नहीं बैठना है।"

"बार्बी का जो नया दोस्त है पीटर, वह आनेवाला है," बासू ने कहा।

मीज ने हाँ में सिर हिलाया। तो सब तयशुदा था।

माँ और पापा सिनेमा देखने जा रहे थे, बासू फुटबॉल का मैच

देखने दोस्त के घर जा रहा था और बार्बी अपने दोस्त के साथ बैठक में गप्पें लड़ाना चाहती थी, इसीलिए मीज को अपने कमरे में भेजा जा रहा था – और इसके लिए उसे पाँच क्रोनर का लालच दिया जा रहा था। कैसा परिवार है यह?

"कौन-सा दोस्त तुम्हारा, वही जिसके कान सींग जैसे खड़े होते हैं?"

मीज को पता था, दोस्तों को कुछ कहो तो बार्बी बिगड़ जाती है।

"देखो न माँ!" उसने शिकायत की। "अब पता चला, मैं मीज को दूर क्यों रखना चाहती हूँ? मैं जिसे भी घर बुलाऊँ, यह कुछ न कुछ उलटा-सीधा कहकर उसे भगा देता है।"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है," मम्मी ने कहा, बस इसलिए कि वे नहीं चाहती थीं कि बच्चों में कोई तकरार हो।

"बिल्कुल है," बार्बी ने ज़ोर देकर कहा। "क्या उसने लिंडा को डरा नहीं दिया था, यह कहकर कि बार्बी को ऐसी लड़कियाँ पसंद नहीं हैं जिनके सिर में जुएँ न हों। उसके बाद लिंडा कभी हमारे घर नहीं आई।"

"ठीक है, फिक्र क्यों करती हो?" मीज ने कार्लसन के अंदाज़ में उसे भरोसा दिलाया। "चिंता मत करो! मैं अपने कमरे में चला जाता हूँ और यह मैं बिना कुछ लिए करूँगा। लोगों के सामने न आने के लिए मुझे कुछ नहीं चाहिए और न मैं बैठक में नज़र आऊँगा!"

"बहुत अच्छा!" बार्बी बोली। "बात पक्की समझूँ? नहीं दिखाई दोगे ना कहीं आसपास?"

"पक्का!" मीज ने कहा। "तुम्हारे दोस्त तो मुझे वैसे भी पसंद नहीं हैं। उलटा, मैं तुम्हें पाँच क्रोनर दे सकता हूँ, उनसे मिलने का कष्ट मुझे न देने के लिए!"

इस तरह कुछ ही देर में, मीज अपने कमरे में लौट आया – अब वहाँ कोई आने वाला नहीं था। माँ और पापा सिनेमा देखने गए थे, बासू गायब था और मीज ने ज़रा-सा झाँककर देखा तो बार्बी अपने दोस्त के साथ न जाने क्या लगातार बोलती जा रही थी। मीज ने कान

लगाकर सुनना चाहा, पर कुछ भी सुनाई नहीं दिया। फिर वह कमरे की खिड़की खोलकर, गहराते अँधेरे को देखता रहा। उसने नीचे झाँककर देखा, शायद कोई दो लड़के लड़-झगड़ रहे थे। कुछ देर खड़ा मीज उनको एक दूसरे पर मुक्के बरसाता देखता रहा, लेकिन दुर्भाग्यवश उनकी लड़ाई जल्दी ही खत्म हो गई और वे अपने-अपने रास्ते चले गए। फिर वही बोरियत छा गई।

तब उसे वही पुरानी खुशियाँ लाने वाली आवाज़ सुनाई पड़ी। इंजन की घरघराहट के बीच, कार्लसन खिड़की से अंदर आ गया।

"हाय मीज!" उसने गाकर कहा।

"हाय कार्लसन!" मीज ने कहा, "कहाँ चले गए थे तुम?"

"क्या? क्या मतलब है तुम्हारा?" कार्लसन ने सवाल किया।

"तुम गायब हो गए थे, है ना?" मीज ने पूछा। "जब मेरे माँ और पापा से मिलने की बारी आई, तो तुम भाग क्यों गए?"

कार्लसन कमर पर हाथ रखे खड़ा हो गया। वह बहुत गुस्से में लग रहा था।

"यह तुम क्या कह रहे हो? मैंने ऐसा कुछ पहले कभी नहीं सुना!" उसने कहा।

"कोई अगर जाकर बीच में, ज़रा अपना घर देख आना चाहे तो ऐसी क्या बात हो गई? जिसका भी घर हो, उसे उसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। पता नहीं ज़माना कितना खराब हो चुका है? जब मुझे घर जाना था, उसी वक्त तुम्हारे माँ-बाप मुझसे मिलने आए तो मैं क्या करूँ?"



उसने कमरे में इर्द-गिर्द देखा।

"घर की बात चली है," कार्लसन ने आस-पास देखकर कहा,

"तो मेरी मीनार कहाँ है और उस कोफ्ते का क्या हुआ?"

मीज तुतलाने लगा। "मुझे लगा अब तुम वापस नहीं आओगे," उसने चिंतित होकर कहा।

"यह तो साफ ही है!" कार्लसन ने कहा। "दुनिया का सबसे बड़ा इंजीनियर, एक मीनार बनाता है और फिर? बजाय इसके कि उसके चारों तरफ एक घेरा खड़ा कर दिया जाए, और उसे सुरक्षित रखा जाए, लोग उसे गिरा देते हैं, पूरा खत्म कर देते हैं। यही सब करते हैं वे, ऊपर से दूसरों के कोफ्ते भी उड़ा जाते हैं।" कार्लसन दूर चला गया, जाकर एक चौकी पर बैठा, रूठा रहा।

"ओह, यह तो मामूली बात है," मीज ने कार्लसन ही की तरह हवा में हाथ झटककर कहा। "इसमें इतना हो-हल्ला करने की क्या बात है?"

"ऐसा लगता है तुम्हें?" कार्लसन बुरा मान गया था। "बहुत आसान है सब कुछ तहस-नहस कर देना और फिर कहना कि यह तो बहुत मामूली है। मेरे इन हाथों से बनाई मीनार थी वह!"

उसने मीज के सामने अपने मोटे-गोल हाथ फैलाते हुए कहा। फिर वह धम्म से चौकी पर बैठ गया और पहले से ज़्यादा परेशान लगने लगा।

"और नहीं रुक सकता मैं यहाँ," उसने कहा, "मैं नहीं रुक पाऊँगा, अगर यही सब होना है!"

मीज फिक्र में पड़ गया। चुपचाप खड़ा सोचता रहा कि क्या किया जाए। एक लंबी चुप्पी छाई रही। आखिर कार्लसन बोला, "अगर कोई मुझे छोटा-सा एक तोहफा दे दे, तो मैं फिर से खुश हो जाऊँगा। मैं पक्का नहीं कह सकता, लेकिन शायद ऐसा हो सकता है।"

मीज अपनी अलमारी के पास गया और उसमें उलट-पुलटकर देखने लगा कि कौन-सी चीज़ कार्लसन के लिए सही भेंट हो सकती है। वहाँ कुछ डाक टिकटें थीं, तरह-तरह के पत्थर थे, रंगबिरंगे चॉक थे, खिलौने थे। उनमें मीज का प्यारा, छोटा-सा टॉर्च भी था।

"यह पसंद है तुम्हें?" उसने वह कार्लसन को दिखाते हुए पूछा।

कार्लसन ने बिजली के झटके की तरह, वह फटाक-से छीन लिया।

"ऐसी ही चीज़ें तो मुझे फिर से अच्छे मूड में लाती हैं," उसने कहा। "यह मेरी मीनार जितना शानदार तो नहीं, पर अगर मुझे मिल जाए तो मैं ज़रा खुश होने की कोशिश करूँगा।"

"ले लो!" मीज ने कहा।

"यह चलता तो है?" कार्लसन ने शक जताया। बटन दबाकर देखा तो वह काम कर रहा था। टार्च को जलते देखकर कार्लसन की आँखें भी चमकने लगीं।

"ज़रा सोचो तो, सर्दियों में मैं जब अकेला छत पर चलता हूँ, तो अपने घर तक पहुँचने के लिए यह कितना काम आएगा!" उसने कहा।

"मीज, मेरे दोस्त, अब मैं फिर से खुश हो गया हूँ," कार्लसन ने कहा, "चाहो तो अपने माँ-बाप को जाकर बुला लाओ, वे मुझे देख सकते हैं।"

"वे दोनों सिनेमा देखने गए हैं," मीज ने बताया।

"सिनेमा! मुझसे मिलने की बजाय उन्होंने सिनेमा जाना पसंद किया?" कार्लसन को आश्चर्य हुआ।

"हाँ, अभी तो सिर्फ बार्बी है घर पर, अपने दोस्त के साथ। वे दोनों बाहर के कमरे में बैठे हैं और वहाँ जाने की इजाज़त मुझे नहीं है।"

"क्या कह रहे हो तुम?" कार्लसन चिल्लाया। "तुम जहाँ चाहते हो, वहाँ जाने की इजाज़त नहीं है तुम्हें? मुझे यह शर्त मंज़ूर नहीं। आओ..."

"हाँ, वह तो ठीक है, पर मैंने वादा किया था," मीज बोला।

"और मेरा वादा यह है कि जहाँ कोई अन्याय दिखाई दे, कार्लसन उस पर टूट पड़ेगा!" कार्लसन ने कहा।

फिर मीज के पास जाकर उसने उसका कंधा थपथपाया।

"तुम ने वादा किस चीज़ का किया था।"

"मैंने कहा था कि मैं बैठक में नहीं जाऊँगा।"

"न जाओ!" कार्लसन ने कहा। "लेकिन यह बार्बी का दोस्त है कैसा, इतना तो देख लेना चाहिए या नहीं?"

"चाहता तो हूँ," मीज ने कहा "लेकिन क्या करूँ?"

"ठीक है, तो कुछ सोचते हैं" कार्लसन ने कहा। "ठहरो ज़रा, मुझे सोचने दो, दुनिया का सबसे बड़ा पहेलियाँ सुलझाने वाला कार्लसन ही है।"

उसने कमरे में नज़र दौड़ाई।

"यह रहा!" उसने सिर हिलाकर कहा, "कंबल... यही तो चाहिए था हमें। मुझे पता था, कोई न कोई रास्ता ज़रूर ढूँढ लूँगा मैं!"

"क्या सोच रहे हो?" मीज ने पूछा।

"तुमने कहा था, तुम वहाँ दिखाई नहीं दोगे, ठीक है। अब तुम कंबल के नीचे जाओगे तो तुम्हें कौन देख पाएगा?"

"नहीं, पर..." मीज ने कहा।

"अरे कंबल के नीचे से तुम्हें देखेगा कौन?" कार्लसन ने निर्णय दिया। "इसमें ना-नुकर करने की कोई बात नहीं है। कंबल के नीचे मैं हूँ तो वह मुझे भी न देख पाएगी। बार्बी बेचारी!"

"मुझे तो उसकी किस्मत ही खराब लगती है! अगर उसने ऐसी पागल शर्तें न रखी होतीं तो वह शायद मुझे देख पाती... बेचारी बार्बी!"

मीज के बिस्तर से कंबल निकालकर उसने अपने सिर पर डाल लिया और कहने लगा, "आ जाओ! आओ मेरे तंबू में!"

मीज कंबल के अंदर घुस गया और कार्लसन वहाँ खड़े-खड़े हँसने लगा।

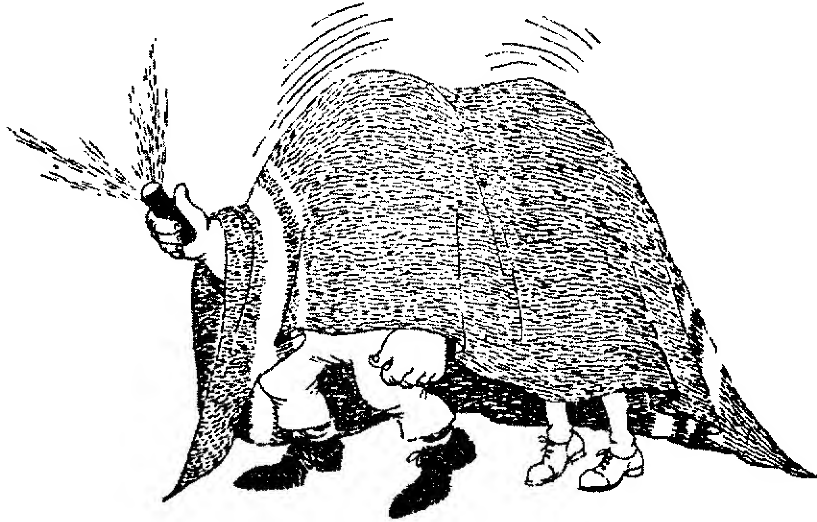
"मगर बार्बी ने यह तो नहीं कहा था कि बैठक में कोई तंबू नहीं होगा। हर कोई तंबू देखकर खुश होता है, खासकर उसके अंदर बत्ती जल रही हो तो!" कार्लसन ने टार्च जलाते कहा।

मीज को पता नहीं था कि बार्बी तंबू से खुश होगी या नाराज़, पर खुद का कार्लसन के साथ तंबू में होना उसे काफी साहसपूर्ण लग रहा

था। मीज चाहता था कि वे जहाँ थे वहीं रहकर यह तंबूवाला खेल खेलें, और बार्बी को तंग न करें। पर कार्लसन नहीं माना।

"मुझे अन्याय पसंद नहीं है," उसने कहा। "मैं तो बैठक में जाकर रहूँगा, चाहे उसका अंजाम कुछ भी हो!"

इस तरह तंबू धीरे-धीरे चलकर दरवाज़े तक गया। मीज को तो बस कार्लसन के पीछे चलना था। तंबू से एक मोटा-सा हाथ निकला, उसने दरवाज़ा खोला और धीरे-से तंबू बाहर आया। दो सीढ़ियों से नीचे उतरकर, तंबू उस पर्दे के पास गया जो बैठक के पीछे लगा हुआ था।



"आराम से, आराम से," कार्लसन बुदबुदाया। कुछ कदम चलकर बिना कोई आवाज़ किए, तंबू पर्दे के पीछे पहुँच गया। अब बार्बी और उसके दोस्त की बातें साफ-साफ सुनाई दे रही थीं। बैठक में सिर्फ एक बत्ती जल रही थी।

"यह अच्छा है," कार्लसन ने धीरे-से कहा, "मेरी टॉर्च काम आएगी," और उसने टॉर्च कुछ देर के लिए बंद कर दी।

धीरे-धीरे पर्दे के पीछे से तंबू आगे बढ़ा। बार्बी और पीटर सोफे पर बैठकर बातें कर रहे थे, तंबू उनकी तरफ लपका।

"बार्बी, मैं रोज़ तुम्हारे घर आया करूँगा," मीज ने उस लड़के की आवाज़ सुनी – पीटर लगता है, बहुत शांत लड़का था।

"अच्छा!" बार्बी ने कहा और फिर चुप्पी छा गई।

तंबू कम रोशनी में धीरे-धीरे उनकी तरफ बढ़ रहा था। अब उनके बीच चंद कदमों का फासला रह गया था, लेकिन बार्बी और पीटर का ध्यान उनकी तरफ था ही नहीं।

"तुम्हें क्या खेलना अच्छा लगता है, बार्बी?" पीटर ने पूछा।

उसे कोई जवाब नहीं मिला क्योंकि तभी एक टॉर्च की रोशनी सीधी उसके चेहरे पर पड़ी। पीटर डर से कूदा, बार्बी चिल्लाई और तंबू में कोई हँसने लगा, पाँवों के धप-धप करके दौड़ने की आवाज़ आई।

जब टॉर्च की तेज़ रोशनी सीधी आँखों पर पड़ती है तो थोड़ी देर तक कुछ भी दिखाई नहीं देता। लेकिन सुनाई तो सब दे रहा था। बार्बी और पीटर को पर्दे के पीछे से पागलों की तरह गूँजते ठहाके सुनाई दे रहे थे।

"यह मेरे छोटे भाई की शैतानी है," बार्बी ने कहा। "अब मैं चलकर उसकी खबर लेती हूँ।"

मीज और भी ज़ोर से हँसा।

"बार्बी को सारे खेल पसंद हैं," वह चिल्लाया, "खासकर गुड्डे-गुड़िया खेलने वाले लड़के। तुम बहुत सही दोस्त हो, उसके लिए!"

और फिर कुछ और हँसी की आवाज़ें सुनाई दीं।

"आराम से... ध्यान से," कार्लसन फुसफुसाया। मीज के कमरे तक भागते-भागते तंबू लड़खड़ाकर गिर गया था।

मीज यह सब आराम से देख रहा था, वह लगातार हँसता भी जा रहा था हालाँकि जब वे गिरे तो उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि उसका पैर कौन-सा है, और कौन-सा कार्लसन का। उसे मालूम था कि अब किसी भी वक्त बार्बी उस पर झपट सकती है।

वे अपने कदमों पर जैसे-तैसे खड़े हो गए और तेज़ दौड़ते हुए मीज के कमरे तक पहुँचे। बार्बी उनके ठीक पीछे आ रही थी।

"आराम से... फिक्र न करो," कार्लसन मुनमुनाया और उसके भारी



पाँव कंबल के नीचे धप-धप करने लगे। "दुनिया का सबसे तेज़ धावक, कार्लसन, छत पर रहने वाला," उसने कहा। उसकी साँस फूली हुई थी।

"ठहर जा मीज के बच्चे, मैं तुझे सीधा करके रहूँगी," बार्बी गुस्से से चिल्लाई।

"कम से कम, मैंने अपने आप को दिखाया तो नहीं," मीज ने चिल्लाकर जवाब दिया और दरवाज़ा बंद कर लिया। दरवाज़े के पीछे से कुछ और हँसी सुनाई दी।

वह दो लोगों के हँसने की आवाज़ थी। अगर बार्बी ने ठीक से सुनी होती तो शायद उसे इतना गुस्सा नहीं आता।



कार्लसन जन्मदिन की दावत में हाज़िर

स्कूलों में गर्मी की छुट्टियाँ हो चुकी थीं। मीज को नानी के घर जाना था। लेकिन उससे पहले एक महत्वपूर्ण बात होनी थी। मीज आठ साल का होने जा रहा था। वह जन्मदिन का न जाने कब से इंतज़ार कर रहा था – वह सात साल का था, तब से! कमाल की बात तो यह है कि जन्मदिन का इंतज़ार भी हर साल आने वाली क्रिसमस की तरह साल भर करना पड़ता था।

जन्मदिन के एक दिन पहले उसकी कार्लसन से बात हुई।

"मेरे जन्मदिन की दावत होने वाली है।" मीज ने कहा।

"सुज़न और क्रिस आने वाले हैं और मेरे इस कमरे में मेज़ लगाई जाएगी..."

मीज कहते-कहते रुक गया ओर उदास-सा लगने लगा।

"तुम्हें भी बुलाना मुझे बहुत अच्छा लगता, मगर..." माँ छत पर रहने वाले कार्लसन से बहुत नाराज़ थीं। इसलिए उसे जन्मदिन पर बुलाना बेकार था।

कार्लसन ने मुँह बनाया और रूठने के अंदाज में बोला, "मैं अगर दावत में नहीं आ सकता तो मैं यहाँ भी नहीं रुकूँगा। क्या मुझे भी मौज-मस्ती करने का कोई अधिकार नहीं?"

"हाँ भाई हाँ, तुम आ सकते हो!" मीज ने कह डाला। उसने सोचा, माँ को वह मना लेगा कि बगैर कार्लसन के उसके जन्मदिन की दावत हो नहीं सकती।

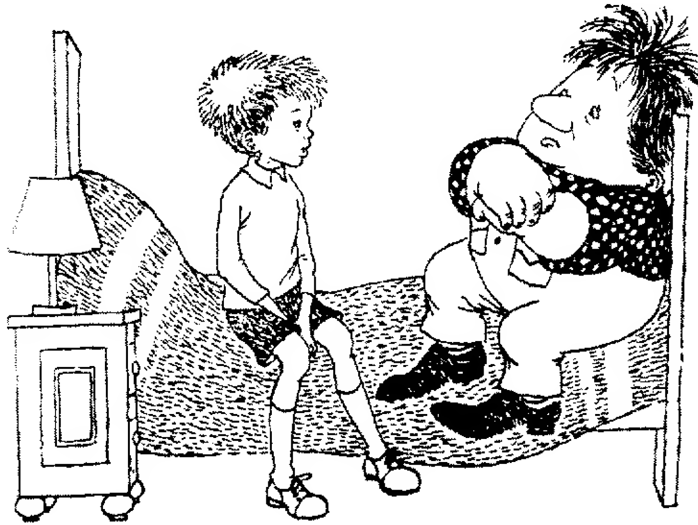
"और खाने में क्या होगा?" कार्लसन ने पूछा।

"केक तो होगा ही," मीज ने कहा। "मेरे जन्मदिन के केक पर आठ मोमबत्तियाँ होंगी।"

"अच्छा?" कार्लसन ने कहा, "लेकिन मेरा एक सुझाव है!"

"क्या?"

"क्या तुम अपनी माँ से यह नहीं कह सकते कि आठ केक बनाएँ और एक मोमबत्ती रखें?"



मीज को कतई उम्मीद नहीं थी कि माँ इस तरह की बात के लिए राज़ी होंगी।

"क्या तुम्हें बढ़िया उपहार भी मिलेंगे?" कार्लसन ने पूछा।

"पता नहीं," मीज बोला।

मीज ने आह भरी। उसे मालूम था कि उसे क्या चाहिए, दुनिया में सबसे ज़्यादा वह किस चीज़ से खुश होगा, पर वह तो उसे मिलेगी नहीं।

"मुझे कुत्ता तो नहीं मिलेगा, कभी नहीं!" उसने कहा। "लेकिन मुझे कई और तोहफे मिलेंगे। इसलिए मैंने सोच लिया है कि दुखी नहीं होऊँगा, खुश रहूँगा, कुत्तों के बारे में नहीं सोचूँगा। यही इरादा है मेरा!"

"खैर, तुम्हारे लिए मैं भी तो हूँ," कार्लसन ने कहा। "और एक कुत्ते से शायद मैं बेहतर हूँ।"

कार्लसन ने गर्दन टेढ़ी करके मीज को देखा और कहा, "तोहफे मिलेंगे तुम्हें? अगर टॉफियाँ मिलती हैं तो मुझे लगता है, तुम्हें वे बाँट देनी चाहिए।"

"चलो, अगर मुझे टॉफियाँ मिलती हैं, सारी तुम ले लेना," मीज बोला। वह कार्लसन के लिए कुछ भी कर सकता था क्योंकि अब नानी के घर जाना था, उससे बिछड़ना था।

"कार्लसन, मैं परसों नानी के घर जा रहा हूँ। सारी छुट्टी वहीं बिताऊँगा।"

कार्लसन कुछ बुझा हुआ सा तो लगा लेकिन पल भर में उसने जवाब दिया, "मैं भी अपनी नानी के पास जाऊँगा, वह तुम्हारी नानी से ज़्यादा मज़ेदार है?"

"कहाँ रहती है तुम्हारी नानी?" मीज ने पूछा।

"घर में!" कार्लसन ने कहा। "नानियाँ घर पर ही रहा करती हैं, हर वक्त सड़कों पर थोड़े ही डोलती फिरेंगी?"

इसके बाद न कार्लसन की नानी की बात हुई, न मीज के तोहफों की। बहुत देर हो चुकी थी और मीज को अब सोना था ताकि जन्मदिन पर जल्दी जाग सके।

सुबह हो गई। मीज बिस्तर में लेटा, दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार कर रहा था कि घर के सभी उसे बधाई देने तोहफों समेत आएँगे। बहुत कुछ मिलता था, इतना कि सँभालना मुश्किल हो जाता था। मीज सोच-सोचकर इतना उत्साहित हो रहा था कि अब पेट में दर्द-सा होने लगा था। अब वे आते ही होंगे। उसके कमरे के बाहर कदमों की आहट सुनाई देने लगी थी। "हैप्पी बर्थ डे टू यू..." गाते-गाते दरवाज़ा खोला

गया और वहाँ खड़े थे माँ, पापा, बासू और बार्बी!

मीज अपने बिस्तर में तनकर बैठ गया, उसकी आँखें उत्सुकता से चमक रही थीं।

"जन्मदिन मुबारक हो मेरे बच्चे!" माँ ने कहा।

उन सबने उसे एक-एक करके बधाई दी और आठ मोमबत्तियों वाला केक और कुछ उपहार एक थाली में सजाकर उसे दिए गए।

उपहार और भी थे। लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं, जैसे पहले मिला करते थे। मीज ने देखा सिर्फ चार पार्सल थे। इतने में पापा ने कहा, "दिन में और भी तोहफे आ सकते हैं। सारे सुबह ही मिलें ऐसा तो ज़रूरी नहीं।"

मीज ने वे चार उपहार खोले। एक में रंगों का सामान, एक में खेलने वाली पिस्तौल, एक में रंगबिरंगी किताब और एक में नई जीन्स! उसे सारे तोहफे पसंद आए! माँ, पापा, बासू और बार्बी कितने अच्छे थे सब। कितना प्यार करते थे उससे!

उसने पिस्तौल से हवा में गोली चलाई। क्या धमाकेदार आवाज़ आती थी, भले ही गोली किसी को नहीं लगती थी। सब उसके बिस्तर पर और आसपास बैठ गए।

"सोचो तो, आठ साल कैसे पंख लगाकर उड़ गए से लगते हैं, जब ये छोटे मियाँ, हमारे परिवार में दाखिल हुए थे!" पापा बोले।

"हाँ," माँ ने कहा। "पता ही नहीं चला कि वक्त कैसे गुज़र गया। याद है, उस दिन कितनी बारिश हो रही थी?"

"माँ, मैं क्या यहीं स्टॉकहोम में पैदा हुआ था?" मीज ने पूछा।

"हाँ!" माँ बोलीं।

"बासू और बार्बी गाँव में पैदा हुए थे ना?"

"हाँ।"

"और पापा, आप एक शहर में पैदा हुए और माँ दूसरे शहर में!"

"बिल्कुल!" पापा ने कहा।

मीज ने माँ के गले में बाँहे डालकर कहा, "कितने खुशनसीब हैं हम लोग कि हम सब इसके बावजूद एक दूसरे से मिले!"

इस पर कोई दो राय नहीं थी। उन्होंने उसे फिर जन्मदिन की बधाई दी और मीज ने हवा में एक बार और धमाकेदार पिस्तौल चलाई।

उस रोज़ पिस्तौल चलाने के लिए उसके पास काफी वक्त था। पार्टी का समय होने तक उसने यही किया। उसे उस बात पर सोचने के लिए भी काफी समय मिला जो पापा ने कही थी... कि दिन में शायद और भी तोहफे आ सकते हैं। एक पल के लिए उसे लगा शायद कोई जादू हो और उसे एक कुत्ता मिल जाए। पर यह असंभव था। इतना बेवकूफ होने के लिए उसने खुद को झिड़क दिया।

उसने ठान लिया था कि जन्मदिन पर कुत्तों के बारे में कुछ न सोचेगा, बस खुश रहेगा। और मीज खुश था भी। दोपहर में उसकी माँ ने उसके कमरे में अच्छे से मेज़ सजाई। उस पर फूल रखे। तीन गिलास और प्लेटें लगाईं।

"माँ, चार प्लेट लगा दो!" मीज ने कहा।

"क्यों?" माँ ने आश्चर्य से पूछा।

मीज ने हवा का घूँट भरते हुए सोचा, अब बताना होगा कि छत पर रहने वाले कार्लसन को भी बुला रखा है, पर शायद माँ को वह अच्छा न लगे।

"छत पर रहने वाला कार्लसन भी आ रहा है," मीज ने माँ की आँखों में सीधा देखते हुए कहा।

"उफ्फ!" उसकी माँ बोलीं, "उफ्फोह! लेकिन चलो, कोई बात नहीं। आज तेरा जन्मदिन है, मैं आज तुझे कुछ नहीं कहूँगी।" कहकर उन्होंने मीज के बाल सहलाए।

"कितना बचपना है तुममें, मीज! कोई मानेगा भी कि तुम आठ साल के हो चुके हो... क्या उम्र है तुम्हारी, बताओ फिर से?"

"मैं एक जवान लड़का हूँ," मीज ने गंभीरता से जवाब दिया। "और कार्लसन भी!"

जन्मदिन धीरे-धीरे बीतता गया। काफी देर हो चुकी थी लेकिन जैसे कि बात हुई थी, कोई और उपहार तो आते दिखाई नहीं दिए।

लेकिन एक तोहफा और मिल ही गया। बासू और बार्बी की छुट्टियाँ तो अभी शुरू नहीं हुई थीं, लेकिन जैसे ही वे स्कूल से लौटे, अपने कमरे में दरवाज़ा बंद करके पता नहीं क्या खुसुर-पुसुर में लग गए। उनके कमरे से हँसी-मज़ाक के फव्वारों की आवाज़ आ रही थी। कुछ कागज़ों की भी। पता नहीं वे क्या खिचड़ी पका रहे थे! मीज जानने के लिए बेताब था।

काफी देर बाद जब वे बाहर निकले तो हँसते हुए बार्बी ने एक पार्सल उसकी तरफ बढ़ाया। मीज ने खुशी-खुशी उसे ले लिया और खोलने को ही था कि बासू ने कहा : "पहले तुम्हें इस पर लिखी कविता पढ़नी होगी।"

कविता उन्होंने बड़े बड़े अक्षरों में लिखी थी कि मीज खुद पढ़ पाए। उसमें लिखा था:

हर दिन हर वक्त कुत्ता लाओ, की तेरी रट
सुनकर कान हमारे गए हैं फट।
इसलिए मीज प्यारे, हम सब के दुलारे
लाए हैं एक तोहफा, भाई और बहन तुम्हारे।
यह रहा तेरा प्यारा कुत्ता, देख कितना मुलायम
गोल-मटोल, सुंदर-सा, भुलाने वाला कि असली नहीं
है नकली, पर एक फायदा भी तो है
करेगा नहीं घर गंदा, यह भी क्या कम है!

मीज चुपचाप बैठा रहा।

"अब खोल तो सही पार्सल," बासू ने कहा। लेकिन मीज ने पार्सल ज़मीन पर पटक दिया, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

"क्या हुआ, मीज?" बार्बी ने परेशान होकर पूछा।

"तू बुरा मान गया?" बासू सहम-सा गया था।

"हमें माफ कर दे मीज," बार्बी ने उसे गले लगाते हुए कहा, "हम तो सिर्फ मज़ाक करना चाहते थे।"

मीज ने ज़ोर का झटका देकर बार्बी को दूर हटाया।



"तुम दोनों जानते हो," उसने सुबकते हुए कहा, "कि मुझे कुत्ता कितना चाहिए, असली कुत्ता! क्यों मेरा मज़ाक बनाया तुम लोगों ने?"

वह दौड़ता अपने कमरे में गया और खुद को बिस्तर पर डालकर रो पड़ा। बासू, बार्बी, माँ – सब उसके पीछे-पीछे आए पर मीज ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। अब उसका पूरा जन्मदिन खराब हो गया था। वह खुश था, उसने कुत्ते के बारे में न सोचने का मन भी बना लिया था, लेकिन इन दोनों ने नकली कुत्ता देकर उसके ज़ख्म पर जैसे नमक छिड़का था। रोते-रोते उसकी आवाज़ बढ़ गई और रोना रोकने के लिए उसे तकिये में मुँह छिपाना पड़ा। माँ, बासू और बार्बी उसके पलंग को घेरकर खड़े थे। सब इस वक्त दुखी लग रहे थे।

"मैं पापा के दफ्तर फोन लगाकर, उन्हें जल्दी घर आने के लिए कहती हूँ," माँ ने कहा।

मीज रोता रहा। पापा के जल्दी आने से क्या होगा? जन्मदिन पर तो पानी फिर ही गया था ना? अब कुछ भी नहीं हो सकता था।

उसने माँ को फोन करते हुए सुना, पर वह रोता रहा। उसने यह भी सुना कि पापा जल्दी ही आने वाले हैं... पर वह रोता रहा। अब वह कभी खुश नहीं हो पाएगा। काश! उसे कुछ हो जाए। इससे बार्बी और बासू को इतना तो पता चलेगा कि उन्होंने अपने छोटे-से भाई को उसके जन्मदिन पर किस कदर दुखी किया था।

कुछ देर बाद उसने देखा, वे सब उसके पलंग के पास खड़े हैं। पापा, माँ, बासू और बार्बी। उसने फिर से अपना चेहरा तकिये में और घुसा लिया।

"मीज, तेरे लिए कोई बाहर इंतज़ार कर रहा है," पापा ने कहा। मीज ने कोई जवाब नहीं दिया। पापा ने कंधे पकड़कर उसे हिलाया। "तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा? तेरा एक दोस्त बाहर बैठक के कमरे में आया हुआ है..."

"सुज़न होगी या क्रिस," मीज ने उदासी से आँखें पोंछते कहा।

"नहीं, उसका नाम बिंबो है।" माँ बोलीं।

"बिंबो नाम के किसी को मैं नहीं जानता," मीज ने और भी उदास होकर कहा।

"लेकिन..." माँ ने कहा, "वह तो तुम्हें मिलने के लिए बेताब नज़र आ रहा है।"

तभी बाहर के कमरे से हल्की-सी भौंकने जैसी आवाज़ आई। मीज का सारा शरीर जैसे सख्त हो गया, उसने तकिये को कसकर पकड़ लिया। नहीं, दिन में सपने नहीं देखने चाहिए!



फिर से वह आवाज़ सुनाई दी, इस बार ज़रा ज़ोर से। मीज फौरन उठा और पलंग पर बैठ गया।

"क्या यह कुत्ते की आवाज़ है? यानी असली कुत्ता?"

"हाँ, तुम्हारा कुत्ता!" पापा ने कहा।

तभी बासू तेज़ी से बाहर के कमरे में गया और उसे बाहों में उठाकर ले आया – क्या यह सच है? – बासू के हाथ में एक प्यारा-सा डैशूंड कुत्ता था।

"यह मेरा असली कुत्ता है?" मीज ने पूछा।

उसने जब बिंबो को बाँहों में भर लिया तो उसकी आँखों में आँसू थे। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि यह सच है। लेकिन बिंबो असली था, उसका था। वह उसकी गोद में बैठा उसका मुँह चाट रहा था। वह एकदम जीवंत था, सचमुच का।

"अब तो खुश हो, मीज?" पापा ने पूछा।

मीज ने लंबी साँस ली। यह भी कोई सवाल था? वह इतना खुश था, इतना खुश कि उसके अंदर कहीं, कुछ हो रहा था।

"हमने जो मखमली कुत्ता दिया है ना, वह दरअसल बिंबो का खिलौना है," बार्बी ने कहा। "हम तुम्हें चिढ़ाना नहीं चाहते थे, बस ज़रा-सा मज़ाक!"

अब मीज ने सबको मन ही मन माफ कर दिया था। खैर, बार्बी की तरफ उसका कुछ खास ध्यान था भी नहीं, वह बिंबो से बात करने में लगा हुआ था।

"बिंबो, मेरे बच्चे, कैसा लग रहा है तुम्हें, यह तुम्हारा नया घर?"

फिर उसने माँ की तरफ देखकर कहा: "बिंबो जैसा तो कोई कुत्ता है ही नहीं, मेरे किसी दोस्त के पास! सब कुत्तों में मुझे इस तरह के झबरे बालों वाला डैशूण्ड ही पसंद है!"

फिर उसे खयाल आया कि किसी भी वक्त क्रिस और सुज़न वहाँ आ सकते हैं। एक दिन में कितनी अच्छी बातें हो सकती हैं। अब उसके पास कुत्ता था, उसका अपना कुत्ता, जिसके जैसा कोई कुत्ता दुनिया में था ही नहीं!

लेकिन फिर कुछ सोचकर वह चिंता में पड़ गया।

"माँ, जब मैं नानी के पास जाऊँगा तो बिंबो साथ जाएगा ना?"

"ज़रूर! इसे इसकी बास्केट में डालकर रेलगाड़ी से ले चलेंगे।" माँ ने बासू द्वारा अंदर लाई टोकरी की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"ओह!" मीज खुशी से चिल्लाया। "ओह!!!"

तभी दरवाज़े पर घंटी बजी। सुज़न और क्रिस आ गए थे। मीज दौड़ा-दौड़ा उनसे मिलने गया और कहने लगा: "मुझे कुत्ता मिल गया है! अब मेरा अपना कुत्ता है!"



"हाय! कितना प्यारा है..." सुज़न ने कहा और फिर कुछ याद करते हुए कहा, "जन्मदिन मुबारक हो, यह क्रिस और मेरी तरफ से है।"

उसने टॉफियों का पैकेट आगे बढ़ाया। फिर वह बिंबो के गुण गाने लगी, "हा... य! कितना प्यारा है यह!"

उसका बार-बार यह कहना मीज को अच्छा लग रहा था।

"हमारे दोस्तों के पास जितने भी कुत्ते हैं, उनमें बिंबो नंबर वन है," क्रिस ने कहा।

"वाकई, और बड़ा होकर तो यह और भी सुंदर लगेगा," सुज़न ने जोड़ा।

"बिंबो, हमारे मोहल्ले की शान है!" क्रिस से कहे बगैर रहा न

गया। क्रिस और सुज़न की बातें मीज की खुशी दोगुनी करने वाली थीं। उसने उन दोनों को केक वाले टेबल पर आने के लिए कहा।

उसकी माँ ने टेबल पर खाने की कई मज़ेदार चीज़ें रखी थीं: सैंडविच, नमकीन, जैम वाले बिस्कुट और उनके बीच जन्मदिन का केक था – आठ मोमबत्तियों के साथ।

और फिर माँ अंदर से संतरे का शरबत लाईं और उनके गिलासों में डालने लगीं।

"क्या हमें कार्लसन का इंतज़ार नहीं करना चाहिए?" मीज ने सहमते हुए पूछा। माँ ने सिर हिलाकर 'ना' की।

"नहीं, कार्लसन के बारे में हम भूल ही जाएँ तो अच्छा होगा। क्योंकि मुझे पक्का पता है, वह नहीं आएगा। और अब तुम्हें उसके बारे में बहुत ज़्यादा सोचने की ज़रूरत भी नहीं है, अब बिंबो है ना तुम्हारे पास!"

हाँ, अब बिंबो था तो सही उसके पास... फिर भी उसे कार्लसन की कमी महसूस हो रही थी।

सुज़न और क्रिस ने अपनी-अपनी जगह ले ली। माँ ने सब की प्लेटें भरनी शुरू कर दीं। बिंबो को उसकी टोकरी में बिठाकर मीज भी खाने बैठ गया। फिर माँ चली गईं और बस बच्चे रह गए, आराम से मौज-मस्ती करने।

तभी बासू ने बाहर से झाँककर कहा, "थोड़ा केक बार्बी और मेरे लिए भी बचा के रखना।"

मीज ने कहा, "ज़रूर! लेकिन याद रहे, तुम दोनों ने मेरे दुनिया में आने से पहले ही, 7-8 साल से केक खाने शुरू कर दिए थे।"

"जो भी हो! मेरे लिए बड़ा-सा टुकड़ा काफी होगा," बासू ने दरवाज़ा बंद करते हुए कहा।

वह गया ही था कि जानी-पहचानी 'भर्रर' की आवाज़ सुनाई दी, और कार्लसन ने खिड़की से प्रवेश किया।

"अरे, तुम लोगों ने खाना शुरू भी कर लिया? क्या-क्या खाया, बताओ, अब तक!"



मीज ने उसे समझाया कि किसी ने अभी कुछ भी नहीं खाया है।

"तब तो ठीक है," कार्लसन ने कहा।

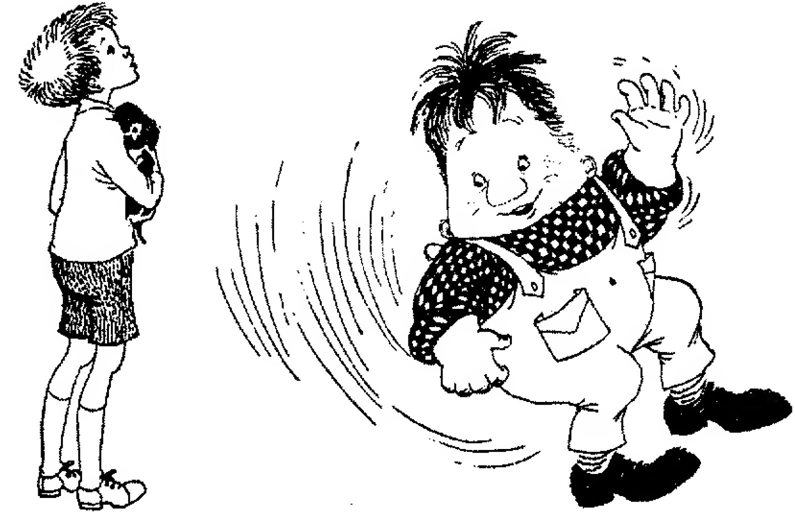
"अभी तो तुमने मीज को जन्मदिन की बधाई भी नहीं दी..." सुज़न ने याद दिलाया।

"अहा, हाँ, हाँ, जन्मदिन मुबारक हो मीज," कार्लसन ने कहा और फिर पूछा, "मैं कहाँ बैठूँ?"

कार्लसन ने देखा, प्लेटें तीन थीं, गिलास भी तीन, यानी उसे किसी ने गिना ही नहीं था। वह हमेशा की तरह मुँह लटकाए रूठने की तैयारी करने लगा।

"अगर इतनी गलत बातें यहाँ हो रही हैं, तो मैं यहाँ रुकूँगा नहीं। मेरे लिए न प्लेट है, न गिलास..."

मीज ने अपनी प्लेट और गिलास उसे दिए और रसोई में जाकर अपने लिए और ले आया।



"कार्लसन, मुझे एक कुत्ता मिला है!" उसने वापस आते ही कहा। "यह देखो, इसका नाम बिंबो है।" मीज ने टोकरी में सोए हुए बिंबो की तरफ इशारा करके बताया।

"आहा! बहुत अच्छा है," कार्लसन ने कहा, "अब ज़रा मुझे नमकीन तो दो, हाँ वह बड़ा-सा बिस्कुट भी और सेंडविच भी लूँगा... दो-चार! हाँ अब ठीक है।" फिर मीज की तरफ मुड़कर उसने कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक तोहफा लाया हूँ, मैं दुनिया का सबसे बढ़िया दोस्त जो हूँ।"

अपनी जेब से एक सीटी निकालकर उसने मीज को दी।

"इसे बजाकर तुम बिंबो को बुला सकते हो! मैं भी अपने कुत्तों को ऐसे ही बुलाता हूँ, वे आकाश में इधर-उधर उड़ते रहते हैं।"

"उन सबका नाम ओमी है?"

"हाँ, हज़ारों हैं वे!" कार्लसन ने कहा। "हम केक कब खाएँगे?"

"कार्लसन, सीटी के लिए धन्यवाद!" मीज ने कहा। सीटी बजाकर बिंबो को बुलाने का विचार उसे भी पसंद आया था।

"कभी-कभी, मैं तुमसे यह उधार भी मागूँगा। शायद काफी बार

इसकी ज़रूरत पड़ेगी।'' उसने कहा और फिर चिंतित होकर पूछा, ''क्या तुम्हारें पास टॉफियाँ नहीं हैं?''

''बिल्कुल हैं! क्रिस और सुज़न लाए हैं।''

''भाई, वह तो फौरन बाँट देनी चाहिए।'' कार्लसन ने पैकेट खींचते हुए कहा। वह पैकेट पैंट की जेब में खोंसकर, उसने खाने पर फिर से हमला किया। उसके तेज़ हमले से चीज़ें बचाकर सुज़न, क्रिस और मीज ने जैसे-तैसे कुछ खा लिया। शुक्र है कि मीज की माँ ने ढेर सारा खाना बनाया था।

माँ, पापा, बासू और बार्बी बाहर के कमरे में बैठे थे।

''सुना तुमने उनका शोर! लगता है, बच्चे खूब मौज-मस्ती कर रहे हैं।'' माँ ने कहा, ''मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है कि मीज को कुत्ता दिला दिया। हम उससे तंग तो होंगे, पर चलो ठीक है।''

''अब इससे वह छत पर रहने वाले कार्लसन के खयाली किस्से तो गढ़ना बंद कर देगा, मुझे पूरा विश्वास है,'' पापा ने कहा। मीज के कमरे से उठती हँसी और शोरगुल सुनकर माँ ने कहाः ''चलो ज़रा, झाँककर देख आते हैं, मौज मनाते ये छोटे बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं!''

''हाँ, आओ, चलो देख तो आएँ,'' बार्बी ने हामी भरी।

वे सब चलकर देखने गए कि मीज की दावत कैसी चल रही है। दरवाज़ा तो पापा ने खोला था लेकिन देखते ही माँ की चीख निकल गई। मीज के सामने बैठे छोटे-से, मोटे-से, अजीब-से आदमी पर पहले उन्हीं की नज़र पड़ी थी।

मोटा-सा, नन्हा-सा आदमी – केक की क्रीम उसके कानों तक लगी हुई थी!

''मुझे तो लगता है चक्कर आ रहा है,'' मम्मी ने कहा।

पापा, बासू और बार्बी भी हैरान होकर देखते रह गए थे।

''माँ, मैंने कहा था न कार्लसन ज़रूर आएगा?'' मीज ने पूछा। ''कितना अच्छा जन्मदिन रहा है यह!''

उस छोटे-से, मोटे-से आदमी ने अपना मुँह साफ किया और गोल-मटोल हाथ मीज के परिवार की तरफ देखकर हिलाया।

''खुशी हुई आप लोगों से मिलकर! आप को भी अच्छा लग ही रहा होगा मुझसे मिलकर। मेरा नाम है कार्लसन, छत पर रहने वाला... अरे अरे! यह क्या हो रहा है यहाँ, सुज़न तुम ही सारा केक खा लोगी तो मेरा क्या होगा?'' सुज़न के हाथ से छुरी छीनकर कार्लसन ने कहा, ''मैंने इतनी पेटू लड़की ज़िंदगी में नहीं देखी।''

और फिर उसने एक मोटा-सा टुकड़ा अपने लिए काट लिया।

''चलो, चलें,'' माँ ने सारे परिवार से कहा।

''यहाँ की फिक्र मत कीजिए, मैं सब सँभाल लूँगा!'' कार्लसन ने कहा।

''मुझसे तुम सभी, बासू और बार्बी भी एक वादा करो!'' पापा ने दरवाज़े से हटते ही कहा। ''हम किसी को इसके बारे में कुछ नहीं कहेंगे! बात घर से बाहर नहीं जाएगी।''

''पर क्यों,'' बार्बी ने पूछा।

''अव्वल तो कोई हमारा विश्वास नहीं करेगा,'' पापा ने कहा, ''और अगर लोग विश्वास करते हैं तो इस घर में हमें पल भर भी चैन नसीब न होगा।''

उन्होंने अपने बीच तय कर लिया कि मीज के इस अजीबो-गरीब दोस्त के बारे में कोई बाहर बात नहीं करेगा।

और ऐसा उन्होंने किया भी। बाहर के किसी को उन्होंने कार्लसन के होने का एहसास न होने दिया। इसलिए, कार्लसन उस बहुत ही साधारण से इलाके में रहता रहा। चुपचाप, उसके कई कारनामे चलते रहे। तुम्हें पता ही है, दुनिया का सबसे बड़ा करामाती तो कार्लसन ही था!

जब खाना-खिलाना खत्म हो गया, और मीज के दोस्त अपने-अपने घर लौट गए, और बिंबो सो गया तो मीज ने कार्लसन से विदा ली। कार्लसन खिड़की में बैठा हुआ था। बहती हवा से पर्दे धीरे-धीरे हिल रहे थे।

"कार्लसन, मेरे यार तुम यहीं रहोगे ना छत पर, मेरे नानी के घर से लौटने तक?"

"फिक्र न करो," कार्लसन ने कहा। "मेरी नानी ने लौटने दिया तो ज़रूर रहूँगा। लेकिन शायद ऐसा ना भी हो क्योंकि मैं दुनिया का सबसे बढ़िया पोता जो हूँ!"

"सच? वह कैसे?" मीज ने पूछा।

"नहीं तो क्या? कोई और भी हो सकता है?" कार्लसन ने पूछा। फिर उसने अपने पेट पर लगा बटन दबाया। उसका इंजन 'भर्रर' की आवाज़ के साथ शुरू हो गया।

"बाय-बाय कार्लसन!" मीज चिल्लाया।

कार्लसन धीरे-धीरे आँखों से ओझल हो गया।

मीज के पलंग के पास, बिंबो अपनी टोकरी में आराम से सो रहा था। मीज ने उसके ऊपर झुककर, हाथ से उसका सिर हलके से सहलाया और कहा, "बिंबो, कल हम नानी के घर जा रहे हैं... गुड नाइट बिंबो, अच्छे से सोना...!"



आभार

आस्ट्रिन लिंडग्रेन की किताबों में भरा मौज-मस्ती का खज़ाना हमारे बच्चों तक उनकी अपनी भाषा में पहुँचाना एक सपना था जो आज साकार हुआ है। जब मुड़कर देखती हूँ तो यकीन नहीं होता कि जो सफर अकेले शुरू किया था, मंज़िल तक पहुँचते-पहुँचते न जाने कैसे कितने जोशीले कारवाँ में बदल गया है। यह खुशनसीबी मेरी कहूँ या हमारे देश के बच्चों की – जिनके लिए न जाने कितने निस्वार्थ दिलोदिमाग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस किताब से जुड़ गए हैं।

धन्यवाद

कार्ल ओलोफ नीमन का, शुरू से आखिर तक मेरा साथ देने के लिए। उन्होंने बड़े अपनत्व से हमें चीज़ें उपलब्ध कराईं, इतना ही नहीं चित्रकारों से अनुमति आदि का ज़िम्मा भी खुद पर लेकर हमें प्रोत्साहन दिया। उनका सौहार्दपूर्ण साथ न होता तो यह किताब असंभव थी।

मरिअन हूक का, जिन्होने मेरी स्वीडन स्टडी टूर का ज़िम्मा खुद पर लिया और बड़ी कुशलता से इसे निभाया भी।

बेरिथ ऑक्सेलबेक का, जिन्होंने इस किताब की संकल्पना से लेकर इसके साकार होने तक, कदम-कदम पर उदारता से मेरी सहायता की। मेरे आसपास के माहौल में उन्होंने कई तरह से आस्ट्रिड लिंडग्रेन का वजूद बनाए रखा। बेरिथ का शुक्रिया अदा करने के लिए मेरे पास अल्फाज़ नहीं हैं।

गौतम भट्टाचार्य का, उनके उत्साही और संवेदनशील साथ के लिए। गौतम की कार्यशैली में न जाने क्या जादू है कि बंद दरवाज़े एक के बाद एक खुलते जाते हैं।

सलोनी झवेरी अहलुवालिया का, मदद के लिए हमेशा तैयार होने के लिए।

एकलव्य के राजेश खिंदरी और टुलटुल बिस्वास का, इस प्रकल्प को अपनाकर उसमें अपनी मेहनत से युवा जोश डालने के लिए।

इंगेला बेण्ट, लॅरी लेम्पर्ट, विवियन विल्हेमसन, कारिन ब्लोमक्विस्ट और गुनेल फाल्थ का, जो इस किताब के सक्रिय शुभचिंतक रहे हैं।

विशेष रुप से लेना पास्तरनाक का, उनके गहरे साथ और सुझावों के लिए और न जाने किस-किस तरह से हौसला बढ़ाने के लिए।

स्वीडीश इन्स्टिट्यूट का, जिन्होने मुझे विस्बी भेजकर इस किताब पर काम करने की मोहलत दिलाई जो किसी भी लेखक की एकाग्रता के लिए बहुत ज़रूरी होती है।

अरविंद का, जोश और उल्लास की कभी कमी महसूस न होने देने के लिए।

और आखिर में हमारे परिवार का – सत्यप्रकाश, इसकी प्रेस कॉपी पर मेरे ही जितनी मेहनत हँसी-खुशी करने के लिए, और दिनेश और संजय, हर काम प्रसन्नता और तत्परता से निपटाने के लिए।